सुगम याग विधानम्

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

सम्पादक

डॉ. राजेन्द्रप्रसाद शुक्ल

(एम.ए., बी.एड्., पी.एच.डी.)

व्याकरण, साहित्य, ज्योतिषाचार्य, साहित्यरत्न,
धर्मविशारद, शिक्षाशास्त्री, विद्यावारिधि

एम.फिल. & पी.एच.डी.-गाइड (S.S.S.U.)

A-21, शाश्वत एपार्टमेन्ट, आनन्द मिलन टावर के सामने,
टेलीफोन एक्सचेन्ज के पास, शाहीबाग, अहमदाबाद-380004.
फोन : 22684532, 65246047 मो. : 9427712769

Sengar

D

ump,

Rasta,
9.

।। श्री गणेशाय नमः ।।

सुगम याग विधानम्

सम्पादक :

डॉ० राजेन्द्रप्रसाद शुक्ल

(एम.ए. बी.एड्. पी.एच.डी.)
व्याकरण, साहित्य, ज्योतिषाचार्य, साहित्यरत्न,
धर्मविशारद, शिक्षाशास्त्री, विद्या वारिधि
एम. फिल. & पी.एच.डी. - गाइड (S.S.S.U.)

ए-21, शाश्वत एपार्टमेन्ट, आनन्द मिलन टावर के सामने,
टेलीफोन एक्सचेंज के पास, शाहीबाग,
अहमदाबाद-38004.
दूरभाष : 22684532, 65246047

☐ सम्पादक : **डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल**

☐ संशोधित संस्करण : विजया दशमी सन् 2014

☐ मूल्य : रु. 301/-

☐ प्रकाशक : **डॉ. आर. आर. शुक्ल**
ए-21, शाश्वत एपार्टमेन्ट, आनन्द मिलन टावर के सामने,
टेलीफोन एक्सचेंज के पास, शाहीबाग,
अहमदाबाद-380004.

☐ मुद्रक : **जे. बी. प्रिन्टर्स**
सैजपुर, अहमदाबाद

☐ प्राप्ति स्थान : (1) **श्री शिवानन्द पूजन एम्पोरियम**
"रंगोली", वी.एस. हॉस्पीटल के सामने,
आश्रम रोड, अहमदाबाद-380006.
फोन : 079-26577087
मो. : 9825339748, 9879892090

कुछ कहना है

वर्तमान समय और समाज बहुत तेजी से बदल रहा है । सूचना, तकनीकी और बाजार व्यवस्था ने मनुष्य की सम्पूर्ण जीवन शैली ही बदल दी है। चारों तरफ भाग दौड़, होड़, प्रतिस्पर्धा और किसी भी तरह आगे बढ़ने और ऊँचा उठने को बेचैनी फैली हुई है । आज समाज को वैदिक ज्ञान एवं विधान जानने का समय ही नहीं है और सीखने के लिए कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है । इसी कारण लोग अपने-अपने कर्मों और संस्कारों को भूल गए हैं ।

आज हिन्दू समाज हमारी प्राचीन संस्कृति जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त जो १६ संस्कार होते हैं उनको भी भूल गया है । समाज कम समय में सरलता से अपने संस्कार विधि विधान का ज्ञान प्राप्त कर सके इसलिए ईश्वर प्रेरणा से मैंने 'गागर में सागर' की तरह "सुगम याग विधानम्" पुस्तक में मुख्य सभी विधानों का समावेश कर समाज के सामने रखने का प्रयास किया है ।

इस पुस्तक की विशेषता है कि सभी कर्मकाण्ड, नैमित्तिक कार्य, याज्ञिक विधान, जन्मोत्सवादि, शान्ति विधान, सुख समृद्धि के लिए स्तोत्र संग्रह तथा विभिन्न देवी-देवताओं की आरती का संग्रह एवं ज्योतिष विषय का समावेश किया गया है जिससे एक ही जगह एक ही पुस्तक में प्राप्त हो सके जो अन्यत्र एक साथ उपलब्ध नहीं है जिससे पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई है ।

मानव जीवन को सार्थक करने के लिए संस्कार विधि से जीवनचर्या आवश्यक है ये सभी कार्य मानव योनि में संभव हैं । अन्य किसी भी योनि में आत्मा स्वतंत्र रूप से कर्म नहीं कर सकती । कबीरजी ने कहा है.......

"लख चौरासी भोगकर
पौ पर अटका आय ।
अबकी पासा न पड़े
तो फिर चौरासी जाय ।।"

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक समाजोपयोगी होगी, इसके माध्यम

से लोग अपना जीवन सफल और सार्थक बना सकते हैं । इस पुस्तक के लेखन में मुझे जिन महानुभावों से विशेष आवश्यक परामर्श, प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मिला है, उनमें पूज्यपाद गादीपति 1008 श्री शिवरामगिरिजी महाराज नीलकंठ अखाड़ा एवं पू. डॉ. स्वामी विवेकानन्दजी तथा डॉ. राममनोहर मिश्र संकायाध्यक्ष (सं.सं.वि.वि. वाराणसी) का आशीर्वाद सदा मेरे साथ है । इस पुस्तक के संकलन एवं संपादन में पं. श्री आचार्य रामदीन त्रिपाठी एवं पं. श्री सन्तोष पाण्डेयजी का योगदान सर्वतोभावेन प्रसंशनीय है । प्रो. श्री रामधनी द्विवेदी, प्रो. परमात्मानाथ तिवारी एवं प्रो. दुर्गाप्रसाद शर्मा जिन्होंने बड़ी रूचि के साथ सहयोग दिया उनका भी मैं आभारी हूँ । श्री अनूपकुमार घुवालेवाला तथा 'राजस्थान गौड़ ब्राह्मण समिति' (शेखावटी क्षेत्र) समाज के संस्थापक श्री ओमहरि शर्माजी का इस कार्य में बहुत प्रोत्साहन मिला है उनका भी मैं कृतज्ञ हूँ ।

प्रूफ संशोधन कार्य में आचार्य एस. एन. पाण्डेयजी का सहयोग तथा जे. बी. प्रिन्टर्स के 'मिश्राजी' जो समयबद्ध एवं यथा सम्भव शुद्ध रूप से पुस्तक प्रस्तुत करने में विशेष भूमिका निभायी है उनका भी मैं आभारी हूँ । विशेष रूप से रेशमबाई होस्पिटल के संचालक डॉ. हसमुख अग्रवाल एवं डॉ. लक्ष्मीबेन अग्रवाल का पुस्तक प्रकाशन और आप तक पहुँचाने में विशेष सहयोग रहा है, जो कि अविस्मरणीय है ।

आशा है कि विद्धज्जन एवं साधारण लोग भी इससे लाभ उठायेंगे और दूसरों को भी लाभान्वित करेंगे और यदि इस पुस्तक से समाज को किंचित् भी लाभ होगा तो ही मैं अपने परिश्रम को सफल समझूँगा ।

अंत में विद्वज्जनों से निवेदन है कि पुस्तक के विषय में जो भी संशोधन, परिवर्तन, परिवर्धन का विचार भेजेंगे उनके सुझावों का सदा स्वागत किया जाएगा, जिससे अगले संस्करण में उनका सुधार हो सके ।

त्रुटियों के लिए क्षमा एवं सुझावों के लिए अभ्यर्थी........

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल

।। श्री नीलकण्ठो विजयतेतराम्।।

शुभ कामनाएँ

अयि! भारतीया:!

विश्वजनीना:! विद्वांस:! जानीयुर्यच्छ्री पण्डित मान्येन विपश्चिद्वरेण श्रीमता डॉ. राजेन्द्रप्रसाद शुक्ल महाभागेन विहितं

"**सुगम याग विधानम्** अतीव समीचीनतरमिति।"

उपर्युक्तेन विदुषाधिकाधिक परिश्रमेण ज्योतिः शास्त्रस्थित काठिन्यं सरली विरच्य निखिलजनेभ्योऽत्युपकृत्यं कृतमेतदर्थं भगवञ्छ्री नीलकण्ठ एतस्मै तस्मै च शुभं कुर्यादेतावती मदीया शुभकामना शुभाशीश्चास्तुतराम्।।

महन्त शिवरामगिरेः
गादीपति महन्त महाराजश्री शिवरामगिरिजी रामपुरीजी
नीलकण्ठ अखाड़ा, असारवा,
अहमदाबाद-380016.

क के लेखन
साहन मिला
कंठ अखाड़ा
संकायाध्यक्ष
पुस्तक के
श्री सन्तोष
द्विवेदी, प्रो.
ाथ सहयोग
'राजस्थान
हरि शर्माजी

हयोग तथा
प से पुस्तक
विशेष रूप
. लक्ष्मीबेन
ोग रहा है,

ठायेंगे और
किंचित् भी

ी संशोधन,
ागत किया

द शुक्ल

नवल किशोर शर्मा
राज्यपाल, गुजरात

राजभवन
गांधीनगर-३८२ ०२०

दिनांक १२-०३-२००८

-: संदेश :-

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि आपके द्वारा प्रकाशित पुस्तिका :सुगम याग विधानम्: समाज के लिए उपयोगी सिध्द होगी। इसमें विविध विधान, अनेक स्तोत्रो का संपादन, षोडश संस्कार की जानकारी तथा भार्ग प्रदर्शक शुभ समय जानने के लिए ज्योतिष शास्त्र का समावेश किया गया है। इस पुस्तक में थोड़े में ही बहुत कुछ समाहित है। इसमें पाठक गण को अवश्य लाभ होगा।

मैं डा० राजेन्द्र प्रसाद शुक्ला के प्रयासों की सराहना करते हुए पुस्तक के उज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाऐं प्रेषित करता हूँ।

(नवल किशोर शर्मा)

नरेन्द्र मोदी
मुख्य मंत्रीश्री
गुजरात राज्य

30-8-07

-: संदेश :-

हिन्दुस्तान के कई प्राचीन ऋषि-मुनियों ने जीवनभर की तपस्या और खोज के जरिए ज्ञान-विज्ञान, वैदिक, ज्योतिष जैसे कई विषयों के बारे में समग्र विश्व को अलभ्य जानकारियाँ उपलब्ध की हैं जिन्हें जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करना जरूरी है।

ऐसे ही प्रयास के रूप में **डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल** के द्वारा वैदिक विधान, ज्योतिष जैसे विषयों की जानकारी देनेवाला **सुगम याग विधानम्** पुस्तक का सम्पादन किया गया है। यह जानकर प्रसन्नता हुई।

डॉ. राजेन्द्रप्रसादजी को हार्दिक शुभ कामनाएँ।

आपका,
नरेन्द्र मोदी

प्रति,
श्री डॉ. राजेन्द्रप्रसाद शुक्ल
व्याकरण, साहित्य, ज्योतिषाचार्य,
साहित्यररत्न, धर्मविशारद, शिक्षाशास्त्री, विद्यावारिधि
ए-21, शाश्वत एपार्टमेन्ट,
आनन्दमिलन फ्लेट के सामने,
टेलिफोन एक्सचेंज के पास,
शाहीबाग, अहमदाबाद-4.

Shree Somnath Sanskrit University
(Estd. by Government of Gujarat)
University Road, VERAVAL-362265.
District : Junagadh, Gujarat.
Phone : 02876-244531 Fax : 02876-244417

Pankaj L. Jani
Vice-Chancellor

Date : 3-10-2007

।। शुभ कामना ।।

श्रीमतः डॉ. राजेन्द्रप्रसाद शुक्लमहोदयस्य **सुगम याग विधानम्** इति नामकं पुस्तकं मया अवलोकितम्। तत्र वैदिकज्योतिषमंत्रस्तोत्रादीनाम् अतिप्रयासेनैकत्र संकलनं कृत्वा प्रकाशनं मन्ये यदनेन समाजस्य महान् उपकारो भविष्यति इति अमुष्य प्रचुरप्रचारं कामये।

अस्मै कार्याय डॉ. शुक्लमहोदयाय शुभकामनां प्रेषयामि।

भवदीयः
(पंकज जानी)
कुलपति

प्रति,
श्री डॉ. राजेन्द्रप्रसाद शुक्लजी,
श्री स्वामी हीरापुरीजी संस्कृत महाविद्यालय,
नीलकण्ठ अखाड़ा,
असारवा–अहमदाबाद

આર. કે. પાઠક
આઈ.એ.એસ.
અધ્યક્ષ

ગુજરાત માધ્યમિક અને ઉચ્ચતર માધ્યમિક શિક્ષણ બોર્ડ
સેક્ટર-૧૦ બી, સચિવાલય પાસે, ગાંધીનગર-૩૮૨૦૧૦
(O) ૦૭૯-૨૩૨૨૦૬૯૧ ● ફેક્સ નં. ૦૭૯-૨૩૨૫૯૪૦૧
વેબસાઈટ : www.gseb.org ● ઈમેલ : Chairman@gseb.org

22-8-07

शुभ कामनाएँ

समाज में ज्ञान का प्रकाश बिखेरना बहुत ही सुन्दर कार्य है और यह कार्य अच्छे सत्साहित्य के द्वारा ही किया जा सकता है ।

"सुगम याग विधानम्" पुस्तक में वैदिक ज्ञान का भण्डार भरा हुआ है । जीवन में सुख-शान्ति मिले उसके लिए विभिन्न स्तोत्रों का संपादन है। सफलता के लिए समय को पहचानना जरूरी है । इस हेतु 'ज्योतिष विषय' पर प्रकाश डाला गया है ।

वास्तविक इसमें सब कुछ समाहित है । यह सब एक ही साथ होना बहुत दुर्लभ है । निश्चित ही यह पुस्तक समाज के लिए अति उपयोगी है ।

मैं आपके प्रयासों की प्रसंशा करता हूँ । पुस्तक उत्तरोत्तर विकास करे और जन मानस की आकांक्षाओं पर खरा उतरे ।

यही मैं अपनी मंगल कामनाएँ प्रेषित करता हूँ ।

आर. के. पाठक

।।श्री।।

शुभ कामनाएँ

श्रीमद्भिः पण्डितवरेण्यै डॉ. राजेन्द्रप्रसाद शुक्ल महाभागैः
"सुगम याग विधानम्"
इति विरच्य
ज्योतिः शास्त्रीय काठिन्यं सरलभाषायां प्रेङ्खोल्य
'सर्वजनहिताय सर्वजनसुखायेति'
कार्यं कार्यं विहितमिति शिवस्तुतराम्।

डॉ० स्वामी विवेकानन्द
श्री स्वामी हीरापुरीजी संस्कृत महाविद्यालय
नीलकण्ठ महादेव, असारवा,
अहमदाबाद-16.

॥ श्री हरिः ॥

शुभ कामनाएँ

समादरणीयाः श्रीमन्तो राजेन्द्रशुक्लमहाभागाः।
सादरं नमो नमः।

भवता प्रकाश्यमानं ''सुगमयागविधानम्'' इति नामकं विविधयागतदङ्ग-वर्णनपरकं ग्रन्थं हृदा मुदाऽभिवादयाम्याभिनन्दामि च। ''यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्'' गीताशास्त्रीयोक्त्यनुसारं संसारपावनत्वकरं त्रिस्कन्धात्मकधर्मस्य स्कन्धभूतयज्ञविधानं भूतलस्य तन्निवासिनां लोकानाम् श्रेयसेऽभ्युदयाय च भवति। ''सुगमयागविधानम्'' नाम ग्रन्थरत्नं तत्र महदुपकरिष्यतीति श्रद्दधे।

भावत्कः
आचार्यो डॉ. नरेन्द्र पण्ड्या
प्राचार्यः
संस्कृत महाविद्यालयः
श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी
वेरावलम्

शुभ कामनाएँ

डॉ. राजेन्द्रप्रसाद शुक्ल विदुषा सम्पादितं ''सुगम याग विधानम्'' पुस्तकं लोकोत्तरमस्ति प्रायशः शास्त्रीय परम्पराया आनुपूर्वकं ध्यानं दत्वेदं प्रशस्तिपरंकार्यं-कृतमस्ति यागकर्मकर्तुणाम् पण्डितानां कृते बहूपयोगीभवितेतिनात्रलेशमात्रसन्देहः। पितरौभवानीशङ्करौ प्रार्थये पुस्तक-ग्रन्थकर्त्रोः प्रकाशोऽतिशयो विश्वजनीनः स्यादिति।

डॉ. वाचस्पति मिश्र
प्रधानाचार्यः, श्री स्वामिनारायण सं.म.वि.
जेतलपुरम्

卐 शुभाशंसा 卐

पंडित प्रवरैः नीलकण्ठपञ्चाङ्गनिर्मातृभिः "श्री राजेन्द्र शुक्ल वर्यैः सम्पादितोऽयं", सुगमयागविधानमित्याख्यो ग्रन्थः निखिल भारतीयानां कृते श्रेयस्करं ज्ञानवर्धकश्चास्ति । विशेषतः पौरोहित्य प्रवृत्तानां यन्त्रमन्त्रतन्त्रशास्त्र जिज्ञासूनां च कृते हितकृदानन्दकृच्च ।

भारतेऽल्पीयांस एवैतादृशा ग्रन्था अवलोक्यन्ते यदेकत्रैव जिज्ञासमानेभ्योऽभीष्टं ज्ञानप्रदं विषयवस्तु सुलभं भवेत् । "विद्वानेव जानाति विद्वज्जन परिश्रमम्" इत्युक्त्या ग्रन्थ निर्माणे क्रियान् परिश्रमो द्रव्यव्ययश्च भवतीति प्रायः सर्वे विदन्त्येव।

अस्मिन् ग्रन्थे विषयवैविध्यं लोकोपकारकत्वञ्चानुभूयेते । लौकिकी वैदिकी पद्धत्युभावप्यत्र समाविष्टे स्तः । सम्पूर्णे भारते ह्येतत् पुस्तकं प्रतिष्ठां लोकप्रियतां च प्राप्नुयात् तस्य कर्तारोऽध्येतारश्च मङ्गलमाप्नुयुरिति परमात्मानं प्रार्थयामि ।।

विदुषां वशंवद :
रामकिशोर त्रिपाठी
प्रधानाचार्य–एम.जे.पी.सं.म.वि.
अहमदाबाद
अध्यक्ष–गुजरात सं. पाठशाला
शिक्षक मण्डल अहमदाबाद

श्री

अनुक्रमणिका

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥

ब्रह्म-मुहूर्त में जागरण- सूर्योदय से चार घड़ी (लगभग डेढ़ घण्टे)पूर्व ब्रह्म मुहूर्त में ही जग जाना चाहिए । इस समय सोना शास्त्र में निषिद्ध है ।

करावलोकन-आँखों के खुलते ही दोनों हाथों की हथेलियों को देखते हुए निम्नलिखित श्लोक का पाठ करें....

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती ।
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम् ॥
(आचार प्रदीप)

हाथ के अग्र भाग में लक्ष्मी, मध्य भाग में सरस्वती और मूल भाग में ब्रह्माजी निवास करते हैं । अतः प्रातःकाल दोनों हाथों का अवलोकन करना चाहिए ।

पूजनकर्ता सपत्नी प्रातःकाल मङ्गल स्नान करके नवीन या गृह-प्रक्षालित शुद्ध वस्त्र उपवस्त्र धारण कर शुद्ध स्थान में आसन पर पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बैठकर तीन बार आचमन करें ।

ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः ।

ऐसा बोलकर तीन बार आचमन करें । इसके बाद **ॐ गोविन्दाय नमः** ऐसा उच्चारण कर हाथ धो लें । इसके बाद प्राणायाम करें ।

पवित्रीधारणम्

मन्त्र : ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्यरश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम् ॥

यथा वज्रं सुरेन्द्रस्य यथा चक्रं हरेस्तथा ।
त्रिशूलं च त्रिनेत्रस्य तथा मम पवित्रकम् ॥

इस मन्त्र से दाहिने हाथ की अनामिका के मूल में पवित्री धारण करें ।

मङ्गलतिलकम्

मन्त्र : ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति न ÷ पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्तिनस्ताक्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।।

स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या धर्मकल्याण वृद्धिदा ।
विनायकप्रिया नित्यं ताञ्च स्वस्ति ब्रुवन्तु नः ॥

चन्दनस्य महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशनम् ।
आपदं हरते नित्यं लक्ष्मीस्तिष्ठति सर्वदा ।।

शिखाबंधनम्

मन्त्रः-

ॐ मानस्तोके तनये मा नऽआयुषि मा नो गोषु मा नोऽअश्वेषु रीरिषः ।
मानो वीरान्नुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सद्मित्वा हवामहे ।।
चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते ।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे ।।

कंकणबंधनम्

मन्त्रः -

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्य ७ शतानीकाय सुमनस्यमानाः ।
तन्मऽआ बध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ॥
येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः ।
तेन त्वामनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ।।

(पुरुष के दाहिने हाथ में और स्त्री के बाँये हाथ में कंकण बाँधना चाहिए।)

शान्ति पाठ

हाथ में अक्षत और पुष्प लेकर शान्ति पाठ पढ़ना चाहिए ।

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽअपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद् वृधेऽ असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां ७ रातिरभि नो निवर्त्तताम् । देवाना ७ सख्यमुपसेदिमा वयं देवा नऽ आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ।। तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम् । अर्यमणं वरुण ७ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ।। तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः । तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना श्रृणुतन्धिष्ण्या युवम् ।। तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पति न्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ।। स्वस्ति नऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति न ÷ पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः । अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वेनो देवाऽअवसागमन्निह ॥ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ७ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ।। शतमिन्नु शरदोऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन्तनूनाम् । पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ।। अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः । विश्वे देवा अदितिः पञ्च जनाऽ अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ७ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।। यतो

यतः समीहसे ततो नोऽअभयङ्कुरु ।शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभ-
यन्नः पशुभ्यः ।। सुशान्तिर्भवतु ।।

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा, तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ।।
किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत् किं चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि ।
किं चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि, सर्वेषु देव्यसुरदेव गणादिकेषु ।।
हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषै-र्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा ।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूत-मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या ।।
यस्याः समस्तसुरता समुदीरणेन, तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि ।
स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतुरुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च ।।

देवता नमस्कारः

ॐ श्री मन्महागणाधिपतये नमः । लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । उमामहेश्वराभ्यां नमः । वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः। मातृपितृचरण-कमलेभ्यो नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ।।

अभीप्सितार्थसिध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ।।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये ! शिवे ! सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके ! गौरि नारायणि नमोऽस्तुते।।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् ।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः ।।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि।।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ।।
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ।।
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।
स्मृते सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते ।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ।।
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः।।
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्।।
वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ।।
ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहित महागणपतये नमः ।

हाथ में लिए हुए अक्षत पुष्प गणपति भगवान पर चढ़ा दें ।

प्रायश्चित संकल्प

पाप निवृत्ति एवं देह शुद्धि के लिए प्रायश्चित संकल्प करना चाहिए ।

संकल्प

अद्य पूर्वोच्चरित शुभ पुण्यतिथौ मम इह जन्मनि, जन्मान्तरे वा,

कायिक, वाचिक, मानसिक, सांसर्गिक ज्ञाताज्ञात स्पर्शास्पर्श भुक्ताभुक्तपीतापीतादि कृत कर्म दोष परिहारार्थं करिष्यमाण कर्मणि अधिकार प्राप्त्यर्थं यथाशक्ति गो निष्क्रयी भूत द्रव्य द्वारा यथाशक्ति देह शुद्धि प्रायश्चित्तं करिष्ये । अनेन गोनिष्क्रयीभूत द्रव्य द्वारा प्रायश्चिताख्येन कर्मणा पापहा महाविष्णुः प्रीयताम् ।।

गो-प्रार्थना

गावोममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ।।
गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश ।
यस्मात्तस्माच्छिवं मे स्यात् इहलोके परत्र च।।
अदितिर्देव माता च वेदमाता च धीश्वरी ।
धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ।।

धेन्वै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पाप संभवः।
त्राहि मां पुंडरीकाक्ष सर्व पाप हरो हरि ।।

प्रधान संकल्पः

दाहिने हाथ में चावल (अक्षत), सुपारी, पुष्प, चन्दन, द्रव्य एवं जल लेकर संकल्प करें ।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः। श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणोह्नि द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्तस्य अमुकक्षेत्रे अमुकदेशे अमुकनाम्निनगरे (ग्रामे वा) श्री गङ्गायमुनयोरमुकदिग्भागे देवब्राह्मणानां सन्निधौ श्रीमन्नृपतिवीर विक्रमादित्य-समयतोऽमुकसंख्यापरिमिते प्रवर्तमान संवत्सरे प्रभवादिषष्ठि

संवत्सराणां मध्ये अमुकनामसंवत्सरे, अमुकायने, अमुकगोले, अमुकऋतौ, अमुकमासे, अमुकपक्षे, अमुकतिथौ, अमुकवासरे, अमुकनक्षत्रे, अमुकयोगे, अमुककरणे, अमुकराशि स्थिते चन्द्रे, अमुकराशि स्थिते श्री सूर्ये, अमुकराशि स्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथं राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुक-गोत्रोत्पन्नः अमुक शर्माहं वर्माहं गुप्तोऽहं, दासोऽहं सपरि-वारस्य ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तपुण्यफलावाप्त्यर्थं मम ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् अप्राप्तलक्ष्मी प्राप्त्यर्थं प्राप्तलक्ष्म्या-श्चिरकालसंरक्षणार्थं सकलमनईप्सितकामनासंसिद्ध्यर्थं लोके वा सभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजयलाभादि प्राप्त्यर्थं ममसमस्तभयव्याधिजरापीड़ामृत्युपरिहारद्वारा आयुरा-रोग्यैश्वर्याद्यभिवृद्ध्यर्थं तथा च मम जन्मराशेः सकाशाद्ये केचिद्विरुद्धचतुर्थाष्टमद्वादशस्थानस्थिताः क्रूरग्रहाः तैः सूचितं सूचयिष्यमाणञ्च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशद्वारा सर्वदा तृतीयैकादशस्थानस्थितवच्छुभफलप्राप्त्यर्थं पुत्रपौत्रादि-सन्ततेरविच्छिन्नवृद्ध्यर्थं आदित्यादिनवग्रहानुकूलतासिद्ध्यर्थं इन्द्रादिदश-दिक्पालप्रसन्नतासिध्यर्थं आधिदैविकाधि-भौतिकाध्यात्मिकत्रिविधः पापशमनार्थं धर्मार्थकाममोक्ष-फलावाप्त्यर्थं यथा-ज्ञानेनयथामिलितोपचारद्रव्यै अमुकदेवस्य पूजनं करिष्ये। तदङ्गत्वेन गणपत्यादि देवानां पूजनञ्च करिष्ये। (करिष्यामि वा) तत्र आदौ दिग्रक्षणं कलशाराधनं दीपपूजनं सूर्यपूजनं शंखघण्टार्चनं आसनशुद्धिं च करिष्ये।

आसनशुद्धि के लिए आसन पर जल छिड़कें.....

आसनशुद्धि

ॐ पृथ्वि ! त्वया धृता लोका देवि ! त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु चासनम् ।।

अर्थात् सारे संसार को आधार देने वाली पृथ्वी मेरा आसन पवित्र करें ।

दिग्रक्षणम्

बाएँ हाथ में सरसों लेकर दाहिने हाथ से ढक लेवें, मन्त्र बोलकर सभी दिशाओं में सरसों छोड़ें.....

ॐ रक्षोहणं व्वलगहनं वैष्णवीमिदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि यं म्मे निष्ट्यो यममात्त्यो निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्त्किरामि यं मे समानो यमसमानो निचखानेदमहन्तं वलगमुत्त्किरामि यं मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्न्निचखानेदमहन्तं वलगमुत्त्किरामि यं मे सजातो यमसजातो निचखानोत्त्कृत्त्याङ्क्रिरामि।। रक्षोहणो वो वलगहनःप्रोक्षामि व्वैष्णवान्रक्षोहणो वो व्वलगहनोऽवनयामि व्वैष्णवान् रक्षोहणो वो वलगहनोऽवस्तृणामि वैष्णवान् रक्षोहणौ वां वलगहनाऽउप दधामि वैष्णवी रक्षोहणौ वां वलगहनौ पर्यूहामि वैष्णवी वैष्णवमसि वैष्णवा स्त्थ।। रक्षसां भागोऽसि निरस्त ꣳ रक्ष इदमह ꣳ रक्षोऽभि तिष्ठामीदमह ꣳ रक्षोऽव बाध इदमह ꣳ रक्षोऽधमं तमो नयामि । घृतेन द्यावापृथिवी प्रोर्ण्णुवाथां व्वायो व्वे स्तोकाना मग्निराज्यस्य व्वेतु स्वाहा स्वाहा-कृते ऊर्ध्वनभसं मारुतं गच्छतम्।। रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहते। द्रोणे सधस्थमासदत् ।।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे ।।

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः ।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ।।
भूतप्रेत पिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः ।
स्थानादस्मात् व्रजन्त्वन्यत् स्वीकरोमि भुवं त्विमाम् ।।
भूतानि राक्षसा वापि येऽत्रतिष्ठन्ति केचन ।
ते सर्वेऽप्यवगच्छन्तु यावत्कर्म करोम्यहम् ।।

दशों दिशाओं में सरसों छोड़ें ।

प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता ।
दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी ।।
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी ।
उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी ।।
ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा ।
एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना ।।

(सर्षपान् सर्वदिक्षु विकीर्य वामपादेन भूमिं त्रिवारं ताडयेत् । नेत्रोदकस्पर्शः ।)

भैरवनमस्कारः

ॐ यो भूतानामधिपतिर्यस्मिल्लोका अधिश्रिताः । यऽईशे महतो महाँस्तेन गृह्णामि त्वामहम् मयि गृह्णामि त्वामहम् ।।

तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम ।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ।।

कलशार्चनम्

अपने बाएँ भाग में अक्षत के ऊपर कलश रखकर वरुण देवता का आह्वाहन करें..

ॐ तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणेह बोद्ध्युरुश ँ स मा नऽ आयुः प्रमोषीः ।।

अस्मिन कलशे वरुणं साङ्गंसपरिवारं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि ।

प्रतिष्ठा सर्व देवानां मित्रावरुणनिर्मिता ।
प्रतिष्ठां ते करोम्यत्र मंडले देवतैस्सह ।।

कलश को स्पर्श करते हुए जलाभिमंत्रित करें....

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ।।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बु समाश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ।।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः ।
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु ।
ब्रह्माण्डोदर तीर्थानि करैःस्पृष्टानि ते रवे ।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ।।

[अङ्कुशमुद्रया सूर्यमण्डलात् सर्वाणि तीर्थान्यावाह्य वं इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य 'हुम्' इति कवचेनावगुण्ठ्य मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छाद्य **'वं वरुणाय नमः'** इत्यनेनाष्टवारमभिमन्त्र्य चतुर्दिक्षु चतुर्वेदान् पूजयेत्]

पूजनम् - पूर्वे ऋग्वेदाय नमः। दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः। पश्चिमे सामवेदाय नमः। उत्तरे अथर्ववेदाय नमः। मध्येऽपांपतिवरुणाय नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धा-क्षतपुष्पाणि सम०।

नमस्कार

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय ।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ।।

ॐ अपां पतये वरुणाय नमः ।

नमस्कार : ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, प्रार्थना पूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि।

(इस नाम-मन्त्र से नमस्कार करें)

(तस्मादुदकादुदकं गृहीत्वा स्वात्मानं पूजाद्रव्याणि च प्रोक्षयेत्।)

कलश से बाँयें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से अपने ऊपर एवं पूजन सामग्री पर छिड़कें ।

मन्त्र

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता नऽऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे।।
यो व ÷ शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह न ÷। उशतीरिव मातर ÷।
तस्माऽ अरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा ।
यःस्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

दीपपूजनम्

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ।अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ।।

भो दीप देव (देवी) रूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् ।
यावत्पूजां करिष्यामि तावदत्र स्थिरो भव ।।

ॐ भू० दीपस्थदेवतायै नमः गंधाक्षतपुष्पाणि सम० (गंधाक्षत पुष्प चढ़ावें)।

सूर्यनमस्कार

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्श्यन् ।।
आदित्यस्य नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिने दिने ।
जन्मान्तरसहस्त्रेषु दारिद्रयं नोपजायते ।।
(गंधाक्षत पुष्प अर्पण करें)

शंखपूजनम्

शंख में दूर्वा, तुलसी, पुष्प डालकर उसे जल से भर दें और गन्ध अक्षत से पूजन एवं प्रार्थना करें....

ॐ अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयम् ।
उपयाम गृहीतोऽस्यग्नये त्त्वा व्वर्चसऽएषतेयोनिरग्नये त्वा वर्चसे ।।

शंखं चंद्रार्कदैवत्यं मध्ये वरुणदैवतम् ।
पृष्ठे प्रजापतिं विद्यादग्रे गंगासरस्वतीम् ।।
त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया।
शंखे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्मात् शंखं प्रपूजयेत्।।
(शंखस्थदेवतायै नमः)

घण्टापूजनम्

ॐ सुपर्णोऽसि गरुत्माँस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ । स्तोमऽआत्मा छन्दा ꣳ स्यङ्गानि यजूꣳषि नाम । साम ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छन्धिष्ण्याः शफाः। सुपर्णोऽसि गरुत्मान्दिवङ्गच्छ स्वः पत।।

आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु रक्षसाम् ।
कुर्वे घण्टारवन्तस्मात् देवताह्लादकारकम्।।

भगवान गणेश का आवाहन

ॐ गणानान्त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ꣳ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।।

श्वेताङ्गं श्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेतगंधैः।
क्षीराब्धौ रत्नदीपैः सुरनरतिलकं रत्नसिंहासनस्थम्।।
दोर्भिः पाशांकुशाब्जाभयवर दधतं चन्द्रमौलिं त्रिनेत्रं।
ध्यायेत् शान्त्यर्थमीशं गणपतिममलं श्रीसमेतं प्रसन्नम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहित महागणपतये नमः ध्यायामि। गंधपुष्पं च समर्पयामि। आवाहयामि स्थापयामि ।

शिवध्यानम्

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोत ऽ इषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः।

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचंद्रावतंसं ।
रत्नाकल्पोज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैः व्याघ्रकृत्तिं वसानं ।
विश्वाद्यं विश्ववंद्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः साम्बसदाशिवाय महारुद्राय नमः ध्यायामि। गंधपुष्पं च समर्पयामि। आवाहयामि स्थापयामि ।

विष्णुध्यानम्

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा ।।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं ।
वंदे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः ध्यायामि। गंधपुष्पं च समर्पयामि, आवाहयामि स्थापयामि ।

देवीध्यानम्

ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससत्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ।

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कंधस्थितां भीषणां ।
कन्याभिः करवालखेटविलसत् हस्ताभिरासेविताम्।।
हस्तैश्चक्रगदासिखेट विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीम् ।
विभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै जगदंबिकायै नमः। ध्यायामि गंधपुष्पं समर्पयामि, आवाहयामि स्थापयामि ।

सूर्यध्यानम्

ॐ सूर्बरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात् सविता ज्योतिरुदयाँ २ अजस्त्रम्। तस्य पूषा प्रसवे याति विद्वान् संपश्यन्विश्वा भुवनानि गोपाः ।।

ध्येयः सदा सवितृमंडलमध्यवर्ती ।
नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः ।।
केयूरवान् मकरकुंडलवान् किरीटी ।
हारी हिरण्मयवपुर्धृतशंखचक्रः ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याय नमः ध्यायामि गंधपुष्पं समर्पयामि, आवाहयामि स्थापयामि

गणेशध्यानम्

हाथ में अक्षत पुष्प लेकर **ॐ गणानान्त्वा०** से गणेश भगवान का ध्यान करें ।

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ।।

(सिद्धिबुद्धिसहित महागणपतये नमः ध्यायामि)

ध्यान के लिए गन्ध, अक्षत , पुष्प गणपति भगवान पर चढ़ावें ।

प्राणप्रतिष्ठापनम्-ॐ मनोजूतिर्जुषता०, प्रतिष्ठा सर्वदेवानां०
(भो सुप्रतिष्ठतो वरदो भव) (जिस देवता का पूजन करना हो उसका नामोल्लेख करें ।)

आसनम्

ॐ पुरुषऽएवेदꣳसर्वं यदभूतँ यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्ये-शानोयदन्नेनातिरोहति।।

रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्व सौख्यकरं शुभम्।
आसनं च मया दत्तं गृहाण गणनायक ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहित महागणपतये नमः आसनम् (आसनार्थे दूर्वांकुरान् पुष्पं वा) समर्पयामि।

(आसन के लिए पुष्प या अक्षत अर्पण करें ।)

पाद्यम्

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।।

उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगंध्य संयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहित महागणपतये नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

(जल अर्पित करें)

अर्घ्य

ॐ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः ततो विष्वङ्व्य-क्रामत्साशनानशनेऽअभि।।

ताम्रपात्रे स्थितं तोयं गंधपुष्प फलान्वितम्।
सहिरण्यं ददाम्यर्घ्यं गृहाण गणनायक।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० अर्घ्यं समर्पयामि। *(गन्धयुक्त जल समर्पित करें।)*

आचमनीयम्

ॐ ततो विराडजायत विराजोऽअधिपूरुषः। स जातोऽ अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।

सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगंधिं निर्मलं जलम्।
आचम्यतां मयादत्तं गृहाण गणनायक ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० आचमनीयम् समर्पयामि।

(आचमनी हेतु जल समर्पित करें)

स्नानम्

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः संभृतम्पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रे व्वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।

गंगा सरस्वती रेवा पयोष्णी नर्मदा जलैः।
स्नापितोऽसि मया देव ह्यतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० स्नानं समर्पयामि। *(स्नान हेतु जल समर्पित करें)*

पयः स्नानम्

ॐ पयः पृथिव्यां पय ऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० पयः स्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। *(दूध से स्नान करायें। पुनः दो बार जल चढ़ायें।)*

दधिस्नानम्

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखा करत्प्रणऽ आयूꣳषि तारिषत्।।

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० दधि स्नानं समर्पयामि। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। *(दधि से स्नान करायें। पुनः दो बार जल चढ़ायें।)*

घृतस्नानम्

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत व्वसां व्वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽ आदिशो व्विदिशऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।।

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० घृतेन स्नापयामि। शुद्धोदकेन स्नापयामि। आचमनीयं समर्पयामि। *(घृत से स्नान करायें। पुनः दो बार जल चढ़ायें।)*

मधुस्नान

ॐ मधु व्वाताऽ ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः।। मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।

तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० मधुना स्नपयामि। शुद्धोदकेन स्नपयामि। आचमनीयं समर्पयामि। *(मधु से स्नान करायें। पुनः दो बार जल चढ़ायें।)*

शर्करास्नानम्

ॐ अपाꣳरसमुद्वयस ँ सूर्ये सन्त ँ समाहितम्। अपाꣳरसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।

इक्षुसारसमुद्भूता शर्करापुष्टिकारिका।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० शर्करया स्नपयामि। शुद्धोदकेन स्नपयामि। आचमनीयं समर्पयामि। *(शर्करा से स्नान करायें। पुनः दो बार जल चढ़ायें।)*

पंचामृतस्नानम्

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।

पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्।
पंचामृतं मयादत्तं गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० पंचामृतेन स्नपयामि। शुद्धोदकेन स्नपयामि। आचमनीयं समर्पयामि। *(पंचामृत से स्नान करायें। पुनः दो बार जल चढ़ायें।)*

3

गंधोदकस्नानम्

ॐ गन्धर्व्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्टयै यजमानस्य-परिधिरस्यग्निरिड ईडितः ।।

मलयाचलसंभूतं चंदनागरुकेशरम्।
चंदनं च मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० गंधोदकेन स्नपयामि। शुद्धोदकेन स्नपयामि। आचमनीयं समर्पयामि। *(गंध से स्नान करायें। पुनः दो बार जल चढ़ायें।)*

उद्वर्तनस्नानम्

ॐ अ६शुना तेऽअ६शुःपृच्यतां परुषा परुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽअच्युतः।

नानासुगंधिद्रव्यं च चंदनं रजनीयुतम्।
उद्वर्तनं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० उद्वर्तनेन स्नपयामि। शुद्धोदकेन स्नपयामि। आचमनीयं समर्पयामि । स्नानशालायां पंचोपचारैः संपूज्य (मानसोपचारैः संपूज्य) (अत्तर से स्नान करायें, पुनः दो बार जल चढ़ायें) पंचोपचार से पूजा करें। निर्माल्य लेकर मस्तक में लगायें सूँघकर नीचे रख देवें। हाथ धोकर पुनः पंचोपचार से पूजा करें और अभिषेक करें।

अभिषेक

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्त्तासि। त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासिनित्यम्।। १ ॥ ऋतंवच्मि। सत्यंवच्मि।। २ ॥ अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्।। अव धातारम्। अवानूचानमवशिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्॥ ३।। त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं

ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि।। ४॥ सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोनऽलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारिवाक्पदानि।। ५॥ त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वमवस्थात्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्।। ६॥ गणादीन्पूर्वमुच्चार्य वर्णादींस्तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्। तारेणरुद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारोमध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। संहिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः निचृद्गायत्रीछन्दः। गणपतिर्देवता। ॐ गं गणपतये नमः।। ७॥ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।। ८॥ एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमंकुशधारिणम्। रदं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम्।। रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्। रक्तगन्धा-नुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्। भक्तानुकम्पिनं देवंजगत्कारणमच्युतम्। आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्।। एवं ध्यायति यो नित्य स योगी योगिनां वरः।। ९॥ नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमः।। १०॥

पुराणोक्त गणपति स्तोत्र से भी अभिषेक कर सकते हैं। (स्तोत्र संग्रह में देखें) इस गणपति अथर्वशीर्ष के पाठ करने से सभी विघ्न एवं पंच महापापों से मुक्ति मिलती है तथा चारों पदार्थ प्राप्त होते हैं। इसके हजार पाठ करने मात्र से सभी कामनाएँ पूर्ण होती हैं । चतुर्थी के दिन पाठ एवं अभिषेक करने से प्रखर बुद्धिमान होता है। दूर्वापूजन से कुबेर के समान, लाजा से यश कीर्ति, हजार मोदक अर्पण करने से मनोकामना पूर्ण होती है।आठ ब्राह्मण को लिखकर देने

से सभी विद्याएँ प्राप्त होती हैं ।

शुद्धोदकस्नानम्

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामाऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ।

गंगा सिन्धु सरस्वती च यमुना, गोदावरी नर्मदा।
कावेरी सरयू महेन्द्रतनया चर्मण्वती वेदिका।।
क्षिप्रा वेत्रवती महा सुरनदी ख्याता गया गण्डकी।
पूर्णा पूर्णजलैः समुद्रसहिता स्नानं सदा मंगलम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० शुद्धोदक० शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

शुद्ध जल से स्नान करायें।

वस्त्रम्

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः । वासो अग्ने विश्वरूप ꣳसं व्ययस्व विभावसो ।।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जा निवारणे ।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० वस्त्रं सम० । आचमनीयं समर्पयामि।

(वस्त्र अर्पण करें, आचमन के लिए जल छोड़ें)

यज्ञोपवीतम्

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मयादत्तं गृहाण परमेश्वर ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० यज्ञोपवीतं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि।

(जनेऊ अर्पण कर आचमन करावें)

गंधम्

ॐ त्वां गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखंडं चंदनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चंदनं प्रति गृह्यताम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० गंधं समर्पयामि। *(चन्दन लगावें)*

अक्षताः

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रियाऽअधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० अक्षतान् समर्पयामि। *(अक्षत चढ़ावें)*

पुष्पाणि

ॐ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।
अश्वाऽ इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्ण्वः ।।

माल्यादीनि सुगंधीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयानीतानि पूजार्थं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० पुष्पाणि समर्पयामि।

सेवंतिका बकुल चंपक पाटलाब्जैः।
पुन्नागजाति करवीर रसालपुष्पैः ।।
बिल्वप्रवालतुलसीदल मालतीभिः।
त्वां पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद ।। *(पुष्प चढ़ावें)*

दूर्वांकुराः (दूर्वा)

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।

दूर्वा ह्यमृतसंपन्ना शतमूला शतांकुरा।
शतं पातकसंहंत्री शतमायुष्यवर्धिनी ।।
ॐ भूर्भुवः स्वः० दूर्वांकुरान् समर्पयामि। ***(दूर्वा चढ़ावें)***

अंगपूजा

(हस्ते गंधपात्रं अक्षतान्वा गृहीत्वा)

ॐ गणेश्वराय नमः, पादौ पूजयामि। ॐ विघ्नराजाय नमः, जानुनी पूजयामि। ॐ आखुवाहनाय नमः, ऊरू पूजयामि। ॐ हेरम्बाय नमः, कटिं पूजयामि। ॐ कामारिसूनवे नमः, नाभिं पूजयामि। ॐ लम्बोदराय नमः, उदरं पूजयामि। ॐ गौरीसुताय नमः, स्तनौ पूजयामि। ॐ गणनायकाय नमः, हृदयं पूजयामि। ॐ स्थूलकण्ठाय नमः, कण्ठं पूजयामि। ॐ स्कंदाग्रजाय नमः, स्कंधौ पूजयामि। ॐ पाशहस्ताय नमः, हस्तौ पूजयामि। ॐ गजवक्त्राय नमः, वक्त्रं पूजयामि। ॐ विघ्नहर्त्रे नमः, ललाटं पूजयामि। ॐ सर्वेश्वराय नमः, शिरः पूजयामि। ॐ गणाधिपाय नमः, सर्वाङ्गं पूजयामि। *(गंधाक्षत से सभी अंगों की पूजा करें।)*

अथावरणपूजां कुर्यात् (अक्षतैः पूजयेत्)

ॐ सुमुखाय नमः। ॐ एकदन्ताय नमः। ॐ कपिलाय नमः। ॐ गजकर्णाय नमः। ॐ लम्बोदराय नमः। ॐविकटाय नमः। ॐ विघ्ननाशाय नमः। ॐ विनायकाय नमः। ॐ धूम्रकेतवे नमः। ॐ गणाध्यक्षाय नमः। ॐ भालचन्द्राय नमः। ॐ गजाननाय नमः। (दक्षिणहस्ते गन्धाक्षत-पुष्पाण्यादाय।)

**अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं समस्तावरणार्चनम्।।**

सुमुखादिसमस्तावरण देवताभ्यो नमः, गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। अनेन गणपत्यावरणदेवानां पूजनेन सिद्धि० महागणपतिः प्रीयताम्।
(अक्षत से पूजा करें)

सौभाग्यद्रव्याणि

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुञ्ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वावयुनानि विद्वान् पुमान् पुमांꣳसं परिपातु विश्वतः ॥

अबीरं आयुषो वृद्धिः गुलालं प्रीतिवर्धनम्।
सिंदूरेण समायुक्तं सौभाग्यं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० सौभाग्यद्रव्याणि समर्पयामि। ***(सौभाग्य द्रव्य चढ़ावें)***

धूप

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्वतं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व्व यं व्वयं धूर्व्वामः। देवानामसि वह्नितम ꣳ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० धूपमाघ्रापयामि। ***(धूप अर्पण करें)***

दीप

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापह ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० दीपं दर्शयामि। ***(दीप दिखावें)***

नैवेद्यम्

ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्र-प्रदातारन्तारिष ऽऊर्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च ।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० नैवेद्यं निवेदयामि। *(प्रसाद चढ़ावें)*

(मूलमंत्रेण संप्रोक्ष्य धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य ग्रासमुद्राः प्रदर्शयेत्)

ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः० नैवेद्यं निवेदयामि । पूर्वापोशनं सम०। नैवेद्य मध्ये पानीयं सम०। उत्तरापोशनं सम०। हस्तप्रक्षालनं सम०। मुखप्रक्षालनं सम०। आचमनीयं सम०। करोद्वर्तनार्थे गंधं सम०।

ताम्बूलम्

ॐ उत स्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्णं न वेरनुवाति प्रगर्द्धिनः। श्येनस्येव ध्रजतो अङ्कसं परि दधिक्राव्णः सहोर्जा तरित्रतः स्वाहा।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० ताम्बूलं समर्पयामि । *(इलायची, लौंग, सुपारी के साथ ताम्बूल अर्पण करें)*

फलम्

ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व९ हसः ।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिः भवेज्जन्मनि जन्मनि ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० फलम् समर्पयामि । *(फल अर्पण करें)*

दक्षिणा

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

ॐ यद्दत्तं यत्परादानं यत्पूर्तं याश्च दक्षिणाः ।
तदग्निर्वैश्वकर्मणः स्वर्देवेषु नो दधत् ।।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० दक्षिणां समर्पयामि । *(दक्षिणा अर्पण करें)*

(आरती करें)

आरार्तिक्यम् (ह्रीं इति प्रज्वाल्य नमः इति संपूज्य)

ॐ इद ँ हविः प्रजननम्मेऽअस्तु दशवीर ँ सर्वगण ꣳ स्वस्तये ।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि ।
अग्निः प्रजाम्बहुलाम्मे करोत्वन्नं पयो रेतोअस्मासु धत्त ।।

ॐ आ रात्रि पार्थिव ँ रजः प्रितुरप्रायि धामभिः ।
दिवः सदाꣳसि बृहती वि तिष्ठसऽ आ त्वेषं वर्तते तमः ।।

अग्निर्देव्वता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता व्वसवो देवता रुद्रा देवता ऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ।।

कर्पूरपूरेण ॐ भूर्भुवः स्वः० आरार्तिक्यं समर्पयामि ।
(आचारात् देववंदनं हस्ताभ्याम् आत्मवंदनं हस्तौ प्रक्षाल्य ।)

मंत्रपुष्पाञ्जलि

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ।।

नाना सुगन्ध पुष्पाणि ऋतुकालोद्भवानि च ।
पुष्पाञ्जलिर्मयादत्ता कर्मणः फल सिद्धये ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि । *(पुष्पाञ्जलि अर्पित करें)*

प्रदक्षिणा

ॐ नमोस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्न मिषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्ध्वाः। तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टितमेषां जम्भे दद्ध्मः।

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः ।
तेषा ७ सहस्त्रयोजनेऽवधन्वान्नि तन्मसि ।।
यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० सिद्धिबुद्धिसहित महागण० प्रदक्षिणां समर्पयामि ।
(प्रदक्षिणा करें)

विशेषार्घ्यः

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।
द्वैमातुरकृपासिन्धो षाण्मातुरग्रज प्रभो।
वरद त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद।।

अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम ।ॐ भूर्भुवः स्वः० विशेषार्घ्यं समर्पयामि
(विशेषार्घ्य के लिए फल अर्पण करें)

प्रार्थना करें

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय, गौरीसुताय गणनाथ नमोनमस्ते ।।

भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय, सर्वेश्वराय सुखदाय सुरेश्वराय ।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय, भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते ।।

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः ।
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः ।।
विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे ।
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक ।।
लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धि० महागण० प्रार्थनापूर्वक नमस्कारान् सम० ।
(हस्ते जलं गृहीत्वा) अनया पूजया सिद्धिबुद्धिसहित साङ्गः सपरिवारः महागणपतिः प्रीयतां न मम ।

इति गणपतिपूजनप्रयोगः ।

पुण्याहवाचनप्रयोगः

भूमिस्पर्शः

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री । पृथिवीं यच्छ पृथिवीन्दृꣳह पृथिवीम्मा हिꣳसीः ।।
ॐ मही द्यौः पृथिवी च नऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम् । पिपृतान्नो भरीमभिः ।।

विश्वाधारासि धरणी शेषनागोपरिस्थिता ।
उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना ।।
(भूमि का स्पर्श करें ।)

यवप्रक्षेपः

ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा । यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तꣳ राजन्पारयामसि ।।

(यव चढ़ावें)

कलशस्थापनम्

ॐआ जिघ्र कलशम्मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः । पुनरूर्जा नि वर्तस्व सा नः सहस्त्रन्धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः ।।

हेमरूप्यादिसंभूतं ताम्रजं सुदृढन्नवम् ।
कलशन्धौतकल्माषं छिद्रवर्णविवर्जितम् ।।

जलपूरणम्

ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनी स्थो व्वरुणस्य ऋतसदन्न्यसि व्वरुणस्य ऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऋतसदनमासीद ।।

जीवनं सर्वजीवानां पावनं पावनात्मनाम्।
बीजं सर्वौषधीनां च तज्जलं पूरयाम्यहम्।।
(कलश में जल छोड़ें)

गंधप्रक्षेप:

ॐ त्वाङ्गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखंडं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।
(कलश में चन्दन छोड़ें)

धान्यप्रक्षेप:

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणाय त्त्वो दानाय त्त्वा व्यानाय त्त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धान्देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि।।

धान्यौषधी मनुष्याणां जीवनं परमं स्मृतम्।
क्षिप्तं यत् कार्य सम्भूतं कलशे प्रक्षिपाम्यहम्।।
(कलश में सप्त धान्य छोड़ें)

सर्वौषधिप्रक्षेप:

ॐ या ओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगंपुरा। मनैनु बभ्रूणामह ँ शतंधामानि सप्त च।।

देवेभ्यः पूर्वतो जाता देवेभ्य स्त्रियुगं पुरा।
शतं तनुं च या बभ्रुर्जीवनं जीवनाय च।।
(कलश में सर्वौषधि डालें)

दूर्वाप्रक्षेप:

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे

प्र तनु सहस्त्रेण शतेन च ।।

दूर्वा ह्यमृत सम्पन्ना शतमूल्ला शताङ्कुरा ।
शतं पातक संहर्त्री शतमायुष्य वर्धिनी ।।
(कलश में दूर्वा छोड़ें)

पंचपल्लवप्रक्षेपः

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता । गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ।।

अश्वत्थोदुम्बरः प्लक्षः चूतन्यग्रोधपल्लवाः ।
पंचभंगा इति प्रोक्ता सर्वकर्म सुशोभना ।।
(कलश में पंच पल्लव लगावें)

पुष्प प्रक्षेपः

ॐ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः ।।

विविधं पुष्प सञ्जातं देवानां प्रीतिवर्धनम् ।
क्षिप्तं यत्कार्य सम्भूतं कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ।।
(कलश में पुष्प छोड़ें)

फल प्रक्षेपः

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ हसः ।।

पूगीफलमिदं दिव्यं पवित्रं पापनाशनम् ।
पुत्रं पौत्रादि फलदं कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ।।
(कलश में सुपारी छोड़ें)

हिरण्य प्रक्षेपः

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकआसीत् ।
स दाधार पृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदं कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ।।

(कलश में दक्षिणा छोड़ें)

सप्तमृद्प्रक्षेपः

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी ।
यच्छा नः शर्म सप्रथाः ।।

अश्वस्थानाद्गजस्थानाद् वल्मीकात्संगमाद् हृदात् ।
राजद्वाराच्च गोष्ठाच्च मृदमानीय निःक्षिपेत् ।।

(कलश में सप्तमृत्तिका छोड़ें)

पंचरत्नप्रक्षेपः

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्या न्यक्रमीत् ।
दधद्रत्नानि दाशुषे ।।

कनकं कुलिशन्नीलं पद्मरागञ्च मौक्तिकम् ।
एतानि पञ्चरत्नानि कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ।।

(कलश में पंचरत्न छोड़ें)

रक्तसूत्रवेष्टनम्

ॐ सुजातो ज्योति० । ॐ युवा सुवासाः परिवीतऽ आगात्सऽउ श्रेयान्भवति जायमानः । तन्धीरासः कवयऽ उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ।।

सूत्रं कार्पाससंभूतं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा।
येन बद्धं जगत्सर्वं वेष्टनं कलशस्य च ।।

(कलश में रक्तसूत्र लपेटें)

पूर्णपात्रस्थापनम्

ॐ पूर्णादर्विपरापत सुपूर्णा पुनरापत।
वस्नेव विक्क्रीणावहाऽइषमूर्ज ६ शतक्क्रतो।।

पिधानं सर्ववस्तूनां सर्वकार्यार्थ साधनम्।
संपूर्णः कलशो येन पात्रं (श्रीफलं) तत्कलशोपरि।।

(पूर्णपात्र या कलश के ऊपर श्रीफल रखें)

वरुणावाहन

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो व्वरुणेहवोद्ध्युरुश ६ स मा नऽआयुः प्र मोषीः।।

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गंसपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि।

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय,।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।

पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक।
पुण्याहवाचनं यावत्तावत्वं संनिधो भव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् आवाहयामि स्थापामि ।

प्रतिष्ठा

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ६ समिमं दधातु। विश्वे देवासऽ इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ।।

कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत। ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः।

पूजनम्

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। गन्धं समर्पयामि इत्यादिपञ्चोपचारैः संपूज्य तत्त्वायामीति पुष्पाञ्जलिं समर्प्य अनेन पूजनेन वरुणः प्रीयताम्।।

गङ्गा आवाहनम्

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु।।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।

कलश में देवी-देवताओं के आवाहन हेतु कलश स्पर्श करें ।

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बु समाश्रिताः।
अत्र गायित्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन् संनिधिं कुरु।।
ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकरः।।

प्रार्थना

देव दानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।

त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव:।
सांनिध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।।
नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।
ॐ पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक।
पुण्याहवाचनं यावत् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।
'ॐ अपां पतये वरुणाय नम:।'

ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नम:, प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि।
आचारात् बायें हाथ में चावल लेकर दायें हाथ से कलश के ऊपर चावल चढ़ावें।

मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव, सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमो नम:।

संपूज्य गन्धमाल्याद्यैर्ब्राह्मणान् स्वस्ति वाचयेत्।
धर्म कर्मणि मांगल्ये संग्रामेऽद्भुत दर्शने।।
पुण्याहवाचनं दैवे ब्राह्मणस्य विधीयते।
एतदेव निरोंकारं कुर्यात् क्षत्रिय वैश्ययो:।।

(यजमान घुटने टेककर कमल के सदृश अञ्जलि बनाकर उसपर जलपूर्ण कलश रखकर शिर से स्पर्श करते हुए ब्राह्मणों से आशीर्वाद की प्रार्थना करें।
(अवनिकृतजानुमंडल: कमलमुकुलसदृशमजलिं शिरस्याधाय दक्षिणेन पाणिना स्वर्णपूर्णकलशं धारयित्वा वदेत्)

ॐ त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपाऽ अदाभ्य:।
अतो धर्म्माणि धारयन्।।

दीर्घानागा नद्यो गिरय: त्रीणि विष्णुपदानि च। तेन आयु: प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घम् आयु:, अस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु।
(विप्र:) तेनायु:..........अस्तु।।
ॐ त्रीणि त आहुर्दिवि बन्धनानि त्रीण्यप्सु त्रीण्यन्त: समुद्रे। उतेव मे वरुणश्छन्त्स्यर्वन्यत्रा त आहु: परमं जनित्रम्।। (दीर्घा..अस्तु)

ॐ त्रया देवा एकादश त्रयस्त्रि ६ शाः सुराधसः। बृहस्पतिपुरोहिता देवस्य सवितुः सवे। देवा देवैरवन्तु मा।। (दीर्घा.....अस्तु)

कलश को शिर से तीन वार स्पर्श करें ।

ब्राह्मणानां हस्ते सुप्रोक्षितादिकरणम् (ऐसा बोलकर ब्राह्मणों के हाथ में जल दें)

ब्राह्मणाः **ॐ शिवा आपः सन्तु । ॐ सन्तु शिवा आपः।**
ॐ सौमनस्यमस्तु (पुष्प दें) अस्तु सौमनस्यम्।
ॐ अक्षताञ्चारिष्टंचास्तु अस्त्वक्षतमरिष्टं च।
(ब्राह्मण के हाथ में चावल दें)

यजमानः **गन्धाःपान्तु।** (ब्राह्मणों के हाथ में चन्दन दें)

ब्राह्मणाः **ॐ सौमङ्गल्यश्चास्तु। इति भवन्तो ब्रुवन्तु।**

यजमानः **पुनरक्षताः पान्तु।** (विप्रों के हाथ में पुनः अक्षत दें)

ब्राह्मणाः **आयुष्यमस्तु। इति भवन्तो ब्रुवन्तु।**

यजमानः **पुष्पाणि पान्तु।** (ब्राह्मणों के हाथ में पुष्प दें)

ब्राह्मणाः **सौश्रियमस्तु। इति भवन्तो ब्रुवन्तु।**

यजमानः **सफलताम्बूलानि पान्तु।** (ब्राह्मणों के हाथ में सुपारी के साथ पान दें)

ब्राह्मणाः **ऐश्वर्यमस्तु। इति भवन्तो ब्रुवन्तु।**

यजमानः **पूगीफलानि पान्तु।**

ब्राह्मणाः **बहुफलमस्तु। इति भवन्तो ब्रुवन्तु।**

यजमानः **दक्षिणाःपान्तु।** (श्रद्धानुसार ब्राह्मणों को दक्षिणा दें)

ब्राह्मणाः **बहुदेयं चास्तु। इति भवन्तो ब्रुवन्तु।**

यजमानः **पुनरत्रापः पान्तु।** (ब्राह्मणों के हाथ में पुनः जल दें)
दीर्घमायुः, श्रेयः शान्तिः, पुष्टिस्तुष्टिः, श्रीर्यशोविद्या-विनयोवित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चायुष्यञ्चास्तु।

ब्राह्मणाः **अस्तु।**

यजमानः यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोङ्कारमादिं कृत्वा ऋग्यजुः सामाथर्वाशीर्वचनं बहुऋषिसम्मतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

ब्राह्मणाः वाच्यताम्।

आशीर्वाद मंत्र

ॐ भद्रं कर्णेभिः० देवानांभद्रा०दीर्घायुस्त ओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्। अथो त्वन्दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा व्विरोहतात्॥ ॐ द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्र च तिष्ठत। नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत।। ॐ सविता त्त्वा सवाना ᳪ सुवतामग्निर्गृहपतीना ᳪ सोमो वनस्पतीनाम्। बृहस्पतिर्वाचऽ इन्द्रो ज्यैष्ठ्यायरुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो व्वरुणो धर्मपतीनाम्। ॐ नतद्रक्षाᳪसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमज ᳪ ह्येतत्। यो बिभर्ति दाक्षायण ᳪ हिरण्य ᳪस देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः।

ॐ उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे। उग्र ᳪ शर्म्म महिश्श्रवः।।

यजमानः व्रतजपनियमतपः स्वाध्यायक्रतुदयादमदानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्।

ब्राह्मणाः समाहितमनसः स्मः।

यजमानः प्रसीदन्तु भवन्तः।

ब्राह्मणाः प्रसन्नाः स्मः।

ॐ शान्तिरस्तु। ॐ पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु। ॐ आयुष्यमस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवं कर्मास्तु। ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ वेदसमृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु। ॐ धनधान्यसमृद्धिरस्तु। ॐ पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु।

ॐ इष्टसम्पदस्तु। ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु। ॐ यत्पापं रोगमशुभमकल्याणं तद् दूरे प्रतिहतमस्तु। ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। ॐ उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु। ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथि करण मुहूर्त नक्षत्र ग्रहलग्न सम्पदस्तु।

पात्रे उदकसेकः

ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ तिथिकरणे समुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदेवते प्रीयेताम्।

ॐ दुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगाः विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। ॐ अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम् । ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ श्री सरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्। ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती सिद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ श्री भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ श्री भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा इष्टदेवताः प्रीयन्ताम्।

दूसरे पात्र में

ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः। ॐ हताश्च परिपन्थिनः। ॐ हताश्च विघ्नकर्तारः। ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु घोराणि। ॐ शाम्यन्तु पापानि। ॐ शाम्यन्त्वीतयः । ॐ शाम्यन्तूपद्रवाः।।

पहले पात्र में

ॐ शुभानि वर्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा ओषधयः सन्तु। ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु। ॐ शिवा अतिथयः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहुतयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्।

ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्त्यो न
ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

ॐ शुक्राङ्गारकबुधबृहस्पतिशनैश्चरराहुकेतुसोमसहिता आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान पर्जन्यः प्रीयताम्। ॐ भगवान स्वामी महासेनः प्रीयताम्।

पुण्याहकालान्वाचयिष्ये वाच्यताम्

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।

ब्राह्म्यं पुण्यं महर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः ! मह्यं सकुटुंबिने महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचन-मपेक्षमाणाय मया क्रियमाणस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम् ।(एवं त्रिः)

ब्राह्मण	ॐ अस्तु पुण्याहम्।
यजमान	भो ब्राह्मणाः! मह्यं.....क्रियमाणस्य अमुककर्मणः
(दूसरी बार)	पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।
ब्राह्मण	ॐ अस्तु पुण्याहम्।
यजमान	भो ब्राह्मणाः! मह्यं.....क्रियमाणस्य अमुककर्मणः
(तीसरी बार)	पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।
ब्राह्मण	ॐ अस्तु पुण्याहम्।

ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्या

ॐ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च । प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासम यम्मे कामःसमृद्ध्यतामुपमादो नमतु।

यजमान पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्।
ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः ।।

(पहली बार) भो ब्राह्मणाः! मह्यं.....क्रियमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण ॐ अस्तु कल्याणम्।

यजमान (दूसरी बार) भो ब्राह्मणाः! मह्यं.....क्रियमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण ॐ अस्तु कल्याणम्।

यजमान (तीसरी बार) भो ब्राह्मणाः! मह्यं.....क्रियमाणस्य अमुककर्मणःकल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण ॐ अस्तु कल्याणम्।
ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम। दिवं पृथिव्याऽ अध्याऽरुहा मा विदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः ।।

यजमान ॐ सागरस्य तु यथावृद्धिः महालक्ष्यादिभिः कृता।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रुवन्तु नः।

(पहली बार) भो ब्राह्मणाः! मह्यं.....क्रियमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्।

यजमान (दूसरी बार) भो ब्राह्मणाः! मह्यं.....क्रियमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्।

यजमान (तीसरी बार) भो ब्राह्मणाः! मह्यं.....क्रियमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्।
ॐ स्वस्ति नऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

यजमान ॐ स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा।

विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः।।

(पहली बार) भो ब्राह्मणाः! मह्यं.....क्रियमाणस्य अमुककर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण ॐ आयुष्यमते स्वस्ति।

यजमान (दूसरी बार) भो ब्राह्मणाः! मह्यं.....क्रियमाणस्य अमुककर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण ॐ आयुष्यमते स्वस्ति।

यजमान (तीसरी बार) भो ब्राह्मणाः! मह्यं.....क्रियमाणस्य अमुककर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण ॐ आयुष्यमते स्वस्ति।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकम्म इषाण।।

यजमान ॐ समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका।
हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः।।

(पहली बार) भो ब्राह्मणाः! मह्यं.....क्रियमाणस्य अमुककर्मणः अस्तु श्री इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण ॐ अस्तु श्रीः।

यजमान (दूसरी बार) भो ब्राह्मणाः! मह्यं.....क्रियमाणस्य अमुककर्मणः अस्तु श्री इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण ॐ अस्तु श्रीः।

यजमान (तीसरी बार) भो ब्राह्मणाः! अमुककर्मणः अस्तु अमुककर्मणः अस्तु श्री इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण ॐ अस्तु श्रीः।

संकल्प मया कृतेऽस्मिन् पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात् महागणपतिप्रसादाच्च सर्वः परिपूर्णोऽस्तु।।

अस्तु परिपूर्णः।।

(पात्र के ऊपर यजमान अंजलि बना लेवें)

वास्तोष्पते नमस्तुभ्यं भूशय्याभिरतः प्रभो।
मद्गृहे धनधान्यादि समृद्धिं कुरु सर्वदा।।

अभिषेक

(अभिषेक के समय यजमान अपनी पत्नी को बाँयें तरफ बैठा लें ।)

अभिषेके पत्नी वामतः यजमानस्य वामभागे यजमानपत्नीम् उपवेश्य अविधुराश्चत्वारो ब्राह्मणा दूर्वाम्रपल्लवैरुदङ्मुखास्तिष्ठन्तो यजमानऽभिषिंचेयुः।।

ॐ पयः पृथिव्यां० ॐ पंचनद्यः० ॐ वरुणस्यो० ॐ पुनंतु मा०

ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभि-षिञ्चाम्यसौ।। ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।

सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्ये-नाभिषिञ्चामि।। ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिबिञ्चामि।। ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद् भद्रन्तन्नऽआ सुव। ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः। स चेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे॥ ॐ त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄँः पाहि शृणुधी गिरः। रक्षा तोकमुत त्मना।। ॐ अन्नपते० ॐ द्यौः शान्ति० ॐ यतो यतः०।।

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः।।

प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते ।
आखंडलोऽग्निर्भगवान्यमो वै नैर्ऋतिस्तथा ।।
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः ।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा ।।
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टि श्रद्धा क्रियामतिः ।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्ति कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः ।।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमबुधजीवसितार्कजाः ।
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिता ।।
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च ।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः ।।
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च ।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ।।
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः ।
एतेस्त्वामभिषिञ्चन्तु सर्वकामार्थसिद्धये ।।
भर्ग ते वरुणो राजा भर्ग सूर्यो बृहस्पतिः ।
भर्गमिन्द्रश्च वायुश्च भर्ग सप्तर्षयो दधुः ।।
यत्ते केशेषु दौर्भाग्यं सीमन्ते यश्च मूर्धनि ।
ललाटे कर्णयोरक्ष्णोरापो निघ्नन्तु ते सदा ।।
शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु ।।

(स्वस्थाने उपविश्य हस्ते जलं गृहीत्वा)

अभिषेक कर्तृकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथोत्साहं दक्षिणां दास्ये तेन श्रीकर्माधीशः प्रीयताम् ।।

(जल लेकर) **अनेन पुण्याहवाचनेन कर्मांग देवता (प्रजापतिः) प्रीयताम् ।।**

यह पढ़कर जल छोड़ दें।

श्री षोडशमातृका पूजनम्

ध्यानम् -

मेधासि देवि विदिताखिल शास्त्रसारा ।
दुर्गासि दुर्गभवसागर नौरसङ्गा ।।
श्रीः कैटभारिहृदयैक कृताधिवासा ।
गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ।।
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।

ॐ भू० वसोर्द्धारा समन्वित सगणेश गौर्यादि मातृभ्यो नमः । सकलोपचारार्थे गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ।।

ॐ समख्ये देव्या धिया संदक्षिणयोरुचक्षसा । मा मऽ आयुः प्रमोषीर्म्मोऽअहन्तव व्वीरं व्विदेय तव देवि सन्दृशि ।।

(श्री षोडशमातृका एवं सप्तघृत मातृका के नाम)

१ ॐ गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि ।
गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि, स्थापयामि ।
२ ॐ पद्मायै नमः, पद्मामावाहयामि, स्थापयामि ।
३ ॐ शच्यै नमः, शचीमावाहयामि, स्थापयामि ।
४ ॐ मेधायै नमः, मेधामावाहयामि, स्थापयामि ।
५ ॐ सावित्र्यै नमः, सावित्रीमावाहयामि, स्थापयामि ।
६ ॐ विजयायै नमः, विजयामावाहयामि, स्थापयामि ।
७ ॐ जयायै नमः, जयामावाहयामि, स्थापयामि ।
८ ॐ देवसेनायै नमः, देवसेनामावाहयामि, स्थापयामि ।
९ ॐ स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि, स्थापयामि ।
१० ॐ स्वाहायै नमः, स्वाहामावाहयामि, स्थापयामि ।

११ ॐ मातृभ्यो नमः, मातृः आवाहयामि, स्थापयामि ।
१२ ॐ लोकमातृभ्यो नमः, लोकमातृः आवाहयामि, स्थापयामि ।
१३ ॐ धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि, स्थापयामि ।
१४ ॐ पुष्ट्यै नमः, पुष्टिमावाहयामि, स्थापयामि ।
१५ ॐ तुष्ट्यै नमः, तुष्टिमावाहयामि, स्थापयामि ।
१६ ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः, आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि, स्थापयामि ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रियै नमः, श्रियमावाहयामि, स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीमावाहयामि, स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि, स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः, मेधामावाहयामि, स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः, स्वाहामावाहयामि, स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवः स्वः प्रज्ञायै नमः, प्रज्ञामावाहयामि, स्थापयामि ।
ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः, सरस्वतीमावाहयामि, स्थापयामि।

गणेशः ॐ गणानान्त्वा ० ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाय नमः गणेशम् आवाहयामि स्थापयामि ।

गौरी ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्त्स्वः ।।

पद्मा ॐ हिरण्यरूपा उषसो विरोक उभाविन्द्रा उदिथः सूर्यश्च । आ रोहतं वरुण मित्र गर्त्तं ततश्चक्षाथामदितिं दितिं च मित्रोऽसि वरुणोऽसि ।।

शची ॐ कदा चन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे । उपोपेन्नु मघवन् भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यत आदित्येभ्यस्त्वा ।।

मेधा ॐ मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः । मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा ।।

सावित्री ॐ उपयामगृहीतोऽसि सावित्रोऽसि चनोधा श्चनोधा असि चनो मयि धेहि । जिन्व यज्ञं जिन्व यज्ञपतिं भगाय देवाय त्वा सवित्रे ।।

विजया ॐ विज्ज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२उत ।अनेशन्नस्य याऽ इषव आभुरस्य निषङ्गधिः ।।

जया ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी । तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि ।।

देवसेना ॐ देवानां भद्रा०

स्वधा ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमःपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । अक्षन् पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ।

स्वाहा ॐ स्वाहा यज्ञं मनसः स्वाहोरोरन्तरिक्षात्स्वाहा द्यावापृथिवीभ्या ७ स्वाहा वातादारभे स्वाहा ।।

मातरः ॐ अदितिर्द्यौः ०

लोकमातरः ॐ पृषदश्वा ०

धृति ॐ धृष्टिरस्य पाऽग्ने अग्निमामादं जहि निष्क्रव्याद ६ सेधा देवयजं वह । ध्रुवमसि पृथिवीं दृ ६ ह ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय ।।

पुष्टि त्वष्टा तुरीपो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्धना । द्विपदा छन्द इन्द्रियमुक्षा गौर्न वयो दधुः ।।

तुष्टि ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ।

आत्मनः कुलदेवता –ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ।।

श्रीः ॐ मनसः काममाकूतिं वाचःसत्यमशीय ।पशूनाः७ रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ।।

लक्ष्मीः ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च० ।

धृति ॐ इह रतिरिह रमध्वमिह धृतिरिह स्वधृतिः स्वाहा । उपसृजन्धरुण मात्रे धरुणो मातरन्धयन् । रायस्पोषमस्मासु दीधरत् स्वाहा ।

मेधा ॐ याम्मेधान्देवगणाः पितरश्चोपासते । तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनङ्कुरु स्वाहा ।।

स्वाहा स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः । पृथिव्यै स्वाहाग्नये स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा वायवे स्वाहा । दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा ।

प्रज्ञा ॐ यत्प्रज्ञानमुत चेतो०

सरस्वती -पावकानः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्टु धियावसुः ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रियै नमः श्रियम् आ०स्था० । लक्ष्म्यै० । धृत्यै० । मेधायै० । पुष्ट्यै० । श्रद्धायै० । सरस्वत्यै० । (स्वाहायै० । प्रज्ञायै० ।) परंपरानुसार इनकी पूजा करें । ध्यायामि । आवाहयामि । आसनं सम० । पाद्यं सम० । अर्घ्यं सम० । आचमनीयं सम० । स्नानं सम० । वस्त्रम् सम० । यज्ञोपवीतं सम० । गंधं सम० । अक्षतान् सम० । पुष्पं सम० । सौभाग्यद्रव्याणि सम० । धूपं आघ्रापयामि । दीपं दर्शयामि । नैवेद्यं निवेदयामि । दक्षिणातांबूलं सम० । प्रदक्षिणां करोमि । मंत्रपुष्पयुक्त नमस्कारान् सम० ।

श्री षोडशोपचार पूजा करके आरती एवं प्रार्थना करें ।

प्रार्थनाः

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया ।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ।।
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता ।
गणेशेनाधिकाह्येतावृद्धौ पूज्याश्चतुर्दश (षोडश) ।।
श्रीः लक्ष्मी धृतिः मेधास्वाहा प्रज्ञा सरस्वती ।
मांगल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैताः घृतमातरः ।।
मुखे ते ताम्बूलं नयन युगले कज्जल कला ।
ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिक लता ।।

स्फुरत्कांची शाटी पृथुकटितटे हाटकमयी।
भजामित्वां गौरीं नगपति किशोरीमविरतम् ।।

(जल लेकर) (अनया पूजया सगणेशगौर्यादि मातरः प्रीयन्तां न मम ।)
(यह पढ़कर जल छोड़ दें)

वैश्वदेवसङ्कल्पः

वैश्वदेव प्रायश्चित एवं पुण्यफल हेतु एक पात्र में चावल भरकर दक्षिणासहित ब्राह्मण को दें ।

वैश्वदेवहवनीयघृततण्डुलसहितं सदक्षिणां पात्रमादाय अस्मिन्कर्मणि वैश्वदेवाकरणजनित प्रत्यवाय परिहारार्थं वैश्वदेवकरण जनित फलनिष्पत्त्यर्थम् इदं वैश्वदेवहवनीयद्रव्यम् अमुकगोत्रायामुक-नाम्ने ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ।। तेन "वैश्वदेवकरण जनितफलनि-ष्पत्तिर-स्तु" इति सजलं वैश्वदेवहवनीयद्रव्यपात्रं ब्राह्मणाय दद्यात् ।।

आयुष्यमंत्र जपः

यजमान हाथ जोड़कर आयु-आरोग्य की कामना करें ।

ॐ आयुष्यं वर्चस्य ꣳ रायस्पोषमौद्भिदम् । इद ꣳ हिरण्यं वर्चस्वज्जैत्रायाविशतादु माम् ।। न तद्रक्षा ꣳ सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमज ꣳ ह्येतत् । यो बिभर्ति दाक्षायण ꣳ हिरण्य ꣳ स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ।। यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्यꣳशतानीकाय सुमनस्यमानाः । तन्मऽ आ बध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ।।

**मार्कंडेय महाभाग सप्तकल्पान्तजीवन ।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहि मे मुनिपुंगव ।।
अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमान च विभीषणः ।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः ।।
क्षित्यब्वायुवियत्तेजो ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ।
मामेव हि सदा पान्तु मार्कंडेयो भवाम्यहम् ।।**

आयुष्यमान् भव / अखंडसौभाग्यवती भव ।

(ब्राह्मण आयुष्य मन्त्र का जप करें ।)

सांकल्पिकनान्दीश्राद्ध प्रयोगः

(विश्वे देवा सहित दोनों पक्षों के पितरों की तीन-२ पीढ़ियों की पूजा आशीर्वा प्राप्त हेतु मांगलिक नान्दी श्राद्ध करें)

(षट् कुशबटवः स्थाप्याः)

क्षणदानम् यवान् गृहीत्वा (विश्वेदेवस्थानीयौ द्वौ कुशबटू संस्पृश्य ॐ नान्दीमुखाःसत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवा अद्य क्रियमाणे साङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धे भवद्भ्यां क्षणौ क्रियेताम् ।। तथा प्राप्नुत भवन्तौ ।प्राप्नवाव ।।(पित्रादिस्थानीयौ द्वौ कुशबटू संस्पृश्य।) गोत्र नान्दीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः अद्य क्रियामाणे नान्दीश्राद्धे भवद्भ्यः क्षणाः क्रियन्ताम् ।।तथा प्राप्नुवन्तु भवन्तः । प्राप्नवामः।। पुनर्यवान्गृहीत्वा (पूर्ववन्मातामहादिस्थानीयौ द्वौ कुशबटू संस्पृश्य) द्वितीयगोत्रा नान्दीमुखा मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः अद्य क्रियमाणे नान्दीश्राद्धे भवद्भ्यः क्षणाः क्रियन्ताम्। तथा प्राप्नुवन्तु भवन्तः।प्राप्नवाम ।।

पाद्यम् -

नान्दीमुखाः सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवाः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ।। गोत्रा नान्दीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ।।द्वितीयगोत्रा नान्दीमुखा मातामह प्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ।।

सङ्कल्पः -

शुभ पुण्यतिथौ करिष्यमाण कर्माङ्गतया सत्यवसुसंज्ञकविश्वेदेव-पूर्वकंसाङ्कल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धं करिष्ये।।

आसनदानम् :

नान्दीमुखाः सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवाः इदं वः आसनम् ।सुखासनम्।। गोत्रा नान्दीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः इदं वः आसनम् ।। सुखासनम् ।। द्वितीयगोत्रानान्दीमुखा मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः इदं वः आसनम् । सुखासनम् ।

गन्धादिदानम् -

नान्दीमुखाः सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः इदं वो यथादत्तं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ।। गोत्रा नान्दीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः इदं वो यथादत्तं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ।। द्वितीयगोत्रा नान्दीमुखा मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः इदं वो यथादत्तं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ।।

भोजननिष्क्रयद्रव्यदानम् :

नान्दीमुखाः सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवाः युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तमन्नं वा तन्निष्क्रयीभूतं किंचिद्धिरण्यम् अमृतरूपेण वः स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ।। गोत्रा नान्दीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तमन्नं वा तन्निष्क्रयीभूतं किंचिद्धिरण्यम् अमृतरूपेण वः स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ।। द्वितीयगोत्रा नान्दीमुखा मातामहप्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः युग्मब्राह्मणभोजन-पर्याप्तमन्नं वा तन्निष्क्रयीभूतं किञ्चिद्धिरण्यम् अमृतरूपेण वः स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ।।

सक्षीरयवमुदकदानम् -

नान्दीमुखाः सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवाः प्रीयताम् । गोत्रा नान्दीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः प्रीयन्ताम् ।। द्वितीयगोत्रा नान्दीमुखा मातामहप्रमातामह वृद्धप्रमाताहाः सपत्नीकाः प्रीयन्ताम् ।।

आशिषो ग्रहणम् -

गोत्रं नोऽभिवर्द्धताम् । अभिवर्द्धतां वो गोत्रम् ।। दातारो

नोऽभिवर्द्धन्ताम् ।अभिवर्द्धन्तां वो दातारः ।।सन्ततिर्नोऽभिवर्द्धताम् । अभिवर्द्धतां वः सन्ततिः ।। श्रद्धा च नो मा व्यगमत्। मा व्यगमद् वः श्रद्धा ।। अन्नं च नो बहु भवेत् । भवतु वो बहुवन्नम् ।। बहुदेयं च नोऽस्तु ।अस्तु वो बहुदेयम् ।अतिथींश्च लभेमहि ।लभन्तां वोऽतिथयः ।। याचितारश्च नः सन्तु ।सन्तु वो याचितारः ।। एता आशिषः सत्याः सन्तु ।सन्त्वेता आशिषः सत्याः ।।

दक्षिणासङ्कल्पः -

नान्दीमुखेभ्यः सत्यवसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठासिद्ध्यर्थम् इमां द्राक्षामलक यवमूल-निष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ।।गोत्रेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः पितृपिता-महप्रपितामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा-सिद्ध्यर्थम् इमां द्राक्षामलक यवमूलनिष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ।। द्वितीयगोत्रेभ्यो नान्दीमुखेभ्यो मातामहप्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा-सिद्ध्यर्थमृइमांद्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।।

पितृस्मरणः -

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ।

पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः ।
मातामहः तत्पिता च प्रमातामहकादयः ।
एते भवन्तु मे प्रीता प्रयच्छन्तु च मंगलम् ।।

(दोनों पक्षों के पूर्वजों का नाम लेकर प्रणाम करें)

करसंपुटौ कृत्वा -

'नान्दीश्राद्धं संपन्नम्' इति ब्राह्मणान्प्रार्थयेत् ।।'सुसंपन्नम्' इति ब्राह्मणाः प्रतिवदेयुः ।।

विसर्जनम् -

ॐ वाजेवाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्राऽ अमृता ऋतज्ञाः । अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः ।। अनुव्रज्यनम् - ॐ आ मा वाजस्य प्रसवो जगम्यादेमे द्यावापृथिवी विश्वरूपे । आमा गन्तां पितरा,मातरा चा मा सोमो अमृतत्वेन गम्यात् ।।

आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु पितृणाम् ।
पात्रे शब्दं प्रकुर्वीत ततो यजमानमारभेत् ।।

मया कृतेऽस्मिन्नान्दीश्राद्धे न्यूनारिक्ता या विधिः सा उपविष्टब्राह्मणानां वचनात् श्री नान्दीमुखप्रसादाच्च सर्वः परिपूर्णोऽस्तु ।।अस्तु परिपूर्णः। अनेन साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धकर्मणा नान्दीमुखाः पितरः प्रीयन्ताम् ।। इति साङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धप्रयोगः समाप्तः ।।

आचार्यादि ऋत्विग्वरणम् -

अत्राद्य महामांगल्यप्रदे अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुक प्रवरान्वितः अमुक-शर्माऽहम् अमुकगोत्रोत्पन्नममुक प्रवरान्वितं शुक्ल यजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेय माध्यन्दिनीयशाखाध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मणमस्मिन् अमुकयागाख्ये कर्मणि दास्यमानै एभिर्वरण द्रव्यैः आचार्यात्वेन ऋत्विक् त्वामहं वृणे । वृतोऽस्मि इति ब्राह्मणः ।

यजमान द्वारा रक्षाबन्धन -

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ।।

अब यजमान आचार्य को निम्नलिखित मन्त्र से तिलक करके प्रणाम करें ।

यजमान द्वारा तिलक -

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ।

प्रार्थयेत् -

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः ।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् आचार्यो भव सुव्रत ।।
ॐ बृहस्पते अति०

ब्रह्मावरणम् -

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः ।
सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः ।।

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः ।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम ।।

ब्राह्मणा जङ्गमं तीर्थं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ।
येषां वाक्योदकेनैव शुद्धयन्ति मलिनाः जनाः ।।

अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः ।
देवध्यानरताः नित्यं प्रसन्नमनसः सदा ।।
अदुष्टभाषणाः सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः।
ममापि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि ।।
अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्चिता मया ।
सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम् ।।

पश्चात् यजमानहस्ते कंकण बंधनम् -

ॐ यदा बध्नन् दाक्षायणाहिरण्य$\frac{\circ}{\circ}$शतानीकायसुमनस्यमानाः।
तन्मऽ आबध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ।।

पत्नीहस्ते कंकण बंधनम् -

ॐ तं पत्नीभिरनु गच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः ।
नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः ।।

आचार्यकर्मः -

अत्राद्य महा मांगल्यप्रदे यजमानेन वृतोऽहम् आचार्य कर्म करिष्ये। रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहते। द्रोणे सधस्थमासदत्।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।
सर्वेषामविरोधेन होमकर्म समारभे ।

(कुश से कुंड पर पंचगव्य छाँटें और हाथ में फूल लेकर स्वर्ग से देवताओं का आवाहन करें । प्रादेश मात्र करके कुंड देवताओं का आवाहन पूजन करें ।)

पंचगव्यकरणम् -

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पि कुशोदकम् ।
यज्ञस्थलविशुद्ध्यर्थं पंचगव्यं करोम्यहम् ।।

(कांस्यपात्रे एकीकरणम्)

गायत्र्या गोमूत्रम् क्षिपेत् । ॐ मानस्तोके० गोमयं क्षिपेत् । ॐ पयः पृथिव्यां० क्षीरं क्षिपेत् । ॐ दधिक्राव्णो० दधिं क्षिपेत् । ॐ तेजोसि० आज्यं क्षिपेत् । ॐ देवस्य त्वा....हस्ताभ्याम् । कुशोदकं क्षिपेत् । ॐ आपोहिष्ठेति कुशैः मंडपं प्रोक्षयेत् । अंजलौ पुष्पाण्यादाय ॐ स्वस्तिन० त्रिवारंजपित्वा ऊर्ध्वं पश्यन् ।

ॐ देवा आयान्तु यातुधाना अपयान्तु विष्णो देवयजनं रक्ष ।

इति पुष्पाणि ऊर्ध्वं प्रक्षिप्य भूमौ प्रादेशं कुर्यात् ।।

भूमिकूर्मानन्तपूजनम् -

ॐ भूरसि० ॐ भूर्भुवः स्वः भूम्यै नमः० ॐ यस्य कुर्मो गृहे हविस्तमग्ने वर्धया त्वम् । तस्मै देवा अधि ब्रुवन्नयं च ब्रह्मणस्पतिः ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कूर्माय नमः० । ॐ स्योना पृथिवि० ॐ भूर्भुवः स्वः अनंताय० ।
ॐ भूर्भुवः स्वः भूमिकूर्मानन्तदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे० ।

कुंडस्थ देवतापूजन प्रयोगः

(आचम्य प्राणानायम्य)

संकल्पः अद्येत्यादि....शुभपुण्यतिथौ मया प्रारब्धस्य कर्मणः सांगतासद्धियर्थं अस्मिन् कुंडे कुंडस्थदेवतानां आवाहनं पूजनं तथा च पंचभूसंस्कारपूर्वकं अग्निप्रतिष्ठां करिष्ये । कुशैः कुंडसंमार्जनम् कुशोदकेन प्रोक्षणम् - ॐ आपो हि० कुंडं स्पृष्ट्वा आवाहयेत् -

आवाहयामि तत् कुंडं विश्वकर्मविनिर्मितम् ।
शरीरं यच्च ते दिव्यं अग्न्यधिष्ठानं अद्भुतम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कुंडाय नमः कुंडम् आवाहयामि स्थाप० ।

ततः प्रार्थयेत् -

ये च कुंडे स्थिता देवाः कुंडांगे याश्च देवताः ।
ऋद्धिं यच्छन्तु ते सर्वे यज्ञसिद्धिं ददन्तु नः ।।

कुंडमध्ये देवान् आवाहयेत् (अक्षतान् आदाय)

ॐ विश्वकर्मन् हविषा वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम् । तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथाऽसत् । उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा विश्वकर्मण एष ते योनिरिन्द्राय त्वा विश्वकर्मणे ।।

कुण्डमध्ये -

ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मणे नमः विश्वकर्माणम् आवा० स्थाप० ।। भो विश्वकर्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ।। ततः प्रार्थयेत् ।।

ब्रह्म वक्त्र भुजौ क्षत्रमूरू वैश्यः प्रकीर्तितः ।
पादौ यस्य तु शुद्रो हि विश्वकर्मात्मने नमः ।।
अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि दोषाः स्युः खननोद्भवाः ।
नाशय त्वखिलांस्ताँस्तु विश्वकर्मन्नमोऽस्तु ते ।।

(ततो मेखलायोनिकण्ठनाभिवास्तुदेवतानाम् आवाहनं कुर्यात् ।।)

उपरि मेखलायां श्वेतवर्णालंकृतायां - ॐ इदं विष्णुः० विष्णो यज्ञपते देव दुष्टदैत्यनिषूदन । विभो यज्ञस्य रक्षार्थं कुंडे संनिहितो भव ।। ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुं आ० स्था० । भो विष्णो इहागच्छ इह

तिष्ठ । मध्यमेखलायां रक्तवर्णालंकृतायां ।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः ।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः ॥

हंसपृष्ठसमारूढ आदिदेव जगत्पते ।
रक्षार्थं मम यज्ञस्य मेखलायां स्थिरो भव ॥

ॐ भू० ब्रह्मणे नमः ० भो ब्रह्मन् इ० ॥ अधो मेखलायां कृष्णवर्णालंकृतायां ॐ नमस्ते रुद्र० गंगाधर महादेव वृषारूढ महेश्वर । आगच्छ मम यज्ञेऽस्मिन् रक्षार्थं रक्षसां गणात् ॥ ॐ भू० रुद्राय० भो रुद्र इ० ॥ योन्यावाहनम् - ॐ क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि । मा त्वा हिꣳसिन्मा मा हिꣳसीः ॥

आगच्छ देवि कल्याणि जगदुत्पत्तिहेतुके ॥
मनोभवयुते रम्ये योनि त्वं सुस्थिरा भव ॥

जगदुत्पत्तिकायै मनोभवयुतायै योन्यै नमः योनिमावा० स्थाप० ॥ भो जगदुत्पत्तिके मनोभवयुते योनिइहागच्छ इह तिष्ठ ॥ ततः प्रार्थयेत् -

सेवन्ते महतीं योनिं देवर्षिसिद्धिमानवाः ।
चतुरशीतिलक्षाणि पन्नगाद्याः सरीसृपाः ॥
पशवः पक्षिणः सर्वे संसरन्ति यतो भुवि ।
योनिरित्येव विख्याता जगदुत्पत्ति हेतुका ॥
मनोभवयुता देवी रतिसौख्यप्रदायिनी ।
मोहयित्री सुराणाञ्च जगद्धात्रि नमोऽस्तु ते ॥
योने त्वं विश्वरूपाऽसि प्रकृतिर्विश्वधारिणी ।
कामस्था कामरूपा च विश्वयोन्यै नमो नमः ॥

कण्ठदेवतावाहनम्

ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः ।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥

कुंडस्य कंठदेशोऽयं नीलजीमूतसन्निभः ।
अस्मिन् आवाहये रुद्रं शितिकंठं कपालिनम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कंठे रुद्राय० ।।

प्रार्थयेत् -

कंठमंगलरूपेण सर्वकुंडे प्रतिष्ठितः । परितो मेखलास्त्वत्तो रचिता विश्वकर्मणा।।

नाभ्यावाहनम् -

नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेऽपचितिर्भसत् ।
आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः ।
जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः ।।

पद्माकाराऽथवा कुण्डसदृशाकृतिबिभ्रती । आधारः सर्वकुण्डानां नाभिमावाहयामि ताम् । ॐ भूर्भुवः स्वः नाभ्यै नमः नाभिम् आवा० स्थाप० ।। भो नाभे इहागच्छ इह तिष्ठ ।। ततः प्रार्थयेत् ।।

नाभे त्वं कुण्डमध्ये तु सर्वदेवैः प्रतिष्ठिता ।
अतस्त्वां पूजयामीह शुभदा सिद्धिदा भव ।।

ऋग्वेदाय०,यजुर्वेदाय०,सामवेदाय०,अर्थवेदाय नमः गंधाभिः पूजयेत। ततः कुण्डमध्ये नैर्ऋत्यकोणे वास्तुपुरुषमावाहयेत् ।।
ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवो भवानः । यत्त्वे महे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ।।

आवाहयामि देवेशं वास्तुदेवं महाबलम् ।
देवदेवं गणाध्यक्षं पातालतलवासिनम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः नैर्ऋत्यकोणे वास्तुपुरुषाय नमः, वास्तुपुरुषम् आवा० स्थाप० । भो वास्तुपुरुष इहागच्छ इह तिष्ठ ।। ततः प्रार्थयेत् ।

यस्य देहे स्थिता क्षोणी ब्रह्माण्डं विश्वमङ्गलम् ।
व्यापिनं भीमरूपञ्च सुरूपं विश्वरूपिणम् ।।
पितामहसुतं मुख्यं वन्दे वास्तोष्पतिं प्रभुम् ।।
वास्तुपुरुष देवेश सर्वविघ्नहरो भव ।
शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे ।।

एवं कुण्डस्थितान् सर्वान्देवानावाह्यैकतन्त्रेण प्रतिष्ठां कृत्वा पूजयेत् ।

हस्तेऽक्षतानादाय । ॐ मनोजूतिर्जु० । ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मादि-वास्तुपुरुषान्ताः सर्वे कुण्डस्थदेवाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत ।। ततो गन्धाक्षतपुष्पाण्यादाय ।। ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मादिवास्तु-पुरुषान्तेभ्यः कुण्डस्थ देवेभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि सम० ।। इति सम्पूज्य । एकस्मिन्पात्रे बलिदानार्थं दध्योदनं कुण्डाद्बहिः संस्थाप्य बलिदानं कुर्यात् । (हस्ते जलं गृहीत्वा)
ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्तेभ्यः कुण्डस्थदेवेभ्यो नमः । यथाशक्ति अमुं दध्योदनबलिं सम० ।। पुनर्जलं गृहीत्वा । अनेन यथाशक्ति विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्तानां कुण्डस्थ देवानां पूजनेन बलिदानेन च विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्ताः सर्वे कुण्डस्थदेवाः प्रीयन्ताम् न मम ।

अथ पञ्चभूसंस्कारपूर्वकाग्निप्रतिष्ठापनप्रयोगः

(पंचभू संस्कारपूर्वक अग्नि का स्थापन-पूजन करें)

आचार्यः कश्चिद्विप्रो वा यजमानानुज्ञया हस्ते जलं गृहीत्वा–अस्मिन्कुण्डे (यजमानानुज्ञया) पञ्चभूसंस्कारपूर्वकम् अग्निप्रतिष्ठां करिष्ये । इति संकल्प्य दक्षिणहस्ते दर्भपुञ्जं गृहीत्वोत्थाय दक्षिणत आरभ्योदक्संस्थं पश्चिमतः प्रागन्तं त्रिवारं परिसमूहनं कुर्यात् । तद्यथा । दर्भैः परिसमूह्य परिसमूह्य परिसमूह्य । एवं परिसमूहनं विधाय कुण्डाद्बहिः पूर्वस्या-मीशान्यां वा दर्भत्यागं कुर्यात् । ततो दक्षिणहस्तेन गोमयमादाय पूर्ववत् दक्षिणत आरभ्योदक्संस्थं पश्चिमतः प्रागन्तं गोमयेनोपलिंपेत् ।। तद्यथा । गोमयेन उपलिप्य उपलिप्य उपलिप्य । एवं त्रिवारम् उपलेपनं कृत्वा हस्तं प्रक्षाल्य दक्षिणहस्तेन स्त्रुवमादाय पूर्ववद्दक्षिणत आरभ्योदक्संस्थं पश्चिमतः प्रागन्तं स्त्रुवमूलेन त्रिरुल्लेखनं कुर्यात् ।। तद्यथा । स्त्रुवमूलेन उल्लिख्य उल्लिख्य उल्लिख्य । एवं त्रिवारमुल्लेखनं कृत्वाऽनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां पूर्ववत्कुण्डतःपांसूनामुद्धरणंविदध्यात् । तद्यथा । अनामिकाङ्गुष्ठाभ्याम् उद्धृत्य उद्धृत्य उद्धृत्य । एवं त्रिवारं पांसूनामुद्धरणं कृत्वा तानु

प्राच्यांक्षिप्त्वा पूर्ववत् न्युब्जपाणिना जलेन त्रिवारम् अभ्युक्षणं कुर्यात् ।। तद्यथा । उदकेन अभ्युक्ष्य अभ्युक्ष्य अभ्युक्ष्य । ततोऽग्निं स्थापयेत्। बहु-पशोर्वैश्यस्य गृहात् श्रोत्रियागारात् सूर्यकान्तसम्भूतात् स्वकीयगृहाद्वा सुवासिन्या स्त्रिया आनीतं निर्धूमम् अन्यताम्रादिपात्रेणाच्छादितम् अग्निं कुण्डस्य आग्नेय्यां दिशि निधाय आच्छादितं पात्रम् उद्घाट्य "हुं फट्" इति क्रव्यादाशम् अग्निं नैर्ऋत्यां दिशि परित्यज्य अग्निं कुण्डस्य उपरि त्रिवारं भ्रामयित्वा । ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे । देवाँ२ आ सादयादिह ।। मन्त्रं पठन् कुण्डे स्वात्माभिमुखं शतमङ्गलनामानम् अग्निं स्थापयेत् ।। ततोऽग्न्यानीतपात्रे साक्षतोदकं निषिच्य तत्र शिष्टाचारात्किञ्चिद्यथा शक्ति हिरण्यं रौप्यद्रव्यं वा निक्षिप्य तत् द्रव्यं यजमानपत्न्यै दद्यात् । ततोऽग्नौ आवाहनादिमुद्रां प्रदर्शयेत् । भो अग्ने त्वम् आवाहितो भव । भो अग्ने त्वं संस्थापितो भव । भो अग्ने त्वं सन्निहितो भव । भो अग्ने त्वं संन्निरुद्धो भव । भो अग्ने त्वं सकलीकृतो भव ।। भो अग्ने त्वम् अवगुण्ठितो भव । भो अग्ने त्वम् अमृतीकृतो भव । भो अग्ने त्वं परमीकृतो भव । इति ताः ताः मुद्राः प्रदर्श्य । अग्निम् इन्धनप्रक्षेपण प्रज्वलितं कृत्वा करसम्पुटौ विधाय अग्निध्यानं कुर्यात् ।

ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासोऽ अस्य । त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां२ आ विवेश ।।

रुद्रतेजः समुद्भूतं द्विमूर्धानं द्विनासिकम् ।
षण्णेत्रं च चतुःश्रोत्रं त्रिपादं सप्तहस्तकम् ।।१।।
याम्यभागे चतुर्हस्तं सव्यभागे त्रिहस्तकम् ।
स्रुवं स्रुचञ्च शक्तिञ्च ह्यक्षमालाञ्च दक्षिणे ।।२।।
तोमरं व्यजनं चैव घृतपात्रञ्च वामके ।
बिभ्रतं सप्तभिर्हस्तैर्द्विमुखं सप्तजिह्वकम् ।।३।।
याम्यायने चतुर्जिह्वं त्रिजिह्वं चोत्तरे मुखम् ।

द्वादशकोटिमूर्त्याख्यं द्विपञ्चाशत्कलायुतम् ।।४।।
आत्माभिमुखमासीनं ध्यायेच्चैवं हुताशनम् ।
गोत्रमग्नेस्तु शाण्डिल्यं शाण्डिल्यासितदेवलाः ।।५।।
त्रयोऽमी प्रवरा माता त्वरणी वरुणः पिता ।
रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासनस्थितम् ।।६।।
स्वाहास्वधावषट्कारैरङ्कितं मेषवाहनम् ।
शतमङ्गलनामानं वह्निमावाहयाम्यहम् ।।७।।
त्वं मुखं सर्वदेवानां सप्तार्चिरमितद्युते ।
आगच्छभगवन्नग्ने कुण्डेऽस्मिन्सन्निधो भव ।।८।।

भो वैश्वानर शाण्डिल्यगोत्र शाण्डिल्यासितदेवलेतित्रिप्रवरान्वित भूमिमातः वरुणपितः ललाटजिह्वा मेषध्वज प्राङ्मुख मम सम्मुखो भव ।। इति ध्यात्वा हस्तेऽक्षतान् गृहीत्वाऽवाहयेत् । तद्यथा । ॐ मनोजूतिर्जु० ।। १।। ॐ शतमङ्गलनामाग्ने सुप्रतिष्ठतो वरदो भव। ततो गन्धाक्षतपुष्पाण्यादाय पूजनं कुर्यात् । ॐ भूर्भुवः स्वः शतमङ्गलनाम्ने वैश्वानराय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समः। इति कुण्डस्य नैर्ऋत्यकोणे मध्ये वा अग्निं सम्पूज्य प्रार्थयेत् –

अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् ।
हिरण्यवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम् ।।

इति अग्निप्रतिष्ठापनम् ।।

नवग्रहादिस्थापनपूजन प्रयोग

अब बायें हाथ में अक्षत लेकर नीचे लिखे मन्त्र बोलते हुए उपरिलिखित क्रम से दाहिने हाथ से अक्षत छोड़कर ग्रहों का आवाहन एवं स्थापन करें ।

१- सूर्य (मध्यम में गोलाकार, लाल)

सूर्य का आवाहन (लाल अक्षत-पुष्प लेकर) -

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्श्यन् ।।

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोस्मि दिवाकरम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ सूर्याय नमः, श्रीसूर्यमावाहयामि, स्थापयामि ।

२- चन्द्र (अग्निकोण में अर्धचन्द्र, श्वेत)

चन्द्र का आवाहन (श्वेत अक्षत-पुष्प से)

ॐ इमं देवा असपत्नꣳ सुवध्वं महते क्षत्राय
महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ।
इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोऽमी
राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳ राजा ।।

दधिशङ्ख तुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुटभूषणम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम ! इहागच्छ,इह तिष्ठ ॐ सोमाय नमः, सोममावाहयामि, स्थापयामि ।

३- मंगल (दक्षिण में त्रिकोण, लाल)

मङ्गल का आवाहन (लाल फूल और अक्षत लेकर)

ॐ अग्निमूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽ अयम् ।
अपाꣳ रेताꣳसि जिन्वति ।।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिदेशोद्भव भारद्वाजगोत्र रक्तवर्ण भो भौम ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ भौमाय नमः, भौममावाहयामि, स्थापयामि ।।

४- बुध (ईशानकोण में हरा, बाणाकार)

बुध का आवाहन (पीले, हरे अक्षत-पुष्प लेकर)

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ँ सृजेथामयञ्च । अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ।।

**प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ।।**

ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयगोत्र पीतवर्ण भो बुध ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ बुधाय नमः, बुधमावाहयामि, स्थापयामि ।

५- बृहस्पति (उत्तर में पीला, चतुष्कोण)

बृहस्पति का आवाहन (पीले अक्षत पुष्प से)

ॐ बृहस्पते अति यदर्योऽअर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम्।।

**देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसंनिभम् ।
बुद्धि भूतं त्रिलोकेशं तन्नमामि बृहस्पतिम्।।**

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो गुरो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ बृहस्पतये नमः, बृहस्पतिमावाहयामि, स्थापयामि।

६- शुक्र (पूर्व में श्वेत, पंचकोण)

शुक्र का आवाहन (श्वेत अक्षत-पुष्प से)

ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः । ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ँ शुक्रमन्धस ऽ इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ।।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ शुक्राय नमः, शुक्रमावाहयामि, स्थापयामि !

७- शनि (पश्चिम में धनुषाकार)

शनि का आवाहन (काले अक्षत-पुष्प से)

**ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये ।
शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः ।।**

**नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्डसम्भूतं तन्नमामि शनैश्चरम् ।।**

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ शनैश्चराय नमः, शनैश्चरमावाहयामि, स्थापयामि ।

८- राहु (नैर्ऋत्य कोण में सूर्पाकार)

राहु का आवाहन (काले अक्षत-पुष्प से)

ॐ कया नश्चित्रऽ आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।।

**अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य विमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।**

ॐ भूर्भुवः स्वः राठिपुरोद्भव पैठीनगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ राहवे नमः, राहुमावाहयामि, स्थापयामि।

९- केतु (वायव्य कोण में कृष्ण ध्वजाकार)

केतु का आवाहन (धूमिल - अक्षत पुष्प लेकर)

ॐ केतुं कृण्वन्केतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः ।।

**पलाशपुष्पसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।**

ॐ भूर्भुव: स्व: अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनी गोत्र धूम्रवर्ण भो केतो! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ केतवे नमः केतुमावाहयामि स्थापयामि।

अधिदेवता और प्रत्यधिदेवता का स्थापन

नवग्रहों के साथ अधिदेवता, प्रत्यधि देवता आदि की भी पूजा की जाती है। अधिदेवताओं को ग्रहों के दाहिने भाग में और प्रत्यधिदेवताओं को बायें भाग में स्थापित करना चाहिए।

अधिदेवता स्थापनम्

सूर्यदक्षिणपार्श्वे

ॐ त्र्यंम्बकँ यजामहे०

ह्रीं मृत्युञ्जय महादेव त्राहि मां शरणागतम्।
जन्ममृत्यु जराव्याधि पीडितं कर्मबंधनैः।।

ॐ भू० ईश्वराय नमः ईश्वरम् आ० स्था० सोमदक्षिणपार्श्वे-ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन् निषाणामुंम इषाण सर्वलोकम्म इषाण।।

हिमाचलसुतां देवीं शंकरप्राणवल्लभाम्।
उमां सौभाग्यदात्रीं च वन्देऽहं जगदम्बिकाम्।।

ॐ भू० उमायै नमः । उमाम् आवाहयामि, स्थापयामि।

भौमदक्षिणपार्श्वे

ॐ यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्यं महि जातन्तेऽअर्वन्।।

महादेवांश संभूतं कृत्तिकातनयं तथा।
सेनानीं देवतानां च नमामि स्कन्दमद्भुतम्।।

ॐ भू० स्कन्दाय नमः । स्कन्दम् आवाहयामि स्थापयामि।

बुधदक्षिणपार्श्वे

ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णो-

ध्रुवोसि । वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।।

सृष्टिसंरक्षितारं च लक्ष्मीनाथं वरं विभुम् ।
वैकुंठवासिनं वंदे विष्णुं जिष्णुं परं प्रभुम् ।।

ॐ भू० विष्णवे नमः विष्णुम् आ०स्था० ।

गुरुदक्षिणपार्श्वे

ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर-इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामेनिकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ।।

चतुर्मुखं चतुर्बाहुं सृष्टेः उत्पत्तिकारकम् ।
सावित्री स्वामिनं देवं ब्रह्माणं प्रणमाम्यहम् ।।

ॐ भू० ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणम् आ०स्था० ।

शुक्रदक्षिणपार्श्वे

ॐ सजोषाऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूँ १ रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः।।

स्वर्गाधिपं शचीनाथं देवानां प्रभुमीश्वरम्।
त्रैलोक्याधिपतिं वन्दे देवेन्द्रं लोकपालकम्।।

ॐ भू० इन्द्राय नमः इन्द्रम् आ०स्था० ।

शनिदक्षिणपार्श्वे

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ।।

धर्माधर्मविवेक्तारं पुण्यपापफलप्रदम् ।
सर्वलोक नियन्तारं वंदे वैवस्वतं यमम् ।।

ॐ भू० यमाय नमः, यमम् आ०स्था० ।

राहुदक्षिणपार्श्वे

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि ।
समापो अद्भि रग्मत समोषधीभिरोषधीः ।।
कालं कलयतां नाथं सर्वकाल स्वरूपिणम् ।
अद्भुतं भगवद्रूपं नमाम्यहमगोचरम् ।।

ॐ भू० कालाय नमः, कालम् आ०स्था० ।

केतुदक्षिणपार्श्वे

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय ।
द्रष्टारं सर्वलोकानां सदसत्कर्मणां सदा ।
मंत्रिणं यमराजस्य चित्रगुप्तं नमाम्यहम् ।।

ॐ भू० चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तम् आ०स्था० ।

प्रत्यधिदेवता स्थापनम्

सूर्यवामपार्श्वे

ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे । देवाँ२ आसादयादिह ।।
ॐ चतुः श्रृंगं त्रिपादं च द्विशीर्ष सप्तहस्तकम् ।
वरुण-अरणिसंजातं वंदेऽग्निं मेषवाहनम् ।।

ॐ भू० अग्नये नमः । अग्निम् आ०स्था० ।

सोमवामपार्श्वे

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्तानऽ ऊर्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे ।।
सर्वेषां जीवनोपाया यादसां पतयस्तथा ।
पावनाः सर्वलोकानां शुद्धापः प्रणमाम्यहम् ।।

ॐ भू० अद्भ्यो नमः अपः आ०स्था० ।

भौमवामपार्श्वे

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः ।।

वराहेणोद्धृतां देवीं सर्व संधारणक्षमाम् ।
पृथुना संस्कृतां सौम्यां धरां वन्दे वसुप्रदाम् ।।

ॐ भू० पृथिव्यै नमः, पृथिवीम् आ० स्था० ।

बुधवामपार्श्वे

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा ।।

सर्वत्र व्यापकं देवं प्रभुं लोकनमस्कृतम् ।
सर्वकल्याणकर्तारं वन्दे नारायणं विभुम् ।।

ॐ भू० विष्णवे नमः, विष्णुम् आ० स्था० ।

गुरुवामपार्श्वे

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवे सुहवꣳशूरमिन्द्रम् ।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ।।
कश्यपादिति संभूतं सहस्राक्षं पुरन्दरम् ।
जयन्तपितरं वंदे देवेन्द्रं शतयाजिनम् ।।

ॐ भू० इन्द्राय नमः, इन्द्रम् आ० स्था० ।

शुक्रवामपार्श्वे

ॐ अदित्यै रास्नाऽसीन्द्राण्या उष्णीषः । पूषाऽसि घर्माय दीष्व ।।
इन्द्रपत्नीं सतीं देवीं सद्गुणालंकृतां सदा ।
देवांगनार्चितां शुद्धां इन्द्राणीं प्रणमाम्यहम् ।।

ॐ भू० इन्द्राण्यै नमः इन्द्राणीम् आ० स्था० ।

शनि वामपार्श्वे

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय ꣳस्याम पतयो रयीणाम् ।।
प्रजापति गणानां यो ह्यधिष्ठाता निरन्तरम् ।
वन्दे प्रजापतिं तं तु प्रजानां पतिम् अद्भुतम् ।।

ॐ भू० प्रजापतये नमः । प्रजापतिम् आ० स्था० ।

राहुवामपार्श्वे

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।

महाफणाधरान् नित्यं पातालतलवासिनः।
सर्वलोकहितार्थाय सर्पान् वन्दे शिवाय नमः।।

ॐ भू० सर्पेभ्यो नमः । सर्पान् आ० स्था० ।

केतुवामपार्श्वे

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः ।
सबुध्न्याऽ उपमाऽ अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ।।

विष्णोर्वरप्रदानेन तपः कर्तारमद्भुतम् ।
कर्म कर्तुं जगत् सृष्टेः ब्रह्माणं तं नमाम्यहम् ।।

ॐ भू० ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणम् आ० स्था० ।

पंचलोकपाल स्थापनम्

राहोः उत्तरे :-

ॐ गणानान्त्वा०

पार्वतीशिव सत्पुत्रं गणानां पतिमीश्वरम् ।
सर्वेषां विघ्नहर्तारं गणेशं तं नमाम्यहम् ।।

ॐ भू० गणपतये नमः, गणपतिम् आ० स्था० ।

शने उत्तरतः -

ॐ अम्बे ऽ अम्बिकेम्बालिके न मा नयति कश्चन ।
स सस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनीम् ।।

जगत्कल्याण संकर्त्री दुष्टदैत्यविनाशिनीम् ।
सर्वेषां मातरं नित्यं दुर्गादेवीं नमाम्यहम् ।।

ॐ भू० दुर्गायै नमः, दुर्गाम् आ० स्था० ।

रवेः उत्तरतः -

ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरा गहि । नियुत्वान्त्सोम पीतये ।।

अनेकरूपभेदेन प्राणिनां जीवनं परम् ।
सर्वत्र संचरन्तं तं वायुं वन्दे ह्यरूपकम् ।।

ॐ भू० वायवे नमः, वायुम् आ० स्था० ।

राहोः दक्षिणे -

ॐ घृतंघृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा । दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ।।

नीरूपं निर्विकारं च सर्वत्र व्यापकं सदा ।
ब्रह्मस्वरूपमज्ञेशमाकाशं प्रणमाम्यहम् ।।

ॐ भू० आकाशाय नमः आकाशम् आ० स्था ।

केतोः दक्षिणे -

ॐ या वांकशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती । तया यज्ञं मिमिक्षतम् ।।

अश्विन्यश्च स्वरूपाक्त संज्ञा सूर्यसुतौ परौ ।
देवानां भिषजौ वन्दे ह्यश्विनौ युग्मरूपकौ ।।

ॐ भू० अश्विभ्यां नमः । अश्विनौ आ० स्था० ।

गुरोः उत्तरे -

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽ एतारमग्नेः । एमेनमवृधन्नमृताऽ अमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः ।।

क्षेत्रपालं गणाधीशं चत्वराधिष्ठितं सदा ।
पूजा सौख्यप्रदं नित्यं क्षेत्रपालं नमाम्यहम् ।।

ॐ भू० क्षेत्रपालाय नमः । क्षेत्रपालम् आ० स्था० ।

तदुत्तरतः

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वावेशो ऽ अनमीवो भवानः । यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ।।

गृहेशं शिवकर्तारं गृहे स्थित्वा निरंतरम् ।
धनधान्यप्रदातारं वन्दे वास्तोष्पतिं मुदा ।।

ॐ भू० वास्तोष्पतये नमः । वास्तोष्पतिम् आ० स्था० ।

दशदिक्पाल स्थापनम्

मंडलाद्बहिः पूर्वे – ॐ त्रातारमिन्द्र०

वज्रायुधं देवदेवं पूर्वदिक्पालकं सदा ।
अनेकयज्ञकर्तारं इन्द्रं वंदे सुरेश्वरम् ।।

ॐ भू० इन्द्राय नमः । इन्द्रम् आ० स्था० मंडलाद्बहिः आग्नेय्याम्-

ॐ त्वन्नोऽअग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य ।
त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेष ँ रक्षमाणस्तवव्रते ।।

आग्नेयदिक्प्रभुं दीप्तं शक्तिप्रहरणं परम् ।
ज्वालाव्याप्त तनुं वंदे ह्यग्निलोकशुभं करम् ।।

ॐ भू० अग्नये नमः । अग्निम् आ० स्था० ।

मंडलाद् बहिः दक्षिणे –

ॐ यमाय त्वा०

सर्वप्राणि नियन्तारं याम्य दिक्पतिमीश्वरम् ।
महादण्डधरं देवं यमं तं प्रणमाम्यहम् ।।

ॐ भू० यमाय नमः । यमम् आ० स्था० ।

मंडलाद् बहिः नैर्ऋत्याम् –

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्ये त्या मन्विहि तस्करस्य ।
अन्यमस्मदिच्छ सा त ऽ इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ।।

राक्षसाधिपतिं शूरं नैर्ऋत्याधीशमीश्वरम् ।
खड्गप्रहरणं वंदे निर्ऋतिं तुभ्यमस्तु ।।
राक्षसाधिपतिं शूरं नैर्ऋत्याधीशमीश्वरम् ।
खड्गप्रहरणं वंदे निर्ऋतिं लोकरक्षकम् ।।

ॐ भू० निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिम् आ० स्था० ।

मंडलाद् बहिः पश्चिमे -

ॐ तत्वायामि०

पाशायुधधरं देवं प्रतीची दिक्प्रपालकम् ।
सर्वेषां जीवनं वन्दे वरुणं यादसां पतिम् ।।

ॐ भू० वरुणाय नमः। वरुणम् आ० स्था०।

मंडलाद् बहिः वायव्याम् -

ॐ आनोः नियुद्धिः शतिनीभिरध्वर ꣳ सहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम् । वायोऽ अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।।

इन्द्रकृतानेकरूपं दितिसंभूतमद्भुतम् ।
वायव्यदिक्प्रभूं वंदे वायुमंकुशधारिणम् ।।

ॐ भू० वायवे नमः। वायुम् आ० स्था० ।

मंडलाद् बहिः उत्तरे -

ॐ वय ꣳ सोम व्रते तवमनस्तनषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि ।।

यक्षराजं धनाध्यक्षं उदीची दिक्पतिं प्रभुम् ।
लोकपालं अहं वंदे कुबेरं सुगदाधरम् ।।

ॐ भू० सोमाय नमः, सोमम् आ० स्था० ।

मंडलाद् बहिः ईशान्याम् -

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषा नो यथा वेद सामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ।।

ऐशान्यधिपतिं देवं सर्वदेव सुसेवितम् ।
सर्वेश्वरेश्वरं वंदे शूलधारिणमीश्वरम् ।

ॐ भू० ईशानाय नमः। ईशानम् आ० स्था० ।

मंडलाद् बहिः पूर्वेशानयोः मध्ये -

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्र हत्ये भरहूतौ सजोषाः । यः श ꣳ सतेस्तुवते धायि पज्र ऽ इन्द्रज्येष्ठा ऽ अस्माँ २ अवन्तु देवाः ।।

ऊर्ध्व दिक्पालकं नित्यं लोकसृष्टिविधायकम् ।
पितामहं प्रभुं देवं ब्रह्माणं प्रणमाम्यहम् ।।

ॐ भू० ब्रह्मणे नमः । ब्रह्माणम् आ० स्था०

पश्चिम नैर्ऋत्ययोः मध्ये –

ॐ स्योना पृथिवी०

सर्वकल्याण कर्तारं फणामंडल मंडितम् ।
अधो दिक्पालकं दिव्यं ह्यनन्तं प्रणमाम्यहम् ।।

ॐ भू० अनंताय नमः । अनन्तम् आ० स्था० ।

ॐ भू० सूर्यादि नवग्रहमंडल देवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवत ।

ईशान्यां कलशोपरि रुद्रप्रतिमायां –

ॐ महारुद्राय नमः महारुद्रम् आ० स्था० ।

ॐ असंख्याता सहस्त्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम् ।
तेषा ঌ सहस्त्रयोजनेवधन्वानि तन्मसि ।।

(ग्रहपूजा शीघ्र सिद्धिदात्री है । ग्रहहोम भी नियमानुसार करें)

ध्यानम् –

ॐ ग्रहा ऊर्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम् । तेषां विशिप्रियाणां वोऽहमिषमूर्ज ঌ समग्रभमुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृहणाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ।

आदित्यं च विधुं च भूमितनयं चंद्रात्मजं सद्गुरुम् ।
देवानां तु बृहस्पतिं त्वथ भृगुं दैत्याधिपानां गुरुम् ।
छायापुत्रशनिं च वक्रगतिगं राहुं च दैत्याधिपं ।
केतुं सर्वजनार्तिहान् तु नितरां वंदे नवैतान् ग्रहान् ।।
नवग्रहा अधिदेवैः समैताः परिवृताः प्रत्यधिदेवताभिः ।
सलोकपाला सह दिक्पतिभिः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ।।

(हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर नाम मन्त्रों को पढ़ते हुए नियत स्थानों पर अधिदेवताओं के आवाहन-स्थापन पूर्वक अक्षत-पुष्पों को छोड़ता जाय ।)

ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याद्यावाहितग्रहमण्डलदेवताभ्यो नमः इत्यनेन षोडशोपचारैः पूजयेत् ।। ॐ महारुद्राय नमः । नमस्कारः ।

ॐ आवाहितसूर्यादिनवग्रहेभ्यो देवेभ्यो नमः ।

इस नाम – मन्त्र से पूजन करने के बाद हाथ जोड़कर निम्नलिखित प्रार्थना करें।

प्रार्थना

ॐ ग्रहा ऊर्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम् । तेषां विशिप्रियाणां वोहमिषमूर्ज ँ् समग्रभमुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृहणाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ।।

ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च । गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ।।

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः ।
सद्बुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः ।।
राहुर्बाहुबलं करोतु विपुलं केतुः कुलस्योन्नतिं ।
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु भवतां सर्वे प्रसन्ना ग्रहाः ।।

इसके बाद निम्नलिखित वाक्य का उच्चारण करते हुए नवग्रहमण्डल पर अक्षत छोड़ दें और नमस्कार करें ।

निवेदन और नमस्कार

'अनया पूजया सूर्यादिनवग्रहाः प्रीयन्तां न मम'

आहुति करते समय नमः के स्थान पर स्वाहा शब्द सर्वत्र प्रयोग करें ।

अथ कुशकण्डिका प्रारंभः ।

अग्नेर्दक्षिणतः ब्रह्मासनम् । उत्तरतः प्रणीतासनम् । वायव्यां द्वितीयमासनम् । दक्षिणे तत्र ब्रह्मोपवेशनम् । यावत् कर्म समाप्यते तावत् त्वं ब्रह्मा भव । भवामि इति प्रतिवचनम् । ब्रह्मानुज्ञातः उत्तरे ***प्रणीताप्रणयनम् ।*** ब्रह्मन् अपः प्रणेश्यामि। ॐ प्रणय । इति ब्रह्मानुज्ञात, वामकरेण प्रणीतां संगृह्य दक्षिणकरेण जलं प्रपूर्य भूमौ वायव्यासने निधाय आलभ्य उत्तरतोऽग्नेः स्थापयेत् ।

बहिप्रदक्षिणमग्नेः परिस्तरणम् -

तच्च त्रिभिः त्रिभिः दर्भैः एकमुष्ट्या वा तच्च प्राक् उदगग्रै दक्षिणतः प्रागग्रैः । प्रत्यक् उदग् अग्रैः उत्तरतः प्राग् अग्रैः ।

अर्थवत् पात्रासादनम् -

पवित्रच्छेदना दर्भाः त्रयः । पवित्रे द्वे । प्रोक्षणीपात्रम् । आज्यस्थाली । चरुस्थाली । सम्मार्जनकुशाः पञ्च । उपयमनकुशाः सप्त पंच । समिधस्तिस्त्रः । स्त्रुक् । स्त्रुवः । आज्यम् । तण्डुलाः । पूर्णपात्रम् । उपकल्पनीयानि द्रव्याणि । दक्षिणा वरो वा ।

पवित्रकरणम् -

द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय द्वयोर्मूलेन द्वौ कुशौ प्रदक्षिणीकृत्य त्रयाणां मूलाग्राणि एकीकृत्य अनामिकाङ्गुष्ठाभ्याम् द्वयोरग्रं छेदयेत्। द्वे ग्राह्ये। त्रीणि अन्यच्च उत्तरतः क्षिपेत् । प्रोक्षणीपात्रे प्रणीतोदकमासिच्य पात्रान्तरेण चतुर्वारं जलं प्रपूर्य वामकरे पवित्राग्र दक्षिणे पवित्रयोर्मूलं धृत्वा मध्यतः पवित्राभ्यां त्रिरुत्पवनं प्रोक्षणीपात्रजलस्य । प्रोक्षणी पात्रस्य सव्यहस्ते करणम्। दक्षिणहस्तं उत्तानं कृत्वा मध्यमाना-मिकांगुल्योः मध्यपर्वाभ्यां अपां त्रिरुद्दिंगनम् । प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी-प्रोक्षणम् । प्रोक्षण्युदकेन आज्यस्थाल्याः प्रोक्षणम् । प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी-प्रोक्षणम्। प्रोक्षण्युदकेन आज्यस्थाल्याः प्रोक्षणम् । चरु स्थाल्या प्रोक्षणम् । सम्मार्जनकुशानां प्रोक्षणम् । उपयमनकुशानां प्रोक्ष-णम् । समिधां प्रोक्षणम् । स्त्रुवस्य प्रोक्षणम् । स्त्रुच प्रोक्षणम् । आज्यस्य

प्रोक्षणम् ।तंडुलानां प्रोक्षणम् ।पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम् ।प्रणीताग्न्योर्मध्ये असञ्चरदेशे प्रोक्षण्याः निधानम्। आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः। चरुस्थाल्यां तण्डुलप्रक्षेपः। तस्य त्रिः प्रक्षालनम् । चरुपात्रे प्रणीतोदकमासिंच्य दक्षिणतः ब्रह्मणा आज्याधिश्रयणं मध्ये चरोरधिश्रयणं आचार्येण युगपत् । ज्वलितोल्मुकेन उभयोः पर्यग्निकरणम्। इतरथावृत्तिः।अर्द्धश्रिते चरौ स्रूवस्य प्रतपनम् । सम्मार्गकुशैः सम्मार्जनम् । अग्रैः अग्रम् । मूलैः मूलम् । प्रणीतोदकेन अभ्युक्षणम् । पुनः प्रतपनम् । देशे निधानम् । आज्योद्वासनम् । चरोरुद्वासनम् । ततो वामकरे पवित्राग्रे दक्षिणे पवित्रयोर्मूले धृत्वा मध्यतः पवित्राभ्याम् आज्योत्पवनम् । आज्यावेक्षणम् । अपद्रव्य निरसनम् ।प्रोक्षण्या प्रत्युत्पवनम् । *उपयमनकुशान् वाम-हस्तेनादाय* तिष्ठन् समिधोभ्याधाय । प्रोक्षण्यु-दकशेषेण सपवित्रहस्तेन अग्नेः ईशानकोणादारभ्य ईशानकोणपर्यंतं प्रदक्षिणवत् पर्युक्षणम् । हस्तस्य इतरथावृत्तिः ।पवित्रयोः प्रणीतायां निधानम् ।दक्षिणजान्वाच्य जुहोति। तत्र आघारौ आज्यभागौ च ब्रह्मणा अन्वारब्धः स्रुवेण जुहुयात् । प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा ॐ प्रजा-पतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम। ॐ इन्द्राय स्वाहा इदं इन्द्राय न मम। इत्याघारौ । ॐ अग्नये स्वाहा इदं अग्नये न मम । ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम । इत्याज्यभागौ । ततः अग्निपूजनम्-ॐअग्नेनयसुपथा रायेऽ अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मत् जुहुराणमेनो भूयिष्ठांते नमऽउक्ति विधेम। शांति के लिए वरदनामाग्नये नमः गंधं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं - पंचप्राणाहुतिः - समर्पयामि ।

हस्ते जलं गृहीत्वा -

इमानि हवनीयद्रव्याणि या या यक्ष्यमाणदेवता, ताभ्यस्ताभ्यः मया

परित्यक्तानि न मम यथादैवतानि सन्तु ।।

वराहुतिः -

ॐ गणानान्त्वा० ॐ गणपतये स्वाहा ।

ग्रहहोम में समिध, चरु, तिल और आज्य की आहुति है । प्रत्येक द्रव्य से प्रत्येक ग्रहों की आठ अधिदेवता तथा प्रत्यधिदेवता की चार-चार, पंचलोकपाल, वास्तुक्षेत्रपाल और दिक्पाल की दो-दो आहुति । चार अथवा आठ विप्रों से यह होम करें । कर्म अनुसार अधिक होम भी करें । पश्चात् अन्वाधान अनुसार होमस्थापितदेवताहोम, व्याहृति होम आदि करें ।

ग्रहहोमः

होम में **नमः** के स्थान में **स्वाहा** शब्द बोलें।

ग्रहाणाम् आवाहनम् (८ आहुतयः समित्-चरु-तिल-आज्य)

मंत्रः	स्थानम्	नाम	समिध्	फलम्
ॐ आ कृष्णेन०	पीठमध्ये	ॐ सूर्याय नमः	अर्कः	द्राक्ष
ॐ इमन्नदेवा०	आग्नेय्यां	ॐ सोमाय नमः	पलाशः	इक्षु
ॐ अग्निर्मूर्द्धा०	दक्षिणस्यां	ॐ भौमाय नमः	खदिरः	पूगीफल
ॐ उद्बुध्य०	ऐशान्यां	ॐ बुधाय नमः	अपामार्गः	नारिंग
ॐ बृहस्पते०	उत्तरस्यां	ॐ बृहस्पतये नमः	पिप्पलः	जंबीर
ॐ अन्नात्परि०	पूर्वस्यां	ॐ शुक्राय नमः	उदुम्बरः	बीजपूर
ॐ शन्नो देवी०	पश्चिमायां	ॐ शनैश्चराय नमः	शमी	उतत्ती
ॐ कया नश्चित्र०	नैर्ऋत्यां	ॐ राहवे नमः	दूर्वा	नारिकेल
ॐ केतुं कृण्वन्०	वायव्यां	ॐ केतवे नमः	कुशः	दाडिम

अधिदेवतानां आवाहनम् (४ आहुतयः पलाशः)

१	ॐ त्र्यंबक०	सूर्यदक्षिणपार्श्वे	ॐ ईश्वराय नमः
२	ॐ श्रीश्चते०	सोमदक्षिणपार्श्वे	ॐ उमायै नमः
३	ॐ यदक्रन्द०	भौम दक्षिणपार्श्वे	ॐ स्कन्दाय नमः
४	ॐ विष्णोरराट०	बुधदक्षिणपार्श्वे	ॐ विष्णवे नमः
५	ॐ आ ब्रह्मन्०	बृहस्पतिदक्षिणपार्श्वे	ॐ ब्रह्मणे नमः
६	ॐ सजोषाइन्द्र०	शुक्रदक्षिणपार्श्वे	ॐ इन्द्राय नमः
७	ॐ यमाय त्वा०	शनैश्चरदक्षिणपार्श्वे	ॐ यमाय नमः
८	ॐ कार्षिरसि०	राहुदक्षिणपार्श्वे	ॐ कालाय नमः
९	ॐ चित्रावसो०	केतुदक्षिणपार्श्वे	ॐ चित्रगुप्ताय नमः

प्रत्यधि देवतानां आवाहनम् (४ आहुतयः पलाशः)

१	ॐ अग्निन्दूतं०	सर्ववामपार्श्वे	ॐ अग्नये नमः
२	ॐ आपोहिष्ठा०	सोमवामपार्श्वे	ॐ अद्भ्यो नमः
३	ॐ स्योनापृथिवि०	भौमवामपार्श्वे	ॐ पृथिव्यै नमः
४	ॐ इदं विष्णु०	बुधवामपार्श्वे	ॐ विष्णवे नमः
५	ॐ त्रातारमिन्द्र०	बृहस्पतिवामपार्श्वे	ॐ इन्द्राय नमः
६	ॐ अदित्यै रास्ना०	शुक्रवामपार्श्वे	ॐ इन्द्राण्यै नमः
७	ॐ प्रजापते०	शनैश्चरवामपार्श्वे	ॐ प्रजापतये नमः
८	ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो०	राहुवामपार्श्वे	ॐ सर्पेभ्यो नमः
९	ॐ ब्रह्मजज्ञानं०	केतुवामपार्श्वे	ॐ ब्रह्मणे नमः

पंचलोकपालानां वास्तुक्षेत्राधिपयोः च आवाहनम् (२ आहुती)

ॐ गणानान्त्वा०	राहोउत्तरतः	ॐ गणपतये नमः

ॐ अम्बे ऽ अम्बिके०	शनेरुत्तरत:	ॐ दुर्गायै नमः
ॐ वायोयेते०	रवेरुत्तरत:	ॐ वायवे नमः
ॐ घृतं घृत०	राहोः दक्षिणे	ॐ आकाशाय नमः
ॐ यावांकशा०	केतोः दक्षिणे	ॐ अश्विभ्यां नमः
ॐ नहि स्पश०	गुरोः उत्तरे	ॐ क्षेत्रपालाय नमः
ॐ वास्तोष्पते०	क्षेत्राधिपउत्तरे	ॐ वास्तोष्पतये नमः

दशदिक्पालाः

ॐ त्रातारमिन्द्र०	मंडलात् बहिः पूर्वे	ॐ इन्द्राय स्वाहा
ॐ त्वन्नो अग्ने०	मंडलात बहिः आग्नेय्यां	ॐ अग्नये स्वाहा
ॐ यमाय त्वा०	मंडलात् बहिः दक्षिणे	ॐ यमाय स्वाहा
ॐ असुन्वन्त०	मंडलात् बहिः नैर्ऋत्यां	ॐ निर्ऋतये स्वाहा
ॐ तत्वायामि०	मंडलात् बहिः पश्चिमे	ॐ वरुणाय स्वाहा
ॐ आनोनियुद्भि०	मंडलात् बहिः वायव्यां	ॐ वायवे स्वाहा
ॐ वय ६ सोम०	मंडलात् बहिः उत्तरे	ॐ सोमाय स्वाहा
ॐ तमीशानं०	मंडलात् बहिः ऐशान्यां	ॐ ईशानाय स्वाहा
ॐ अस्मेरुद्रा०	मंडलात् ईशानेन्द्रयोर्मध्ये	ॐ ब्रह्मणे स्वाहा
ॐ स्योनापृथिवि०	मंडलात् निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये	ॐ अनंताय स्वाहा
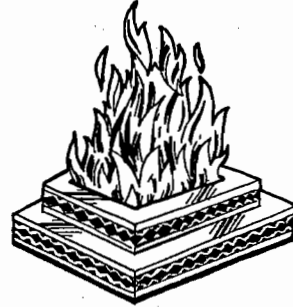
गृह प्रवेश

(गृह प्रवेश में कलश चक्र एवं समयशुद्धि आवश्यक है ।)

संकल्पः

अद्य पूर्वोच्चरित शुभ पुण्य तिथौ मम सकल मनोरथसिद्ध्यर्थम् अस्मिन् नूतन गृहे कुम्भ स्थापनमहं करिष्ये ।।

तत्रादौ गणपतिस्मरणपूर्वकं कुम्भे वर्द्धिनी पूजनं करिष्ये ।।

ॐ भू० वर्धिन्यै० आ०स्था० ब्रह्मणे०आ०स्था० रुद्राय०आ०स्था० विष्णवे०आ०स्था० मातृभ्यो०आ०स्था० मातृः आ०स्था० सागरेभ्यो०आ०स्था० मह्यै०आ०स्था० नदीभ्यो०आ०स्था० तीर्थेभ्यो०आ०स्था० तीर्थानि आ०स्था० गायत्र्यै ०आ०स्था० ऋग्वेदाय ०आ०स्था० यजुर्वेदाय ०आ०स्था० सामवेदाय ० आ०स्था० अथर्ववेदाय ० आ०स्था० अग्नये ० आ०स्था० आदित्येभ्यो ०आ०स्था० एकादशरुद्रेभ्यो ०आ०स्था० मरुद्भ्यो ०आ०स्था० मरुतः आ०स्था० गंधर्वेभ्यो ० आ०स्था० ऋषये ० आ०स्था० वरुणाय वायवे ० आ०स्था० धनदाय ०आ०स्था० यमाय ० आ०स्था० धर्माय ०आ०स्था० शिवाय ० आ०स्था०यज्ञाय ०आ०स्था० विश्वेभ्यो देवेभ्यो ०आ०स्था० स्कंदाय ०आ०स्था० गणेशाय ० आ०स्था० यक्षाय ०आ०स्था० अरुंधत्यै ०आ०स्था० ॐ मनोजूति ०आ०स्था० ॐ भू०आ०स्था० वर्धिन्याद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठताः वरदा भवत ।

पंचोपचारैः पूजनम् ।

द्वार पर शुभ-लाभ-स्वस्तिक आदि करें । पत्नी द्वारा देहली पूजन । पंचामृत तथा जल से द्वार मार्जन करें ।

वर्धिनी मंत्र -

वर्धिनी त्वं महापूता महातीर्थोदकान्विता ।
त्वत्तोयेन प्रपूर्येऽहं भव त्वं कुलवर्धिनी ।।

वर्धिनी त्वं जगन्माता पवित्रातिमनोहरा।
तव तोयेन कलशान् पूरयामि श्रिये मुदा ।।

द्वारदेवतानामपूजनम्

० ऊर्ध्वं द्वारश्रियै ० अधो देहल्यां वास्तुपुरुषाय० दक्षिणशाखायां गंगायै ० शंखनिधये ० वामशाखायां यमुनायै ० पद्मनिधये ० द्वारस्य ऊर्ध्वं आग्नेय्यां गणपतये ० अधः नैर्ऋत्यां दुर्गायै ० अधः वायव्यां सरस्वत्यै ० ऊर्ध्वं ईशान्यां क्षेत्रपालाय ० द्वारश्रियाद्यावाहित-देवताभ्यो नमः पंचोपचारैः पूजनम् । वास्तुपुरुषाय बलिदानम् । अपसर्पन्तु ० भो ब्रह्मन् प्रविशामि । प्रविशस्व । शांतिसूक्तपाठः । मंगलघोषः ।

दीपपूजनम् -

ॐ अग्निर्ज्योति ० ।

महानसे चुल्लीपूजनम् -

ॐ महानस इति ख्यातो। देवयज्ञादिसिद्धिकृत्। अन्नादिसाधनं स्थानं धर्ममूलं शुभप्रदम्।। धर्माय नमः।।

सम्मार्जनस्थाने मार्जनी पूजनम् -

पूतना शुभदा ज्येष्ठा सदा संधान संस्थिता ।
स्थानं चोत्करसम्पत्तेः अस्तु मे सर्वसिद्धिदम् ।।
।। ॐ ज्येष्ठायै नमः ।।

जलकुंभपूजनम् -

शंखस्फटिकवर्णाभ श्वेतहाराम्बरावृत ।
पाशहस्त महाबाहो दयां कुरु दयानिधे ।।
।। ॐ वरुणाय नमः ।।

पेषणीपूजनम् -

सौभाग्यं सुभगे देहि पेषणी संस्थिता सदा ।
पिष्टनिष्पादनार्थं त्वं पूजिता शुभदाऽस्तु मे ।।

।। ॐ सुभगायै नमः ।।

उलूखलः पूजनम्

ॐ व्रीहीणां कंडनं यच्च तुषाणां च विमोचनम् ।
त्वदधीनं अतः पूजां करोमि तव सिद्धये ।।

ॐ रौद्रपीठाय नमः ।।

प्राण प्रतिष्ठा

संकल्प

अद्यपूर्वोच्चरित शुभ पुण्य तिथौ आसां मूर्तीनां निर्माणविधौ अग्निप्रतपनताडनावघातादिदोष परिहारार्थं अग्न्युत्तारणपूर्वकं प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये ।

मूर्तीः घृतेनाभ्युज्य जलधारां कुर्यात् ।

मंत्र

अग्निर्वैश्वानरो वह्निर्वीतिहोत्रो धनञ्जयः ।
अग्न्युत्तारणार्थाय मूर्तीनां शुद्धि हेतवे ।।

हस्ते जलं गृहीत्वा -

अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि पराप्राणशक्तिर्देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिं क्रों कीलकम् आसु मूर्तिषु प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः । ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहम् । ॐ आसां मूर्तीनां प्राणाः इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहम् । ॐ आसां मूर्तीनां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं हं सः सोऽहम्।ॐ आसां मूर्तीनां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षु-

श्रोत्रजिह्वाघ्राण पाणिपादपायूप-स्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । गर्भाधानादि पंचदशसंस्कारार्थं पञ्चदश प्रणवा-वृतीः कुर्यात् । हस्ते अक्षतान्तगृहीत्वा-मनोजूति० ॐ एष वै प्रतिष्ठानाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्व्वमेव प्रतिष्ठितम्भ-वति ।। सर्वे देवाः सुप्रतिष्ठिता, वरदा भवत ।

रक्ताम्भोधिस्थ पोतोल्लसदरुण सरोजाधिरुढा कराब्जैः।
पाशं कोदंडमिक्षूद्भवमथ गुणमप्यंकुशं पंचबाणान्।।
बिभ्राणासृक्कपालं त्रिनयन लसिता पीनवक्षोरुहाढ्या।
देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः पराः नः।। इति

(गृह प्रवेश में शिख्यादि वास्तु एवं यज्ञादि कार्यों में ब्रह्मादि मंडप वास्तु देवताओं का आवाहन पूजन करना चाहिए)

वास्तुदेवतास्थापनम्

संकल्पः

आग्नेयादि कोणेषु शंकुरोपणम् । ॐ विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः । अस्मिन् गृहे ऽ वतिष्ठन्तु आयुर्बलकराः सदा (चतुर्वारम्) (मंडपे ऽ त्रा०) आग्नेयादिक्रमेण दध्योदन-बलिदानम्-ॐ अग्निभ्योऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तान्समाश्रिताः। बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ।। ॐ नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव नैर्ऋत्यां ये च राक्षसाः। बलिं स०।

ॐ नमो वै वायुरक्षेभ्यो ये चान्ये तान्समाश्रिताः । बलिं स० ।
ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्ये तान्समाश्रिताः । बलिं स०

संकल्पः अनेन शंकुरोपणपूर्वक – बलिदानेन आग्नेयादि विदिग्देवताः प्रीयन्ताम्।

रेखाकरणम्

(सुवर्णशलाकया कुशशलाकया वा पश्चिमत आरभ्य प्रागायता उदक्संस्था दश रेखाः कार्याः)

शान्तायै नमः यशोवत्यै नमः कान्तायै नमः विशालायै नमः प्राणवाहिन्यै नमः । सत्यायै नमः सुमत्यै नमः नन्दायै नमः च सुभद्रायै नमः सुरथायै नमः तथा ।। (मंडपवास्तौ - नवरेखाः-लक्ष्म्यै नमः यशोवत्यै नमः कान्तायै नमः सुप्रियायै नमः विमला यै नमः शिवायै नमः । सुभगायै नमः सुमत्यै नमः इडायै नमः ।।) दक्षिणारंभा उदगन्ताः प्राक्संस्थां दशरेखाः - हिरण्यायै नमः सुव्रता यै नमः लक्ष्म्यै नमः विभूत्यै नमः विमलायै नमः प्रियायै नमः । जयायै नमः ज्वालायै नमः विशोकायै नमः च इडायै नमः ।। (मंडपवास्तौ नवरेखा - धन्यायै नमः प्राणायै नमः विशालायै नमः च स्थिरायै नमः भद्रायै नमः जयायै नमः निशायै नमः । विरजायै नमः विभवायै नमः ।।) पंचोपचारैः पूजनम् ।।

पदम्	स्थानम्	नाम	मंत्र
ऐशानकोणपदे	शिरसि	ॐ शिखिने नमः	ॐ तमीशानं०
तत्दक्षिणैकपदे	दक्षिणनेत्रे	ॐ पर्जन्याय नमः	ॐ शंनोवातः०
तत्दक्षिणपदद्वये	दक्षिणश्रोत्रे	ॐ जयन्ताय नमः	ॐ मर्माणिते०
तत्दक्षिणपदद्वये	दक्षिणअंशे	ॐ कुलिशायुधाय नमः	ॐ आयात्विन्द्रोवसः०
तत्दक्षिणपदद्वये	दक्षिणबाहौ	ॐ सूर्याय नमः	ॐ बण्महाँऽअसि०
तत्दक्षिणपदद्वये	दक्षिणप्रबाहौ	ॐ सत्याय नमः	ॐ व्रतेनदीक्षा०
तत्दक्षिणपदद्वये	दक्षिणकूर्परे	ॐ भृशाय नमः	ॐ आत्वाहार्षम्०
तत्दक्षिणएकपदे	दक्षिणप्रबाहौ	ॐ आकाशाय नमः	ॐ यावांकशा०
,, आग्नेयकोणपदे	दक्षिणप्रबाहौ	ॐ वायवे नमः	ॐ बायो ये ते०
,, पश्चिमएकपदे	मणिबंधे	ॐ पूष्णे नमः	ॐ पूषन्तव०
,, ,, पदद्वये	ॐ पार्श्वे	ॐ वितथाय नमः	ॐ तत्सूर्यस्य०
,, ,, ,,	,, ,,	ॐ गृहक्षताय नमः	ॐ अक्षन्नमीमदन्त०
,, ,, ,,	,, उरुभागे	ॐ यमाय नमः	ॐ यमाय त्वा०
,, ,, ,,	,, जानौ	ॐ गंधर्वाय नमः	ॐ गंधर्वस्त्वा०
,, ,, ,,	,, जंघायां	ॐ भृंगराजाय नमः	ॐ सौरीर्बलाका०
,,पश्चिमोपरिस्थैकपदे,,	स्फिचि	ॐ मृगाय नमः	ॐ चंद्रमामनसो०
पश्चिमेनैर्ऋत्यकोणपदे,,	पाद्तले०	ॐ पितृभ्यो नमः	ॐ उशन्तस्त्वा०
तदुत्तरएकपदे	वामस्फिचि	ॐ दौवारिकाय नमः	ॐ आ ब्रह्मन्०
,, पदद्वये	,, जंघायां	ॐ सुग्रीवाय नमः	ॐ नीलग्रीवाशिति०
,, ,,	,, जानौ	ॐ पुष्पदन्ताय नमः	ॐ नमो गणेभ्यो०

तदुत्तर पदद्वये	वाम-उरौ	ॐ वरुणाय नमः	ॐ इमम्मे वरुण०
,, ,,	,, पार्श्वे	ॐ असुराय नमः	ॐ ये रूपाणि०
,, ,,	,, ,,	ॐ शोषाय नमः	ॐ शन्नोदेवी०
,,उपरिस्थितैकपदे	,, बाहौ	ॐ पापाय नमः	ॐ एतत्तेवर्स०
,, वायव्यकोणपदे	,, बाहौ	ॐ रोगाय नमः	ॐ द्रापे अंधस०
,, प्राक्एकपदे	,, प्रबाहौ	ॐ अहये वा अहिर्बुध्न्याय	ॐ अहिरिव भोगैः०
,, ,, पदद्वये	,, कूर्परे	ॐ मुख्याय नमः	ॐ अवतत्य धनु०
,, ,, ,,	,, बाहौ	ॐ भल्लाटाय नमः	ॐ इमा रुद्राय०
,, ,, ,,	,, ,,	ॐ सोमाय नमः	ॐ वयꣳ सोम०
,, ,,	,, अंशे	ॐ सर्पाय नमः	ॐ नमोऽस्तुसर्पेभ्यो०
,, ,, ,,	,, श्रोत्रे	ॐ अदित्यै नमः	ॐ अदितिर्द्यौ०
,,उपरिस्थ एकपदे	,, नेत्रे	ॐ दित्यै नमः	ॐ ये देवादेवेष्वधि०
तत दक्षिणेशिखिपदाधः	,, मुखे	ॐ आपाय नमः	ॐ आपोहिष्ठा०
आग्नेय वायुपदाधः	दक्षिणहस्ते	ॐ सावित्राय नमः	ॐ वसोः पवित्रमसि०
नैर्ऋत्यपितृपदाधः	नैर्ऋत्यपदउत्तरार्धे	ॐ जयाय नमः	ॐ यद क्रन्दः०
वायव्यरोग पदाधः	वामहस्ते	ॐ रुद्राय नमः	ॐ यातेरुद्र शिवा०
मध्ये नवपदाध	दक्षिणस्तने	ॐ अर्यम्णे नमः	ॐ यद्यकच्चवृत्र०
			पूर्व पदत्रये
दक्षि-. आग्नेय	दक्षिणहस्ते	ॐ सवित्रे नमः	ॐ विश्वानिदेव
		कोणैकपदे	
तत् पश्चिम पदत्रये	जठर दक्षिणे	ॐ विवस्वते नमः	ॐ असियमो०
,, नैर्ऋत्य कोणैकपदे	नैर्ऋत्यपदपूर्वार्धे	ॐ विबुधाय नमः	ॐ सबोधि०
तदुत्तरपदत्रये	जठर वामे	ॐ मित्राय नमः	ॐ मित्रस्य चर्षणी०
तदुत्तरवायव्यकोणैकपदे	वामहस्ते	ॐ राजयक्ष्मणे नमः	ॐ नाशयित्री०
तत् प्राक् पदत्रये	वामस्तने	ॐ पृथ्वीधराय नमः	ॐ स्योनापृथिवी०
तत्प्राक् ईशानकोणैकपदे	उरसि	ॐ आपवत्साय नमः	ॐ इमम्मे०
मध्ये नवपदे	हृदि-नाभ्यां	ॐ ब्रह्मणे नमः	ॐ ब्रह्मजज्ञानं०
	मंडलात्बहिः श्वेतपरिधौ		
ईशान्याम्		ॐ चरक्यै नमः	ॐ इन्धानास्त्वा०

आग्नेय्याम्	ॐ विदार्यै नमः	ॐ असुन्वन्त०
नैर्ऋत्याम्	ॐ पूतनायै नमः	ॐ कयानश्चित्र०
वायव्याम्	ॐ पापराक्षस्यै नमः	ॐ इन्द्र आसा०
पूर्वे	ॐ स्कन्दाय नमः	ॐ त्वन्नो अग्ने०
दक्षिणे	ॐ अर्यम्णे नमः	ॐ यदद्य सूर०
पश्चिमे	ॐ जृंभकाय नमः	ॐ हिंकाराय०
उत्तरे	ॐ पिलिपिच्छाय नमः	ॐ रक्षोहणं बल०

मंडलात् बहिः द्वितीय रक्तपरिधौ दशदिक्पालाः इन्द्रादि

१	ॐ त्रातारमिन्द्र०	मंडलात् बहिः पूर्वे	ॐ इन्द्राय नमः
२	ॐ त्वन्नो अग्ने०	मंडलात् बहिः आग्नेय्यां	ॐ अग्नये नमः
३	ॐ यमाय त्वा०	मंडलात् बहिः दक्षिणे	ॐ यमाय नमः
४	ॐ असुन्वन्त०	मंडलात् बहिः नैर्ऋत्यां	ॐ निर्ऋतये नमः
५	ॐ तत्वायामि०	मंडलात् बहिः पश्चिमे	ॐ वरुणाय नमः
६	ॐ आनोनियुद्भि०	मंडलात् बहिः वायव्यां	ॐ वायवे नमः
७	ॐ वयछसोम०	मंडलात् बहिः उत्तरे	ॐ सोमाय नमः
८	ॐ तमीशानं०	मंडलात् बहिः ऐशान्यां	ॐ ईशानाय नमः
९	ॐ अस्मेरुद्रा०	,, ईशानेन्द्रयोर्मध्ये	ॐ ब्रह्मणे नमः
१०	ॐ स्योनापृथिवि०	,, निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये	ॐ अनंताय नमः

गृहवास्तुप्रयोगे विशेषः -

पूर्वे इन्द्रात् उत्तरतः उग्रसेनाय नमः दक्षिणे यमात् उत्तरतः डामराय नमः पश्चिमेवरुणत उत्तरतः महाकालाय नमः उत्तरे सोमात् उत्तरतः पिलिपिच्छाय नमः ।मंडलात् बहिः तृतीयकृष्णपरिधौ - पूर्वे - हेतुकाय नमः ।आग्नेय्याम् - त्रिपुरान्तकाय नमः ।दक्षिणे - अग्निवैतालाय नमः ।नैर्ऋत्यां - असिवैतालाय नमः ।पश्चिमे - कालाय नमः । वायव्यां - करालाय नमः ।उत्तरे -एकपादाय नमः। ईशान्याम् भीमरूपाय नमः ।पूर्वेशानयोर्मध्ये - खेचराय नमः निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये - तलवासिने नमः ।

ॐ मनोजूति ० शिख्यादि वास्तुमंडलदेवता: सुप्रतिष्ठिता, वरदा: भवत ।
ॐ शिख्यादि वास्तुमंडलदेवताभ्यो नमः पंचोपचारैः पूजनम् ।

वास्तुमूर्तौ -

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वावेशोऽअनमीवो भवा नः ।
यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ।।
नमस्ते वास्तुपुरुष भूशय्याभिरतप्रभो ।
मद्गृहे धनधान्यादि समृद्धिं कुरु सर्वदा ।।
ॐ भू० वास्तोष्पतये नमः । आ०स्था०
आवाहयामि देवेशं ध्रुवदेवं महाबलम् ।
अचलं कुरु कल्याणं ध्रुवागच्छ नमोऽस्तुते ।।
ॐ भू० ध्रुवाय नमः । आ०स्था० ।

1. अथ गृह वास्तुमंडलदेवताहोमः

ॐ शिखिने नमः स्वाहा ० पर्जन्याय ० जयंताय ० इन्द्राय ० सूर्याय ० सत्याय ० भृशाय ० अन्तरिक्षाय ० वायवे ० पूष्णे ० वितथाय ० गृहक्षताय ० यमाय ० गंधर्वाय ० भृंगराजाय ० मृगाय ० पितृभ्यः ० दौवारिकाय ० सुग्रीवाय ० पुष्पदंताय ० वरुणाय ० असुराय ० शेषाय ० पापाय ० रोगाय ० नागाय ० मुख्याय ० भल्लाटाय ० सोमाय ० उरगाय ० अदितये ० दितये ० अद्भ्यः ० आपवत्साय ० अर्यम्णे ० सावित्राय ० सवित्रे ० विवस्वते ० विबुधाधिपाय ० जयन्ताय ० मित्राय ० राजयक्ष्मणे ० रुद्राय ० पृथ्वीधराय ० ब्रह्मणे ० चरक्यै ० विदार्यै ० पूतनायै ० पापराक्षस्यै ० स्कंदाय ० अर्यम्णे ० जृंभकाय ० पिलिपिच्छाय ० इन्द्राय ० अग्नये ० यमाय ० निर्ऋतये ० वरुणाय ० वायवे ० कुबेराय ० ईशानाय ० ब्रह्मणे ० अनंताय ० उग्रसेनाय ० डामराय ० महाकालाय ० पिलिपिच्छाय ० हेतुकाय ० त्रिपुरान्तकाय ०

अग्निवैतालाय ० असिवैतालाय ० कालाय ० करालाय ० एकपदाय ० भीमरूपाय ० खेचराय ० तलवासिने ० वास्तुपुरुषाय ० (१०८) ध्रुवाय ० (२८) अघोराय ० (२८)

हवन में नमः के स्थान में स्वाहा शब्द का प्रयोग करें।

२. मंडप वास्तुमंडलदेवतानां होमः

ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा । अर्यम्णे ० विवस्वते ० मित्राय ० पृथ्वीधराय ० सावित्राय ० सवित्रे ० विबुधाधिपाय ० जयाय ० राजयक्ष्मणे ० रुद्राय ० अद्भ्यः ० आपवत्साय ० शिखिने ० पर्जन्याय ० जयन्ताय ० कुलिशाय ० सूर्याय ० सत्याय ० भृशाय ० आकाशाय ० वायवे ० पूष्णे ० वितथाय ० गृहक्षताय ० यमाय ० गन्धर्वाय ० भृंगराजाय ० मृगाय ० पितृभ्यः ० दौवारिकाय ० सुग्रीवाय ० पुष्पदंताय ० वरुणाय ० असुराय ० शोषाय ० पापाय ० रोगाय ० अहये ० मुख्याय ० भल्लाटाय ० सोमाय ० सर्पाय ० अदित्यै ० दित्यै ० चरक्यै ० विदार्यै ० पूतनायै ० पापराक्षस्यै ० स्कन्दाय ० अर्यम्णे ० जृम्भकाय ० पिलिपिच्छाय ० इन्द्राय ० अग्नये ० यमाय ० निर्ऋतये ० वरुणाय ० वायवे ० कुबेराय ० ईशानाय ० ब्रह्मणे ० अनन्ताय ० ।

३. गजाननादि चतुःषष्टि योगिनीनां पूजनम् एवं होमः

ध्यान

चतुः षष्टिः समाख्याता योगिन्यो हि वरप्रदाः ।।
त्रैलोक्यपूजिता नित्यं देवमानुषयोगिभिः ।।

ॐ महाकाल्यै नमः स्वाहा० महालक्ष्म्यै० महासरस्वत्यै० गजाननायै० सिंहमुख्यै० गृध्रास्यायै० काकतुण्डिकायै० उष्ट्रग्रीवायै० हयग्रीवायै० वाराह्यै० शरभाननायै० उलूकिकायै ०

शिवारावायै० मयूर्यै० विकटाननायै० अष्टवक्रायै० कोटराक्ष्यै० कुब्जायै० विकटलोचनायै० शुष्कोदर्यै० लोलज्जिह्वायै० श्वदंष्ट्रायै० वानराननायै० रुक्षाक्ष्यै० केकराक्ष्यै० बृहत्तुण्डायै० सुराप्रियायै० कपालहस्तायै० रक्ताक्ष्यै० शुक्यै० श्येन्यै० कपोतिकायै० पाशहस्तायै० दण्डहस्तायै० प्रचण्डायै० चण्डविक्रमायै० शिशुघ्नै० पापहन्त्र्यै० काल्यै० रुधिरपायिन्यै० वसाधयायै० गर्भभक्षायै० शवहस्तायै० आन्त्रमालिन्यै० स्थूलकेश्यै० बृहत्कुक्ष्यै० सर्पास्यायै० प्रेतवाहनायै० दन्दशूककरायै० क्रौंच्यै० मृगशीर्षायै० वृषाननायै० व्यात्तास्यायै० धूमनिःश्वासायै ० व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे ० तापिन्यै० शोषणीदृष्ट्यै० कोटर्यै ० स्थूलनासिकायै० विद्युत्प्रभायै० बलाकास्यायै० मार्जार्यै० कटपूतनायै० अट्टाट्टहासायै० कामाक्ष्यै० मृगाक्ष्यै० मृगलोचनायै० ।

४. विश्वदुर्गादि चतुष्षष्टियोगिनीदेवता पूजनम् एवं होमः

ॐ विश्वदुर्गायै नमः स्वाहा ० उद्योतिन्यै ० मालाधर्यै ० महामायायै ० मायावत्यै ० शुभायै ० यशस्विन्यै ० त्रिनेत्रायै ० लोलजिह्वायै ० शंखिन्यै ० यमघंटायै ० कालिकायै ० चर्चिकायै ० यक्षिण्यै ० सरस्वत्यै ० चंडिकायै चित्रघंटायै ० सुंगन्धायै ० कामाक्ष्यै ० भद्रकाल्यै ० परायै ० क्रान्तराक्ष्यै ० कोटराक्ष्यै ० नीलांकायै ० सर्वमंगलायै ० ललितायै ० त्वरितायै ० भुवनेश्वर्यै ० खड्गपाण्यै ० शूलिन्यै ० दंडिन्यै ० अम्बिकायै ० शूलेश्वर्यै ० बाणवत्यै ० धनुर्धर्यै ० महोल्लसायै ० विशालाक्ष्यै ० त्रिपुरायै ० भगमालिन्यै ० दीर्घकेश्यै ० घोरघोणायै ० वाराह्यै ० महोदर्यै ० कामेश्वर्यै ० गुह्येश्वर्यै ० भूतनाथायै ० महारवायै ० ज्योतिष्मत्यै ० कृत्तिवासायै ० मुंडिन्यै ० शववाहिन्यै ० शिवाङ्कायै ० लिङ्गहस्तायै ० भगवक्त्रायै

० गगनायै ० मेघवाहनायै ० मेघघोषायै ० नारसिंह्यै ० कालिन्द्यै ० श्रीधर्यै ० तेजस्यै ० श्यामायै ० मातंग्यै ० नरवाहनायै ० इन्द्राण्यै ० दुर्गायै ० जयायै ० विजयायै ० अजितायै ० विश्वमंगलायै ० भद्ररूपिण्यै ० भुवनेश्वर्यै ० श्रीराजराजेश्वर्यै ० इति चतुष्षष्टियोगिनीदेवता होमः ।

नाम मंत्रों से आवाहन पूजन आरती आदि करें और हाथ जोड़कर प्रार्थना करें ।

प्रार्थना

ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले वा तले वा ।
पाताले वानले वा सलिलपवनयोः यत्र कुत्र स्थिता वा ।।
क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूपदीपादिकेन ।
प्रीतादेव्यः सदा नः शुभबलिविधिना पातु वीरेन्द्रवंद्याः ।।

इसके बाद हाथ में जल लेकर (अनया पूजया चतुः षष्टियोगीन्यः प्रीयन्ताम् न, मम) कहकर जल छोड़ दें ।

अथ भैरव देवतानां पूजनम् एवं होमः

ध्यानः

करकलितकपालः कुंडली दंडपाणिः ।
तरुणतिमिरनीलो व्याल यज्ञोपवीती ।।
क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेद हेतुः ।
जयति बटुकनाथ सिद्धिदः साधकानाम् ।।

५. अथैकपंचाशत्क्षेत्रपालदेवतानां पूजनम् एवं होमः

ॐ क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा ० अजराय ० व्यापकाय ० इन्द्रचौराय ० इन्द्रमूर्तये ० उक्षाय ० कूष्माण्डाय ० वरुणाय ० बटुकाय ० विमुक्ताय ० लिप्तकायाय ० लीलाकाय ० एकदंष्ट्राय ० ऐरावताय ० ओषधिघ्नाय ० बन्धनाय ० दिव्यकाय ० कम्बलाय ० भीषणाय

० गवयाय ० घण्टाय ० व्यालाय ० अणवे ० चन्द्रवारुणाय ० पटाटोपाय ० जटालाय ० क्रतवे ० घण्टेश्वराय ० विटंकाय ० मणिमानाय ० गणबन्धवे० डामराय ० ढुण्ढिकर्णाय ० स्थविराय ० दन्तुराय ० धनदाय ० नागकर्णाय ० महाबलाय ० फेत्काराय ० चीकराय ० सिंहाय ० मृगाय ० यक्षाय ० मेघवाहनाय ० तीक्ष्णोष्ठाय ० अनलाय ० शुक्लतुण्डाय ० सुधालापाय ० बर्बरकाय ० पवनाय ० पावनाय ०

६. अथ चतुष्षष्टिभैरवदेवतानां पूजनम् एवं होमः

ॐ श्रीमद्भैरवाय नमः, स्वाहा ० शंभुभैरवाय ० नीलकंठभै० विशालभै ० मार्तंडभै ० मनुप्रभभै ० स्वच्छन्दभै ० असिताङ्गभै ० खेचरभै ० संहारभै ० विरूपभै ० विरूपाक्षभै ० नानारूपधरभै ० वाराहभै ० रुरुभैरवाय ० कुंदवर्णभै ० सुगात्रभै ० उन्मत्तभै ० मेघनादभै ० मनोवेगभै ० क्षेत्रपालभै ० विपापहारभै ० निर्भयभै ० विजीतभै ० प्रेतभैरवाय ० लोकपालभै ० गदाधरभै ० वज्रहस्तभै ० महाकालभै ० प्रचंडभै ० अजेयभै ० अन्तकभै ० भ्रामकभै ० संहारभै ० कुलपालभै ० चंडपालभै ० प्रजापालभै ० रक्तांगभै ० वेगावीक्षणभै ० अरुणभै ० धरापालभै ० कुंडलनेत्रभै ० मंत्रनाथभै ० रुद्रपितामहभै ० विष्णुभै ० बटुकनाथभै ० भूतनाथभै ० वेतालभै ० त्रिनेत्रभै ० त्रिपुरान्तकभै ० वरदभै ० पर्वतवासभै ० शशिसकलभूषणभै ० सर्वभूतहृदयभै ० घोरसायकभै ० भयंकरभै ० भुक्तिमुक्तिप्रदभै ० कालाग्निभै ० महारुद्रभै ० भयानकभै ० दक्षिणमुखभै ० भीषणभै ० क्रोधभै ० सुखसंपत्तिदायकभैरवाय नमः, स्वाहा ।

नाम मंत्रों से आवाहन पूजन आरती आदि करें और हाथ जोड़कर प्रार्थना करें ।

प्रार्थना

कौलिरे चित्रकूटे हिमगिरिविवरे शस्त्रजालांधकारे ।
सौराष्ट्रे सिंधुदेशे मगधपुरवरे कोसले वा कलिंगे ।।
कर्णाटे कोंकणे वा भृगुसुतनगरे कान्यकुब्जस्थितो वा ।
सर्वस्मात् सर्वदा वा ह्यपमृति भयतः पातु वः क्षेत्रपालः ।।
यं यं यं यक्षरूपं दश दिशि वदनं भूमिकंपायमानं ।
सं सं संहारमूर्तिं शिरसि धृतजटा शेखरंचंद्रविम्बम् ।।
दं दं दं दीर्घकायं कृतनखवपुषं चोर्ध्वरेखाकपालं ।
पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ।।

इसके बाद हाथ में जल लेकर (अनेन पूजनेन भैरव देवाः प्रीयन्तां न मम) कहकर जल छोड़ दें ।

अथ विष्णु यंत्र देवतानां पूजनम् एवं होमः

(मध्य में)

लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। लक्ष्मीनारायणौ आवाह्यामि स्थापयामि।

(त्रिकोण में)

संकर्षणाय नमः। संकर्षणम् आ० स्था०। प्रद्युम्नाय० अनिरुद्धाय०।

(षट्कोण में)

विश्वक्सेनाय नमः। विश्वक्सेनम् आ० स्था०। सनकाय ० सनंदाय ० सनातनाय ० सनत्कुमाराय ० शुकाय ०।

(अष्टकोण में)

अवनितलाय नमः। अवनितलम् आ० स्था०। तलाय ० वायवे ० वह्नये० चन्द्राय ० सूर्याय ० गगनाय ० यजनार्हाय ०।

(दशार में)

मत्स्याय नमः। मत्स्यम् आ० स्था०। कूर्माय ० वराहाय ० नरसिंहाय ०

वामनाय ० परशुरामाय ० रामचंद्राय ० श्री कृष्णाय ० बौद्धाय ० कल्किने ०।

(द्वादशार में)

प्रणवमूर्तये नमः । प्रणवमूर्तिम् आ ० स्था ० । नंदनंदनाय ० मङ्गलमूर्तये ० भगवते ० गर्भवास निवारकाय ० वरेण्याय ० तेजोमूर्तये ० त्रिभुवन पतये ० सुसर्वाङ्गाय ० वेदाध्यक्षाय ० वागीशाय ० यमादिपालकाय ०।

(मन्वस्त्र में)

कुमारमूर्तये नमः। कुमारमूर्तिम् आ० स्था०। देवऋषिभ्यो ० नारायणाय ० कपिलमुनये ० दत्तात्रेयाय ० यज्ञमूर्तये ० ऋषभदेवाय ० पृथुराज्ञे ० धन्वन्तरये ० मोहिनीरूपाय ० द्वैपायनाय ० मुनिमूर्तये ० मनुमूर्तये ० प्रजापतये ०।

(षोडशार में)

विश्वामित्राय नमः। विश्वामित्रम् आ० स्था०। जमदग्नये ० भरद्वाजाय ० गौतमाय ० अत्रये ० वशिष्ठाय ० कश्यपाय ० अंगारकाय ० अगस्त्याय ० पुलस्त्याय ० पुलहाय ० उद्दालकाय ० दालभ्याय ० जैमुनये ० कात्यायनाय ० वैशंपायनाय ०।

(भूमन्दिर में)

ब्राह्म्यै नमः। ब्राह्मीम् आ० स्था०। माहेश्वर्यै ० कौमार्यै ० वैष्णव्यै० वाराह्यै ० ऐन्द्यै ० चामुण्डायै ० महालक्ष्म्यै ० अणिमासिद्ध्यै ० महिमासिद्ध्यै नमः०लघिमासिद्ध्यै०गरिमासिद्ध्यै०प्राप्तसिद्ध्यै० प्राकाम्यसिद्ध्यै० इशित्वसिद्ध्यै० वशित्वसिद्ध्यै० सर्वकामसिद्ध्यै०।

(दशों दिशाओं में)

इन्द्राय नमः। इन्द्रम् आ० स्था०। अग्नये ० यमाय ० निर्ऋतये ० वरुणाय ० वायवे ० सोमाय ० ईशानाय ० ब्रह्मणे ० अनन्ताय ०

वज्राय ० शक्तये ० दंडाय ० खड्गाय ० पाशाय ० अंकुशाय ० गदायै ० त्रिशूलाय ० पद्माय ० चक्राय ० ऋग्वेदाय ० यजुर्वेदाय० सामवेदाय ० अथर्ववेदाय ० गंगायै ० यमुनायै ०

अथ रुद्रयंत्रदेवतानां पूजनम् एवं होमः

(वर्तुल में-मध्य में) **नमो भगवते रुद्राय नमः। रुद्रम् आ० स्था०**
(पूर्व में) **सद्योजाताय नमः। सद्योजातम् आ० स्था०।**
(दक्षिण में) **वामदेवाय नमः। वामदेवम् आ० स्था०।**
(पश्चिम में) **अघोराय नमः। अघोरम् आ० स्था०।**
(उत्तर में) **तत्पुरुषाय नमः। तत्पुरुषम् आ० स्था०।**
(मध्य में) **ईशानाय नमः। ईशानम् आ० स्था०।**

(अष्टदल में पूर्व से)

नन्दिने नमः। नन्दिनम् आ० स्था०। महाकालाय ० गणेशाय ० वृषभाय ० भृंगिरिटये ० स्कन्दाय ० उमायै ० चंडेश्वराय ०।

(अष्टदल के बाहर सोलह पंखड़ियों में पूर्व से)

अनन्ताय नमः। अनन्तम् आ० स्था०। सूक्ष्माय ० शिवाय ० एकपदे ० एकरुद्राय ० त्रिमूर्तये ० श्रीकण्ठाय ० वामदेवाय ० ज्येष्ठाय ० श्रेष्ठाय ० रुद्राय ० कालाय ० कलविकरणाय ० बलविकरणाय ० बलाय ० बलप्रमथनाय ०।

(अष्टदल के बाहर चौबीस पंखड़ियों में पूर्व से)

अणिमायै नमः। अणिमाम् आ० स्था०। महिमायै ० लघिमायै ० गरिमायै ० प्राप्त्यै० प्राकाम्यै० इशित्वायै० वशित्वायै० ब्राह्म्यै० माहेश्वर्यै ० कौमार्यै ० वैष्णव्यै ० वाराह्यै ० महेन्द्रयै ० चामुण्डायै० चंडिकायै ० असितांगभैरवाय ० रुरुभैरवाय ० चंडभैरवाय ०

क्रोधभैरवाय ० उन्मत भैरवाय ० कालभैरवाय ० भीषणभैरवाय० संहारभैरवाय ०।

(अष्टदल के बाहर बत्तीस पंखड़ियों में पूर्व से)

भवाय नमः। भवम् आ० स्था०। शर्वाय ० ईशानाय ० पशुपतये० रुद्राय ० उग्राय ० भीमाय ० महते ० अनन्ताय ० वासुकये ० तक्षकाय ० कुलीरकाय ० कर्कोटकाय ० शंखपालाय ० कम्बलाय ० अश्वतराय ० वैन्याय ० पृथवे ० हैहयाय ० अर्जुनाय० शाकुन्तलेयाय ० भरताय ० नलाय ० रामाय ० हिमवते ० निषधाय ० विन्ध्याय ० माल्यवते ० पारिजाताय ० मलयाय ० हेमकूटाय ० गन्धमादनाय ०।

(अष्टदल के बाहर चालीस पंखड़ियों में पूर्व से)

इन्द्राय नमः। इन्द्रम् आ० स्था०। अग्नये ० यमाय ० निर्ऋतये ० वरुणाय ० वायवे ० सोमाय ० ईशानाय ० शच्यै ० स्वाहायै ० वाहाह्यै ० खड्गिन्यै ० वारुण्यै ० वायव्यै ० कौबेर्यै ० ईशान्यै ० वज्राय ० शक्तये ० दण्डाय ० खड्गाय ० पाशाय ० अंकुशाय ० गदायै ० त्रिशूलाय ० ऐरावताय ० मेषाय ० महिषाय ० प्रेताय ० मकराय ० मृगाय ० नराय ० वृषभाय ० ऐरावताय ० पुण्डरीकाय० वामनाय ० कुमुदाय ० अंजनाय ० पुष्पदन्ताय ० सार्वभौमाय ० सुप्रतीकाय ०।

(यन्त्र के आठ दिशाओं में)

इन्द्राय नमः। इन्द्रम् आ० स्था०। अग्नये ० यमाय ० निर्ऋतये ० वरुणाय ० वायवे ० सोमाय ० ईशानाय ०।

(चारो कोणों में)

विरुपाक्षाय नमः। विरुपाक्षाम् आ० स्था०। विश्वरूपाय ० पशुपतये० ऊर्ध्वलिंगाय ०।

(यन्त्र के बाहर पूर्व से)

विप्रवर्णाय श्वेतरूपाय सहस्त्रफणामण्डलसंयुक्ताय शेषाय नमः। शेषम् आ० स्था०। वैश्यवर्णाय नीलरूपाय पञ्चासनफणामण्डल-भूषिताय उत्तुङ्गकायायतक्षकाय ० विप्रवर्णाय कुंकुमाभाय सहस्त्रफणामण्डलसंयुक्ताय अनन्ताय ० क्षत्रियवर्णाय पीतरूपाय सप्तशतफणामण्डलसंयुक्ताय वासुकये ० क्षत्रियवर्णाय पीतरूपाय सप्तशतफणामण्डलसंयुक्ताय शङ्खपालाय ० वैश्यवर्णाय नीलरूपाय पञ्चासत्फणामण्डल संयुताय महापद्माय ० शूद्रवर्णाय कृष्णरूपाय त्रिंशत्फणामण्डल संयुताय कम्बलाय ० शूद्रवर्णाय श्वेतरूपाय त्रिंशत्फणामण्डल संयुताय कर्कोटकाय ० ।

सर्वतोभद्रमंडल पूजनम् एवं होमः

प्रत्येक व्रत-ग्रह-प्रतिष्ठा आदि में सर्वतोभद्र पीठ बनाकर ब्रह्मादि देवताओं का आवाहन करें । तथा पीठ पर प्रधान देव की प्रतिमा स्थापित कर षोडशोपचार से पूजन आरती आदि करें ।

(पूजन करते समय ब्रह्मणे नमः बोलें एवं होम करते समय नमः के स्थान पर स्वाहा शब्द का प्रयोग करें ।)

सर्वतोभद्रमंडलदेवतानां होमः

ॐ ब्रह्मणे नमः, स्वाहा ० सोमाय ० ईशानाय ० इन्द्राय ० अग्नये ० यमाय ० निर्ऋतये ० वरुणाय ० वायवे ० अष्टवसुभ्यः ० एकादशरुद्रेभ्यः ० द्वादशादित्येभ्यः ० अश्विभ्यां ० सपैतृकविश्वेभ्यः देवेभ्यः ० सप्तयक्षेभ्यः ० भूतनागेभ्यो ० गन्धर्वाप्सरेभ्यः ० स्कन्दाय ० नन्दीश्वराय ० शूलमहाकालाभ्यां ० दक्षादिसप्तगणेभ्यः

० दुर्गायै ० विष्णवे ० स्वधासहितपितृभ्यः ० मृत्युरोगाभ्यां ० गणपतये ० अद्भ्यः ० मरुद्भ्यः ० पृथिव्यै ० गंगादिनदीभ्यः ० सप्तसागरेभ्यः ० मेरवे ० गदायै ० त्रिशूलाय ० वज्राय ० शक्तये ० दण्डाय ० खड्गाय ० पाशाय ० अंकुशाय ० गौतमाय ० भरद्वाजाय ० विश्वामित्राय ० कश्यपाय ० जमदग्नये ० वसिष्ठाय ० अत्रये ० अरुन्धत्यै ० ऐन्द्रयै ० कौमार्यै ० ब्राह्म्यै ० वाराह्यै ० चामुण्डायै ० वैष्णव्यै ० माहेश्वर्यै ० वैनायक्यै ०।

अथ पीठदेवतानां पूजनम् एवं होमः

ॐ पूर्वपीठाय नमः, स्वाहा ।।(ॐ सर्वत्र) पं पूर्णपीठाय ० कं कामपीठाय ० उंउड्डुयानपीठाय ० मां मातृपीठाय ० जं जालंधरपीठाय ० कं कोल्हापूरोपपीठाय ० पूं पूर्णगिरिपीठाय ० सौं सौहारोपपीठाय ० कं कोल्हागिरिपीठाय ० कं कामरूपीठाय ० गुरवे ० परमगुरवे ० परमेष्ठिगुरवे ० गुरुपंक्तये ० मातापितृभ्यां ॐ उपमन्युनारद सनकव्यासादिभ्यो ० गं गणपतये ० दुं दुर्गायै ० सं सरस्वत्यै ० क्षं क्षेत्रपालाय ० मं मंडूकाय ० आं आधारशक्त्यै ० मूं मूलप्रकृत्यै ० कां कालाग्निरुद्राय ० आं आदिकूर्माय ० अं अनन्ताय ० आं आदिवराहाय ० पं पृथिव्यै ० अं अमृतार्णवाय ० रं रत्नद्वीपाय ० हं हेमगिरये ० नं नंदनोद्यानाय ० कं कल्पवृक्षाय ० मं मणिभूतलाय ० दं दिव्यमंडपाय ० सं स्वर्णवेदिकायै ० रं रत्नसिंहासनाय ० धं धर्माय ० ज्ञां ज्ञानाय ० वैं वैराग्याय ० ऐं ऐश्वर्याय ० अं अनैश्वर्याय ० सं सत्त्वाय ० प्रं प्रबोधात्मने ० रं रजसे ० पं प्रकृत्यात्मने ० तं तमसे ० मं मोहात्मने ० सों सोममंडलाय ० सूं सूर्यमण्डलाय ० वं वह्निमण्डलाय ० मं मायातत्वाय ० विं विद्यातत्वाय ० शि शिवतत्वाय ० ब्रं ब्रह्मणे ० मं महेश्वराय ० आं

आत्मने ० अं अन्तरात्मने ० पं परमात्मने ० जं जीवात्मने ० ज्ञां ज्ञानात्मने ० कं कन्दाय ० नं नीलाय ० पं पद्माय ० मं महापद्माय ० रं रत्नेभ्यो ० कं केसरेभ्यो ० कं कर्णिकायै ० नंदायै ० भगवत्यै ० रक्तदन्तिकायै ० शाकम्भर्यै ० दुर्गायै ० भीमायै ० कालिकायै ० भ्रामर्यै ० शिवदूत्यै नमः, स्वाहा ।। इति पीठदेवताहोमः ।

आवरणदेवतानां पूजनम् एवं होमः

ॐ श्री महाकाल्यै नमः स्वाहा ।(ॐ सर्वत्र) श्री महालक्ष्म्यै ० श्री महासरस्वत्यै ० गुरवे ० परमगुरवे ० परात्परगुरवे ० परमेष्ठिगुरवे ० ऐं हृदयाय ० ह्रीं शिरसे ० क्लीं शिखायै ० चामुंडायै कवचाय ० विच्चे नेत्रत्रयाय ० ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै अस्त्राय ० सावित्र्या सह विधात्रे ० श्रिया सह विष्णवे ० उमया सह शिवाय ० क्षुं सिंहाय ० हुं महिषाय ० ऐं नन्दजायै ० ह्रीं रक्तदन्तिकायै ० क्लीं शाकम्भर्यै ० दुं दुर्गायै ० हुं भीमायै ० ह्रीं भ्रामर्यै ० ऐं ब्राह्म्यै ० ह्रीं माहेश्वर्यै ० क्लीं कौमार्यै ० ह्रीं वैष्णव्यै ० लं वाराह्यै ० रौं नारसिंह्यै ० लं ऐंद्र्यै ० स्फ्रें चामुंडायै ० ह्रीं लक्ष्म्यै ० विं विष्णुमायायै ० चें चेतनायै ० बुं बुद्ध्यै ० निं निद्रायै ० क्षुं क्षुधायै ० छां छायायै ० शं शक्त्यै ० तृं तृष्णायै ० क्षां क्षान्त्यै ० जां जात्यै ० लं लज्जायै ० शां शान्त्यै ० श्रं श्रद्धायै ० कां कान्त्यै ० लं लक्ष्म्यै ० धृं धृत्यै ० वृं वृत्यै ० श्रुं श्रुत्यै ० स्मृं स्मृत्यै ० दं दयायै ० तुं तुष्ट्यै ० पुं पुष्ट्यै ० मां मातृभ्यो ० भ्रां भ्रान्त्यै ० गं गणपतये ० क्षं क्षेत्रपालाय ० बं बटुकाय ० यां योगिन्यै ० लं इन्द्राय ० इं अग्नये ० यं यमाय ० क्षं निर्ऋतये ० वं वरुणाय ० यं वायवे ० सं सोमाय ० ईं ईशानाय ० ब्रं ब्रह्मणे ० अं अनन्ताय ० वं वज्राय ० शं शक्त्यै ० दं दण्डाय ० खं खड्गाय ० ॐ पां पाशाय ० अं अंकुशाय ० गं गदायै ० त्रिं त्रिशूलाय ० पं पद्माय ० चं चक्राय ० कादम्बरीदेव्यै ० उल्कादेव्यै

० करालीदेव्यै ० रक्ताक्षी देव्यै ० श्वेताक्षी देव्यै ० हरिताक्षीदेव्यै ० यक्षिणीदेव्यै ० कालीदेव्यै ० सुरज्येष्ठादेव्यै ० सर्पराज्ञीदेव्यै नमः, स्वाहा ।।

न्यासः

(भगवती जगदम्बा की पूजा में अनेक प्रकार के न्यासों का वर्णन मिलता है । यहाँ पर संक्षिप्त में न्यास दिये जा रहे हैं ।)

विनियोगः

श्रीगणपतिर्जयति । ॐ अस्य श्रीदुर्गापूजने श्रीनर्वाणमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी-महासरस्वत्यो देवताः, ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिं, क्लीं कीलकम्, श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती प्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः

ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः, शिरसि । गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः, मुखे । महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः, हृदि । ऐं बीजाय नमः, गुह्ये । ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः । क्लीं कीलकाय नमः नाभौ ।

'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' - इति मूलेन करौ संशोध्य -

करन्यासः

ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः । ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यासः

ॐ ऐं हृदयाय नमः । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ क्लीं शिखायै वषट् । ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम् । ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् ।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट् ।

अक्षरन्यासः

ॐ ऐं नमः, शिखायाम् । ॐ ह्रीं नमः, दक्षिणनेत्रे । ॐ क्लीं नमः, वामनेत्रे । ॐ चां नमः, दक्षिणकर्णे । ॐ मुं नमः, वामकर्णे। ॐ डां नमः, दक्षिणनासापुटे । ॐ यैं नमः, वामनासापुटे । ॐ विं नमः, मुखे। ॐ च्चें नमः गुह्ये । (एवं विन्यस्याष्टवारं मूलेन व्यापकं कुर्यात्)

दिङ्न्यासः

ॐ ऐं प्राच्यै नमः । ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः । ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः। ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः । ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः । ॐ क्लीं वायव्यै नमः । ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः । ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः ।

अथ पात्रस्थापनम्

तत्रादौ कलशः ।। स्ववामे बिंदुत्रिकोणषट्कोणवृत्तचतुरस्त्रात्मकं यंत्रं विलिख्य अक्षतैः पूजयेत् ।। मध्ये मूलं । त्रिकोणे त्रिपदैः ऐं ह्रीं क्लीं ।। चामुंडायै । विच्चे नमः ।। एवं द्विरावृत्त्या षट्कोणे । मातृकया वृत्तं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं इत्यादि क्षान्तम् ।। चतुरस्त्रे षडंगानि । आग्नेये – ऐं हृदयाय ० । ऐशाने – ह्रीं शिरसे ० । नैर्ऋत्ये – क्लीं शिखायै ० । वायव्ये ० – चामुंडायै कवचाय ०। मध्ये ० विच्चे नेत्रत्रयाय ० । चतुर्दिक्षु मूलेन अस्त्राय ० ।। इति यंत्रं संपूज्य हुमिति आधारं प्रक्षाल्य ।। मूलेन संस्थाप्य ।। ॐ मं वह्निमंडलाय दशकलात्मने श्रीत्रिगुणात्मिका – दुर्गादेवता – कलशपात्राधराय

नमः इति संपूज्य दशकलाः पूजयेत् ।। ॐ यं धूम्रार्चिषे ० । रं उष्मायै ० । लं ज्वलिन्यै ० वं ज्वालिन्यै ० शं विस्फुलिंगिन्यै ० । षं सुश्रियै ० । सं सुरूपायै ० । हं कपिलायै ० ळं हव्यवाहायै ० क्षं कव्यवाहायै ० ।। इति संपूज्य हुं इति पात्रं प्रक्षाल्य मूलेन संस्थाप्य सूर्यमंडलाय द्वादशकलात्मने श्रीत्रिगुणात्मिका – दुर्गा – देवता – कलशपात्राय नमः इति संपूज्य द्वादशकलाः पूजयेत् ।। ॐ कं भं तपिन्यै० । खं बं तापिन्यै० । गं फं धूम्रायै० घं पं मरीच्यै० । ङं नं ज्वालिन्यै० । चं धं रूच्यै० । छं दं सुषुम्णायै० । जं थं भोगदायै ० । झं तं विश्वायै ० । ञं णं बोधिन्यै ० । टं ढं धारिण्यै ०' । ठं डं क्षमायै ० ।। इति संपूज्य ।। तत्र विलोममातृकया शुद्धजलमा-पूरयेत् ।। तद्यथा – ॐ क्षं ळं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं ए ॡ लृं ॠ ऊं उं ई इ आं अं ।। गालिनीमुद्रया (करद्वयांगुष्ठतर्जन्य-संयोगात्मिकया) निरीक्ष्य षोडशकलात्मने चंद्रमंडलाय श्रीत्रिगुणात्मिका – दुर्गादेवता – कलशामृताय नमः इति संपूज्य षोडशकलाः पूजयेत् ।। अं अमृतायै ० । आं मानदायै ० । इं पूषायै ० । ईं पुष्ट्यै ० । उं तुष्ट्यै ० । ऊं रत्यै ० । ॠं धृत्यै ० । ॠ शशिन्यै ० । लृं चंद्रिकायै ० । लृं कान्त्यै ० । एं ज्योत्स्नायै, ० । ऐं श्रियै ० । ओं प्रीत्यै ० । औं अंगदायै ० । अं पूर्णायै ० । अः पूर्णामृतायै ० ।। इति
संपूज्य फडिति संरक्ष्य, मूलेन देवीमावाह्य, आवाहनादिदशमुद्राः प्रदर्शयेत् । तद्यथा – मूलेन आवाहिता भव । स्थापिता भव । संनिहिता भव । सन्निरुद्धा भव । संमुखीकृता भव । षडंगेन सकलीकृता भव । मूलेन हृदयायेत्यादि अवगुंठिता भव । अमृतीकृता भव । परमीकृता भव । योनिमुद्रां प्रदर्श्य । मूलेन संपूज्य मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छाद्य मूलेनाष्टवारमभिमंत्र्य धेनुं-योनिं च प्रदर्शयेत् । (कलशः – संशोध्य भूमिं संस्थाप्य कलशं तीर्थवारिणा ।

पूरयित्वा वाजिगजशालादिभ्यो मृदस्तथा ।। धनकामो न्यसेत्स्वर्णं धान्यकामस्तु मौक्तिकम् । श्रीकामः कमलं न्यस्य कामार्थी दमनं (रोचनां) न्यसेत् । मोक्षकामो न्यसेद्रत्नं जयकामोऽपराजिताम् । उच्चाटनार्थं हिंगुलं वश्यार्थं शिखिमूलिकाम् ।। मारणाय मरीचं तू केतकीं मोहनाय च । आकर्षणार्थं धत्तूरं प्रक्षिपेत् कलशोपरि ।। जपेन्मंत्र महेशानि श्रृणुष्व गदतो मम । क्षिप्तं यत्कलशे हस्ते तदेमं प्रजपेन्मनुम् ।। हूं ह्रीं चामुण्डायै स्वाहा ।। जपेत् द्वादशलक्षं तु स्नानं तेनैव वारिणा ।। (इस विवरण को पात्रासदन कलश से संबंध जोडने पर प्रमाण मृग्य है ।) इति कलशः ।। सर्वपात्रस्थापने (पात्रासादनप्रयोगो ग्राह्यः ।)

अथ सामान्यार्घः ।।

बिंदुत्रिकोणवृत्त चतुरस्त्रं यंत्रं विलिख्य । मध्ये मूलं । त्रिकोणे त्रिपदैः मातृकया वृत्तं । चतुरस्त्रे षडंगानि फडिति आधारं प्रक्षाल्य मूलेन संस्थाप्य । मं वह्निमंडलाय दशकलात्मने श्रीत्रिगुणात्मिका- दुर्गादेवता सामान्यार्घपात्राधाराय नमः इति संपूज्य पूर्वोक्ता द्वादशकलाः संपूज्य ।। फट् इति पात्रं प्रक्षाल्य । मूलेन संस्थाप्य सूर्यमंडलाय द्वादशकलात्मने श्री त्रिगुणाः सामान्य अर्थ-पात्राय नमः इति पात्रं संपूज्य द्वादशकला पूजयेत । मूलेन शुद्धजलमापूर्य गालिनीमुद्रया निरीक्ष्य चंद्रमंडलाय षोडशकलात्मने श्रीदुर्गादेवता सामान्यार्घपात्रामृताय नमः इति संपूज्य पूर्वोक्ताः षोडशकलाः पूजयेत् ।। फडिति संरक्ष्य । मूलेन देवीमावाह्य आवाहनादिमुद्रां प्रदर्श्य मूलेन संपूज्य मत्स्यमुद्रयाऽऽछाद्य मूलेनाष्टधाभिमंत्र्य धेनुमुद्रां - योनिमुद्रां च दर्शयेत् ।। इति सामान्यार्घः ।।

अथ व्रिशेषार्घः

सामान्यार्घदक्षिणे आत्मश्रीचक्रयोर्मध्ये बिंदुत्रिकोणषट्कोणवृत्त- चतुरस्त्रात्मकं यंत्रं चंदनादिना विलिख्य अक्षतैः पूजयेत् ।। मध्ये मूलं ।। त्रिकोणे त्रिपदैः ऐं ह्रीं क्लीं । चामुंडायै । विच्चे नमः ।।

एवं द्विरावृत्त्या षट्कोणे । मातृकया वृत्तं अं आं इत्यादि क्षान्तं ।। चतुरस्त्रे षडंगानि । इति यंत्रं संपूज्य ।। हुं इत्याधारं प्रक्षाल्य मूलेन संस्थाप्य मं वह्निमंडलाय दशकलात्मने श्रीदुर्गादेवता-विशेषार्घपात्राधाराय नम इति संपूज्य दशकलाः पूजयेत। ततः हुं इति पात्रं प्रक्षाल्य मूलेन संस्थाप्य सूर्यमंडलाय द्वादशकलात्मने श्री दुर्गा देवताविशेषार्घपात्राय नमः इति पात्रं संपूज्य द्वादशकलाः पूजयेत्। तत्र विलोममातृकया शुद्धजलमापूर्य गालिनीमुद्रया निरीक्ष्य षोडशकलात्मने चंद्रमंडलाय श्रीदुर्गादेवताविशेषाघ-पात्रामृताय नम इति संपूज्य पूर्वोक्ताः षोडशकलाः संपूज्य फडिति संरक्ष्य मूलेन देवीमावाह्य आवाहना-दिदशमुद्राः प्रदर्श्य मूलेन संपूज्य मत्स्यमुद्रयाच्छाद्य मूलेन षोडशवार-मभिमंत्र्य धेनुमुद्रां योनिमुद्रां च प्रदर्शयेत् ।। इति विशेषार्घः ।।

अथ तद्दिक्षणे पाद्यपात्रं आचमनीयपात्रं मधुपर्कपात्रं (प्रोक्षणार्थं) प्रोक्षणीपात्रं सामान्यार्घवत् संस्थाप्य पाद्यपात्रे श्यामाक (सामो) दूर्वाविष्णुक्रान्तादीनि प्रक्षिप्य अर्घ्यपात्रे सर्षपतिलदूर्वाकुशप्रक्षेपः। आचमनीयपात्रे जातीफलैलाल-वंगकंकोल (चिनकबावा) प्रक्षेपः ।। मधुपर्कपात्रे दधिमधुघृतानि प्रक्षिप्य विशेषार्घबिन्दुं सर्वपात्रे प्रक्षिपेत् ।। मूलेन प्रोक्षणीपात्राज्जलं गृहीत्वा तज्जलेन पूजासामग्रीं मूलेन सम्प्रोक्ष्य आत्मानं प्रोक्षेत् ।। इत्थं पात्रासादनं कृत्वा, अन्तर्यजनं यथाधिकारं कृत्वा, स्वहृदयस्थां महालक्ष्मीं ध्यात्वा, मानसोपचारैः संपूज्य, स्वात्मना सहैक्यं भावयेत्।। तत आत्मपूजां कुर्यात्।। यथा-मं मंडूकाय ० आधारे ।। कालाग्निरुद्राय० स्वाधिष्ठाने ।। कच्छपाय० नाभौ ० ।। आधारशक्तिकूर्मानन्तपृथिवीसागररत्नद्वीपप्रासादहेमपीठेभ्यो ० हृदि ।। धर्माय ० दक्षांसे ।। ज्ञानाय ० वामांसे ।। वैराग्याय ०

वामोरौ ।। ऐश्वर्याय ० दक्षोरौ । अधर्माय ० मुखे ।। अज्ञानाय ० वामपार्श्वे । अवैराग्याय ० नाभौ ।। अनैश्वर्याय ० दक्षिणपार्श्वे ।। अनन्ताय ० हृदि ।। तत्त्वपद्माय ० ।। आनन्दमयकन्दाय ० संविन्नालाय ० विकारमयकेसरेभ्यो ० प्रकृतिमयपत्रेभ्यो ० पंचाशद्वर्णवीजाढ्य-कर्णिकायै ० सूर्यमंडलाय ० चंद्रमंडलाय ० अग्निमंडलाय ० इत्यन्तं हृदि न्यसेत । पीताद्याः पीठशक्तयः ।। पीतायै ० श्वेतायै ० अरुणायै ० कृष्णायै ० धूम्रायै ० तीव्रायै ० स्फुलिंगिन्यै ० रुचिरायै ० ज्वालिन्यै ०।। रं वह्न्यासनायै ० ।। इति स्वदेहे पीठशक्तिं विन्यसेत् ।। इति ।।

आत्मानं गन्धपुष्पैरभ्यर्च्य मूलेन त्रिः स्वशिरसि पुष्पांजलिं दत्वा, मानसोपचारैः संपूज्य, देवरूपः सन् मूलं जप्त्वा, देव्यै जपं निवेदयेत् । ततश्च पुष्पमाघ्राय कुंभोदराय नमः इति वामे क्षिप्त्वा हस्तं प्रक्षाल्य पीठपूजां कुर्यात् ।

(प्रधान देवता स्थापन पूर्व ब्रह्मादि सर्वतोभद्रमंडलदेवताओं का स्थापन एवं पूजन करना चाहिए ।

ॐ अग्निर्देवता ० भू ० ब्रह्मादिसर्वतो भद्रमंडलदेवताभ्यो नमः पंचोपचारैः पूजनम् ।

यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः ।
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैः गायन्ति यं सामगाः ।।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यंति यं योगिनो ।
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः देवाय तस्मै नमः ।।

ततो मंडलमध्ये धान्यराशिं कृत्वा तदुपरि पूर्णपात्रान्तं कलशं संस्थाप्य तदुपरि क्षौमं वस्त्रं प्रसार्य तस्योपरि मध्ये बिंदुं त्रिकोणं षट्कोणं तदुपरि वृत्तमष्टौ दलानि तदुपरि वृत्तं तदुपरि चतुर्विंशतिपत्राणि तद्बाह्ये चतुर्द्वारं चतुरस्त्रयंत्रं विलिखेत् ।

अथ देवी पीठपूजा

(हस्ते अक्षतान्गृहीत्वा) - ॐ पूर्वपीठाय नमः । ॐ पं पूर्णपीठाय नमः । कं कामपीठाय नमः । प्राच्यां - उं उड्यानपीठाय ० आग्नेय्यां - मां मातृपीठाय ० दक्षिणे - जं जालंधरपीठाय ० - नैर्ऋत्ये - कं कोल्हागिरिपीठाय० पश्चिमे - पूं पूर्णगिरिपीठाय ० वायव्यां-सौं सौहारोपपीठाय ० उत्तरे - कं कोल्हागिरिपीठाय ० ऐशान्यां - कं कामरूपपीठाय ० ।(पीठं संपूज्य नमस्कारः) दक्षिणे - गुरवे ० परमगुरवे ० परमेष्ठिगुरवे ० गुरुपंक्तये ० मातापितृभ्यां ० उपमन्युनारद सनक व्यासादिभ्यो ० वामे - गं गणपतये ० दुं दुर्गायै ० सं सरस्वत्यै ० क्षं क्षेत्रपालाय ०(नत्वा पीठदेवतास्थापनम्) - पं मंडूकाय ० आं आधारशक्त्यै ० मूं मूलप्रकृत्यै ० कां कालाग्निरुद्राय ० (तदुपरि) आं आदिकूर्माय ० अं अनंताय ० आं आदिवराहाय ० पं पृथिव्यै ० (तदुपरि) अं अमृतार्णवाय ० रं रत्नद्वीपाय ० हं हेमगिरये ० नं नंदनोद्यानाय ० कं कल्पवृक्षाय ० मं मणिभूतलाय ० दं दिव्यमंडपाय ० सं स्वर्णवेदिकायै ० रं रत्नसिंहासनाय ० धं धर्माय ० ज्ञां ज्ञानाय ० वैं वैराग्याय ० ऐं ऐश्वर्याय ० अं अधर्माय ० अं अज्ञानाय ० अं अवैराग्याय ० अं अनैश्वर्याय ० (पुनर्मध्ये) सं सत्वाय ० प्रं प्रबोधात्मने ० रं रजसे ० पं प्रकृत्यात्मने ० तं तमसे ० सं मोहात्मने ० सों सोममंडलाय ० सूं सूर्यमंडलाय ० वं वह्निमंडलाय ० मां मायातत्त्वाय ० विं विद्यातत्त्वाय ० शिं शिवतत्त्वाय ० ब्रं ब्रह्मणे ० मं महेश्वराय ० आं आत्मने ० अं अन्तरात्मने ० पं परमात्मने ० जीं जीवनाय ० ज्ञां ज्ञानात्मने ० कं कन्दाय ० नीं नीलाय ० पं पद्माय ० मं महापद्माय ० रं रत्नेभ्यो ० कं केसरेभ्यो ० कं कर्णिकायै ० ।। नवशक्तीः स्थापयेत् - पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु - नन्दायै ० भगवत्यै ० रक्तदंतिकायै

० शाकम्भर्यै ० दुर्गायै ० भीमायै ० कालिकायै ० भ्रामर्यै ० (मध्ये) शिवदूत्यै ० इति संस्थाप्य यथाशक्त्या ॐ भू० शक्तिसहितपीठदेवताभ्यो नमः । इति पूजयेत् ।

अथ यंत्रदेवतास्थापनम्

हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा - बिंदुमध्ये "ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे" श्री महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती स्वरूपिणी - श्री त्रिगुणात्मिका दुर्गादेवतायै नमः, श्री महाकाली० दुर्गादेवतामावा०स्था ० (बिंदोः परितो गुरुचतुष्टयमावाहयेत्) गुरवे ० परात्परगुरवे ० परमेष्ठिगुरवे ० गुरुपंक्तये ० (षडंगम्) ऐं हृदयाय नमः । ह्रीं शिरसे ० क्लीं शिखायै० चामुंडायै ० कवचाय ०विच्चे नेत्रत्रयाय ० मूलेन अस्त्राय ० (त्रिकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन क्रमेण) सावित्र्या सह विधात्रे ० श्रिया सह विष्णवे ० उमया सह शिवाय ० दक्षिणे क्ष्रुं सिंहाय ० वामे हुं महिषाय ० षट्कोणे (अग्नीशासुरवायव्ये मध्ये दिक्षु च) ऐं नन्दजायै ० ह्रीं रक्तदन्तिकायै ० क्लीं शाकंभर्यै ० दुं दुर्गायै ० हुं भीमायै ० ह्रीं भ्रामर्यै ० (ततो अष्टपत्रे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्यक्रमेण) ऐं ब्राह्म्यै ० ह्रीं माहेश्वर्यै ० क्लीं कौमार्यै ० ह्रीं वैष्णव्यै ० हुं वाराह्यै ० क्ष्म्रौं नारसिंह्यै ० लं ऐन्द्र्यै ० स्फ्रें चामुण्डायै ० (ततश्चतुर्विंशतिदले) विं विष्णुमायायै ० चें चेतनायै ० बुं बुद्ध्यै ० निं निद्रायै ० क्षुं क्षुधायै ० छां छायायै ० शं शक्त्यै ० तृं तृष्णायै ० क्षां क्षान्त्यै ० जां जात्यै ० लं लज्जायै ० शां शान्त्यै ० श्रं श्रद्धायै ० कां कान्त्यै ० लं लक्ष्म्यै ० धृं धृत्यै ० वृं वृत्यै० श्रुं श्रुत्यै ० स्मृं स्मृत्यै ० दं दयायै ० तुं तुष्ट्यै ० पुं पुष्ट्यै ० मां मातृभ्यो ० भ्रां भ्रान्त्यै ० (भूपुरे कोणचतुष्टये आग्नेयादिकोणे) गं गणपतये ० क्षं क्षेत्रपालाय ० बं बटुकाय ० यां ० योगिन्यै ०

(पूर्वादिदिक्षु) इन्द्राय० अग्नये० यमाय० निर्ऋतये ० वरुणाय ० वायवे ० सोमाय ० ईशानाय ० ब्रह्मणे ० अनंताय ० तद्बहिः- वज्राय ० शक्तये ० दंडाय ० खड्गाय० पाशाय ० अंकुशाय ० गदायै० त्रिशूलाय० पद्माय० चक्राय० तद्बहिः- वज्रहस्तायै गजारूढायै कादम्बरी देव्यै नमः। शक्तिहस्तायै अजवाहनायै उल्कादेव्यै नमः। दंडहस्ताय महिषारूढायै कराली देव्यै नमः। खड्गहस्ताय शववाहनायै रक्ताक्षी देव्यै नमः। पाशहस्तायै मकरवाहनायै श्वेताक्षीदेव्यै नमः। अंकुशहस्तायै मृगवाहनायै हरिताक्षीदेव्यै नमः। गदाहस्तायै सिंहारूढायै यक्षिणीदेव्यै नमः। शूलहस्ताय वृषभवाहनायै कालीदेव्यै नमः। पद्महस्तायै हंसवाहनायै सुरज्येष्ठादेव्यै नमः। चक्रहस्तायै सर्पवाहनायै सर्पराज्ञीदेव्यै नमः ।। इत्यावाह्य

ॐ भू० यंत्रस्थदेवताभ्यो नमः इति मूलमंत्रेण यथाशक्त्या पूजनं कुर्यात्।

इति यन्त्रदेवतास्थापनम् ।।

ततो देव्या मूर्तेः अग्न्युत्तारणपूर्वकप्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् । तत्रादौ हृदिस्थां ज्योतिर्मयीं सपरिवारां महालक्ष्मीं ध्यायेत् -

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिं स्कंधस्थितां भीषणां।
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं।
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ।।

हस्ते पुष्पमादाय ध्यात्वा -

आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिषूदिनि ।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शङ्करप्रिये ।।
सर्वतीर्थमयं वारि सर्वदेवसमन्विता ।
इमं घटं समागच्छ तिष्ठ देवगणैः सह ।।

दुर्गे देवि समागच्छ सान्निध्यमिह कल्पय।
बलिपूजां गृहाणत्वमष्टाभिः शक्तिभिः सह ।।
कल्याणजननीं सत्यां कामदां करुणाकराम्।
अनन्तशक्तिसंपन्नां दुर्गामावाहयाम्यहम् ।।

साङ्गां सपरिवारां सावरणां सायुधां दुर्गामावाहयामि। महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीस्वरूपिणि दुर्गे देवते आवाहिता भव। स्थापिता भव। सन्निहिता भव। सन्निरुद्धा भव। संमुखीकृता भव। षडङ्गेन सकलीकृता भव। अवगुण्ठिता भव। अमृतीकृता भव। परमीकृता भव। प्राथिता भव। नमस्कृता भव।

इत्यावाहनादि मुद्राः प्रदर्श्य। ॐ मनोजूति ० श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिणी (दुर्गे देवते) सुप्रतिष्ठिता वरदा भव।

राजोपचार पूजा

भगवती जगदम्बा के तीन स्वरूप होते हैं । महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती, हाथ में पुष्प लेकर तीनों स्वरूपों का ध्यान करें ।

ध्यानम्

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुंडीं शिरः।
शंखं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।।
नीलाश्मद्युतिमास्य पाददशकां सेवे महाकालिकां।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।।
अक्षस्त्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुंडिकाम्।
दंडं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घंटां सुराभाजनम्।।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां।
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।
घंटा शूलहलानि शंखमुसले चक्रं धनुस्सायकं।
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसत् शीतांशुतुल्यप्रभाम्।।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगताम् - आधारभूतां महा।
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुंभादिदैत्यार्दिनीम्।।

ध्यान

कल्पलतादिसुरद्रुमवाटी, कल्पितरत्नगृहाधिनिवासाम् ।
कल्पशतार्जित पुण्यविशेषात् चेतसि भावनयाहमुपासे ।।

आवाहनम्

उषसि मागधमंगलगायकैर्झटिति जागृहि जागृहि जागृहि ।
अतिकृपार्द्र कटाक्षनिरीक्षणैर्जगदिदं जगदंब सुखीकुरु ।।

श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीस्वरूपात्मिकादुर्गायै नमः आवाहयामि ।

कनकमय वितर्दिशोभमानं दिशि दिशि पूर्णसुवर्णकुंभयुक्तम् ।
मणिमयमंडपमध्यमेहि मातर्मयि कृपयेति समर्चनं ग्रहीतुम् ।।

आसनम्

कनकमयवितर्दि स्थापिते तूलिकाढ्ये विविधकुसुमकीर्णे कोटिबालार्कवर्णे ।
भगवति रमणीये रत्नसिंहासनेऽस्मिन् उपविश पद्युग्मं हेमपीठे निधेहि ।।
एणधराश्म-कृतोन्नतधिष्ण्यं, हेमविनिर्मित - पादमनोज्ञम् ।
शोणशिला फलकं च विशालं, देवि सुखासनमद्य ददामि ।।

पाद्यम्

दूर्वया सरसिजान्वितविष्णुक्रान्तया च सहितं कुसुमाढ्यम् ।
पद्मयुग्मसदृशे पदयुग्मे पाद्यमेतदुररीकुरु मातः ।।

(पाद्यपात्रात्) पादयोः पाद्यं सम० ।

ईशमनोहररूपविलासे, शीतलचन्दन कुंकुममिश्रम् ।
हृद्य सुवर्णघटे परिपूर्णं पाद्यमिदं त्रिपुरेशि गृहाण ।।

अर्घ्यम्

गंधपुष्पयवसर्षपदूर्वा-संयुतं कुशतिलाक्षतमिश्रम् ।
हेमपात्रनिहितं सह रत्नै अर्घ्यमेतत् उररीकुरु मातः ।।
लब्धभवत् करुणोऽहमिदानीं रत्नसुमाक्षतयुक्तमनर्घम् ।
रुक्मविनिर्मितपात्रविशेषे - ष्वर्घमिदं त्रिपुरेशि ददामि ।।

आचमनीयम्

जलजद्युतिना करेण जातीफलकंकोल लवंगगंधयुक्तैः ।
अमृतैः अमृतैरिवासितैः भगवत्याचमनं विधीयताम् ।।
ह्रीं मिति मंत्रजपेन सुगम्ये, हेमलतोज्वलदिव्यशरीरे ।
योगिमनस्समशीतजलेन ह्याचमनं त्रिपुरेद्य विधेहि ।।

(आचमनीयपात्रात्)

मधुपर्कः

मधु निहितं कनकस्य संपुटे पिहितं रत्नपिधानकेन यत् ।
तदिदं भगवति करेऽर्पितं मधुपर्कं जननि प्रगृह्यताम् ।।
मधुपर्कं समर्पयामि (इति सर्वत्र बोध्यम्)

आचमनीयम्

पाद्यं ते परिकल्पितं च पदयोरर्घ्यं तथा हस्तयोः ।
सौधीभिर्मधुपर्कमंब मधुरं धाराभिरास्वादय ।।
तोयेनाचमनं विधेहि शुचिना गांगेन मत्कल्पितं ।
साष्टांगं प्रणिपातमंब कमले दृष्ट्या कृतार्थी कुरु ।।

पयस्नानम्

स्वर्धेनुजातं बलवीर्यवर्धनं दिव्यामृतात्यन्तरसप्रदं सितम् ।
श्रीचंडिके दुग्धसमुद्रसंभवे गृहाण दुग्धं मनसा मयार्पितम् ।।

दधिस्नानम्

क्षीरोद्भवं स्वादु सुधामयं च श्रीचंद्रकान्तिसदृशं सुशोभनम् ।
श्रीचंडिके शुंभनिशुंभनाशिनि स्नानार्थमंगीकुरु तेऽर्पितं दधि ।।

घृतस्नानम्

श्रीक्षीरजोद्भूतमिदं मनोज्ञं प्रदीप्तवह्नि द्युतिपावितं च ।
श्रीचंडिके दैत्यविनाशदक्षे हैयंगवीनं परिगृह्यतां च ।।

मधुस्नानम्

माधुर्यमिश्रं मधुमक्षिकागणैर्वृक्षालिरम्ये मधुकानने चितम् ।
श्री चंडिके शंकरप्राणवल्लभे स्नानार्थमंगीकुरु तेऽर्पितं मधु ।।

शर्करास्नानम्

पूर्णेक्षुकांभोधिसमुद्भवामिमां माणिक्यमुक्ताफल दाममंजुलाम् ।
श्रीचंडिके चंडविनाशकारिणि स्नानार्थमंगीकुरु शर्करां शुभाम् ।।

सुगंधितैलस्नानम्

एतच्चंपकतैलमंब विविधैः पुष्पैर्मुहुर्वासितं।
न्यस्तं रत्नमये सुवर्णचषके भृंगैर्भ्रमद्भिर्वृतम् ।।
सानन्दं व्रजसुंदरीभिरभितो हस्तैर्धृतं चिन्मये ।
केशेषु भ्रमरप्रभेषु सकलेष्वंगेषु चालिप्यताम् ।।

उद्वर्तनम्

मातः कुंकुमपंक निर्मितमिदं देहे तवोद्वर्तनं।
भक्त्याऽहं कलयामि हैमरजसा संमिश्रितं केसरैः ।।
केशानामलकैर्विशोध्य विशदान्कस्तूरिकाद्यर्चितैः।
स्नानं ते नवरत्नकुंभविधिना संवासितोष्णोदकैः ।।

स्नानम्

एलाशीरसुवासितैः सुकुसुमैर्गंगादितीर्थोदकैः।
माणिक्यादिक मौक्तिकामृतयुतैः स्वच्छैः सुवर्णोदकैः ।।
मंत्रान्वैदिकतांत्रिकान् परिपठन् सानंदमत्यादरात्।
स्नानं ते परिकल्पयामि जननि स्नेहात्त्वमंगीकुरु ।।
हस्तलसत्कटकादिसुभूषा,आदरतोऽम्ब वरोप्यनिधाय ।
चंदनवासित मंत्रिततोयैः, स्नानमयि त्रिपुरेशि विधेहि ।।

उत्तरे निर्माल्यं विसृज्य, पुनः संपूज्य, अभिषेकं कुर्यात् ।

शुद्धोदकस्नानम्

उद्गंधैरगरुद्भवैः सुरभिणा कस्तूरिकावारिणा।
स्फूर्जत् सौरभयक्षकर्दमजलैः काश्मीरनीलैरपि ।।
पुष्पांभोभिरशेषतीर्थसलिलैः कर्पूरवासोभरैः।
स्नानं ते परिकल्पयामि कमले भक्त्या तदंगीकुरु ।।

वस्त्रम्

बालार्कद्युतिदाडिमीयकुसुम - प्रस्पर्धिसर्वोत्तमं।
मातस्त्वं परिधेहि दिव्यवसनं भक्त्या मया कल्पितम् ।।
मुक्ताभिर्ग्रथितं च कंचुकमिदं स्वीकृत्य पीतप्रभं।
तप्तस्वर्णसमानवर्णमतुलं प्रावारमंगीकुरु ।।
संचितमंब मया ह्यतिमूल्यं, कुंकुमशोणमतीव मृदुत्वम् ।
शंकरतुंगतरांकनिवासे, वस्त्रयुगं त्रिपुरे परिधेहि ।।

आचमनीयम् -

भूपालदिक्पालकिरीटरत्न मरीचिनीराजित पादपीठे ।
देवैस्समाराधित पादपद्मे श्रीचंडिके स्वाचमनं गृहाण ।।

पादुका -

नवरत्नयुते मयार्पिते कमनीये तपनीयपादुके ।
सविलासमिदं पदद्वयं कृपया देवि तयोर्निधीयताम् ।।

केशपाशसंस्करणम् -

बहुभिरगरुधूपैः सादरं धूपयित्वा भगवति तव केशान् कंकतैर्मार्जयित्वा।
सुरभिभिरविंदैः चंपकैश्चार्चयित्वा झटिति कनकसूत्रैर्जूटयन् वेष्टयामि।।

सौवीरांजनम् - (सूरमो)

सौवीरांजनमिदमंब चक्षुषोस्ते विन्यस्तं कनकशलाकया मया यत् ।
तन्नूनं मलिनमपि त्वदक्षिसंगात् ब्रह्मेन्द्राद्यभिलषणीयतामियाय ।।

अलंकाराः -

मंजीरान्पदयोर्निधाय रुचिरान्विन्यस्य कांचीं कटौ ।
मुक्ताहार - मुरोजयोरनुपमां नक्षत्रमालां गले ।।
केयूराणि भुजेषु रत्नवलयश्रेणीः करेषु क्रमात् ।
ताटंके तव कर्णयोर्विनिदधे शीर्षे च चूडामणिम् ।।
धम्मिल्ले तव देवि हैमकुसुमान्याधाय भालस्थले।
मुक्काराजिविराजि हेमतिलकं नासापुटे मौक्तिकम् ।।

मातर्मौक्तिक जालिकां च कुचयोः सर्वांगुलीषूर्मिकाः।
कट्यां कांचनकिंकिणी विनिदधे रत्नावतंसौ श्रुतौ ।।
कंदलदंशुकिरीटमनर्घं, कंकणकुंडलनूपुरहारम् ।
अंगदमंगुलिभूषणमंब स्वीकुरु देवि पुराधिनिवासे ।।

गंधम् -

प्रत्यंगं परिमार्जयामि शुचिना वस्त्रेण संप्रोच्छनं।
कुर्वे केशकलापमायततरं धूपोत्तमै धूंपितम् ।।
काश्मीरैरगरुद्रवैर्मलयजैः संघर्ष्य संपादितं।
भक्तत्राणपरे मुकुन्दगृहिणि श्रीचंदनं गृह्यताम् ।।

कुंकुमम् -

मातर्भालतले तवातिविमले काश्मीरकस्तूरिका।
कर्पूरागरुभिः करोमि तिलकं देहेऽङ्गरागं ततः ।।
वक्षोजादिषु यक्षकर्दमरसं सिक्त्वा च पुष्पावृतिं।
पादौ कुंकुमलेपनादिभिरहं संपूजयामि क्रमात् ।।
हस्तलसच्चतुरायुधजाले, शस्ततरं मृगनाभिसमेतम्।
सद्घनसार सुकुंकुममिश्रं, चंदनपंकमिदं च गृहाण ।।

कज्जलम् -

चांपयेकर्पूरक चन्दनादिकैर्नानाविधैर्गंधचयैः सुवासितम् ।
नेत्राञ्जनार्थाय हरिन्मणिप्रभं श्रीचंडिके स्वीकुरु कज्जलं शुभम्।।

अक्षताः -

रत्नाक्षतैस्त्वां परिपूजयामि मुक्ताफलैर्वा रुचिरैरविद्धैः ।
अखंडितैर्देवि यवादिभिर्वा काश्मीरपंकांकिततंडुलैर्वा ।।

अत्तरम् -

जननि चंपकतैलमिदं पुरो मृगमदोऽयमयं पटवासकः ।
सुरभिगंधमिदं च चतुस्समं सपदि सर्वमिदं परिगृह्यताम् ।।

सिन्दूरम्

सीमन्ते ते भगवति मया सादरं न्यस्तमेतत्।
सिंदूरं ते हृदयकमले हर्षवर्षं तनोतु ।।
बालादित्यद्युतिरिव सदा लोहिता यस्य कान्तिः।
अन्तर्ध्वान्तं हरतु सततं चेतसा चिन्तयामि ।।

पुष्पाणिं

मंदारकुंद करवीरलवंगपुष्पैः त्वां देवि संततमहं परिपूजयामि ।
जातीजपा बकुलचंपककेतकादि नानाविधानि कुसुमानि च तेऽर्पयामि ।।

पुष्पमाला

पुष्पौघैर्द्योतयन्तैः सततपरिचलत्कान्तिकल्लोलजालैः।
कुर्वाणा मज्जदन्तःकरणविमलतां शोभितेव त्रिवेणी ।।
मुक्ताभिः पद्मरागैर्मरकतमणिभिर्निर्मिता दीप्यमानै।
र्नित्यं हारत्रयी त्वं भगवती कमले गृह्यतां कंठमध्ये।।
लब्धविकासकदंबकजाती, चंपकपंकजकेतकयुक्तैः ।
पुष्पचयैः मनसावचितैस्त्वाम्, अंब पुरेशि भवानि भजामि ।।

अथांगपूजा

हस्ते गंधपात्रं गृहीत्वा दक्षिणेनार्चयेत् –

ह्रीं दुर्गायै नमः पादौ पूजयामि ० मंगलायै ० गुल्फौ पूज ० भगवत्यै ० जंघे पूज ० कौमार्यै ० जानुनी पूज ० वागीश्वर्यै ० उरू पूज ० वरदायै ० कटिं ० पद्माकरवासिन्यै ० स्तनौ पूज ० महिषमर्दिन्यै ० कंठं पूज ० उमासुतायै ० स्कंधौ पूज ० इन्द्राण्यै ० भुजौ पूज ० गौर्यै ० हस्तौ पूज ० मोहवत्यै ० मुखं पूज ० शिवायै ० कर्णौ पूज ० अन्नपूर्णायै ० नेत्रे पूज ० कमलायै ० ललाटं पूज ० महालक्ष्म्यै ० सर्वांगं पूजयामि ।देव्या दक्षिणे सिंहं पूजयामि। वामे महिषं पूजयामि ।इत्यंगपूजा । " ' अ० " पूं

अथावरणपूजा

प्रथमावरणपूजा

वामेन तत्त्वमुद्रया तर्पणम्-दक्षिणेन ज्ञानमुद्रया पूजनम् ।

प्रार्थना

सच्चिन्मयपरे देवि परामृतचरुप्रिये ।
अनुज्ञां देहि मे मातः परिवारार्चनाय ते ।।

(यथा वामकरधृतार्द्रखण्डादि दक्षिणेनाक्षतपुष्पादिना पूजयामीति संपूज्य वामेन विशेषार्घ जलैस्तर्पयाम्येवं सर्वत्र) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यै नमः श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।। ऐं ह्रीं क्लीं महाकाल्यै नमः महाकाली श्री पादुकां पूजयामि ० ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै ० महालक्ष्मी ० श्रीपा ०। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ० महासरस्वत्यै ० महासरस्वती ० श्रीपा० बिन्दोः परितो गुरुचतुष्टयं पूजयेत् । ॐ गुरवे नमः गुरुशक्ति ० श्रीपा ०। ॐ परमगुरवे नमः परमगुरुशक्ति श्रीपा ०। ॐ परात्परगुरवे नमः परात्परगुरुशक्ति श्रीपा ० ॐ परमेष्ठिगुरवे नमः परमेष्ठिगुरुशक्ति श्रीपा ०। षडङ्गे पूजयेत् - ॐ ऐं हृदयाय ० हृदयशक्ति श्रीपा ०। ॐ ह्रीं शिरसे नमः शिरः शक्ति श्रीपा ०। ॐ क्लीं शिखायै नमः शिखाशक्ति श्रीपा ०। ॐ चामुण्डायै कवचाय ० कवचशक्ति श्रीपा ०। ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय ०। नेत्रशक्तिश्रीपा ० मूलेन अस्त्राय ० अस्त्रशक्ति श्रीपा० प्रथमावरण देवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धं पुष्पं च समर्पयामि (सामान्यार्घ्यजलमादाय)-एताः प्रथमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

इति प्रथमावरणम् ।

(पुष्पाञ्जलिमादाय) –

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ।।

(पुष्पांजलिं दत्वा योनिमुद्रया प्रणमेत्) इति प्रथमावरणम् ।

अथ द्वितीयावरणम्

त्रिकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन पूजयेत् । ॐ सावित्र्या सह ॐ विधात्रे ० विधातृशक्ति श्रीपा ० । ॐ श्रिया सह ॐ विष्णवे ० विष्णुशक्ति श्रीपा ० । ॐ उमया सह ॐ शिवाय ० शिवशक्ति श्रीपा ० । ॐ क्षुं नमः सिंहाय ० सिंहशक्ति श्रीपा ० । ॐ हुं नमः महिषाय ० महिषशक्ति श्रीपा ० । द्वितीयावरणदेवताभ्यो नमः गंधं पुष्पं च समर्पयामि । सामा० एताः द्वितीयावरणदेवताः सां० स० पूजितास्तर्पिताः सन्तु० । अभीष्ट० भक्त्या० द्वितीयावरणार्चनम्० । पुष्पाञ्जलिं दत्वा योनिमुद्रया प्रणमेत् । इति द्वितीयावरणम् ।

अथ तृतीयावरणम्

षट्कोणे अग्नीशासुरवायव्यमध्ये दिक्षु च पूजयेत् – ॐ ऐं नन्दजायै ० नन्दजाशक्ति श्रीपा ० । ॐ ह्रीं रक्तदन्तिकायै ० रक्तदन्तिकायै ० रक्तदन्तिकाशक्ति श्रीपा ० । ॐ क्लीं शाकंभर्यै ० शाकंभरीशक्ति श्रीपा ० । ॐ दुं दुर्गायै ० दुर्गाशक्ति श्रीपा ० । ॐ हुं भीमायै ० भीमाशक्ति श्रीपा ० । ॐ ह्रीं भ्रामर्यै ० भ्रामरीशक्ति श्रीपा ० । तृतीयावरण देवताभ्यो नमः गंधं पुष्पं ० सम० । एतास्तृतीया-वरणदेवताः सां० स० पूजितास्तर्पिताः सन्तु । (पुष्पाञ्जलिमादाय) अभीष्ट० भक्त्या० तृतीयावरणार्चनम् । पुष्पाञ्जलिं दत्वा योनिमुद्रया प्रणमेत् । इति तृतीयावरणम् ।

अथ चतुर्थावरणम्

ततोऽष्टपत्रे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन पूजयेत् – ॐ ऐं ब्राह्मयै नमः

ब्राह्मीशक्तिश्रीपा ०। ॐ ह्रीं माहेश्वर्यै ० माहेश्वरीशक्तिश्रीपा ०। ॐ क्लीं कौमार्यै ० कौमारी शक्तिश्रीपा ०। ॐ ह्रीं वैष्णव्यै ० वैष्णवीशक्तिश्रीपा ०। ॐ लृं वाराह्यै ० वाराहीशक्तिश्रीपा ०। ॐ क्ष्यों नारसिंह्यै ० नारसिंही-शक्तिश्रीपा ०। ॐ लं ऐंद्र्यै ० ऐन्द्रीशक्तिश्रीपा०। ॐ क्ष्यों चामुण्डायै० चामुण्डाशक्तिश्रीपा ०। ॐ ह्रीं लक्ष्म्यै ० लक्ष्मीशक्तिश्रीपा ०। चतुर्थावरण देवताभ्यो ० गंध पुष्पं स ० सामा ० एताः चतुर्थावरण-देवताः सां०स० पूजितास्तर्पिताः सन्तु०।(पुष्पाञ्जलिमादाय) अभीष्ट० चतुर्थावरणार्चनम्।पुष्पाञ्जलिं दत्वा योनिमुद्रयाप्रणमेत्।इति चतुर्थावरणम्।

अथ पंचमावरणम्

ततश्चतुर्विंशतिदले स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन ॐ विं विष्णुमायायै ० विष्णुमायाशक्ति श्रीपा ०। ॐ चें चेतनायै ० चेतनाशक्तिश्रीपा०। ॐ बुं बुद्ध्यै ० बुद्धिशक्ति श्रीपा ०। ॐ निं निद्रायै ० निद्राशक्तिश्रीपा ०। ॐ क्षुं क्षुधायै ० क्षुधाशक्तिश्रीपा ०। ॐ छां छायायै ० छायाशक्तिश्रीपा ०। ॐ शं शक्त्यै शक्ति श्रीपा ०। ॐ तृं तृष्णायै० तृष्णाशक्तिश्रीपा ०। ॐ क्षां क्षान्त्यै ० क्षान्तिशक्तिश्रीपा ० ॐ जां जात्यै० जातिशक्तिश्रीपा ० ॐ लं लज्जायै ० लज्जाशक्तिश्रीपा ० ॐ शां शान्त्यै० शान्तिशक्तिश्रीपा ०। ॐ श्रं श्रद्धायै ० श्रद्धाशक्तिश्रीपा ०। ॐ कां कान्त्यै कान्तिशक्ति श्रीपा ०। ॐ लं लक्ष्म्यै ० लक्ष्मीशक्ति श्रीपा ०। ॐ धृं धृत्यै ० धृतिशक्तिश्रीपा ०। ॐ वृं वृत्त्यै ० वृत्तिशक्तिश्रीपा ०। ॐ श्रुं श्रुत्यै ० श्रुतिशक्तिश्रीपा ०। ॐ स्मृं स्मृत्यै ० स्मृतिशक्तिश्रीपा ०। ॐ दं दयायै दयाशक्तिश्रीपा ०। ॐ तुं तुष्ट्यै ० तुष्टिशक्तिश्रीपा ०। ॐ पुं पुष्ट्यै ० पुष्टिशक्तिश्रीपा ०। ॐ मां मातृभ्यो ० मातृशक्तिश्रीपा ०। ॐ भ्रां भ्रान्त्यै ० भ्रान्तिशक्तिश्रीपा ०।

विष्णुमायादि पञ्चमावरणदेवता: साङ्गा: स ० पूजितास्तर्पिता: सन्तु (पुष्पाञ्जलि-मादाय) अभीष्ट ० भक्त्या ० पञ्चमावरणार्चनम् (पुष्पाञ्जलिं दत्वा योनिमुद्रया प्रणमेत्) इति पञ्चमावरणम् ।

अथ षष्ठावरणम्

भूपुरे कोणचतुष्टये आग्नेयादिकोणमारभ्य - ॐ गं गणपतये ० गणपतिशक्तिश्रीपा ०।ॐ क्षं क्षेत्रपालाय०क्षेत्रपालशक्तिश्रीपा ०। ॐ बं बटुकाय ० बटुकशक्तिश्रीपा ०। ॐ यां योगिन्यै ० योगिनीशक्ति श्रीपा ०गणपत्यादि षष्ठावरणदेवताभ्यो०गंधं पु ० स०सामा०एता: षष्ठावरणदेवता: सा०स०पूजितास्तर्पिता: सन्तु। (पुष्पाञ्जलिमादाय) अभीष्ट ० भक्त्या ० षष्ठावरणार्चनम् । (पुष्पाञ्जलिं दत्वा योनिमुद्रया प्रणमेत्) इति षष्ठावरणम् ।

अथ सप्तमावरणम्

पूर्वादिदशदिक्षु- ॐ लं इन्द्राय ० इन्द्रशक्ति श्रीपा ०।ॐ रं अग्नये अग्निशक्तिश्रीपा ०। ॐ यं यमाय ० यमशक्तिश्रीपा ०। ॐ क्षं निर्ऋतये निर्ऋतिशक्तिश्रीपा ०।ॐ वं वरुणाय ० वरुणशक्तिश्रीपा ० ॐ यं वायवे ० वायुशक्ति श्रीपा ०।ॐ सं सोमाय ० सोमशक्ति श्रीपा ०।ॐ हं ईशानाय ० ईशानशक्तिश्रीपा ०।ॐ ब्रं ब्रह्मणे ० ब्रह्मशक्ति श्रीपा ०। ॐ ह्रीं अनन्ताय ० अनन्तशक्तिश्रीपा ०। सप्तमावरणदेवताभ्यो ० गंधं पु ० स ० एता: सप्तमावरणदेवता: सां ० स० पूजितास्तर्पिता: सन्तु (पुष्पाञ्जलिम् आदाय - अभीष्ट ० भक्त्या ० सप्तमावरणार्चनम् ।। (पुष्पांञ्जलिं दत्वा योनिमुद्रया प्रणमेत्) इति सप्तमावरणम् ।

अथाष्टमावरणम्

तद्बहि: ॐ वं वज्राय ० वज्रशक्तिश्रीपा ०। ॐ शं शक्त्यै ० शक्तिश्रीपा ०। ॐ दं दण्डाय ० दण्डशक्तिश्रीपा ०। ॐ खं

खड्गाय० खड्गशक्ति श्रीपा ०। ॐ पां पाशाय ० पाशशक्ति श्रीपा ०। ॐ अं अंकुशाय अंकुशशक्ति श्रीपा ०। ॐ गं गदायै ० गदाशक्तिश्रीपा ०। ॐ त्रिं त्रिशूलाय ० त्रिशूलशक्तिश्रीपा ०। ॐ पं पद्माय ० पद्मशक्तिश्रीपा ० ॐ चं चक्राय ० चक्रशक्तिश्रीपा० अष्टमावरणदेवताभ्यो० गंधं पुष्पं स०। सामा० एताः अष्टमा-वरणदेवताः सा ० स ० पूजितास्तर्पिताः सन्तु ० (पुष्पाञ्जलिम् आदाय अभीष्ट० भक्त्या० अष्टमावरणार्चनम् ।।
(पुष्पांजलिं दत्वा योनिमुद्रया प्रणमेत्) इत्यष्टमावरणार्चनम् ।

अथ नवमावरणार्चनम्

कलशात्पूर्वादिदिक्षु – ॐ वज्रहस्तायै गजारूढायै कादम्बरीदेव्यै ० कादम्बरीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ०। ॐ शक्तिहस्तायै अजवाहनायै उल्कादेव्यै ० उल्कादेवी श्रीपा ०। ॐ दण्डहस्तायै महिषारूढायै ० करालीदेव्यै ० करालीदेवी श्रीपा ०। ॐ खड्गहस्तायै शववाहनायै रक्ताक्षीदेव्यै ० रक्ताक्षी देवी श्रीपा ०। ॐ पाशहस्तायै मकरवाहनायै श्वेताक्षीदेव्यै श्वेताक्षीदेवी श्रीपा ०। ॐ अंकुशहस्तायै मृगवाहनायै हरिताक्षीदेव्यै ० हरिताक्षी देवी श्रीपा ० । गदाहस्तायै सिंहारूढायै यक्षिणी देव्यै ० यक्षिणीदेवीश्रीपा ०। ॐ त्रिशूलहस्तायै वृषभवाहनायै कालीदेव्यै० कालीदेवीश्रीपा ०। ॐ पद्महस्तायै हंसवाहनायै सुरज्येष्ठादेव्यै सुरज्येष्ठादेवीश्रीपा०। ॐ चक्रहस्तायै सर्पवाह्नायै सर्पराज्ञीदेव्यै० सर्पराज्ञीदेवीश्रीपा ०। नवमावरणदेवताभ्यो ० गंधं पुष्पं ० स ० सामा ० एता नवमावरणदेवताः साङ्गाः स० पूजितास्तर्पिताः सन्तु (पुष्पाञ्जलि-मादाय) अभीष्ट ० भक्त्या ० नवमावरणार्चनम् । पुष्पांञ्जलिं दत्वा योनिमुद्रया प्रणमेत् । इति नवमावरणम् ।।

अथ देवीसहस्रनामावलिप्रारंभः

गंधाक्षत पुष्प आदि से सहस्त्र नामों की पूजा करें । आचार्य श्री सहस्त्र नामावली बोलें - यजमान 'पूजयामि' बोलकर पुष्प आदि समर्पण करें ।

अस्य श्री देवीसहस्त्रनामस्तोत्रमंत्रस्य भगवान् महादेव ऋषिः आद्याशक्तिः जगदम्बिका दुर्गादेवता अनुष्टुप् छन्दः तुलसीपत्र / बिल्व / पुष्प-अक्षत / समर्पणे विनियोगः ।

ध्यानम्

या ह्यंबा मधुकैटभप्रमथिनी या माहिषोन्मूलिनी।
या धूम्रेक्षणचंडमुण्डदलिनी या रक्तबीजाशिनी ।।
शक्तिः शुंभनिशुंभदैत्यदलिनी या सिद्धलक्ष्मीः परा।
सा चण्डीनवकोटिमूर्तिसहिता मां पातु विश्वेश्वरी ।।
उद्यदादित्यसंकाशां त्र्यक्षां स्मेरमुखीं भजे ।
पाशांकुशाभयवरान् दधतीं जगदम्बिकाम् ।।

ह्रीं महाविद्यायै नमः। जगन्मात्रे० महालक्ष्म्यै० शिवप्रियायै० विष्णुमायायै ० शुभायै ० शान्तायै ०सिद्धायै ० सिद्धसरस्वत्यै ० क्षमायै ० कांत्यै ० प्रभायै ० ज्योत्स्नायै ० पार्वत्यै ० सर्वमंगलायै ० हिंगुलायै ० चंडिकायै ० दांतायै ० पद्मायै ० लक्ष्म्यै ० हरिप्रियायै ० त्रिपुरानंदिन्यै ० नंदायै ० सुनंदायै ० सुरवंदितायै ० यज्ञविद्यायै ० महामायायै ० वेदमात्रे ० सुधायै ० धृत्यै ० प्रीत्यै ० प्रियायै ० प्रसिद्धायै ० मृडान्यै ० विंध्यवासिन्यै ० सिद्धविद्यायै ० महाशक्त्यै ० पृथिव्यै ० नारदसेवितायै ० पुरुहूतप्रियायै ० कांत्यै ० कामिन्यै ० पद्मलोचनायै ० प्रह्लादिन्यै ० महामात्रे ० दुर्गायै ० दुर्गातिनाशिन्यै० ज्वालामुख्यै ० सुगोत्रायै ० ज्योत्यै ० कुमुदवासिन्यै ० दुर्लभायै ० विद्यायै ० स्वर्गत्यै ० पुरवासिन्यै ० अपर्णायै ० शांकर्यै ० मायायै ० मदिरायै ० मृदुहासिन्यै ० नारायण्यै ० महानिद्रायै ० योगनिद्रायै ० प्रभावत्यै ० प्रज्ञायै ० अपरिमितायै ०

प्राज्ञायै ० तारायै ० मधुमत्यै ० मधवे० क्षीरार्णवसुतायै० बालायै० बालिकायै० सिंहगामिन्यै० ओंकारायै० सुधाकारायै० चेतनायै० कोपनायै० क्षित्यै० अर्धबिंदुधरायै० धीरायै० विश्वमात्रे० कलावत्यै० पद्मावत्यै० सुवस्त्रायै० प्रवृद्धायै० सरस्वत्यै० जितमात्रे० जितेन्द्रायै० शारदायै० हंसवाहनायै० कुंडासनायै० जगद्धात्र्यै० बुद्धमात्रे० जनेश्वर्यै० राज्यलक्ष्म्यै० वषट्कारायै० सुधाकारायै० १०० ।। सुधात्मिकायै० राजनीत्यै० त्रयीवर्तायै० दंडनीत्यै० क्रियावृत्यै० सद्गत्यै० तारिण्यै० श्रद्धायै० सद्गत्यै० सत्परायणायै० सिंधवे० मंदाकिन्यै० गंगायै० यमुनायै० सरस्वत्यै० गोदावर्यै० विपाशायै० कावेर्यै० शतह्रदायै० सरय्वै० चन्द्रभागायै० कौशिक्यै० गंडक्यै० शिवायै० नर्मदायै० कर्मनाशायै० चर्मण्वत्यै० वेदिकायै० वेत्रवत्यै० वितस्तायै० वरदायै० वरवाहनायै० सत्यै० पतिव्रतायै० साध्व्यै० सुचक्षुषे० कुंडवासिन्यै० एक चक्षुषे० सहस्त्राक्ष्यै० सुश्रोण्यै० भगमालिन्यै० सेनाश्रेण्यै० पताकायै० सव्यूहायै० युद्धकांक्षिण्यै० पताकिन्यै० दयायै० रम्भायै० विपंच्यै० पंचमप्रियायै० परायै० परकलायै० कान्तायै० त्रिशक्त्यै० मोक्षदायिन्यै० ऐन्द्र्यै० माहेश्वर्यै० ब्राह्म्यै० कौमार्यै० कमलासनायै० इच्छायै० भगवत्यै० धेन्वै० कामधेन्वै० कृपावत्यै० वज्रायुधायै० वज्रहस्तायै० चंड्यै० चंडपराक्रमायै० गौर्यै० सुवर्णवर्णायै० स्थितिसंहारकारिण्यै० एकायै० अनेकायै० महेज्यायै० शतबाहवे० महाभुजायै० भुजंगभूषणायै० भूषायै० षट्चक्रक्रमवासिन्यै० षट्चक्रभेदिन्ये० श्यामायै० कायस्थायै० कायवर्जितायै० सुस्मितायै० सुमुख्यै० क्षामायै० मूलप्रकृत्यै० ईश्वर्यै० अजायै० बहुवर्णायै० पुरुषार्थप्रवर्तिन्यै० रक्तायै० नीलायै० सितायै० श्यामायै० कृष्णायै० पीतायै० कर्बुरायै० क्षुधायै० २०० ।। तृष्णायै० जरायै० वृद्धायै० तरुण्यै० करुणालयायै० कलायै० काष्ठायै० मुहूर्तायै० निमेषायै० कालरूपिण्यै० सुवर्णायै० रसनायै० नासायै० चक्षुषे० स्पर्शवत्यै० रसायै० गंधप्रियायै० सुगंधायै० सुस्पर्शायै० मनोगत्यै० मृगनाभ्यै०

मृगाक्ष्यै० कर्पूरामोदधारिण्यै० पद्मयोन्यै० सुकेश्यै० सुलिंगायै०
भगरूपिण्यै० योनिमुद्रायै० महामुद्रायै० खेचर्यै० स्वर्गगामिन्यै०
मधुश्रियै० माधवीवल्यै० मधुमत्तायै० मदोद्धतायै० मातंग्यै०
शुकहस्तायै० पुष्पबाणायै० इक्षुचापिण्यै० रक्ताम्बरधराक्ष्यै०
रक्तपुष्पावतंसिन्यै० शुभ्रांबरधरायै० आधारायै० महाश्वेतायै०
वसुप्रियायै० सुवेण्यै० पद्महस्तायै० मुक्ताहारविभूषणायै०
कर्पूरामोदिन्यै० श्वासायै० पद्मिन्यै० पद्ममंदिरायै० खड्गिन्यै०
चक्रहस्तायै० भूशुंडीपरिघायुधायै० चापिन्यै० पाशहस्तायै०
त्रिशूलवरधारिण्यै० सुबाणायै० शक्तिहस्तायै० मयूरवरवाहनायै०
वरायुधधरायै० धीरायै० वीरपानमदोत्कटायै० वसुधायै० वसुधारायै०
जयायै० शाकंभर्यै० शिवायै० विजयायै० जयंत्यै० सुस्तन्यै०
शत्रुनाशिन्यै० कूर्मायै० सुपर्वायै० कामाक्ष्यै० कामवंदितायै०
जालंधरधरायै० अनंतायै० कामरूपनिवासिन्यै० अंतर्वल्यै० देवशक्त्यै०
वरदायै० वरधारिण्यै० शीतलायै० सुशीलायै० बालग्रहविनाशिन्यै०
कामबीजवत्यै० सत्यायै० सत्यधर्मपरायणायै० स्थलूमार्गस्थितायै०
सूक्ष्मायै० सूक्ष्मबुद्ध्यै० प्रबोधिन्यै० षट्कोणायै० त्रिकोणायै० त्र्यक्षायै०
त्रिपुरसुंदर्यै० धृषप्रियायै० वृषारूढायै० ३०० ।। महिषासुरघातिन्यै०
शंभुदर्पहरायै० दृप्तायै० दीप्तपावकसन्निभायै० कपालभूषणायै०
काल्यै० कपालवरधारिण्यै० कपालकुण्डलायै० दीर्घायै० शिवदूत्यै०
घनस्वन्यै० सिद्धिदायै० बुद्धिदायै० नित्यायै० सत्यमार्गप्रबोधिन्यै०
मूलाधारायै० निराकारायै० वह्निकुंडकृताश्रयायै० वायुकुण्डा-
सनासिन्यै० निराधारायै० निराश्रयायै० कंबुग्रीवायै० वसुमत्यै०
छत्रच्छायाकृतालयायै० कुंडलिन्यै० जगद्गर्भायै० भुजंगाकारशायिन्यै०
प्रोल्लसत्समपद्मायै० नाभिनालमृणालिकायै० वल्लितंतुसमुत्थानायै०
षड्रसास्वादलोलुपायै० श्वासोच्छ्वासगतये० जिह्वाग्राहिण्यै०
वनसंश्रयायै० तपस्विन्यै० तपःसिद्धायै० तापस्यै० तपःप्रियायै०
तपोनिष्ठायै० तपोयुक्तायै० तपसःसिद्धिदायिन्यै० सप्तधातुमयीमूर्त्यै०

सप्तधात्वंतराश्रयायै० देहपुष्ट्यै० मनस्तुष्ट्यै० रत्नपुष्ट्यै० बलोद्धतायै० ओषध्यै० वैद्यमात्रे० द्रव्यशक्त्यै० प्रभाविन्यै० वैद्यविद्यायै० चिकित्सायै० सुपथ्यायै० रोगनाशिन्यै० मृगयायै० मृगमांसादायै० मृगत्वचे० मृगलोचनायै० वागुरायै० बंधरूपायै० वधरूपायै० वधोद्यतायै० बंदिन्यै० बंदिस्तुताकारायै० काराबंधविमोचिकायै० शृंखलायै० कलहायै० विद्यायै० दृढबंधविमोक्षिण्यै० अंबिकायै० अंबालिकायै० अंबायै० स्वस्थायै० साधुजनार्चितायै० कौलिक्यै० कुलविद्यायै० सुकुलायै० कुलपूजितायै० कालचक्रभ्रमायै० भ्रांतायै० विभ्रमायै० भ्रमनाशिन्यै० वात्याल्यै० मेघमालायै० सुवृष्ट्यै० साम्यवर्धिन्यै० अकारायै० इकारायै० उकारायै० ऐंकाररूपिण्यै० ह्रींकारबीजरूपायै० क्लींकारांबररूपिण्यै० सर्वाक्षरमयीशक्त्यै० अक्षरार्णवमालिन्यै० सिंदूरायै० अरुणवर्णायै० सिंदूरतिलकप्रियायै० वश्यायै० वश्यबीजायै० ४०० ।। लोकवश्यविभाविन्यै० नृपवश्यायै० नृपसेव्यायै० नृपवश्यकर्यै० प्रियायै० महिष्यै० नृपमान्यायै० नृपाज्ञायै० नृपनंदिन्यै० नृपधर्ममय्यै० धन्यायै० धनधान्यविवर्धिन्यै० चातुर्वर्ण्यमय्यै० नीत्यै० चतुर्वर्णैःपूजितायै० सर्वधर्ममयीशक्त्यै० चतुराश्रमवासिन्यै० ब्राह्मण्यै० क्षत्रियायै० वैश्यायै० शूद्रायै० आचारवरवर्णजायै० वेदमार्गरतायै० यज्ञायै० वेदविश्वविभाविन्यै० अस्त्रशस्त्रमयीविद्यायै० वरशस्त्रास्त्रधारिण्यै० सुमेधायै० सत्यमेधायै० भद्रकाल्यै० अपराजितायै० गायत्र्यै० सुकृत्यै० संध्यायै० सावित्र्यै० त्रिपदाश्रयायै० त्रिसंध्यायै० त्रिपदायै० धात्र्यै० सुस्वरायै० सामगायिन्यै० पांचाल्यै० कालिकायै० बालायै० बालक्रीडायै० सनातन्यै० गर्भधारायै० धरायै० शून्यायै० गर्भाशयनिवासिन्यै० सुरारिघातिन्यै० कृत्यायै० पूतनायै० तिलोत्तमायै० लज्जायै० रसवत्यै० नंदायै० भवान्यै० पापनाशिन्यै० पट्टांबरधरायै० गीतायै० सुगीत्यै० गानगोचरायै० सप्तस्वरमयीतंत्र्यै० षड्जमध्यमधैवतायै० मूर्च्छनाग्रामसंस्थायै० स्वस्थानायै० स्वस्थानवासिन्यै० शत्रुमार्गायै० महादेव्यै० वैष्णव्यै०

कुलपुत्रिकायै० अट्टाट्टहासिन्यै० प्रेतायै० प्रेतासननिवासिन्यै० गीतनृत्यप्रियायै० कामायै० तुष्टिदायै० पुष्टिदायै० क्षमायै० निष्ठायै० सत्यप्रियायै० प्रज्ञायै० लोकेशायै० सुरोत्तमायै० सविषायै० ज्वलिन्यै० ज्वालायै० विषमोहार्तिनाशिन्यै० विषायै० नागदमन्यै० कुरुकल्पायै० अमृतोद्भवायै० भूतभीतिहरायै० रक्षायै० भूतावेश-निवासिन्यै० रक्षोघ्न्यै० राक्षस्यै० रात्र्यै० दीर्घनिद्रायै० ५०० ।। दिवागत्यै० चंद्रिकायै० चंद्रकांत्यै० सूर्यकांत्यै० निशाचर्यै० डाकिन्यै० शाकिन्यै० शिक्षायै० हाकिन्यै० चक्रवर्तिन्यै० शिवायै० शिवप्रियायै० स्वांगायै० सकलायै० वनदेवतायै० गुरुरूपधरायै० गुर्व्यै० मृत्युमार्यै० विशारदायै० महामार्यै० विनिद्रायै० तंद्रायै० मृत्युविनाशिन्यै० चंद्रमंडलसंकाशायै० चंद्रमंडलवर्तिन्यै० अणिमादिगुणोपेतायै० सुस्पृहायै० कामरूपिण्यै० अष्टसिद्धिप्रदायै० प्रौढायै० दुष्टदानवघातिन्यै० अनादिनिधनायै० पुष्ट्यै० चतुर्बाहवे० चतुर्मुख्यै० चतुःसमुद्रवसनायै० चतुर्वर्गफलप्रदायै० काशपुष्पप्रतीकाशायै० शरत्कुमुदलोचनायै० भूतभव्यभविष्यायै० शैलजायै० शैलवासिन्यै० वाममार्गरतायै० वामायै० शिववामांगवासिन्यै० वामाचारप्रियायै० तुष्ट्यै० लोपामुद्रायै० प्रबोधिन्यै० भूतात्मने० परमात्मने० भूतभावविभाविन्यै० मंगलायै० सुशीलायै० परमार्गप्रबोधिन्यै० दक्षायै० दक्षिणामूर्त्यै० सुदक्षायै० हरिप्रियायै० योगिन्यै० योगनिद्रायै० योगांगध्यानशालिन्यै० योगपट्टधरायै० मुक्तायै० मुक्तानांपरमागत्यै० नारसिंह्यै० सुजन्मने० त्रिवर्गफलदायिन्यै० धर्मदायै० धनदायै० कामदायै० मोक्षदायै० द्युत्यै० साक्षिण्यै० क्षणदायै० आकांक्षायै० दक्षजायै० कोटिरूपिण्यै० ऋतवे० कात्यायन्यै० स्वस्थायै० स्वच्छन्दायै० कविप्रियायै० सत्यागमायै० बहिःस्थायै० काव्यशक्त्यै० कवित्वदायै० मेनापुत्र्यै० सत्यै० साध्व्यै० मैनाकभगिन्यै० तडिते० सौदामिन्यै० सुधामायै० सुधाम्न्यै० धामशालिन्यै० सौभाग्यदायिन्यै० दिवे० सुभगायै० द्युतिवर्धिन्यै० ६०० ।। श्रियै० ह्रियै० कृत्तिवसनायै० कृत्तिकायै० कालनाशिन्यै०

रक्तबीजवधोद्युक्तायै० सुतंतवे० बीजसंतत्यै० जगज्जीवायै०
जगद्बीजायै० जगत्त्रयहितैषिण्यै० चामीकरायै० चंद्रायै०
साक्षात्षोडशीकलायै० यत्तत्पदानुबंधायै० यक्षिण्यै० धनदार्चितायै०
चित्रिण्यै० चित्रमायायै० विचित्रायै० भुवनेश्वर्यै० चामुण्डायै०
मुंडहस्तायै० चंडवधोद्यतायै० अष्टम्यै० एकादश्यै० पूर्णायै० नवम्यै०
चतुर्दश्यै० उमायै० कलशहस्तायै० पूर्णकुंभधरायै० धरायै० अभीरवे०
भैरव्यै० भीरवे० भीमायै० त्रिपुरभैरव्यै० महाचंडायै० रौद्रायै०
महाभैरवपूजितायै० निर्मुण्डायै० हस्तिन्यै० चंडायै० करालदश-
नाननायै० करालायै० विकरालायै० घोरघर्घरनादिन्यै० रक्तदन्तायै०
ऊर्ध्वकेश्यै० बन्धूककुसुमारुणायै० कादंबर्यै० पलाशायै०
काश्मीरकुंकुमप्रियायै० क्षांत्यै० बहुसुवर्णायै० रत्यै० बहुसुवर्णदायै०
मातंगिन्यै० वरारोहायै० मत्तमातंगगामिन्यै० हंसायै० हंसगत्यै० हंस्यै०
हंसोज्ज्वलशिरोरुहायै० पूर्णचन्द्रप्रतीकाशायै० स्मितास्यायै०
सुकुंडलायै० मष्यै० लेखन्यै० लेखायै० सुलेखायै० लेखकप्रियायै०
शंखिन्यै० शंखहस्तायै० जलस्थायै० जलदेवतायै० कुरुक्षेत्रायै० वन्यै०
काश्यै० मथुरायै० कांच्यै० अवंतिकायै० अयोध्यायै० द्वारकायै०
मायायै० तीर्थायै० तीर्थकर्यै० प्रियायै० त्रिपुरायै० अप्रमेयायै०
कोशस्थायै० कोशवासिन्यै० कोशिक्यै० कुशावर्तायै० कोशांबायै०
कोशवर्धिन्यै० कोशदायै० पद्मकोशाक्ष्यै० कुसुंभकुसुमप्रियायै०
७०० ।।तोतुलायै० वर्तुलायै० कोट्यै० कोटस्थायै० कोटराश्रयायै०
स्वयंभुवे० स्वरूपायै० सुरूपायै० रूपवर्धिन्यै० तेजस्विन्यै० सुदीक्षायै०
बलदायै० बलदायिन्यै० महाकोशायै० महागर्तायै० बुद्ध्यै०
सदसदात्मिकायै० महाग्रहहरायै० सौम्यायै० विशोकायै०
लोकनाशिन्यै० सात्विकायै० सत्वसंस्थायै० राजस्यै० रजोत्तमायै०
तामस्यै० तमोयुक्तायै० गुणत्रयविभाविन्यै० अव्यक्तायै० व्यक्तरूपायै०
वेदविद्यायै० शांभव्यै० कल्याण्यै० शांकर्यै० कल्पायै०
मनःसंकल्पसंतत्यै० सर्वलोकमयीशक्त्यै० सर्वश्रवणगोचरायै०

सर्वज्ञानवत्यै० वांच्छायै० सर्वतत्वप्रबोधिन्यै० जागृत्यै० सुषुप्त्यै० स्वप्नावस्थायै० तुरीयकायै० त्वरायै० मंदगत्यै० मंदायै० मदिरामोदमोदिन्यै० पानभूम्यै० पानपात्रायै० पानदानकरोद्यतायै० अघूर्णायै० अरुणनेत्रायै० किंचिदव्यक्तभाषिण्यै० आशापूरायै० दीक्षायै० दीक्षादीक्षित पूजितायै० नागवल्ल्यै० नागकन्यायै० भोगिन्यै० भोगवल्लभायै० सर्वशास्त्रमय्यै० सुस्मृत्यै० धर्मवादिन्यै० श्रुतिस्मृतिधरायै० ज्येष्ठायै० श्रेष्ठायै० पातालवासिन्यै० मीमांसायै० तर्कविद्यायै० सुभक्त्यै० भक्तवत्सलायै० सुनाभ्यै० यातनायै० यात्यै० गंभीरायै० अभाववर्जितायै० नागपाशधरामूर्त्यै० अगाधायै० नागकुंडलायै० सुचक्रायै० चक्रमध्यस्थायै० चक्रकोणनिवासिन्यै० सर्वमंत्रमय्यै० विद्यायै० सर्वमंत्राक्षरायै० मधुश्रवसे० स्त्रवन्त्यै० भ्रामर्यै० भ्रमरालयायै० मातृमंडलमध्यस्थायै० मातृमंडलवासिन्यै० कुमारजनन्यै० क्रूरायै० सुमुख्यै० ज्वरनाशिन्यै० अतीतायै० विद्यमानायै० भाविन्यै० प्रीतिमंजर्यै० ८०० ।। सर्वसौख्यवती-शक्त्यै० आहारपरिणामिन्यै० पंचभूतनिदानायै० भवसागरतारिण्यै० अक्रूरायै० ग्रहवत्यै० विग्रहायै० ग्रहवर्जितायै० रोहिणीभूमिगर्भायै० कालभुवे० कालवर्तिन्यै० कलंकरहितायै० नार्यै० चतुःषष्ठ्यभि-धायिन्यै० जीर्णायै० जीर्णवस्त्रायै० नूतनायै० नववल्लभायै० अजरायै० रतिप्रियायै० अतिरागविवर्धिन्यै० पंचस्थानविभाविन्यै० पंचश्लेष्मा-शयाधरायै० पंचवित्तवतीशक्त्यै० पंचस्थानविभाविन्यै० उदक्यायै० वृषस्यंत्यै० त्र्यहः प्रसूविण्यै० रजःशुक्रधराशक्त्यै० जरायुर्गर्भधारिण्यै० त्रिकालज्ञायै० त्रिलिंगायै० त्रिमूर्तिपुरवासिन्यै० अगारायै० शिवतत्त्वायै० कामतत्त्वायै० रागिण्यै० प्राच्यै० अवाच्यै० प्रतीच्यै० उदीच्यै० विदिशे० दिशायै० अहंकृत्यै० अहंकारायै० बालमालायै० बलिप्रियायै० स्त्रुचे० स्त्रुवायै० सामिधेन्यै० सुश्रद्धायै० श्राद्धदेवतायै० मात्रे० मातामह्यै० तृप्त्यै० पितृर्मात्रे० पितामह्यै० स्नुषायै० दौहित्रिण्यै० पुत्र्यै० पौत्र्यै० नप्त्र्यै स्वस्त्रे० प्रियायै० स्तनदायै० स्तनधारायै० विश्वयोन्यै० स्तनंधय्यै०

शिशूत्संगधरायै० दोलायै० दोलाक्रीडायै० अभिनंदिन्यै० उर्वश्यै० कदल्यै० केकायै० विशिखायै० शिखिवर्तिन्यै० खट्वाङ्गधारिण्यै० खड्गबाणपुंरवानुवर्तिन्यै० लक्षप्राप्तिकरायै० लक्ष्यै० सुलक्षायै० शुभलक्षणायै० वर्तिन्यै० सुपथाचारायै० परिखायै० स्वनिर्वृत्यै० प्राकारवलयायै० वेलायै० मर्यादायै० महोदध्यै० पोषण्यै० शोषणीशक्त्यै०दीर्घकेश्यै०सुलोमशायै०ललितायै० मांसलायै० तन्व्यै० वेदवेदांगधारिण्यै० नरासृक्पानमत्तायै० ९०० ।। नरमुंडास्थि-भूषणायै० अक्षक्रीडारत्यै० सार्यै० सारिकाशुकभाषिण्यै० शांबर्यै० गारुडीविद्यायै० वारुण्यै० वरुणार्चितायै० वाराह्यै० तुंडहस्तायै० दंष्ट्रोद्धृतवसुंधरायै० मीनमूर्त्यै० धरामूर्त्यै० वदान्यायै० प्रतिमाश्रयायै० अमूर्त्यै० निधिरूपायै० शालग्रामशिलायै० शुच्यै० स्मृतिसंस्काररूपायै० सुसंस्कारायै० संसृत्यै० प्राकृतायै० वेदभाषायै० गाथायै० गीत्यै० प्रहेलिकायै० इडायै० पिंगलायै० पिंगायै० सुषुम्नायै० सूर्यवाहिन्यै० शशिश्रवायै० तालुस्थायै० काकिन्यै० मृतजीविन्यै० अणुरूपायै० बृहद्रूपायै० लघुरूपायै० गुरुस्थिरायै० स्थावर्यै० जंगमायै० देव्यै० कृतकर्मफलप्रदायै० विषयायै० क्रांतदेहायै० निर्विषायै० जितेन्द्रियायै० चित्स्वरूपायै० चिदानन्दायै० परब्रह्मावबोधिन्यै० निर्विकारायै० निर्वैरायै० रत्यै० सत्यायै० अधिवर्तिन्यै० पुरुषायै० अज्ञानभिन्नायै० क्षांत्यै० केवल्यदायिन्यै० विविक्तसेविन्यै० प्रज्ञायै० जनितायै० बहुश्रुतायै० निराहारायै० समस्तैकायै० सर्वलोकैक-सेवितायै० सेव्यसेव्यायै० प्रियायै० सेव्यायै० सेवाफलविवर्धिन्यै० कलौकल्किप्रियायै० शीलायै० दुष्टम्लेच्छविनाशिन्यै० प्रत्यंचायै० धनुषे० यष्ट्यै० खड्गधरायै० धरारथायै० अश्वप्लुतायै० वल्गायै० सृण्यै० मत्तवारुणायै० वीरसुवे० वेदमात्रे० वीरश्रियै० वीरनन्दिन्यै० जयश्रियै० जयदीक्षायै० जयदायै० जयवर्धिन्यै० क्षेमंकर्यै० सिद्धिरूपायै० सत्कीर्त्यै० पथिदेवतायै० सौभाग्यायै० शुभाकारायै० सर्वसौभाग्यदायिन्यै० सर्वतीर्थमयीमूर्त्यै० सर्वदेवमयीप्रभायै० सर्वसिद्धिप्रदायैशक्त्यै० ।। १००० सर्वमंगलसंज्ञितायै० ।।

अथ देव्यष्टोत्तरशतनामानि

ह्रीं माहेश्वर्यै नमः । महादेव्यै० जयंत्यै० सर्वमंगलायै० लज्जायै० भगवत्यै० वंद्यायै० भवान्यै० पापनाशिन्यै० चंडिकायै० कालरात्र्यै० भद्रकाल्यै० अपराजितायै० महाविद्यायै० महामेधायै० महामायायै० महाबलायै० कात्यायन्यै० जयायै० दुर्गायै० मंदारवनवासिन्यै० आर्यायै० गिरिसुतायै० धात्र्यै० महिषासुरघातिन्यै० सिद्धिदायै० बुद्धिदायै० नित्यायै० वरदायै० वरवर्णिन्यै० अंबिकायै० सुखदायै० सौम्यायै० जगन्मात्रे० शिवप्रियायै० भक्तसंतापसंहर्त्र्यै० सर्वकामप्रपूरिण्यै० जगत्कर्त्र्यै० जगद्धात्र्यै० जगत्पालनतत्परायै० अव्यक्तव्यक्तरूपायै० भीमायै० त्रिपुरसुंदर्यै० अपर्णायै० ललितायै० वेद्यायै० पूर्णचंद्रनिभाननायै० चामुण्डायै० चतुरायै० चंद्रायै० गुणत्रयविभाविन्यै० हेरंबजनन्यै० काल्यै० त्रिगुणायै० यशोधारिण्यै० उमायै० कलशहस्तायै० दैत्यदर्पनिषूदिन्यै० बुद्ध्यै० कांत्यै० क्षमायै० शांत्यै० पुष्ट्यै० तुष्ट्यै० धृत्यै० मत्यै० वरायुधधरायै० धीरायै० गौर्यै० शाकंभर्यै० शिवायै० अष्टसिद्धिप्रदायै० वामायै० शिववामांगवासिन्यै० धर्मदायै० धनदायै० श्रीदायै० कामदायै० मोक्षदायै० अपरायै० चित्स्वरूपायै० चिदानंदायै० जयश्रियै० जयदायिन्यै० सर्वमंगल-मांगल्यायै० जगत्त्रयहितैषिण्यै० शर्वाण्यै० पार्वत्यै० धन्यायै० स्कंदमात्रे० अखिलेश्वर्यै० प्रपन्नार्तिहरायै० देव्यै० सुभगायै० कामरूपिण्यै० निराकारायै० साकारायै० महाकाल्यै० सुरेश्वर्यै० शर्वायै० श्रद्धायै० ध्रुवायै० कृत्यायै० मृडान्यै० भक्तवत्सलायै० सर्वशक्तिसमायुक्तायै० शरण्यायै० सर्वकामदायै० इति देव्यष्टो-त्तरशतनामानि ।।

श्वेतचूर्णम् -

मंदारमल्लीकरवीरसंभवं कर्पूरपाटीरसुवासितं सितम् ।
श्रीश्वेतचूर्णं विधिना समर्पितं प्रीत्या त्वमंगीकुरु विष्णुवल्लभे ।।

रक्तचूर्णम् -

प्रत्यूषकालार्कमयूखसन्निभं जातीफलैलागरुणा सुवासितम् ।
श्रीरक्तचूर्णं मनसा मयार्पितं प्रीत्या त्वमंगीकुरु विष्णुवल्लभे ।।

सिंदूरम् -

मध्याह्नचंडार्कमरीचि संन्निभं विघ्नेश्वरश्रीहनुमद्बहुप्रियम् ।
सिंदूरचूर्णं मनसा मयार्पितं प्रीत्या त्वमंगीकुरु विष्णुवल्लभे ।।

हरिद्रा -

हरिद्रुमोत्थामतिपीतवर्णां सुवासितां चंदनपरिजातैः ।
अनन्यभावेन समर्पितान्ते मातर्हरिद्रामुररीकुरुश्व ।।

धूपः -

लाक्षासंमिलितैः सिताभ्रसहितैः श्रीवाससंमिश्रितैः ।
कर्पूराकलितैः सिता मधुयुतैर्गोसर्पिषाऽऽलोडितैः ।।
श्रीखंडागरुगुग्गुलप्रभृतिभिः नानाविधैर्वस्तुभिः ।
धूपन्ते परिकल्पयामि जननी त्वं धूपमंगीकुरु ।।

ह्रीं पदशोभिमहामनुरूपे, धूरसिमंत्रवरेण मनोज्ञम् ।
अष्ट सुगंधरजः कृतमाद्ये, धूपमिदं त्रिपुरेशि ददामि ।।

फडिति धूपपात्रं संप्रोक्ष्य मूलेन नम इति संपूज्य पुरतो निधाय (रं) इति वह्निबीजेन अग्निं संस्थाप्य तदुपरि मूलेन दशांगं धूपं दत्वा ह्रीं जय ध्वनिमंत्रमातः स्वाहेति घंटां संपूज्यं वामहस्तेन घंटां वादयन् दक्षिणहस्तेन शंखस्थजलं गृहीत्वा धूपमंत्रपठनपाठपुरस्सरं शंखस्थजलं भूमौ क्षिप्त्वा देवीवामभागे धूपपात्रं निधाय, तर्जनीमूलयोरंगुष्ठ-

योगात्मिकां धूपमुद्रां प्रदर्शयेदिति ।।

दीपः

रत्नालंकृतहेमपात्र निहितैर्गोसर्पिषादीपितैः।
दीपैर्दीर्घतरान्धकारभिदुरैर्बालार्क कोटिप्रभैः।।
आताम्र ज्वलदुज्ज्वल द्रवनवद्रत्न प्रदीपैः सदा।
मातस्त्वामहम् आदरादनुदिनं नीराजयाम्युच्चकैः।।

सन्तमसापहमुज्वलपात्रे गव्यघृतैः परिवर्धित देहम् ।
चंपककुड्मलवृन्दसमानं दीपगणं त्रिपुरेऽद्य गृहाण ।।

दीपपात्रं गोघृतेनापूर्य मंत्राक्षरतंतुभिर्वर्ति निःक्षिप्य मूलेन प्रज्वाल्य घंटां वादयन् नेत्रादिपादपर्यन्तं दीपं प्रदर्शयेत् । मंत्रपाठपठनपुरः सरं देवीदक्षिणभागे दीपं निधाय, शंखजलमुत्सृज्य मध्यमे अंगुष्ठमूललग्ने दीपमुद्रां तां प्रदर्शयेदिति ।

नैवेद्य निवेदनविधिः -

तत्रादौ देव्या अग्रे दक्षिणतो वा जलेन चतुरस्त्रं मंडलं कृत्वा, भोजनपात्रं संस्थाप्य, तन्मध्ये षड्रसोपेतं नैवेद्यं निधाय, ह्रीं नमः इत्यर्घजलेन प्रोक्ष्य मूलेन संवीक्ष्य, अधोमुखदक्षिणहस्तोपरि तादृशं वामहस्तं निधाय, नैवेद्यमाच्छाद्य यं इति वायुबीजेन षोडशधा संजप्य वायुना तद्भूत दोषान् संशोध्य, ततो दक्षिणकरतले तत्पृष्ठलग्नवामकरतलं कृत्वा, नैवेद्यं प्रदर्श्य, रं इति वह्निबीजं षोडशवारं संजप्य, तदुत्पन्नाग्निना तद्दोषं दग्ध्वा, ततो वामकरतले वं इति अमृतबीजं विचिन्त्य, तत्पृष्ठलग्नं दक्षिणकरतलं कृत्वा, नैवेद्यं प्रदर्श्य, वं इति सुधाबीजं षोडशवारं संजप्य तदुत्थामृतधारया प्लावितं विभाव्य, मूलेन प्रोक्ष्य, धेनुमुद्रां प्रदर्श्य, मूलेनाष्टवारमभिमंत्र्य, गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य, देव्या हृद्गतं तेजःस्मृत्वा, वामांगुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृष्ट्वा, दक्षिणकरेण जलं गृहीत्वा -

चतुर्विधानं सघृतं सुवर्णपात्रे मया देवि समर्पितं तत् ।
संवीज्यमानामरवृन्दकैस्त्वं जुषस्व मातर्दययाऽवलोकय ।।

श्रीमन्महालक्ष्मी महाकाली-महासरस्वतीभ्यो नमः, नैवेद्यं सम० इति भूतले देव्या दक्षिणे जलं क्षिप्त्वा, वामहस्तेन अनामामूलयोरगुंष्ठयोगेन नैवेद्यमुद्रां प्रदर्श्य, सपुष्पकराभ्यां पात्रमुद्धरन् - भगवति निवेदितानि हवींषि जुषाण ।इति च पठन् ग्रासमुद्रां प्रदर्शयेत् ।।वामहस्तेन पद्माभां प्राणाद्यां दक्षिणेन तु ।यथा - कनिष्ठिकानामिकांगुष्ठैः ॐ प्राणाय स्वाहा ।तर्जनीमध्यमांगुष्ठैः ॐ अपानाय स्वाहा ।तर्जनीमध्यमांगुष्ठैः ॐ व्यानाय स्वाहा । अनामामध्यमांगुष्ठैः ॐ उदानाय स्वाहा । सर्वांगुलिभिः ॐ समानाय स्वाहा ।देवीं भुंजानां ध्यात्वा जलं दद्यात्। नमस्ते देवदेवेशि सर्वतृप्तिकरं परम् । अखंडानंदसंपूर्णे गृहाण जलमुत्तमम् । इति कर्पूरादिसुवासितं जलं निवेद्य, जनन्या तज्जलं प्राशितमिति भावयन् अन्तःपटं धृत्वा पठेत् -

ब्रह्मेशाद्यैः सरसमभितः सूपविष्टैः समन्तात् ।
सिंजद्वालव्यजन निकरैर्वीज्यमाना सखीभिः ।।
नर्मक्रीडाप्रहसनपरान् पंक्तिभोक्तृन् हसन्वै ।
भुंक्ते पात्रे कनकघटिते षडरसान देवि देवि ।।

शालीभक्तं सुपक्वं शिशिरकरसितं पायसापूपसूपं ।
लेह्यं पेयं च चोष्यं सितममृतफलं घारिकाद्यं सुखाद्यम् ।।
आज्यं प्राज्यं सुभोज्यं नयनरुचिकरं राजिकैलामरीचः ।
स्वादीयः शाकराजी परिकरममृताहारजोषं जुषस्व।।

कल्पितमद्य धियाऽमृतकल्पं, दुग्धसितायुतमन्नविशेषम् ।
माषविनिर्मितपूपसहस्त्रं, स्वीकुरु देवि निवेदनमाद्ये ।।

इति अंतःपटं दत्वा आचमनीयपात्रादाचमनं दद्यात् ।। ततो मूलमंत्रं सप्तवारं पठेत् ।। (जवनिकमपाकृत्य) श्री मन्महालक्ष्मी० गंडूषार्थं

मध्ये पानीयं सम० ।। ततो भुंजानां देवीं ध्यात्वा यशाशक्ति मूलमंत्रं प्रजप्य देवीदक्षिणहस्ते जपं समर्पयेत् ।

नैवेद्यनिवेदनार्थमन्ये मंत्राः -

मातस्त्वां दधिदुग्धपायसमहाशाल्यन्नसंतालिका
सूपापूपसिताघृतैः सवटकैः संक्षोद्ररंभाफलैः ।।
एलाजीरकहिंगुनागरनिशाकौस्तुंबरैः संस्कृतैः
शाकैः शाकयुतैः सुधाधिकरसैः संतर्पयाम्यर्पितैः ।।

सापूपसूपदधिदुग्धसिताघृतानि सुस्वादुभक्ष्यपरमान्नपुरः सराणि ।।
शाकोल्लसन्मरिचजीरकबाल्लिकानिभक्ष्याणि भक्ष जगदंब मयार्पितानि ।।

आचमनम्

गंगोत्तरीवेगसमुद्भवेन सुशीतलेनातिमनोहरेण ।
त्वं पद्मपत्राक्षि मयार्पितेन शंखोदकेनाचमनं कुरुष्व ।।

पूर्वापोशनम्

क्षीरमेतदिदमुत्तमोत्तमं प्राज्यमाज्यमिदमुज्ज्वलं मधु ।
मातरेतदमृतोपमं त्वया संभ्रमेण परिपीयतां मुहुः ।।

जलम्

अतिशीतमुशीरवासितं तपनीयोपवने निवेदितम् ।
पटपूतमिदं जितामृतं शुचि गंगामृतमंब पीयताम् ।।

उत्तरापोशनम्

नीहारहारं वनसारसारं प्रकल्पितानेकसुगंधिभारम् ।
शीतांबु जंबूनदपात्रवर्ति पीत्वा हि दुर्गेश्वरि प्रीयतां तत् ।।

करोद्वर्तनम्

उष्णोदकैः पाणियुगं मुखं च प्रक्षाल्य मातः कलधौतपात्रे ।
कर्पूरमिश्रेण सकंकुमेन हस्तौ समुद्वर्तय चन्दनेन ।।

तांबूलम्

कर्पूरेण-युतैर्लवङ्गसहितैः कंकोलचूर्णान्वितैः ।
सुस्वादक्रमुकैः सगौरखदिरैः सुस्निग्धजातीफलैः ।।
मातः केतकपत्रकेन्दुरुचिभिःतांबूलवल्लीदलैः ।
सानंदं मुखमंडनीयमतुलं तांबूलमंगीकुरु ।।

एलालवंगादिसमन्वितानि कंकोलकर्पूरसुमिश्रातानि ।
तांबूलवल्लीदलसंयुतानि पूगानि ते देवि समर्पयामि ।।

दक्षिणा

लंघितकेतकवर्णविशेषैः, शोधितकोमलनागदलैश्च ।
मौक्तिकचूर्णयुतैः क्रमुकाद्यैः, पूर्णतराम्ब पुरस्तव पात्री ।।

अथ बहुमणिमिश्रैर्मौक्तिकैस्त्वां विकीर्य ।
त्रिभुवनकमनीये पूजयित्वा च वस्त्रैः ।।
मिलितविविध - मुक्तैर्दिव्यलावण्ययुक्तां ।
जननि कनकवृष्टिं दक्षिणां तेऽर्पयामि ।।

प्रदक्षिणा

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति ।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि ।।

विशेषार्घः

कलिंगकोशातकसंयुतानि जंबीरनारिंगसमन्वितानि ।
सुनारिकेलानि सदाडिमानि फलानि ते देवि समर्पयामि ।।

छत्रम्

मातः कांचनदंडमंडितमिदं पूर्णेन्दुबिंबप्रभं ।
नानारत्नविशोभिहेमतिलकं लोकत्रयाह्लादकम् ।।

भास्वन्मौक्तिकजालिकापरिवृतं प्रीत्यात्महस्ते धृतं।
छत्रं ते परिकल्पयामि जननि त्वष्ट्रा स्वयं निर्मितम् ।।

चामरम्

शरदिन्दुमरीचिगौरवर्णे मणिमुक्ताविलसत्सुवर्णदंडैः।
जगदंब विचित्रचामरैस्त्वामहमानन्दभरेण वीजयामि ।।

व्यजनम्

शतपत्रयुतैः स्वभावशीतैरतिसौरभ्ययुतैः परागपीतैः।
भ्रमरीमुखरीकृतैरनन्तैर्व्यजनैस्त्वां जगदंब वीजयामि ।।

आदर्श

मार्तंड मंडलनिभो जगदंब योऽयं भक्त्या मया मणिमयो मुकुरोऽर्पितस्ते।
पूर्णेन्दुबिंबरुचिरं वदनं स्वकीयमस्मिन्विलोकय विलोलविलोचने त्वम् ।।

तुरंग

प्रियगतिरतितुंगो रत्नपल्याणयुक्तः कनकमयविभूषः स्निग्धगंभीरघोषः ।
भगवति कलितोऽयं वाहनार्थे मया ते तुरगशतसमेतो वायुवेगस्तुरंगः ।।

मातंग

मधुकरव्रतकुंभो न्यस्तसिंदूररेणुः।
कनककलितघंटाकिंकिणी शोभिकंठः।।
श्रवणयुगलचंचच्चामरो मेघतुल्यो।
जननि तव मुदे स्तान्मत्तमातंग एषः ।।

रथः

द्रुततरतुरगैर्विराजमानं मणिमयचक्रचतुष्टयेन युक्तम् ।
कनकमयमहं वितानयुक्तं भगवति ते हि रथं समर्पयामि ।।

सैन्यम्

हयगजरथपत्तिशोभमानं दिशि दिशि दुंदुभिमेघनादयुक्तम् ।
अपि बहुचतुरंगसैन्यमेतद्भगवति भक्तिभरेण तेऽर्पयामि ।।

प्राकारः

परिधीकृतसप्तसागरं बहुसंपत्सहितं मयाम्बिके ।
विपुलं धरणीतलाभिधं प्रबलं दुर्गममंब तेऽर्पितम् ।।

नृत्यम्

भ्रमविलुलितकुन्तलोलतालिविगलितमाल्यविकीर्णरंगभूमिः ।
इयमिति रुचिरानना नटन्ती तव हृदये मुदमातनोतु मातः ।।
डमरु-डिंडिम-झर्झर-झल्लरी-मृदुरवार्द्र-घटार्द्र - घटादयः ।
झटिति झंकृतिभिर्जगदंबिके मृदुरवा हृदयं सुखयन्तु ते ।।

(ताम्रपात्रे दधिलवणसर्षपदूर्वाक्षतान् निक्षिप्य देव्या दृष्टिमुत्तारयेत् ।।)

दृष्ट्याप्रदृष्ट्या खलु दृष्टदोषान् संहर्तुमारात्प्रथितप्रकाशा ।
जनो भवेदिन्द्रपदाय योग्यस्तस्यै तवेदं लवणाक्षिदोषहम् ।।

देवीनीराजनम्

जय देवि जय देवि जय मातस्त्रिपुरे।
भक्तानुग्रहकारिणि दासानुग्रहकारिणि ईश्वरि सुरवरदे ।। जय।।
दुर्गे दुर्गतिनाशिनि भवसागरतारे ।
मृगेन्द्रवाहनगिरिजे दानवसंहारे ।
अष्टादशभुजमूर्ते कंठारूढमाले ।
सप्तश्रृंग निवासिनि रुद्रात्मक शक्ते ।। जय० ।।
बालार्कारुणशोभितबंधुककुसुमाभे।
कुंकुमशोभितदेहे दाडिमकुसुमाभे ।
पादाहतमहिषासुर देवासुरसर्गे ।
नानादानव विमर्दिनि अलिकुलरिपुवर्गे ।। जय० ।।
जय त्रिपुरासुर मर्दिनि मर्दय मम दोषान्।
तारय तारय मातर्भवजलकूपस्थान।
कामक्रोधादीन्मारय देहस्थान।
करुणा दृष्ट्या माता रक्षय निजभक्तान्।। जय० ।।
मूले वाधिष्ठाने मणिपूरे चक्रे।
हृदयेऽनाहतचक्रे षोडशदलपद्मे ।
आज्ञाचक्रे बालय बालय कृतवलये।
ब्रह्मस्थाने बिहरसि मातः शिवसहिते ।। जय० ।।
विधिहरिशंकरवंद्ये पंडितजन वंद्ये।
सनकादिकमुनिवंद्ये यक्षासुर वंद्ये ।
नारदतुंबुरुकिन्नर गीते सुरवंद्ये।
अघनाशिनि भवशोषिणि मातः सुखसहिते ।। जय० ।।
जयदेवि (२) जय सुंदरि तनये।
मा जय सुंदरि ललिते ।

निशदिन वसंति कुरु भव ईश्वरि मम हृदये ।।
बिन्दु त्रिकोणसहितं षट्कोणं वृत्तं । देवि०।
तदुपरि वसुदलपत्रं वर्तुलमपि धर्तुम् ।। जय० ।।
द्विगुणितकृतवसुपत्रं, मोहित हरचित्तं,
द्वारचतुष्टयनिर्मित यंत्रोपरि यंत्रम् ।। जय० ।।
वामं कलशापूजित पूरितमाधारम्,
तस्मिन्नर्पितपूजित पूरितमाधारम् ।। जय० ।।
कलशामृतवपुपूजित नवपात्रैः सहितं,
गणपतियोगिनी बटुक क्षेत्राधिपयुक्तम् ।। जय० ।।
एवं पंचावर्णितकर्णितगुणसारं,
मां देहि त्वं भुवनमपि दुर्घटसंसारम् ।। जय० ।।
अर्चनविधिना सहितं श्रीगुरुविधिवन्तम् तारक
पंडित विद्या भक्त्याखिलदत्तम् ।। जय० ।।
कर्पूरगौरं०। मूलम्। जलेन प्रदक्षिणां कुर्यात् ।
पुष्पेण देवताऽभिवन्दनम्। आत्माऽभिवन्दनम्।।

हस्तं प्रक्षाल्य मन्त्रपुष्पाञ्जलिः

ह्रींत्रयपूरितमंत्रविशेषं पंचदशीमपि षोडशरूपम् ।
संचितपाप हरं च जपित्वा मन्त्रसुमांजलिमंब ददामि ।।
श्रींपदपूर्ण महामनुरूपे श्री शिवकाम महेश्वरजाये ।
श्री गुहवंदितपादपयोजे श्री ललितापरमेशि नमस्ते ।।

विशेषार्घः

कलिङ्गकोशातकसंयुतानि जंबीरनारिङ्गसमन्वितानि ।
सुनारिकेलानि सदाडिमानि फलानि ते देवि समर्पयामि ।।

जपः

नर्वाणमन्त्रेण यथाशक्तिः ।

प्रार्थनापूर्वक नमस्कारः

एषा भक्त्या तव विरचिता या मया देवि पूजा ।
स्वीकृत्यैनां सपदि सकलान्मेऽपराधान् क्षमस्व ।।
न्यूनं यत्तत्तव करुणया पूर्णतामेतु सद्यः ।
सानन्दं मे हृदयकमले तेऽस्तु नित्यं निवासः ।।

क्षमापनम्

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ।।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ।।

अर्पणम्

अनेनध्यानवाहनासनपाद्यार्घ्याचमनीयस्नानवस्त्रोपवीतगन्ध पुष्पधूपदीपनैवेद्य ताम्बूलदक्षिणा प्रदक्षिणामंत्रपुष्परूपै राजोपचारै-रन्योपचारैश्च यथाज्ञानेन यथामिलितोपचारद्रव्यैः कृतेन पात्रासादनपूजनपूर्वकविशेषकर्मणा श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीदेवताः प्रीयन्तां न मम ।।

(२ वर्ष से १० वर्ष तक की कन्या का पूजन कर भोजन कराएँ ।)

कुमारी पूजनम्

(विप्रां सर्वेष्टसंसिद्ध्यै यशसेक्षत्रियोद्भवाम् ।)

वैश्यजां धनलाभाय पुत्राप्त्यै शूद्रजां यजेत् ।
द्विवर्षा सा कुमार्युक्ता त्रिमूर्तिः हायनत्रिका ।।
चतुरब्दा तु कल्याणी पंचवर्षा तु रोहिणी ।
षडब्दा कालिका प्रोक्ता चंडिका सप्तहायना ।।

अष्टवर्षा शांभवी स्यात् दुर्गा तु नवहायना ।
सुभद्रा दशवर्षोक्ता नाममंत्रैः प्रपूजयेत् ।।

ध्यानम्

मंत्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातृणां रूपधारिणीम् ।
नवदुर्गात्मिकां साक्षात् कन्यां आवाहयाम्यहम् ।।
पंचोपचारैः यथाशक्ति वस्त्राभरणैः च पूजयेत् ।।

(प्रत्येक की पूजा का श्लोक)

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति स्वरूपिणि ।
पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तुते ।।
त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रिवर्षां ज्ञानरूपिणीम् ।
त्रैलोक्य वंदितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम् ।।

इति राजोपचार पूजा

अथ नारायणत्रिंशोपचार पूजा

ध्यानम्

सुरकदंबकैः प्रश्रयेण वै नियतसेवितं गोकुलोत्सवम् ।
किरीटकुंडलं पीतजाम्बरं खलनिषूदनं कृष्णमाह्वये ।।१।।

आवाहनम्

खगपवाहनं क्षीरजाप्रियं भवभयापहं भुक्तिमुक्तिदम् ।
सुरपतिं जगन्नाथमीश्वरं कमलभासमावाहयाम्यहम् ।।२।।

आसनम्

विधिमुखामरैर्नम्रमूर्तिभिः प्रणतसंश्रितं दुर्धरादिमत् ।
वरमणिप्रभाभासुरं नवं जनप गृह्यतां स्वर्णमासनम् ।।३।।

पाद्यम्

कुसुमवासितं गंधविस्तृतं मुनिनिषेवितं सादरेण वै ।
ध्रुवपराशराभीष्टद प्रभो जनप गृह्यतांपाद्यमुत्तमम् ।।४।।

अर्घ्यं

कनकसंपुटे स्थापितं वरं जलसुवर्णमुक्ताफलैर्युतम् ।
करसरोरुहाभ्यां धृतं मया जनप गृह्यतामर्घ्यमुत्तमम् ।।५।।

आचमनम्

तव रमायुजः सेवनाज्जना नृपतिसन्निभाः संभवन्ति हि ।
सुरतरंगिणीशुद्धवारिभिर्जनप गृह्यतामाचमं शुभम् ।।६।।

पयः

सुरगवुद्भवं वीर्यवर्धकं निखिलदेहिनां जीवनप्रदम् ।
शशधरप्रभं फेनसंयुतं जनप गृह्यतामर्पितं पयः ।।७।।

दधि

शुचिपयःसमुद्भूतमुत्प्रदं व्रजनिवासिभिः स्वादितं शुभम् ।
रजतसन्निभं शीततामयं जनप गृह्यतामर्पितं दधि ।।८।।

घृतम्

हुतवहप्रियं क्षीरजोद्भवं सकलदेहिनां सत्त्ववर्धकम् ।
कुमुदसदृशं विष्णुदैवतं जनप गृह्यतामर्पितं घृतम् ।।९।।

मधु

मधुलतोद्भवं स्वादु मंजुलं मधुपमक्षिकाद्यैर्विनिर्मितम् ।
मधुरतामयं गंधसंप्रदं मधुह तेऽर्पितं गृह्यतां मधु ।।१०।।

शर्करा

मदनकार्मुकात् याविनिर्मिता मधुरतान्विता सर्वपापहा ।
सरसतां गता तारकोपमा जनप गृह्यतां शुद्धशर्करा ।।११।।

अभ्यंग

कदंबकेतकीपुष्पसंभवं मृगमदान्वितं यंत्रनिर्मितम् ।
अनुपकारिणा भक्तितो मया जनप गृह्यतां तैलमर्पितम् ।।१२।।

स्नानम्

हरिपदांबुजानर्मदामहीसरयुचंद्रभागाभ्य आहृतम् ।
जलजवासितं स्नानहेतवे जनप गृह्यतामर्पितं जलम् ।।१३।।

वस्त्रम्

विविधतंतुभिर्गुंफितं नवं सुतपनीयभं सोत्तरीयकम् ।
मधुरिपो जगन्नाथ माधव जनप गृह्यतां वस्त्रमर्पितम् ।।१४।।

यज्ञोपवीतम्

त्रिगुणितं सितैरर्कतंतुभिः कृतमिदं मया शुद्धचेतसा ।
निगमसंमतं बंधमोचकं जनप गृह्यतामुपवीतकम् ।।१५।।

गंधः

मलयसंभवं पीतवर्णकं मृगमदादिभिर्वासितं वरम् ।
मुदितषट् पदं कुंकुमान्वितं जनप गृह्यतां गंधमर्पितम् ।।१६।।

अक्षत

कलमसंभवा मौक्तिकोपमाः त्रिपथगोदकैर्क्षालिताः शिवाः ।
अगरुकुंकुमैर्मिश्रिता वरा जनप गृह्यतामर्पिताक्षताः ।।१७।।

पुष्पम्

तरुणमल्लिकाकुंदमालतीबकुलपंकजानां समुच्चयैः ।
सततसूत्रितं भक्तियो मया जनप गृह्यतां हारमर्पितम् ।।१८।।

श्वेत

कदंबकेतकीवृक्षसंभवं विविधसौख्यदं कांतिवर्धनम् ।
सितकरोपमं स्नेहसत्कृतं जनप गृह्यतां श्वेतचूर्णकम् ।।१९।।

रक्त

अमरजादिभिर्देववृंदकैः शिरसि वै धृतं प्रश्रयेण वै ।
तपनसदृशं दृष्टिमुत्कलं जनप गृह्यतां रक्तचूर्णकम् ।।२०।।

सिंदूर

गणपतिप्रियं बालसूर्यभं पवनसूनुना स्वीकृतं सदा ।
सुरभिवासितं सूक्ष्मचूर्णकं जनप गृह्यतां नागसंभवम् ।।२१।।

धूपम्

अगरुगुग्गुलाज्यादिमिश्रितं तपनयोगजोद्भूतसौरभम् ।
अमरवृंदकैः स्नेहसत्कृतं जनप गृह्यतां धूपमुत्तमम् ।।२२।।

दीपम्

अनलतैलिनीगोघृतान्वितं तिमिरनाशकं दीप्ततंतुभिः ।
कनकभाजने स्थापितं मया जनप गृह्यतां दीपमुत्तम् ।।२३।।

नैवेद्यम्

पनसदाडिमाम्रादिसत्फलं सुघृतमोदकापूपपायसम् ।
रजतभाजने स्थापितं मया जनप गृह्यतां खाद्यमुत्तमम् ।।२४।।

आचमनीयम्

जलधिगोद्भवं शीततामयं सकलप्राणिनां प्राणदायकम् ।
विधिसमर्पितं शुद्धचेतसा जनप गृह्यतामाचमं शुभम् ।।२५।।

ताम्बूलम्

खपुरसंभवं पूगचूर्णयुङ्मृगमदेलुकावासितं वरम् ।
फणिलतादलैःक्लृप्तवीडकं जनप गृह्यतामास्यभूषणम् ।।२६।।

दक्षिणा

निखिलयाचिनां श्रेष्ठभोगदा निगमसंमता कर्मपूर्णदा ।
सकलभूजनैःवांछिता सदा जनप गृह्यतां हेमदक्षिणा ।।२७।।

नीराजनम्

हुतवहप्रियैर्मिश्रितं वरं जलधिजैर्युतं सर्वपापहम् ।
मुखविलोकनार्थाय सत्कृतं जनप गृह्यतामार्तिकं शुभम् ।।२८।।

प्रदक्षिणा

वरदसञ्चितं पूर्वजन्मभिर्दहति किल्बिषं त्वत्प्रदक्षिणा ।
नरहरि मुदा शुद्ध चेतसा सततमीश्वरं त्वां नमाम्यहम् ।।२९।।

नमस्कार

जय जय प्रभो सात्वतांपते शरणवत्सलाभीष्टसाधक ।
यदुपते जगन्नाथ सर्वदा शरणमागतं पाहि पाहि माम् ।।३०।।

।। इति नारायण त्रिंशोपचारपूजा ।।

अथ स्थापित देवता होमः

(पूजन के पश्चात् हवन इस प्रकार करें)

सर्वतोभद्रमंडलदेवता होमः पीठदेवता होमः
विष्णुदेवता होमः यंत्रदेवता होमः
वास्तुदेवता होमः रूद्रदेवता होमः
चतुःषष्टि योगिनी होमः चतुःषष्टि भैरव होमः

लक्ष्मी होमः

मम गृहे अलक्ष्मी विसर्जनार्थं महालक्ष्मी प्रसन्नार्थं लक्ष्मीहोमं करिष्ये।

ॐ इदम्मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम् । मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमां तस्यै ते स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै स्वाहा।

गुग्गुल होमः

मम गृहे भूतादिदोषनिवृत्ति अर्थं गुग्गुलहोमं करिष्ये ।

ॐ त्र्यंबकं यजामहे ० ह्रीं मृत्युंजय महादेव..... स्वाहा।

सर्षप होमः

मम सर्वारिष्ट शांति अर्थं शत्रुबलक्षयार्थं सर्षपहोमं करिष्ये।

ॐ सजोषा इन्द्र स गणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्।

जहि शत्रूँ १ रप मृधो नदुस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः ।।

सर्वा बाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।

एवमेव त्वया कार्यमस्मद् वैरिविनाशनम्।।स्वाहा।।

व्याहृति होमः

कर्मणः न्यूनातिरिक्तदोष परिहारार्थं व्याहृतिहोमं करिष्ये । ॐ भूः स्वाहा। ॐ भुवः स्वाहा। ॐ स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा।। (अथवा) ह्रीं अग्निवायुसूर्येभ्यः स्वाहा (अथवा) ह्रीं प्रजापतये स्वाहा। अष्टोत्तरशतं अष्टाविंशतिर्वा आहुतीःदद्यात् ।

उत्तरतंत्रम्

पूजा स्विष्टं नवाहुत्यः बलिः पूर्णाहुतिः तथा ।

पूर्णपात्र विमोकाद्यग्न्यर्चनान्तेऽभिषेचनम् ।।

मानस्तोकेति भूतिश्चदेवपूजा विसर्जने ।
श्रेयोग्रहो दक्षिणादिदानं कर्मेश्वरार्पणम् ।।
क्रमोऽयं उत्तरांगानां प्रायः स्मार्तेष्विति स्थितिः ।।

उत्तरपूजनम्

कर्मणःसांगता सिद्ध्यर्थं स्थापितदेवतानां मृडाग्नेः च उत्तरपूजनं करिष्ये।

गणेशपूजनम्

ॐ गणानान्त्वा०

सदा नमामि नायकैकनायकं विनायकं।
कलाकलापकल्पना निनादमादिपूरुषम् ।।
गणेश्वरं गुणेश्वरं महेश्वरात्मसंभवं।
स्वपादपद्मसेविनां अपारवैभवप्रदम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय श्री गजाननाय नमः। उत्तरपूजनार्थे सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि॥

मातृकापूजनम्

ॐ समख्ये देव्या धिया संदक्षिणयोरुचक्षसा ।
मा म ऽआयुः प्रमोषीर्मोऽ अहं तव वीरं विदेय तव देवि सन्दृशि।।
गौरीपद्मासनस्था सुरपतिदयिता शास्त्रसारा सुमेधा।
सावित्री वेदमाता विजितरिपुगणा देवसेना जया च।।
स्वाहा पूर्वा सुधा वै जनसुखनिरता श्री धृतिः पुष्टिरेव।
तुष्टिकल्याणदात्री सकलशुभकरी मातरः पान्तु नित्यम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः सगणेशगौर्याद्यावाहित मातृभ्यो नमः।

वसोर्धारापूजनम्

ॐ वसोः पवित्रमसि...ॐ वसु च मे...या देवी सर्व भूतेषु धृति...
सौभाग्यदात्री कमलासनस्था तथा जगद्धात्री सदैव मेधा।
पुष्टिश्च श्रद्धाखिललोकपूज्या सरस्वती मे वितनोतु लक्ष्मीम्।।

ॐ भू० श्री आदि वसोर्धारादेवताभ्यो नमः, उत्तरपूजनार्थे.....

मंडपपूजनम्

स्तंभाः ध्वजाः तोरणानि द्वाराणि शक्तयः तथा।
वेदाः गजाः द्वारदेवाः भवन्तु वरदाः सदा।।
ॐ भूर्भुवः स्वः वर्धिनीसमन्वित मण्डपदेवताभ्यो नमः।

वास्तुपूजनम्

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवा नः।
यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ।।
वास्तुपुरुष देवेश सर्वविघ्नहरो भव ।
शांति कुरु सुखं देहि सर्वान् कामान् प्रयच्छ मे।।
ॐ भूर्भुवः स्वः मंडलसहित वास्तुपुरुषाय नमः।

योगिनीपूजनम्

ॐ योगे योगे तवस्तरं वाजे वाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूर्तये।।
गजानना सिंहमुखी मयूरी कुब्जा श्वदंष्ट्रा शरभानना शुकी।
श्येनी प्रचंडा मृगलोचना च योगिन्यरस्मान् दुरितादवन्तु।।
ॐ भूर्भुवः स्वः मंडलसहित योगीनीभ्यो नमः। दुर्गे स्मृता हरसि०

(विश्वदुर्गादि चतुःषष्टि योगिन्यः आवाहिताः चेत् पृथक् श्लोकः)
मालाधरी मायावती भुवनेश्वरी च यशश्विनी।
शंखिनी यमघंटिका श्रीचित्रघंटा कालिका।।
क्रान्तराक्षी दीर्घकेशी खड्गपाणी शूलिनी।
अंबिका कामेश्वरी ज्योतिष्मती मां रक्षतु ।।

क्षेत्रपालपूजनम्

ॐ नहिस्पशमविदन्नन्यमस्माद् वैश्वानरात् पुर एतारमग्नेः।
एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः।

व्यापकं दिव्यकं बंधनं कंबलं, भीषणं डामरं ढुंढिकर्णं मृगम्।
एकदंष्ट्रं अणुं दन्तुरं चीकरं शुक्लतुण्डं हृदि चिन्तये क्षेत्रपम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः अजराद्यावाहित एकपंचाशत् क्षेत्रपाल देवताभ्यो नमः।

भैरवपूजनम्

ॐ आशुः शिशानो०।

शंभुभैरवं विशालभैरवं मनुप्रभं, खेचरं वराहभैरवं विजीतभैरवम्।
लोकपालभैरवं भयंकरं भयानकं, गदाधरं महाशिवं काल भैरवं भजे।।
ॐ भूर्भुवः स्वः चतुःषष्टि भैरव देवताभ्यो नमः, उत्तरपूजनार्थे गंधाक्षतपुष्प०।

सर्वतोभद्रमंडलदेवतापूजनम्

ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवताऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता।।

ॐ ब्रह्मजज्ञानं यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र०

ब्रह्मा सोमो भूतनागाश्च रुद्राः वायुर्यक्षाः स्कन्ददुर्गे गणेशः।
विष्णुः सिन्धुः खड्गशक्ति वसिष्ठः सर्वेदेवाः शांतिदाः सर्वदाः स्युः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मादि सर्वतोभद्रमण्डल देवताभ्यो०।

पीठयंत्रसहितप्रधानदेवतापूजनम्

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनीम्।।

पीठस्था यंत्रसंस्था सुरगणसहिता नंदनोद्यानमध्ये।
धर्मज्ञानादियुक्ता गुरुगणनमिता विष्णुमायादिवंद्या।।
दिक्पालैः सायुधैर्या पूजितशुभपदा सेविता देवसंघैः।
नित्यं कारुण्यपूर्णा विलसतु हृदये राजराजेश्वरी मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पीठयंत्रसहित महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवतायै नमः।

अग्निपूजनम्

ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मत् जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम॥ अग्नि प्रज्वलितं०।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये०

ब्रह्मापूजनम्

ॐ ब्रह्म जज्ञानं । हंसपृष्ठ......मंडपेऽस्मिन् स्थिरो भव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः।

ग्रहपूजनम्

ॐ ग्रहा ऊर्ज्जाहुतयो०। ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्यादिनवग्रहमण्डल देवताभ्यो० धूपमाघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। नैवेद्यं निवेदयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। शेषोपचारार्थे नमस्कारः। अनया पूजया गणपत्यादि स्थापितदेवाः प्रीयन्ताम्।

स्विष्टकृत् होमः

ब्रह्मणाऽन्वारब्धो जुहुयात् - ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

सर्वप्रायश्चित्तनवाहुतयः

(जलमादाय) कर्मणः प्रारम्भत आसमाप्ति देशतः कालतः तंत्रतो मंत्रतश्चज्ञानतो ऽ ज्ञानतश्च वा न्यूनाधिकान्यथाकरणजनित प्रत्यवाय-परिहारार्थं तथा च प्रधानांगदेवता विहितसमिधादिहवनीय द्रव्याणां न्यूनाधिक्यजनितप्रत्यवायपरिहारार्थं तथा च तेषां मध्ये कृमि-कीटादि-संभवजनितप्रत्य० तथैव च तत् तत् देवतोक्तहवनीयद्रव्य अभावजनितप्रत्य० तथा च कृमि कीटादीनामग्नौ दाहजनितप्रत्य० तथा च होमप्रदानसमयेऽग्नौ स्वाहाकारो-व्यवहिताहुति-प्रक्षेपा-भावजनितप्रत्य० तथैव प्रणीताग्न्योर्मध्ये गमनजनितप्रत्य० तथा च परिस्तराणादीनां दाहजनित प्रत्य० तथा च हवनीयद्रव्याणां कुण्डाद्बहिः पतनजनितप्रत्य० तथैव होमप्रदाने तत्तत्देवतामंत्राणामुच्चारणे ह्रस्वदीर्घप्लुतस्वरितोदात्तादीनां व्यत्ययोच्चारणजनितप्रत्य० कृतस्य..कर्मणः साद्गुण्यार्थं सर्वप्रायश्चित- हवनमहं करिष्ये ।। ब्रह्मणा ऽ न्वारब्धो जुहुयात्।

ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम।। १ ।। ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम ।। २ ।। ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम।। ३ ।। ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः ।। १ ।। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषां ꣳसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।। ४ ।। ॐ स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुण ꣳ रराणो वीहि मृडीक ꣳ सुहवो न एहि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।। ५ ।। ॐ अयाश्चाग्ने-स्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमया ऽ असि ।अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज स्वाहा इदमग्नये अयसे न मम ।। ६ ।।

ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशावितता महान्तः। तेभिर्न्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।। ७। ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवा धमं विमध्यम ꣳश्रथाय । अथा वयमादित्यव्रते तवानागसो ऽ अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणायादित्यायादितये च न मम।। ८। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम।। ९।।

नवाहुतयः

ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये न मम ।। १ ॥ वायवे स्वाहा इदं वायवे न मम।। २।। सूर्याय स्वाहा इदं सूर्याय न मम ।। ३॥ अग्नीवरुणाभ्यां स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ।। ४॥ पुनः ।। अग्नीवरुणाभ्यां स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ।। ५॥ अग्नये अयसे स्वाहा इदमग्नये अयसे न मम।। ६ ॥ वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ।। ७॥ वरुणायादित्यायादितये स्वाहा इदं वरुणायादित्यायादितये न मम।। ८॥ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम।। ९ ॥ इति उत्तरपूजनम्।।

बलिदानम्

मया प्रारब्धस्य....कर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं दिक्पालदेवतानां स्थापितदेवतानां च पूजनपूर्वकबलिदानं करिष्ये। (दिक्पालदेवतानां स्थानं मंत्राश्च-पृष्ठे द्रष्टव्यम्) यथा प्राच्यां इन्द्राय नमः इन्द्रं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं एभिः गंधाद्युपचारैः त्वाम् अहं पूजयामि। इन्द्राय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितबलिं सम० भो इन्द्र दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुंबस्य अभ्युदयं कुरु। मम गृहे आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता

कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वक-बलिदानेन इन्द्रः प्रीयताम्।
(एवं सर्वत्र) अथवा एकतंत्रेण।

ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहोर्ध्वायै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा ।।

इन्द्रादिदशदिक्पालान् सांगान् सपरिवारान् सायुधान् सशक्तिकान् एभिर्गंधाद्युपचारैः युष्मान् अहं पूजयामि। इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः सांगेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमं सदीपं आसादितबलिं समर्पयामि। भो इन्द्रादिदशदिक्पालदेवाः दिशं रक्षत बलिं भक्षत मम सकुटुंबस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरुत। आयुः कर्तारः क्षेमकर्तारः शांतिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः निर्विघ्नकर्तारः कल्याणकर्तारः वरदाभवत । अनेन पूजनपूर्वकबलिदानेन इन्द्रादि-दशदिक्पालदेवाः प्रीयंतां न मम।

गणपतिबलिः

ॐ गणानान्त्वा० ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतिं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गंधाद्युपचारैः त्वामहं पूजयामि। गणपतये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितबलिं समर्पयामि। भो गणपते इमं बलिं गृहाण मम सकुटुंबस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरु। मम गृहे आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वक बलिदानेन गणपतिःप्रीयतां न मम।

मातृकाबलिः

ॐ भूर्भुवः स्वः सगणेशगौर्याद्यावाहित मातृः सांगा सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः एभिर्गंधाद्युपचारैः वः अहं पूजयामि। सगणेशगौर्या-द्यावाहित मातृभ्यः सांगाभ्य सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्यः

इमं सदीपं आसादित बलिं सम० । भो भो सगणेशगौर्याद्यावाहित मातरः इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुंबस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरुत। आयुः कर्त्र्यः क्षेत्रकर्त्र्यः शांतिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः निर्विघ्नकर्त्र्यः कल्याणकर्त्र्यः वरदा भवत। अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन सगणेश-गौर्याद्यावाहित मातरः प्रीयन्तां न मम।

एकतंत्रपक्षे वसोर्धारा समन्वित सगणेश०....

वसोर्धाराबलिः

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री आदि वसोर्धाराः सांगाः..... पूजयामि। श्री आदि आवाहित वसोर्धाराभ्य....सम० । भो भो श्री आदि आवाहित वसोर्धाराः इमं बलिं.....भवत। अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन वसोर्धाराः प्रीयन्ताम्।

वास्तोष्पतिबलिः

ॐ भूर्भुवः स्वः शिख्यादि (ब्रह्मादि) वास्तुमंडलदेवता सहितं वास्तुपुरुषं....पूज० । मंडलदेवता सहिताय वास्तुपुरुषाय सांगाय..... इमं आसादित बलिं सम० । भो भो मंडलदेवतासहित वास्तुपुरुष इमं बलिं गृहाण मम सकुटुंबस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरु । मम गृहे आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्न कर्ता वरदो भव। अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन मंडलसहित वास्तुपुरुषः प्रीयताम्।

योगिनीबलिः

श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती सहिता गजाननादि (विश्वदुर्गादि) चतुःषष्टियोगिनीः सांगाः....अहं पूजयामि। सांगाभ्यः बलिं सम० । भो भो... योगिन्यः इमं बलिं गृह्णीत। मम..... कुरुत । आयुः कर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शांतिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः निर्विघ्नकर्त्र्यः कल्याणकर्त्र्यः वरदा भवत। अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन श्री

महाकाली० योगिन्यः प्रीयन्ताम्।

क्षेत्रपालबलिः

ॐ भूर्भुवः स्वः अजरादि क्षेत्रपालदेवान् सांगान् सपरिवारान् सायुधान् सशक्तिकान् एभिः गंधाद्युपचारैः वः अहं पूजयामि। क्षेत्रपालदेवेभ्यः सांगेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमं सदीपं आसादितबलिं सम०। भो भो क्षेत्रपालदेवा सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः इमं बलिं गृह्णीत । मम सकुटुंबस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरुत। आयुः कर्तारः क्षेमकर्ता शांतिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः निर्विघ्नकर्तारः वरदा भवत। अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन क्षेत्रपाल-देवाः प्रीयन्ताम्।

भैरवबलिः

ॐ भूर्भुवः स्वः चतुःषष्टि भैरवान्...... पूर्ववत्।

प्रधानदेवताबलिः

ब्रह्मादि सर्वतो भद्रमंडलदेवता समन्वितां अमुकदेवतां *(महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिणीं त्रिगुणात्मिकां जगदंबिका राजराजेश्वरीं)* सांगां सपरिवारां सायुधां सशक्तिकां एभिः गंधाद्युपचारैः त्वाम् अहं पूजयामि । ब्रह्मादि सर्वतो भद्रमंडलदेवता समन्वितायै.....सांगायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै इमं सदीपं आसादित बलिं सम०। भो भो ब्रह्मादि सर्वतोभद्रमंडलदेवता समन्विते... त्रिगुणात्मिके जगदम्बिके राजराजेश्वरि देवते इमं बलिं गृहाण। मम सकुटुंबस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्त्री क्षेमकर्त्री शांतिकर्त्री पुष्टिकर्त्री तुष्टिकर्त्री निर्विघ्नकर्त्री कल्याणकर्त्री वरदा भव। अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन सर्वतोभद्रमंडलसमन्विता.... देवता प्रीयन्ताम्।

नवग्रहबलिः

सूर्यादिनवग्रहमण्डलदेवान् सांगान् सपरिवारान् सायुधान् सशक्तिकान्

एभिः गंधाद्युपचारैः वः अहं पूजयामि। सूर्यादिनवग्रहमण्डलदेवेभ्यः सांगेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमं सदीपं आसादित बलिं सम०। भो भो सूर्यादि नवग्रहमण्डलदेवाः इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुंबस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरुत। आयुः कर्तारः क्षेमकर्तारः शांतिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः निर्विघ्नकर्तारः वरदा भवत।अनेन पूजनपूर्वक बलिदानेन सूर्यादि नवग्रहमण्डलदेवाः प्रीयन्ताम्।

देवी पूजा में बलिदान का विशेष स्थान है।

तंत्र ग्रंथों में पशु बलिदान का विधान है। लेकिन तत्त्व चिंतक पशु का यौगिक अर्थ लेते हैं । आज कूष्माण्ड बलि प्रचलित है। वही योग्य है। चंडी पाठ में पशु बलि को विप्रवर्ज्य कहा है।

देवीं संपूज्य बलिं संपूज्य प्रार्थयेत्

पशुस्त्वं बलिरूपेण मम भाग्यादुपस्थितः।
प्रणमामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणम्।।
चंडिकाप्रीतिदानेन दातुरापद्विनाशनम् ।
चामुंडाबलिरूपाय बले तुभ्यं नमोऽस्तु मे।।

ॐ ह्रीं श्रीं इति मंत्रपुष्पं क्षिप्त्वा। रसना त्वं चंडिकायाः सुरलोकप्रसाधकः। ॐ ह्रां ह्रीं खड्ग आं हुं फट् इति खड्गं शस्त्रं वा संपूज्य। **ॐ कालि कालि वज्रेश्वरि लोहदंडायै हुं फट् नमः।** इति बलिं छेदयित्वा। **ॐ ऐं ह्रीं कौशिकि रुधिरेणाप्यायताम् ।इति देव्यै निवेद्य।** अर्द्धस्य चतुः शकलान् कृत्वा चतुर्दिक्षु (कुण्डस्य पीठस्य वा) निःक्षिपेत्
यथा-

(आग्नेयादि) ॐ विदार्यै नमः बलिभागं निवेदयामि। **पूतनायै नमः पापराक्षस्यै नमः। चरक्यै नमः।** अवशिष्टं बलिभागं चतुष्पथे नीत्वा (मण्डपाद् बहिर्वा) क्षेत्रपालादीन् समर्पयेत् ।

ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर कुंभ कुंभ सूनु सूनु गुलु गुलु धुनु धुनु मारय मारय विद्रावय विद्रावय विदारय विदारय कंपय कंपय कंपायत कंपायत

पूरय पूरय ॐ ह्रीं ॐ फट् हुं मर्दय मर्दय हुम्।

प्रार्थयेत् :

बलिं गृह्णंत्विमं देवा आदित्या वसवस्तथा।
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगाः खगाः।।
असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः ।
डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतना शिवाः।।
जृंभकाः सिद्धगन्धर्वा नागा विद्याधरा नगाः।
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः।।
जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः ।
मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिपंथिनः।।
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः।
भूतानि यानीह वसंति तानि बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम्।
अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु रक्षन्तु मां तानि सदैव चात्र।।

ततः स्नात्वा (पाणिपादं प्रक्षाल्य)

देवीं प्रार्थयेत्

रूपं देहि जयं देहि महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुंडमालिनी।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहि देवि नमोऽस्तु ते ।।
शूलेन पाहि नो देवि........ तैरस्मान्० ।

ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा ऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रपोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहा ऽऽसीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृत्ताय स्वाहा स ꣳ हानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहा ऽऽयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा।।

(पाणिपादं प्रक्षाल्य मंडपं प्रविशेत्)

पूर्णाहुतिः

(जलमादाय) मया प्रारब्धस्य....कर्मण० सांगतासिद्ध्यर्थं संपूर्णफलप्राप्त्यर्थं एकोनपंचाशतमरुद्गणानां प्रीत्यर्थं च वसोर्धारा समन्वितां पूर्णाहुतिहोमं करिष्ये। (आज्यस्थाली, स्रुक्स्रुवयोः संस्करणम्, आज्यसंस्कारः, स्रुचिमध्ये चतुर्वारं आज्यं गृहीत्वा तदुपरि श्रीफलं निधाय उत्थाय)

ॐ समुद्रादूर्मिर्मधु माँ२ उदारदुपाꣳशुना सममृतत्वमानट्।
घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः।।
वयं नाम प्र ब्रवामा घृतस्यास्मिन् यज्ञे धारयामा नमोभिः।
उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुःशृङ्गोऽवमीद्गौर एतत्।।
चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्यपादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ२ आ विवेश।।
त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन्।
इन्द्र एक ꣳ सूर्य एकं जजान वेनादेकꣳ स्वधया निष्टतक्षुः।।
एता अर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे।
घृतस्य धारा अभि चाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम्।।
सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेना अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः।
एते अर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मृगा इव क्षिपणोरीषमाणाः।।
सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धाराः अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।।
अभि प्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यःस्मयमानासो अग्निम्।
घृतस्य धारा समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः।।
कन्या इव वहतुमेतवा उ अञ्ज्यञ्जानाअभि चाकशीमि यत्रसोमः।
सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभि तत्पवन्ते।।
अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त।

इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते।।
धामं च विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि।
अपामनीके समिथे य आभृतस्तमश्याम मधुमन्तं त ऊर्मिम्।।
मूर्धानंदिवो अरतिं पृथिव्यावैश्वानरमृत आजातमग्निम्।
कविꣳसम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः।।
पुनस्त्वाऽऽदित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः।
घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।।

पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरापत।
वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जꣳ शतक्रतो।।

अथ प्रातराहुते वाहुते वायतरथा कामयेत सोस्या ऽ अनिरसितायै कुंभ्यै दर्व्योपहन्ति पूर्णादर्वि....स्वाहा।। इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते ऽग्नये अद्भ्यश्च न मम।।

वसोर्द्धाराः

ॐ सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा।। शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्च। शुक्रश्च ऋतपाश्चात्यꣳ हाः।। ईदृङ् चान्यादृङ् च सदृङ् च प्रतिसदृङ् च। मितश्च सम्मितश्च सभराः। ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्च धरुणश्च। धर्ता च विधर्ता च विधारयः।। ऋतजिच्च सत्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश्च। अन्तिमित्रश्च दूरे अमित्रश्च गणः। ईदृक्षास एतादृक्षास ऊ षु णः सदृक्षासः प्रतिसदृक्षास एतन। मितासश्च सम्मितासो नो अद्य सभरसो मरुतो यज्ञे अस्मिन्। स्वतवाँश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च। क्रीडी च शाकी चोज्जेषी।। इन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्यथेन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्। एवमिमं यजमानं दैवीश्च विशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवन्तु।। इम

ं स्तनमूर्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्ने सरिरस्य मध्ये। उत्सं जुषस्व मधुमन्तमर्वन्त्समुद्रियः ं सदनमा विशस्व।। ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम। अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।। वसोः पवित्र०।

ॐ यत्कर्मणात्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्नि स्विष्टकृद्विद्वान् स्विष्ट सुहुतं करोतु स्वाहा। इदमग्नये न मम। नात्र संसवप्रक्षेपः।।

भस्मग्रहणम्

ॐ त्र्यायुषं०

श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम्।
आयुष्यं तेज आरोग्यं देहि मे हव्यवाहन।।

हस्ते जलमादाय–

आघारावादिपूर्णाहुतिपर्यन्तं यद् यद् द्रव्यं यावत् यावत् संख्याकं यस्यै यस्यै देवतायै यावत्यो यावत्य आहुतयः सा सा देवता प्रीयताम्।

इति स्रुचि जलंनिक्षिपेत्।

संस्रवप्राशनम्

पवित्राभ्यां मार्जनम्।। अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः।।

ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्

प्रणीतोदकेन संकल्पः– कृतस्य....कर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं ब्रह्मन् इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणाकं तुभ्यम् अहं संप्रददे।। प्रतिगृह्यताम्। ब्रह्मा– प्रतिगृह्णामि–ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु।।

अग्नेः पश्चात् प्रणीताविमोकः

ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।। (आरार्तिक्यम्)

श्रेयोदानम्

शिवा आपः सन्तु० आचार्यः सोदकफलं गृहीत्वा मया भवन्नियोगेन....कर्मणि यत्कृतम् आचार्यत्वं तथा च एभिर्ब्राह्मणैः सह यत्कृतं ब्रह्मत्वं गाणपत्यं सादस्यं च यः कृतो होमस्तस्मात् आचार्यत्वात् ब्रह्मत्वात् गाणपत्यात् सादस्यात् होमात् यदुत्पन्नं श्रेयः तत्तुभ्यमहं संप्रददे। तेन श्रेयसा त्वं श्रेयस्वी भव। भवामि इति यजमानः।

दक्षिणादानम्

कर्मणः सांगतासिद्धये वृतेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो पूजनपूर्वकं दक्षिणादानं करिष्ये। गोसुवर्णादिकं दद्यात्।

अभिषेकः

(पुण्याहवाचने प्रयोगे पृष्ठे दृष्टव्यः)

घृतपात्रदानम्

ॐ रूपेण वो रूपमभ्यागां तुथो वो विश्व वेदा वि भजतु। ऋतस्य पथा प्रेत चन्द्र दक्षिणा वि स्वः पश्य व्यन्तरिक्षं येतस्व सदस्यैः।।

इदं आज्यपात्रं सदक्षिणाकं.....अहं संप्रददे।

ब्राह्मणभोजन संकल्प

कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं ब्राह्मणान् भोजयिष्ये। तेन श्री कर्मांगदेवताः प्रीयन्तां।। भूयसीदक्षिणादानम्।।

आशीर्वाद

ॐ पुनस्त्वा० ॐ श्रीर्वर्चस्व० स्वस्त्यस्तु०

देवता विसर्जनम्

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उप प्र यन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशूर्भवा सचा।।

यान्तुदेवगणाः सर्वे स्वशक्त्या पूजिता मया।
इष्टकाम प्रसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।।

पीठदानम् । अग्निपूजनं कृत्वा – ॐ अग्ने नय० विसर्जनम् –

ॐ यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा।
एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहा।।

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन।।

प्रार्थना

कर्म मया कृतं तत् कालहीनं भक्तिहीनं शक्तिहीनं श्रद्धाहीनं च भवतां ब्राह्मणानां प्रसादात् सर्वं परिपूर्णम् अस्तु।।

विप्राः

अस्तु परिपूर्णम्

तीर्थप्रसादग्रहणम् नमस्कारादिकं कुर्यात्।

नवरात्रि-नवदुर्गापूजनम्

शुद्ध मृत्तिका में जव रोपण कर उसपर कलश स्थापन विधि से कलश स्थापन करें। आचमन प्राणायाम करके संकल्प वाक्य के अन्त में **ममेह जन्मनि दुर्गाप्रीतिद्वारा सर्वापच्छान्तिपूर्वकंदीर्घायुर्विपुल-धनपुत्रपौत्राद्यविच्छिन्न सन्ततिवृद्धिस्थिरलक्ष्मीकीर्तिलाभ शत्रुपराजय प्रमुखचतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं कलशस्थापनं दुर्गापूजनं तत्र निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं स्वस्तिवाचनं, पुण्याहवाचनं, गणपत्यादिपूजनं च करिष्ये।**

ऐसा कहकर संकल्प करें। पश्चात् नीचे लिखे संकल्प से ब्राह्मण का वरण करें।

ॐ अद्य श्रीदुर्गापूजनपूर्वकं मार्कण्डेयपुराणान्तर्गत दुर्गाशप्तशती पाठकरणार्थं एभिर्वरणद्रव्यैः अमुक गोत्रोत्पन्नं अमुक शर्माणं

ब्राह्मणं त्वामहं वृणे।।

पश्चात् ब्राह्मण वृतोस्मि कहें।

नोट : *स्वस्तिवाचन, पुण्याहवाचन, गणपति-गौरीपूजन, कलश स्थापन नवग्रह, पञ्चलोकपाल, दशदिक्पाल, षोडशमात्रिका, चतु:षष्टि योगिनी, क्षेत्रपाल आदि का पूजन करें।*

(भगवती वाहन, भैरव ध्वजा आदि का भी पूजन करें।)

पश्चात् नीचे लिखे ध्यान करें....

भैरव ध्यान

ॐ करकलितकपाल: कुण्डली दण्डपाणि:।
तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती ।।
क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतु ।
र्जयति बटुकनाथ: सिद्धिद: साधकानाम्।।

देवी ध्यान

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां।
कन्याभि: करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखाँश्चापं गुणं तर्जनीं।
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेजां भजे।।

पश्चात् देवी की षोडशोपचार पूजा व आरती करें।

महाआहुति

(पुस्तक पूजा पश्चात् कवचादि का पाठ करें। नवार्णन्यास तथा अन्य न्यास करें। पश्चात् नवार्ण मंत्र की १०८ (१००८) आहुति दें। नवार्ण मन्त्र की केवल घी की आहुति का भी विधान है । पश्चात् प्रति मंत्र से आहुति दें। अध्याय समाप्ति समय प्रति अध्याय निमित्त विशेष आहुति है। परम्परा से कुछ लोग ताम्बूल, पूगीफल आदि की आहुति देते हैं। उवाच स्थल में भी पुष्प, पत्र, फल की आहुति का विधान है। चतुर्थ अध्याय के

शूलेन पाहि नो देवि....तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ।। चार मन्त्रों से आहुति न दें, किन्तु चारों श्लोक साथ बोलकर **ॐ महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा** मंत्र से चार आहुति दें। पाठसमाप्ति पश्चात् न्यास करें। नवार्ण की अष्टोत्तरशत आहुति दें। अनंतर रहस्यत्रय का पाठ करें।

संपुटित पाठ का होम हो तब संपुटित मंत्र एवं सप्तशती के मन्त्र पाठक्रम से अथवा भिन्न आहुति दें। अतः सभी मिलकर इक्कीस सौ आहुतियाँ होंगी।

१. **ॐ नमो देव्यै.....स्म ताम्।। सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै वाग्भवबीजाधिष्ठात्र्यै महाकाल्यै स्वाहा।। अनेन नागवल्लीदलद्वयसहितं कपित्थफलं गंधादिभिः पूजितं सघृतं जुहुयात्।।**

(पूजनं, घृतं सर्वत्र बोध्यम्)

२. **ॐ नमो....ताम्।। सांगायै....लक्ष्मीबीजाधिष्ठायै महालक्ष्म्यै स्वाहा ।। नारिकेलफलं।।**

३. **ॐ नमो....ताम् ।। सांगायै....अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै महालक्ष्म्यै स्वाहा ।। मधुपुष्पाणि।।**

४. **ॐ नमो....ताम् ।। सांगायै....त्रिवर्णात्मिकायै शक्तिलक्ष्म्यै स्वाहा ।। पूगीफलं।।**

५. **ॐ नमो....ताम्।। सांगायै....विष्णुमायादि त्रयोविंशतिदेवतायै स्वाहा ।। बीजपूगफलं।।**

६. **ॐ नमो....सांगायै....शताक्ष्यै धूम्राक्ष्यै स्वाहा ।।नारिंगफलं।।**

७. **ॐ नमो....सांगायै....कर्पूरबीजाधिष्ठात्र्यै कालीचामुण्डायै देव्यै स्वाहा ।। कूष्माण्डफलखंडं।।**

८. **ॐ नमो....सांगायै....अष्टमातृकासहितायै रक्ताक्ष्यै देव्यै स्वाहा इक्षुदंडखंडं।।**

९. ॐ नमो....सांगायै....वाग्भवबीजाधिष्ठायै महाकाल्यै स्वाहा कूष्मांडखंडं इक्षुखंडं वा।।

१०. ॐ नमो....सांगायै....सिंहवाहनायै त्रिशूलपाशधारिण्यै स्वाहा मातुलिंगफलं।।

११. ॐ नमो....सांगायै....सर्वनारायण्यै स्वाहा ।। दाडिमफलं।।

१२. ॐ नमो....सांगायै....बालात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा ।। बिल्वफलं।।

१३. ॐ नमो....सांगायै....त्रिपुरसुन्दर्यै श्रीविद्यायै स्वाहा ।। कदलीफलम्।।

।। इति दुर्गापूजनम्।।

पार्थिव-शिव-पूजन

अङ्गुष्ठमानादधिकं वितस्त्यवधि सुंदरम् । पार्थिवं तु भवेल्लिंगं न न्यूनंनाधिकं च तत्।। अथ पार्थिवेश्वर-मण्डलाकृतिः भानुवासरे सूर्याकृतिः। चन्द्रवासरेनागपाशम्। भौमवासरेत्रिकोणाकृतिः। सौम्यवासरेकच्छपाकृतिः। गुरुवासरे-समचतुरस्त्रम्। भृगुवासरे-पंचकोणाकृतिः। मन्दवासरेधनुषाकृतिः।

पार्थिवशिवलिंगअंगुष्ठमात्र से अधिक एवं वीता से कम श्रेष्ठ माने गये हैं। इस माप से कम और अधिक वर्जित है।

रवि को सूर्य आकृति शिवलिंग बनाने चाहिए एवं सोमवार को नागपास, मंगलवार को त्रिकोण आकृति, बुधवार को कच्छप आकृति, गुरुवार को समचौरस आकृति, शुक्रवार को पंचकोण, शनिवार को धनुष आकृति बनाने का वर्णन शास्त्र में प्राप्त होता है।

पवित्र होकर संकल्प करके वाक्य के अन्त में **पार्थिवलिङ्गपूजनमहं करिष्ये** कहकर संकल्प का जल छोड़े ।

भूमि-प्रार्थना

सर्वाधारे धरे देवि त्वद्रूपां मृत्तिकामिमाम् ।
ग्रहीष्यामि प्रसन्ना त्वं लिङ्गार्थं भव सुप्रभे ।।
ॐ ह्रां पृथिव्यै नमः ।
उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना ।
मृत्तिके त्वां च गृह्णामि प्रजया च धनेन च ।।

ॐ हराय नमः [मृत्तिका को ग्रहण करें ।]
ॐ वं अमृताय नमः [जल को अभिमन्त्रित करें ।]
ॐ महेश्वराय नमः [मूर्ति बनाएँ ।]
ॐ शूलपाणये नमः [मूर्तिस्थापित करें ।]

विनियोग

ॐ अस्य श्रीशिवपञ्चाक्षरमन्त्रस्य वामदेव ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीसदाशिवो देवता, ॐ बीजं, नमः शक्तिः, शिवाय कीलकं मम साम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं न्यासे पूजने जपे च विनियोगः ।।

अङ्गन्यास

ॐ वामदेवाय ऋषये नमः, शिरसि । ॐ अनुष्टुप् छन्दसे नमः, मुखे । ॐ सदाशिवदेवतायै नमः, हृदि । ॐ बीजाय नमः, गुह्ये । ॐ शक्तये नमः, पादयोः । ॐ शिवाय कीलकाय नमः, सर्वांगे । ॐ नं तत्पुरुषाय नमो, हृदये । ॐ मं अघोराय नमः, पादयोः । ॐ शिं सद्योजाताय नमः, गुह्ये । ॐ वां वामदेवाय नमः, मूर्ध्नि । ॐ यं ईशानाय नमः, मुखे। ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ मं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ यं करतलकरपृष्ठाभ्यां

नमः । ॐ हृदयाय नमः । ॐ नं शिरसे शिं कवचाय हुम् । ॐ वां नेत्राभ्यां वौषट् । यं अस्त्राय फट् ।।

विनियोग

ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वराः ऋषयः ऋग्यजुः सामानिच्छन्दांसि क्रियामयवपुः प्राणाख्यादेवता । ॐ आं बीजं ह्रीं शक्तिं क्रौं कीलकं देवप्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ।

यैं नमः हृदि । ॐ आं बीजाय नमो गुह्ये । ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः । ॐ क्रां कीलकाय नमः सर्वांगे । (इस प्रकार अङ्गन्यास करके) ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं षं शं सं हं सः सोऽहं शिवस्य प्राणा इह प्राणाः । ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं शिवस्य जीव इह स्थिताः । ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं शिवस्य सर्वेन्द्रियाणिवाङ् मन-स्त्वक्चक्षुः श्रोत्रघ्राणजिह्वापाणिपादपायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।।

नीचे लिखे मन्त्र से पुष्प समर्पण करें ।

ॐ भूः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि ।
ॐ भुवः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि ।
ॐ स्वः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि ।।

इससे आवाहन करें ।

ॐ स्वामिन् सर्वजगन्नाथ ! यावत् पूजावसानकम् ।
तावत् त्वं प्रीतिभावेन लिङ्गेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।

पार्थिवेश्वर पूजा के बाद दोनों कुमारों का पूजन करें ।

ॐ गं गणपतये नमः । ॐ स्कन्दाय नमः ।

अष्टमूर्तियों की पूजा

अब गन्ध, अक्षत, फूल के द्वारा भगवान शङ्कर की आठों मूर्तियों की आठों दिशाओं में पूजा करें ।

१. पूर्व दिशामें (पृथ्वी रूप में) ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः ।

२. ईशान कोण में (जल रूप में)	ॐ भवाय जलमूर्तये नमः ।
३. उत्तर दिशा में (अग्नि रूप में)	ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः ।
४. वायव्य कोण में (वायु रूप में)	ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः ।
५. पश्चिम दिशा में(आकाश रूप में)	ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः।
६. नैर्ऋत्य कोण में(यजमान रूप में)	ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः।
७. दक्षिण दिशा में (चन्द्र रूप में)	ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः ।
८. अग्नि कोण में (सूर्य रूप में)	ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः ।

तर्पण

अक्षत जल से तर्पण करें ।

ॐ भवं देवं तर्पयामि।	ॐ शर्वं देवं तर्पयामि ।
ॐ ईशानं देवं तर्पयामि ।	ॐ पशुपतिं देवं तर्प०।
ॐ उग्रं देवं तर्प०।	ॐ रुद्रं देवं तर्प०।
ॐ भीमं देवं तर्प०।	ॐ महान्तं देवं तर्प०।
ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्प०।	ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नो तर्प०।
ॐ ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्प०।	ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्प०।
ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्प०।	ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्प०।
ॐ भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्प०।	ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्प०।

इसके बाद 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र का कम-से-कम एक माला अथवा दस बार जप करें । उसके बाद –

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देव ! त्वत्प्रसादान्महेश्वर ।।

यह मन्त्र पढ़कर देवता के दक्षिण हाथ में जप को समर्पित करें और आरती-क्षमा प्रार्थना करें ।

समर्पण

अनेन पार्थिवलिङ्गपूजनकर्मणा श्रीयज्ञस्वरूपः शिवः प्रीयताम्, न मम ।

(पूजनकर्म समर्पण कर ।) पूजन कर आगे लिखे मन्त्र से विसर्जन करें ।

ॐ हरो महेश्वरश्चैव शूलपाणिः पिनाकधृक् ।
शिवः पशुपतिश्चैव महादेव-विसर्जनम् ।।

अथ पञ्चवक्त्रपूजनम्

अथ समाचारात्पञ्चवक्त्रपूजा

तत्र गन्धसिताक्षतश्वेतपुष्पैः पश्चिमवक्त्रपूजनम् - ॐ सद्योजातोव्य-मिमीतेत्यस्य जमदग्निर्ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः स्वाहाकृतिर्देवता पश्चिम-वक्त्रपूजने विनियोगः ॐ सद्योजातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानाम-भवत्पुरोगाः ।। अस्य होतुः प्रदिश्यृतस्य वाचि स्वाहाकृत ँ हविरदन्तु देवाः ।। ३६/२९।। सद्योजाताय पश्चिमवक्त्राय नमः गन्धसिताक्षतश्वेतपुष्पाणि समर्पयामि ।।१।।
गन्धादितुलसीशतपत्रैश्च ।

उत्तरवक्त्रपूजनम्

ॐ वाममद्येत्यस्य भरद्वाज ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः सविता देवता उत्तरवक्त्रपूजने विनियोगः - ॐ वाममद्य सवितर्वाममु श्वोदिवे दिवे वामस्मभ्य ँ सावीः । वामस्य हि क्षयस्व देव भूरेरया धिया वामभाजः स्याम ।।६/८।। वामदेवायोत्तरवक्त्राय नमः गन्धादितुलसीशतपत्राणि समर्पयामि ।।२।।
गन्धादिनीलाब्जकरवीरैश्च ।

दक्षिणवक्त्रपूजनम्

ॐ यातेरुद्रशिवेत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः एको रुद्रो देवता दक्षिणवक्त्रपूजने विनियोगः ।

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी ।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ।।

अघोराय दक्षिणवक्त्राय नमः, गन्धादिनीलाब्जकरवीरपुष्पाणि समर्पयामि ।। ३ ।।

गन्धादिदूर्वाङ्कुरार्कपुष्पैश्च पूर्ववक्त्रपूजनम्

ॐ यत्पुरुषमित्यस्य नारायण ऋषिः अनुष्टुप छन्दः जगद्बीजं पुरुषो देवता प्राग्वक्त्रपूजने विनियोगः ।

ॐ यत्पुरुषं व्यदधु कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरू पादाऽ उच्च्येते ।।

तत्पुरुषाय पूर्ववक्त्राय नमः गन्धादिदूर्वाङ्कुरार्कपुष्पाणि समर्पयामि ।।४।।

गन्धादिबिल्वकनकपुष्पैश्च-

उद्र्ध्ववक्त्रपूजनम्

ॐ तमीशानमित्यस्य गौतम ऋषिः जगती छन्दः ईशानो देवता उद्र्ध्ववक्त्रपूजने विनियोगः।

ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जि न्नवमवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये ।। ईशानायोद्र्ध्ववक्त्राय नमः गन्धादिबिल्वकनकपुष्पाणि समर्पयामि। इति रुद्रकल्पद्रुमान्तर्गताभिषेकपरिच्छेदोक्तैकतरप्रकारेण पञ्च-वक्त्रपूजनम् ।

।। अथ प्रकारान्तरेण पञ्चवक्त्रपूजा ।।

अथ पश्चिमवक्त्रपूजा

(प्रतिवक्त्रपूजने नमस्कारादि कर्तव्यम्)

ॐ सद्यो जातमित्यस्य सद्योजात ऋषिः छन्दः सद्योजातो देवता श्वेतवर्णं हंसवाहनं पश्चिमवक्त्रं पृथिवीतत्वं पश्चिमवक्त्रनमस्कारे विनियोगः - ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः । भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ।। सद्योजाताय श्वेतवर्णाय हंसवाहनाय पश्चिमवक्त्राय पृथिवीतत्त्वाय सृष्टिरूपात्मने ब्रह्मणे नमः ह्रां इति प्रणम्य धनुर्बाणमुद्रा-प्रदर्शनम् ।। ॐ सद्योजातमित्यस्य सद्योजात ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः सद्योजातो देवता श्वेतवर्णं हंसवाहनं पश्चिमवक्त्रं पृथिवीतत्त्वं पश्चिमवक्त्रपूजने विनियोगः-ॐ सद्योजातं० ।।सद्योजाताय श्वेतवर्णाय

हंसवाहनाय पश्चिमवक्त्राय नमः । इत्यनेन गन्धमनः शिलाचन्दन-श्वेताक्षतश्वेतपुष्पगुग्गुलधूपघृत-दीपपायसनैवेद्यादिभिः पूजनम् ।
ततः कलापूजनम् - ॐ ऋद्ध्यै नमः । ॐ सिद्ध्यै नमः। ॐ धृत्यै नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ मेधायै नमः। ॐ कान्त्यै नमः। ॐ स्वधायै नमः। ॐ प्रभायै नमः। इत्यष्टौ कलाः सम्पूज्य....ध्यानम्-

प्रालेयामलबिन्दुकुंदधवलं गोक्षीरफेनप्रभं ।
भस्माभ्यङ्गमनङ्गदेहदमनज्वालावली लोचनम् ।।
ब्रह्मेन्द्रा-दिमरुद्गणैःस्तुतिपरैरभ्यर्चितं योगिभि ।
वंन्देऽहं सकलं कलङ्करहितं स्थाणोर्मुखं पश्चिमम् ।।
शुभ्रं त्रिलोचनं नाम्ना सद्योजातं शिवप्रदम् ।
शुद्धस्फटिकसंकाशं वन्देऽहं पश्चिमं मुखम् ।।

इति पश्चिमवक्त्रपूजा ।। १ ।।

अथोत्तरवक्त्रपूजा

ॐ वामदेवायेत्यस्य वामदेव ऋषिः जगती छन्दः विष्णुर्देवता कृष्णवर्णं गरुडवाहनम् उत्तरवक्त्रम् आपस्तत्त्वम् उत्तरवक्त्र नमस्कारे विनियोगः । ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमः ।। वामदेवाय कृष्णवर्णाय गरुडवाहनायोत्तरवक्त्रायापस्तत्त्वायामृतरूपात्मने विष्णवे नमः। ह्रीं इति प्रणम्य पद्ममुद्राप्रदर्शनम् ।। ॐ वामदेवायेत्यस्य वामदेवऋषिः जगतीछन्दः विष्णुर्देवता कृष्णवर्ण गरुडवाहनम् उत्तरवक्त्रम् आपस्तत्त्वम् उत्तरवक्त्रपूजने विनियोगः ॐ वामदेवाय० ।।

वामदेवाय कृष्णवर्णाय गरुडवाहनायोत्तरवक्त्राय नमः। इत्यनेनं हरिचन्दनतुलसीशतपत्रपुष्पपञ्चसौगन्धिकधूपघृतपक्वगोधू-मान्ननैवेद्याभिः पूजनम्। ततः कलापूजनम्-ॐ रजसे नमः। ॐ रक्षायै नमः। ॐ रत्यै नमः। ॐ पाल्यायै नमः। ॐ कामायै

नमः । ॐ सञ्जीविन्यै नमः । ॐ प्रियायै नमः । ॐ बुद्ध्यै नमः । ॐ क्रियायै नमः । ॐ धात्र्यै नमः । ॐ भ्रामर्यै नमः । ॐ मोहिन्यै नमः । ॐ ज्वरायै नमः । इति त्रयोदशकलाः सम्पूज्य ।

ध्यानम्

गौरं कुङ्कुमपिङ्गलं सुतिलकं व्यापाण्डुगण्डस्थलं।
भ्रूविक्षेपकटाक्षवीक्षणलसत्संसक्तकर्णोत्पलम् ॥
स्निग्धं बिम्बफलाधरं प्रहसितं नीलालकालङ्कृत।
वन्दे पूर्णशशाङ्कमंडलनिभं वक्त्रं हरस्योत्तरम् ॥
वामदेवं सुवर्णाभं दिव्यास्त्रगणसेवितम् ।
अजन्मानमुमाकान्तं वन्देऽहं ह्युत्तरं मुखम् ॥

इत्युत्तरवक्त्रपूजा ॥२॥

अथ दक्षिणवक्त्रपूजा

ॐ अघोरेभ्य इत्यस्य अघोर ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः रुद्रो देवता नीलवर्णं कूर्मवाहनं दक्षिणवक्त्र तेजस्तत्त्वं दक्षिणवक्त्रनमस्कारे विनियोगः । ॐ अघोरेभ्योथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः । सर्व्वेभ्यः सर्व्वशर्व्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ अघोराय नीलवर्णाय कूर्मवाहनाय दक्षिणवक्त्राय तेजस्तत्त्वाय विश्वरूपात्मने कालाग्निरुद्राय नमः हूँ इति प्रणम्य ज्ञानमुद्रा-प्रदर्शनम् । ॐ अघोरेभ्य इत्यस्य अघोर ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः रुद्रो देवता नीलवर्णं कूर्मवाहनं दक्षिणवक्त्रं तेजस्तत्त्वं दक्षिणवक्त्रपूजने विनियोगः ॐ अघोरेभ्यो० ॥ अघोराय नीलवर्णाय कूर्मवाहनाय दक्षिण-वक्त्रायनमः।इत्यनेनकृष्णागरुचन्दननीलोत्पलकरवीरपुष्पसिता-गरुधूपमाषान्न-नैवेद्यादिभिः पूजनम् ।

कलापूजनम्

ॐ तमसे नमः । ॐ मोहायै नमः । ॐ क्षयायै नमः । ॐ निद्रायै

नमः । ॐ व्याधये नमः । ॐ मृत्यवे नमः । ॐ क्षुधायै नमः । ॐ तृषायै नमः । इत्यष्टौ कलाः सम्पूज्य ।

ध्यानम्

कालाभ्रभ्रमराञ्जनाचलनिभं व्यावृतपिङ्गेक्षणं ।
खण्डेन्दुद्वयमिश्रितांशुदशनाप्रोद्भिन्नदंष्ट्राङ्कुरम् ।।
सर्पप्रोतकपालशक्तिसकलं व्याकीर्णसच्छेखरं ।
वन्दे दक्षिणमीश्वरस्य कुटिलभ्रूमङ्गरौद्रं मुखम् ।।
नीलाभ्रवर्णमोंकारमघोरं घोरदंष्ट्रकम् ।
दंष्ट्राकरालमत्युग्रं वन्देऽहं दक्षिणं मुखम् ।।

इति दक्षिणवक्त्रपूजा ।। ३ ।।

अथ पूर्ववक्त्रपूजा

ॐ तत्पुरुषायेत्यस्य तत्पुरुष ऋषिः गायत्री छन्दः रुद्रो देवता पीतवर्णम् अश्ववाहनं पूर्ववक्त्रं वायुतत्त्वं पूर्ववक्त्रनमस्कारे विनियोगः । ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् । तत्पुरुष पीतवर्णायाश्व-वाहनाय पूर्ववक्त्राय वायुतत्त्वाय चैतन्यात्मने आदित्याय नमः हौं इति प्रणम्य कवचमुद्राप्रदर्शनम् । ॐ तत्पुरुषायेत्यस्य तत्पुरुष ऋषिः गायत्री छन्दः रुद्रो देवता पीतवर्णम् अश्ववाहनं पूर्ववक्त्रं वायुतत्त्वं पूर्ववक्त्र पूजने विनियोगः। ॐ तत्पुरुषाय० ।। तत्पुरुषाय पीतवर्णायाश्ववाहनाय पूर्ववक्त्राय नमः । इत्यनेन हरिताल चन्दनदुर्वाङ्कुरार्कपुष्पान्यतरपुष्पकृष्णागरुधूपमोदक-नैवेद्यादिभिः पूजनम् ।

कलापूजनम्

ॐ निवृत्त्यै नमः । ॐ प्रतिष्ठायै नमः । ॐ विद्यायै नमः । ॐ शान्त्यै नमः । इति चतस्त्रः कला सम्पूज्य ।

ध्यानम्

संवर्ताग्नितडित्प्रतप्तकनकप्रस्पर्द्धितेजोरुण ।
गम्भीरस्मृतिनिःसृतोग्रदशनप्रोद्भासिताम्राधरम्।।
बालेन्दुद्युतिलोलपिङ्गलजटाभारप्रबद्धोरगं ।
वन्दे सिद्धसुरासुरेन्द्रनमितं पूर्वं मुखं शूलिनः।।
बालार्कवर्णमारक्तं पुरुषं च तडित्प्रभम् ।
दिव्यं पिङ्गजटाधारं वन्देऽहं पूर्वदिङ्मुखम् ।।

।। इति पूर्ववक्त्रपूजा ।। ४।।

अथोर्ध्ववक्त्रपूजा

ॐ ईशान इत्यस्य ईशान ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः रुद्रो देवता गोक्षीरवर्णं वृषभवाहनम् ऊद्ध्र्ववक्त्रम् आकाशतत्त्वम् ऊद्ध्र्ववक्त्रनमस्कारे विनियोगः। ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेऽअस्तु सदाशिवोम्।।ईशानाय गोक्षीरवर्णाय वृषभवाहनायोर्ध्व-वक्त्राया-काशतत्त्वायाव्यक्ताय सर्वव्यापकात्मने नमः ह्रौं इति प्रणम्य महामुद्रा (व्यापकमुद्रा) प्रदर्शनम् । ॐ ईशान इत्यस्य ईशान ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः रुद्रो देवता गोक्षीरवर्णं वृषभवाहनम् ऊर्ध्ववक्त्रम् आकाशतत्त्वम् ऊर्ध्ववक्त्रपूजने विनियोगः ॐ ईशानः सर्व० ।।

ईशानाय गोक्षीरवर्णाय वृषभवाहनायोर्ध्ववक्त्राय नमः ।

इत्यनेन भस्म चन्दन बिल्वपत्रकनकपुष्प ऋतुभवान्य पुष्पहरिचन्दन धूपशर्करादध्योदननैवेद्यादिभिः पूजनम् ।

कलापूजनम्

ॐ शशिन्यै नमः । ॐ अङ्गदायै नमः । ॐ इष्टायै नमः । ॐ मरीच्यै नमः । ॐ ज्वालिन्यै नमः । इति पञ्चकलाः सम्पूज्य ।

ध्यानम्

व्यक्ताव्यक्तगुणोत्तरं सुवदनं षट्त्रिंशतत्त्वाधिकं।
तस्मादुत्तरतत्त्व-मक्षयमिति ध्येयं सदा योगिभिः।।
वन्दे तामसवर्जितेन मनसा सूक्ष्मातिसूक्ष्मं परं ।
शान्तं पञ्चममीश्वरस्य वदनं खव्यापि तेजोमयम्।।
ईशानं सूक्ष्ममव्यक्तं तेजः पुञ्जपरायणम् ।
अमृतस्त्रावि चिद्रूपं वन्देऽहं पञ्चमं मुखम् ।।

इति पञ्चवक्रपूजां कृत्वा देववामभागे शक्तिपूजनम्

ॐ उमायै नमः। ॐ शङ्करप्रियायै नमः।ॐ पार्वत्यै नमः।ॐ गौर्यै नमः। ॐ काल्यै नमः। ॐ कालिन्द्यै नमः। ॐ कोटर्यै नमः। ॐ विश्वधारिण्यै नमः। ॐ ह्रां नमः।ॐ ह्रीं नमः।ॐ गङ्गादेव्यै नमः। ततः – ॐ गणपतये नमः ।ॐ कार्तिकेयाय नमः ।ॐ पुष्पदन्ताय नमः ।ॐ कपर्दिने नमः ।ॐ भैरवाय नमः ।ॐ शूलपाणये नमः। ॐ ईश्वराय नमः। ॐ दण्डपाणये नमः ।ॐ नन्दिने नमः। ॐ महाकालाय नमः ।इति सम्पूज्य ततः एकादशरुद्रार्चनम् – ॐ अघोराय नमः ।ॐ पशुपतये नमः ।ॐ शर्वाय नमः ।ॐ विरुपाक्षाय नमः ।ॐ विश्वरूपिणे नमः ।ॐ त्र्यम्बकाय नमः । ॐ कपर्दिने नमः ।ॐ भैरवाय नमः ।ॐ शूलपाणये नमः ।ॐ ईशानाय नमः ।ॐ महेश्वराय नमः ।। इति ।।

ततो रुद्राभिषेकं कृत्वा शुद्धोकस्नानवस्त्रोपवीतगन्धाक्षतपुष्पाणि समर्प्य (समयश्चेत् शिवसहस्त्रनामभिः (१०००) अष्टोत्तरशतनामभिर्वा (१०८) बिल्वार्पणं कुर्यात्) तदनन्तरं सौभाग्यद्रव्यधूपदीपनैवेद्य-ताम्बूलदक्षिणार्तिक्यप्रदक्षिणा-मंत्रपुष्पाञ्जलिविशेषार्घाद्युपचारान् समर्प्य ।।ॐ नमः शिवायेति शिवषडक्षरमन्त्रस्य यथाशक्ति जपं कृत्वा समर्प्य ।।

पाताल शिव पूजा

हाटकेश्वराय सदाशिवाय नमः – इस मन्त्र से पूजा करके ज्ञानमुद्रा बतावें।

भगवते महारुद्राय रक्तवर्णाय सर्पवाहनाय सर्वतत्त्वात्मकाय अमृतादिष्षटकलासहिताय भीमरूपाय हाटकेश्वराय महारुद्राय नमः।

रक्तचन्दन, अपामार्ग, कल्हार, बकुल पुष्प, धूप, दीप षड्रस-नैवेद्यादिभिर्पूजनम्।

कलापूजनम्

ह्रीं अमृतायै नमः। ह्रीं मानदायै नमः। ह्रीं कल्याण्यै नमः। ह्रीं तपिन्यै नमः। शोषिण्यै नमः। ह्रीं त्र्यंबिकायै नमः।

॥ प्रार्थना ॥

यंदेवासुरपूजितारुणनिभैः सामर्थ्य तारागणैः।
पुन्नागांबुजनाग पुष्प विविधैर्वागेश्वरी चर्चितम्॥
नित्यं ध्यान समस्त दीप्तिकरणं कालाग्निरुद्रोपमम्।
पातालस्थ शिवं नमामि शिवः प्रीयताम्॥

॥ देववाम भागे शक्ति पूजनम्॥

ह्रीं नमो भगवत्यै नमः॥ ह्रीं शंकरप्रियायै नमः॥ ह्रीं पार्वत्यै नमः॥ ह्रीं गौर्यै नमः॥ ह्रीं काल्यै नमः॥ ह्रीं कालिन्द्यै नमः॥ ह्रीं कोटयै नमः॥ ह्रीं विश्वधारिण्यै नमः॥ ह्रीं शिवायै नमः॥ ह्रीं ह्रां नमः॥ ह्रीं ह्रीं नमः॥ ह्रीं भगवत्यै गंगादेव्यै नमः॥

ह्रीं गणपतयै नमः॥ ह्रीं कार्तिकेयाय नमः॥ ह्रीं पुष्पदंताय नमः॥ कपर्दिने नमः॥ ह्रीं भैरवाय नमः॥ ह्रीं शूलपाणये नमः॥ ह्रीं ईश्वराय नमः॥ ह्रीं दंडपाण्यै नमः॥ ह्रीं नन्दिने नमः॥ ह्रीं महाकालाय नमः॥

ह्रीं अघोराय नमः॥ ह्रीं पशुपतये नमः॥ ह्रीं शर्वाय नमः॥ ह्रीं विरुपक्षाय नमः॥ ह्रीं विश्वरुपाय नमः॥ ह्रीं त्र्यंबकाय नमः॥ ह्रीं कपर्दिने नमः॥ ह्रीं भैरवाय नमः॥ ह्रीं शूलपाणये नमः॥ ह्रीं ईशाय नमः॥ ह्रीं महेशाय नमः॥

राजोपचारान्

छत्रं च चामरं चैव व्यजनं दर्पणं तथा ।
पादुकानि च सर्वाणि गृह्यतां परमेश्वर ।।

(अभावे कल्पयामि) इत्यर्पयित्वा साष्टाङ्गं प्रणमेत् ।।

श्री महामृत्युञ्जय जप विधिः

अकाल मृत्यु मारकेश एवं असाध्य रोगों से मुक्ति का प्रचंड उपाय है । अचानक घोर संकट से घिर जाने पर भयंकर रोग से पीडित हो जाने पर मृत्यु तुल्य कष्ट की स्थिति में अमोघ कवच है । मृत्युञ्जय जप मंत्र के जप से ही मार्कंडेय ने मृत्यु पर विजय प्राप्त की है । यह मंत्र मंत्रों में राजा है । मरणासन्न व्यक्ति को बचाने में तथा रोग नाश करने में सक्षम है । सवा लक्ष जप करने से यह मंत्र सिद्ध होता है, मंत्र जप का दशांश हवन तर्पण आदि किया जाता है ।

।।अथ (सर्वारिष्टशान्त्यर्थं) महामृत्युञ्जयजपविधिः ।।

आसने उपविश्य शिखां बद्ध्वा रुद्राक्षमालां भस्मपवित्रे च धृत्वा आचम्य प्राणानायम्य ललाटे तिलकं कृत्वा शान्तिपाठं पठित्वा गणेशादीन्नमस्कृत्य सुमुखश्चेत्यादि पठित्वा देशकालौ सङ्कीर्त्य-

अद्येत्यादि० मम यजमानस्य वा शरीरे स्थितस्य अमुकरोगस्य समूलनाशनेन अपमृत्युनिवारणार्थं क्षेममारोग्यप्राप्त्यर्थं विषमस्थान-स्थितसकलारिष्टनिवृत्तये श्रीमृत्युञ्जयदेवताप्रत्यर्थं अमुक प्रणव युतमहामृत्युञ्जयजपं त्रय ब्राह्मणद्वारा वा अमुकसंख्याऽहं करिष्ये।। तदङ्गत्वेन गणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्धारा-युष्यमन्त्रजपं नान्दीश्राद्धम् आचार्यादिवरणं च करिष्ये।।

इति संङ्कल्प्य ब्राह्मणवरणं कृत्वा हस्ते जलमादाय-

अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रस्यवसिष्ठऋषिः श्रीमृत्युञ्जयरुद्रो देवता अनुष्टुप् छन्दः हौंबीजं जूंशक्तिं सः कीलकं मृत्युञ्जयप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।। इति संकल्प्य यथाशक्ति न्यासान् कुर्यात् यथा-

वसिष्ठऋषये नमः, शिरसि । अनुष्टुप् छन्दसे नमः, मुखे । श्रीमहा-मृत्युञ्जयरुद्रदेवतायै नमः, हृदये । हौं बीजाय नमः, गुह्ये । जूं शक्तये नमः, पादयोः । सः कीलकाय नमः, सर्वाङ्गेषु ।। ॐ त्र्यंबकम् अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ यजामहे तर्जनीभ्यां नमः । ॐ सुंगन्धिं पुष्टिर्वर्द्धनं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ उर्वारुकमिव बन्धनात् अनामिकाभ्यां नमः । ॐ मृत्योर्मुक्षीय कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ मामृतात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।। एवं हृदयादि ।। ॐ त्र्यम्बकं हृदयाय नमः । ॐ यजामहे शिरसे स्वाहा । ॐ सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं शिखायै वषट् । ॐ उर्वारुकमिव बन्धनात् कवचाय हुम् । ॐ मृत्योर्मुक्षीय नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ मामृतात् अस्त्राय फट् ।।

ध्यानम्

चन्द्रोद्भासितमूर्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं महद्ध-
स्ताब्जेन दधन्सुदिव्यममलं हास्यास्यपङ्केरुहम् ।।
सूर्येन्द्राग्निविलोचनं करतलैः पाशाक्ष-सूत्राङ्कुशां ।
भोजं बिभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं तं स्मरे ।। १ ।।

मानसोपचारैः सम्पूज्य

ॐ लं पृथिव्यात्मकंगन्धं समर्पयामि । ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि । ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि । ॐ रं तेजसात्मकं दीपं समर्पयामि । ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि । ॐ सं सर्वात्मकं मंत्रपुष्पं समर्पयामि ।।

मृत्युञ्जयं पूजयित्वा जपानुष्ठानं विधेयम् ।।

महामृत्युञ्जयमन्त्रः

ॐ हौं ॐ जूं ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः

ॐ त्र्यम्बकंय्यजामहेसुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ।।

ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ सः ॐ जूं ॐ हौं ॐ ।

यथा

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर ।।

इति जपं निवेद्य प्रार्थयेत्

मृत्युञ्जय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम् ।
जन्ममृत्युजराव्याधिपीडितं कर्मबन्धनैः ।।

अर्पणम्

अनेन यथासंख्याकेन महामृत्युञ्जयजपाख्येन कर्मणा श्रीमहा-मृत्युञ्जयः प्रीयतां न मम ।।

रुद्र के भेद

शास्त्रों में 'रुद्र' के पाँच भेद कहे गये हैं– रूपक, रुद्र, रुद्री, महारुद्र और अतिरुद्र। यथा–

रुद्राः पञ्चविधाः प्रोक्ता देशिकैरुत्तरोत्तरम।
साङ्गस्त्वाद्यौ रूपकाख्यः सशीर्षो रुद्र उच्यते।।
एकादशगुणैस्तद्वत् रुद्रीसंज्ञो द्वितीयकः।
एकादशभिरेताभिस्तृतीयो लघुरुद्रकः।।
लघ्वेकादशभिः प्रोक्तो महारुद्रश्चतुर्थकः।
पञ्चमः स्यान्महारुद्रैरेकादशभिरन्तिमः।।
अतिरुद्रः समाख्यातः सर्वेभ्यो ह्युत्तमोत्तमः।।

(रुद्रकल्पद्रुम)

"आचार्यों के द्वारा रुद्रयाग उत्तरोत्तर एक से एक श्रेष्ठ पाँच प्रकार के कहे गये हैं। अङ्गसहित शीर्षयुक्त 'रूपक' नाम का पहला रुद्र कहा जाता है। वैसे ही ग्यारह आवृत्तियों वाला 'रुद्री' नामक दूसरा रुद्र कहा जाता है।

एकादश (ग्यारह) रुद्रियों से 'लघुरुद्र' नाम का तीसरा रुद्र कहा जाता है। ग्यारह लघुरुद्रों से 'महारुद्र' नाम का चौथा रुद्र कहा जाता है। ग्यारह महारुद्रों से 'अतिरुद्र' नाम का पाँचवा रुद्र अन्तिम कहा जाता है। अतिरुद्र सब रुद्रों से उत्तमोत्तम है।''

(1) छः अङ्ग के सहित रुद्राध्याय को [१] 'रूपक' कहते हैं।

(2) रूपक में 'वयर्ठ० सोम' (शीर्षसंज्ञक) यह आठ मन्त्र मिला दिए जाँय तो वह 'रुद्र' (रुद्री) हो जाता है।

(3) सब अङ्ग के सहित ११ 'नमस्ते' पढ़ी जाय और 'वयर्ठ० उग्रश्च, वाजश्च, ऋचं वाचम्' भी पढ़ा जाय, तो वह 'रुद्री' हो जाती है।

(4) रुद्री को ११ गुना करने से वह [२] 'लघुरुद्र' हो जाता है। इसमें १२१ नमस्ते का पाठ होता है।

(5) लघु रुद्र को ११ गुना करने से [३] 'महारुद्र' हो जाता है। इसमें १३३१ 'नमस्ते' का पाठ होता है।

(6) महारुद्र को ११ गुना करने से [४] 'अतिरुद्र' हो जाता है।

(7) [§] 'शतरुद्रिय' नाम वस्तुतः नमस्ते अध्याय का है।

रुद्रयाग की आहुति का विचार

(रुद्र, लघुरुद्र, महारुद्र और अतिरुद्र की आहुति का विचार)

नमस्ते की आहुति में कई पक्ष हैं। यथा-

सम्पूर्ण नमस्ते	१	आहुति
सम्पूर्ण नमस्ते	३	आहुति
सम्पूर्ण नमस्ते	६	आहुति

१. षड्ङ्ग पाठ को 'रूपक' कहते हैं।

२. ११ ब्राह्मण रुद्राभिषेक करें तो 'लघुरुद्र' होता है।

३. ११ लघुरुद्र करने से 'महारुद्र' होता है।

४. ११ महारुद्र करने से 'अतिरुद्र' होता है।

§ मिथिला में १०० मन्त्र को 'शतरुद्रिय' कहते हैं।

सम्पूर्ण नमस्ते १६ आहुति
सम्पूर्ण नमस्ते ४४ आहुति
सम्पूर्ण नमस्ते ४८ आहुति
सम्पूर्ण नमस्ते १६१ आहुति (आजकल यह अधिक प्रचलित है)
सम्पूर्ण नमस्ते ४२५ आहुति

रुद्र यज्ञ में - १,८११ आहुति होती है।
लघुरुद्र में - १९,९२१ आहुति होती है।
महारुद्र में - २,१९,१३१ आहुति होती है।
अतिरुद्र में - २४,१०,४४१ आहुति होती है।

रुद्रयाग की आहुति का चक्र

एक नमस्ते की १६१ आहुति होती है। इस क्रम से अङ्गसहित रुद्रादि यज्ञ की आहुतियों का स्पष्टीकरण नीचे दिए गये चक्र में देखिए.....

नाम मन्त्र	रुद्र	लघुरुद्र	महारुद्र	अतिरुद्र
यज्जाग्रतः०	१	११	१२१	१३३१
सहस्त्रशीर्षा०	१	११	१२१	१३३१
अद्भ्यः०	१	११	१२१	१३३१
आशुः शिशा०	१	११	१२१	१३३१
विभ्राट्०	१	११	१२१	१३३१
नमस्ते०	१७७१	१९४८१	२१४२९१	२३४७२०१
वाजश्च०	११	१२१	१३३१	१४६४१
ऋचं वाचम्०	२४	२६४	२९०४	३१९४४
योग	१८११	१९९२१	२१९१३१	२४१०४४१

विविध यज्ञों की आहुति का निर्णय

1. रुद्रयाग में १८११ (एक हजार आठ सौ ग्यारह) आहुति होती है।
   महारुद्रयाग में २१९१३१ (दो लाख उन्नीस हजार एक सौइकतीस) आहुति होती है।
   अतिरुद्रयाग में २४१०४४१ (चौबीस लाख दस हजार चार सौ इकतालीस) आहुति होती है।
2. विष्णुयाग में १६०००० (एक लाख साठ हजार) आहुति होती है।
   महाविष्णुयाग में ३२०००० (तीन लाख बीस हजार) आहुति होती है।
   अतिविष्णुयाग में ४८००००(चार लाख अस्सी हजार)आहुति होती है।
   (नागरकृत विष्णुयागपद्धतौ)
3. विष्णुयाग में १६००० (सोलह हजार) आहुति होती है।
   महाविष्णुयाग में १६०००० (एक लाख साठ हजार) आहुति होती है।
   अतिविष्णुयाग में ३२०००० (तीन लाख बीस हजार) आहुति होती है।
   (अनन्तदेवकृत विष्णुयागपद्धतौ)
4. अन्य विद्वानों की मुद्रित विष्णुयाग पद्धति के अनुसार विष्णुयाग में १६००० (सोलह हजार) आहुति होती है।
   महाविष्णुयाग में १६०००० (एक लाख साठ हजार) आहुति होती है।

विविध प्रकार के शिवलिङ्ग माहात्म्य

	शिवलिङ्ग की धातु	फलश्रुति
1.	हीरा का	आयुष्य की वृद्धि
2.	मोती	रोगमुक्ति एवं सुविचार
3.	वैदूर्य / प्रवाण	शत्रु / हरीफ के ऊपर विजय
4.	माणिक्य	लक्ष्मी प्राप्ति

5.	पोखरज	सर्व सुख प्राप्ति
6.	नीलमणि	यश-विजय-प्रमाणिकता
7.	मरकतमणि	शरीर स्वास्थ्य
8.	स्फटिक	सर्व कामना सिद्धि
9.	चाँदी	राजसुख प्राप्ति / पितृ मोक्ष पितृमोक्ष-सुप्रसिद्ध
10.	सुवर्ण	स्थिर शुभलक्ष्मी / सत्य लोक की प्राप्ति
11.	ताँबा	दीर्घायु-लोक चाहना बढ़े
12.	पित्तल	स्वजनों में स्नेह की वृद्धि होय
13.	काँसा	यश-कीर्ति बढ़े
14.	लोहा	शत्रु पराजय
15.	सीसा	आयुष्य वृद्धि
16.	चन्दन	स्त्री सौभाग्य वर्धक
17.	हाथी दाँत	नेतागिरी
18.	चावल का आटा	रोग नाश, दीर्घायु
19.	मिश्र धान्य आटा	सर्व सुख प्राप्ति
20.	उड़द का आटा	स्त्री प्राप्ति
21.	गाय के गोबर का	रोग नाश - दीर्घायु
22.	गुड़	धन-धान्य वृद्धि
23.	बाँस	वंश वृद्धि
24.	मिट्टी (मृत्तिकाः)	अनेक विध फल प्राप्ति

वर्तमान काल में सर्व सिद्धि तथा सुख शान्ति के लिए पारद (पारा का) शिवलिङ्ग की पूजा प्रचलित है।

रुद्राभिषेक में प्रशस्त्र द्रव्य एवं फल

जल से रुद्राभिषेक करने पर वृष्टि होती है, व्याधि की शान्ति के लिए कुशोदक से अभिषेक करना चाहिए। पशु प्राप्ति के लिए दही, लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए इक्षुरस (गन्ने का रस), धन प्राप्ति के लिए मधु तथा घृत एवं मोक्ष प्राप्ति के लिए तीर्थ के जल से अभिषेक करना चाहिए। पुत्र की इच्छा करनेवाला दूध द्वारा अभिषेक करने पर पुत्र प्राप्त करता है। वन्ध्या, काकवन्ध्या

(मात्र एक संतान उत्पन्न करनेवाली) अथवा मृतवत्सा स्त्री (जिसकी संतान उत्पन्न होते ही मर जाय या जो मृत संतान उत्पन्न करे) गोदुग्ध के द्वारा अभिषेक करने पर शीघ्र ही पुत्र प्राप्त करती है।

जल की धारा भगवान शिव को अतिप्रिय है। अत: ज्वर के कोप को शान्त करने के लिए जलधारा से अभिषेक करना चाहिए। एक हजार मन्त्रों सहित घृत की धारा से रुद्राभिषेक करने पर वंश का विस्तार होता है, इसमें संशय नहीं है। प्रमेह रोग के विनाश के लिए विशेष रूप से केवल दूध की धारा से अभिषेक करना चाहिए, इससे मनोभिलषित कामना की पूर्ति भी होती है। बुद्धि की जड़ता को दूर करने के लिए शक्कर मिले दूध से अभिषेक करना चाहिए, ऐसा करने से भगवान शङ्कर की कृपा से उसकी बुद्धि श्रेष्ठ हो जाती है। सरसों के तेल से अभिषेक करने पर शत्रु का विनाश हो जाता है तथा मधु के द्वारा अभिषेक करने पर यक्ष्मारोग (तपेदिक) दूर हो जाता है। पापक्षय की इच्छावाले को गोदुग्ध से, लक्ष्मी की कामनावाले को ईंख (गन्ने) के रस से और पुत्रार्थी को शर्करा (चीनी) मिश्रित जल से भगवान सदाशिव का अभिषेक करना चाहिए। उपर्युक्त द्रव्यों से महालिङ्ग का अभिषेक करने पर भगवान शिव अत्यन्त प्रसन्न होकर भक्तों की समस्त कामनाओं को पूर्ण करते हैं।

भगवान रुद्र की प्रसन्नता के लिए निष्काम भाव से रुद्र पाठ का अनन्त फल है। वायु पुराण के अनुसार वह जीव उसी देह से निश्चित रूप से रुद्र स्वरूप हो जाता है अर्थात सायुज्य मुक्ति को प्राप्त होता है।

शत रुद्रिय पाठ फल

शत रुद्रिय रुद्राष्टाध्यायी का मुख्य भाग है। शतरुद्रिय का महात्म्य रुद्राष्टाध्यायी का ही महात्म्य है। इसमें भगवान रुद्र के शताधिक नामों द्वारा उन्हें नमस्कार किया गया है। इसका पाठ अथवा जप समस्त वेदों के परायण के तुल्य माना गया है। इसको रुद्राध्याय भी कहा गया है। भगवान वेद व्यास जी ने अर्जुन को इसकी महिमा बताते हुए कहा है : पार्थ वेद

सम्मित यह शतरुद्रिय परम-पवित्र तथा धन, यश और आयु की वृद्धि कराने वाला है। इसके पाठ से सम्पूर्ण मनोरथों की सिद्धि होती है। यह सम्पूर्ण पवित्र, किल्बिषों का नाशक, सब पापों का निवारक तथा सब प्रकार के दुःख और भय को दूर करनेवाला है। जो सदा उद्यत रहकर शतरुद्रिय पढ़ता और सुनता है तथा मनुष्यों में जो कोई भी निरन्तर भगवान विश्वेश्वर का भक्ति भाव से भजन करता है, वह उन त्रिलोचन के प्रसन्न होने पर समस्त उत्तम कामनाओं को प्राप्त कर लेता है।

अथर्ववेदीय जाबालोपनिषद् में महर्षि याज्ञवल्क्यजी ने शतरुद्रिय का साधन कहा है। पितामह भगवान ब्रह्माजी ने महर्षि आश्वलायन से शतरुद्रिय की महिमा इस प्रकार बतायी है :-

यः शतरुद्रियमधीते सोऽग्निपूतो भवति.....

अर्थात जो शतरुद्रिय का पाठ करता है वह अग्निपूत होता है, वायुपूत होता है, आत्मपूत होता है, सुरापान के दोष से छूट जाता है, ब्रह्महत्या के दोष से मुक्त हो जाता है, स्वर्ण की चोरी के पाप से छूट जाता है, शुभाशुभ कर्मों से उद्धार पाता है, भगवान सदाशिव के आश्रित हो जाता है तथा वह अविमुक्त स्वरूप हो जाता है। अतः जो आश्रम से अतीत हो गये हैं, उन परमहंसों को सदा सर्वदा अथवा कम से कम एक बार इसका पाठ अवश्य करना चाहिए। इससे उस ज्ञान की प्राप्ति होती है जो भवसागर का नाश कर देता है। इसलिए इसको इस प्रकार जानकर मनुष्य कैवल्यरूप मुक्ति को प्राप्त होता है, कैवल्यपद को प्राप्त होता है।

रुद्राभिषेक

रुद्राभिषेक दो प्रकार से होता है ।

१. शतरुद्रिय-शिवार्चन (१०० मंत्रों द्वारा) लघुरुद्राभिषेक)

२. सम्पूर्ण रुद्राष्टाध्यायी द्वारा (पूर्ण रुद्राभिषेक)

१. शतरुद्रिय-शिवार्चन पंचम अध्याय के सभी ६६ मन्त्र पुनः पंचम अध्याय

के १६ मन्त्र, छठे अध्याय के 'एष ते'० तथा 'अवरुद्र'० दो मन्त्र, पुनःपंचम अध्याय के 'नमस्ते'०, 'या ते'०-२ मंत्र पुनःशुक्ल यजुर्वेद संहिता के सत्रहवें अध्याय 'न तम विद कार्य'० 'विश्वकर्मा'० मंत्र संख्या-३१, ३२। २-मन्त्र रुद्राष्टाध्यायी के पंचम अध्याय के ५१ से ५४ मंत्र तथा छठे अध्याय के सभी ८ मंत्र इसे शतरुद्र कहते हैं । अन्त में शान्त्यध्याय 'ऋचं वाचं'०, स्वस्तिप्रार्थना-मन्त्र दशम अध्याय अवश्य करें ।

सम्पूर्ण रुद्राभिषेक

इसमें अष्टम अध्याय (चमक) क्रमशः ४, ४, ४, ३, ३, ३, २, १, १, २, २, मंत्रों के १११ भाग (क्रमशः ४, ८, १२, १५, १८, २१, २३, २४, २५, २७, २९वें मन्त्रों) के पाठ के बाद पुनः एक बार पूरे पांचवें अध्याय (नमक) के साथ ११ बार अतिरिक्त पाठ करने से रुद्र पाठ होता है । ११ रुद्रों से लघु रुद्र, ११ लघु रुद्र से महारुद्र ११ महारुद्रों से अतिरुद्र पाठ होता है ।

३. भगवान शंकर के अभिषेक के लिए विविध द्रव्यों का प्रयोग होता है, जल से वर्षा, ईख रस से लक्ष्मी, मधु एवं घी से धन, तीर्थ जल से मोक्ष, दुग्ध से पुत्र प्राप्ति, सरसों के तेल से शत्रुनाश आदि बताया गया है। रुद्राभिषेक के उपरान्त रुद्रयाग हवन भी रुद्रमंत्रों से किया जाता है। रुद्राभिषेक यदि मंदिर में नहीं कराया जा रहा है तो शिवलिंग सहित शिव परिवार की स्थापना विशेष मृत्तिका से भी करनी होगी एवं विसर्जन करना होता है ।

शिवजी के ऊपर गवय (नीलगाय) के सींग से अभिषेक करने का विशेष महत्त्व बतलाया गया है- गवय के सींग से शिव का अभिषेक, शङ्कर के जल से केशव का अभिषेक, ताम्र के पात्र से गणेश का अभिषेक और सुवर्ण के पात्र से जगदम्बा का अभिषेक प्रशस्त कहा गया है ।

शिव गवय श्रृङ्गेण केशवं शङ्खवारिणा ।
विघ्नेश ताम्रपात्रेण स्वर्णेन जगदम्बिका ।।

विशेष

रुद्री पाठ से पूर्व संकल्प, अंगन्यास, शिवपंचामृत से स्नान कराना आवश्यक है। रुद्री के एक पाठ से बालग्रहों की शान्ति, पांच पाठ से ग्रह शान्ति नौ पाठ से सर्वविध शान्ति, ग्यारह पाठ से राजा का वशीकरण और विविध विभूतियों की प्राप्ति होती है । इसी प्रकार ३ रुद्र, महारुद्र अतिरुद्र का विशेष फल है ।

रुद्राभिषेक विधि

सन्ध्योपासनादि नित्य कर्म से निवृत्त हो, पवित्र स्थान कर पूजन सामग्री रख पवित्र आसन पर बैठे । प्राणायाम, पवित्रीकरण, पृथ्वीपूजन कर प्रायश्चित संकल्प लें ।

देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् (अमुक-वर्माऽहम् अमुकगुप्तोऽहम्) करिष्यमाणरुद्राभिषेककर्मणि अधिकारप्राप्त्यर्थं कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-चतुर्विधपापशमनार्थं शरीरशुद्ध्यर्थं च गोनिष्क्रयीभूतं द्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ।

तण्डुलों से परिपूर्ण ताम्र के पात्र में कुंकुम से अष्टदल पद्म का निर्माण कर उसके ऊपर गोमयमयी गौरी और फलमय गणेश को स्थापित करें । अपने हाथ में अक्षत एवं पुष्प लेकर गणेश जी का ध्यान कर '**ॐ आनो भद्रा**'० इत्यादि मङ्गल मन्त्रों को पढ़ें । अनन्तर हाथ में जल और अक्षत लेकर संकल्प करें ।

संकल्प

'ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवारहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गत अमुकक्षेत्रे

विक्रमशके बौद्धावतारे षष्ठ्यब्दानां मध्ये अमुकसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषण-विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकशर्मा (अमुकवर्मा, अमुकगुप्तः) सपत्नीकोऽहं ममाऽऽत्मनः कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-चतुर्विधपापक्षयपूर्वकं आध्यात्मिक-आधिदैविक- आधिभौतिक-त्रिविधतापनिवृत्त्यर्थम्, आयुरारोग्यै-श्वर्यादि-वृद्ध्यर्थम्, श्रुति-स्मृति-पुराणोक्तफलप्राप्तिपूर्वकं च धर्मार्थकाममोक्ष-चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वारा श्रीसाम्बसदाशिव-प्रीतये नार्मदशिवलिङ्गोपरि (अमुकलिङ्गोपरि) यथोपचारैः शिवपूजनपूर्वकं दुग्धधारया जलधारया वा एकादशब्राह्मण द्वारा (अमुकसंख्याकंब्राह्मणद्वारा) सकृद्रुद्रावर्तनेन रुद्रैकादशिन्या वा महारुद्रेण अभिषेकाख्यं कर्म करिष्ये ।(तदङ्गत्वेन नन्दीश्वरादि-पूजनं च करिष्ये) । तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं च करिष्ये ।

अथ रुद्राष्टाध्यायी-रुद्राभिषेकः

षडंगन्यासाः

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु। विश्वे देवासऽइह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ।। (हृदयाय नमः)।। ॐ अबोध्यग्निःसमिधा जनानां प्रति धेनुमिवायतीमुषासम्। यह्वा इव प्र वयामुज्जिहानाः प्र भावनः सिस्रते नाकमच्छ ।।(शिरसे स्वाहा) ॐ मूर्धानं दिवोऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृतऽआ जातमग्निम् । कविः ँ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त

देवाः ।। (शिखायै वषट्) ॐ मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजाऽमृतेनानुवस्ताम् । उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वाऽनु देवा मदन्तु ।। (कवचाय हुम्) ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् । सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देवऽएकः ।।(नेत्रत्रयाय वौषट्) ॐ मान स्तोके० (अस्त्राय फट्) 'ॐ नमः शिवाय' इति मंत्रेण न्यासः । शिवं ध्यात्वा अभिषेकमारभेत् ।।

प्रथमोऽध्यायः

ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनान्त्वां निधिपति ँ हवामहे वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ।। गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्या सह । बृहत्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्यन्तु त्वा ।। २।। द्विपदा याश्चतुष्पदास्त्रिपदा याश्च षट्पदाः । विच्छन्दा याश्च सच्छन्दाः सूचीभिः शम्यन्तु त्वा ।। ३।। सहस्तोमाः सहच्छन्दसऽ आवृतः सहप्रमाऽऋषयः सप्त दैव्याः । पूर्वेषां पन्थामनुदृश्य धीराऽअन्वालेभिरे रथ्यो न रश्मीन् ।।४।।

शिव संकल्पसूक्त

ॐ यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति । दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।। १।। येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः । यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ।। २।। यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योति-रन्तरमृतं प्रजासु । यस्मान्नऽऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ।। ३।। येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।। ४।। यस्मिन्नृचः साम यजू ँ षि यस्मिन्

प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिंश्चित्त ँ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ ५॥ सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेभीशुभिर्वाजिनऽइव । हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ ६॥

(पुरुषसूक्त तथा उत्तरनारायणसूक्त - द्वितीयोऽध्यायः)

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमि ँ सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥१॥
पुरुष ऽ एवेद ँ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥२॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥३॥
त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥४॥
ततो विराडजायत विराजोऽअधि पूरुषः ।
स जातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥५॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥६॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऽ ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥७॥
तस्मादश्वाऽअजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥८॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवाऽअयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥९॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादाऽउच्येते ॥१०॥

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ।
उरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽअजायत ।।११।।
चन्द्रमा मानसो जातश्चक्षोः सूर्यो ऽ अजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ।।१२।।
नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन् ।।१३।।
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म ऽ इध्मः शरद्धविः ।।१४।।
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽअबध्नन् पुरुषं पशुम् ।।१५।।
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्रपूर्वे साध्याःसन्तिदेवाः ।।१६।।

उत्तरनारायणसूक्तः

ॐ अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्तताग्रे ।
तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे ।।१७।।
वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ।।१८।।
प्रजापतिश्चरति गर्भेऽअन्तरजायमानो बहुधा वि जायते ।
तस्य योनिं परि पश्यन्ति धीरास्तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा ।।१९।।
यो देवेभ्यऽआतपति यो देवानां पुरोहितः ।
पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये ।।२०।।
रुचं ब्राह्म्यं जनयन्तो देवाअग्रे तदब्रुवन् ।
यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवाऽअसन् वशे ।।२१।।
श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ।
इष्णन्निषाणामुं मऽइषाण सर्वलोकं मऽइषाण ।।२२।।

(अप्रतिरथसूक्त - तृतीयोऽध्यायः)

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ।
संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शत ँ सेना अजयत् साकमिन्द्रः ।।१।।
संक्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना ।
तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्वं युधो नरऽइषुहस्तेन वृष्णा ।।२।।
सऽइषुहस्तैः सनिषङ्गिभिर्वशी स ँ स्त्रष्टा स युध इन्द्रो गणेन।
स ँ सृष्टजित्सोमपा बाहुशर्ध्युग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता ।।३।।
बृहस्पते परि दीया रथेन रक्षोहाऽमित्रांर अपबाधमानः ।
प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम् ।।४।।
बलविज्ञाय स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी सहमानऽउग्रः ।
अभिवीरोऽअभिसत्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित् ।।५।।
गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुं जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा ।
इम ँ सजाताऽअनु वीरयध्वमिन्द्र ँ सखायो अनु स ँ रभध्वम् ।।६।।
अभि गोत्राणि सहसा गाहमानोऽदयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः ।
दुश्च्यवनः पृतनाषाड्युध्योऽस्माक ँ सेनाऽअवतु प्र युत्सु ।।७।।
इन्द्रऽआसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः ।
देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ।।८।।
इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुता ँ शर्धऽउग्रम् ।
महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात् ।।९।।
उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत्सत्वनां मामकानां मना ँसि ।
उद्वृत्रहन् वाजिनां वाजिनान्युद्रथानां जयतां यन्तु घोषाः ।।१०।।
अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं याऽइषवस्ता जयन्तु ।
अस्माकं वीराऽउत्तरे भवन्त्वस्माँरऽउदेवाऽअवता हवेषु ।।११।।
अमीषां चित्तं प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्वे परेहि ।
अभि प्रेहि निर्दह हृत्सु शोकैरन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम् ।।१२।।

अवसृष्टा परा पत शरव्ये ब्रह्मस ँ शिते ।
गच्छामित्रान् प्र पद्यस्व माऽमीषां कं चनोच्छिषः ।।१३।।
प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु ।
उग्रा वः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथाऽसथ ।।१४।।
असौ या सेना मरुतः परेषामभ्यैति नऽओजसा स्पर्धमाना ।
तां गूहत तमसाऽपव्रतेन यथाऽमी अन्योऽअन्यं न जानन् ।।१५।।
यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखाऽइव ।
तन्न ऽइन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु ।।१६।।
मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजाऽमृतेनानुवस्ताम् ।
उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वाऽनु देवा मदन्तु ।।१७।।

(मैत्रसूक्त - चतुर्थोध्यायः)

विभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम् ।
वातजूतो योऽअभिरक्षति त्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा वि राजति ।।१ ।।
उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् ।।२।।
येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ२ऽअनु त्वं वरुण पश्यसि ।।३ ।।
दैव्यावध्वर्यूऽआगत ँ रथेन सूर्यत्वचा मध्वा यज्ञ ँ समञ्जाथे ।
तं प्रत्नथा ऽयं वेनश्चित्रं देवानाम् ।।४।।
तं प्रत्नथा पूर्वथा विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिं बर्हिषद ँ स्वर्विदम् ।
प्रतीचीनं वृजनं दोहसे धुनिमाशुं जयन्तमनु यासु वर्धसे ।।५।।
अयं वेनश्चोदयत् पृश्निगर्भा ज्योतिर्जरायू रजसो विमाने ।
इममपा ँ संगमे सूर्यस्य शिशुन्न विप्रा मतिभीरिहन्ति ।।६।।
चित्रंदेवानामुदगादनीकंचक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ।
आ प्रा द्यावापृथिवीअन्तरिक्ष ँ सूर्यऽआत्मा जगतस्तस्थुषश्च ।।७।।
आनऽइडाभिर्विदथे सुशस्ति विश्वानरः सवितादेवऽएतु ।
अपि यथा युवानो मत्सथानो विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा ।।८।।

यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य सर्वं तदिन्द्र ते वशे ।।९।।
तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य विश्वमा भासि रोचनम् ।।१०।।
तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततं ६ सं जभार ।
यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै ।।११।।
तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे ।
अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः सं भरन्ति ।।१२।।
बण्महाँ२ असि सूर्य बडादित्य महाँ२ ऽअसि ।
महस्ते सतो महिमा पनस्यतेऽद्धा देव महाँ२असि ।।१३।।
बट् सूर्य श्रवसा महाँ२ ऽअसि सत्रा देव महाँ२ ऽअसि ।
मह्ना देवानामसुर्यः पुरोहितो विभु ज्योतिरदाभ्यम् ।।१४।।
श्रायन्तऽइव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ।
वसूनि जाते जनमानऽओजसा प्रति भागं न दीधिम ।।१५।।
अद्या देवा ऽउदिता सूर्यस्य निर ६ हसः पिपृता निरवद्यात् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवीऽउत द्यौः ।।१६।।
आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ।।१७।।

(रुद्रसूक्त - पंचमोऽध्यायः)

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।। १ ।। या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि।। २।। यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे । शिवां गिरित्रतां कुरु मा हि ६ सीः पुरुषं जगत्।। ३।। शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि । यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म ६ सुमना असत्।। ४।। अध्यवोच-दधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् । अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव।। ५।। असौ यस्ताम्रोऽअरुणऽउत बभ्रुः सुमङ्गलः । ये चैन ६ रुद्राऽअभितो दिक्षु श्रिताः

सहस्रशोऽवैषाꣳहेडऽईमहे ।। ६ ।। असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः । उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः ।।७।। नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो येऽअस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः।। ८।। प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्र्योर्ज्याम् । याश्च ते हस्तऽइषवः परा ता भगवो वप।। ९।। विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्ल्यो बाणवाँ२ उत। अनेशन्नस्य याऽइषव आभुरस्य निषङ्गधिः।। १०।। या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः । तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिब्भुज।। ११।। परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः । अथो यऽइषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेहि तम् ।।१२।। अवतत्य धनुष्ट्वꣳसहस्राक्ष शतेषुधे । निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव ।।१३।। नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने ।।१४।। मा नो महान्तमुत मा नोऽअर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा नऽउक्षितम् । मा नो वधीः पितरम्मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्न्वो रुद्र रीरिषः ।। १५।। मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषुमानोऽअश्वेषु रीरिषः । मानो वीरान्नुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ।। १६।। नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशां च पतये नमो नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनां पतये नमो नमः शष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनां पतये नमो नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानां पतये नमः ।। १७।। नमो बभ्लुशाय व्याधिने ऽन्नानां पतये नमो नमो भवस्य हेत्यै जगतां पतये नमो नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणां पतये नमो नमः सूतायाहन्त्यै वनानां पतये नमः ।। १८।। नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणां पतये नमो नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषधीनां पतये नमो नमो मंत्रिणे वाणिजाय कक्षाणां पतये नमो नम उच्चैर्घोषायाक्रन्दयते पत्तीनां पतये नमः ।। १९।। नमः कृत्स्नायतया धावते सत्वनां पतये नमो

नमः सहमानाय निव्याधिनऽआव्याधिनीनां पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानां पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्यानां पतये नमः।। २०।। नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो नमो निषङ्गिण ऽ इषुधिमते तस्कराणां पतये नमो नमः सृकायिभ्यो जिघा ꣳ सद्भ्यो मुष्णतां पतये नमो नमोऽसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानां पतये नमः ।। २१।। नम उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानां पतये नमो नमऽइषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च वो नमो नमऽआतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमऽआयच्छद्भ्यो ऽस्यद्भ्यश्च वो नमः ।। २२।। नमो विसृजद्भ्यो विध्यद्भ्यश्च वो नमो नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो नमः शयानेभ्यऽ-आसीनेभ्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः ।।२३।। नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमो नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमो नम ऽ आव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नम उगणाभ्यस्तृ ꣳहतीभ्यश्च वो नमः।। २४।। नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ।।२५।।नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्यो अरथेभ्यश्च वो नमो नमः क्षतृभ्यः संग्रहीतृभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्योऽअर्भकेभ्यश्च वो नमः ।। २६ ॥ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः ।। २७।। नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय चपशुपतये चनमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च।।२८।। नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते

च ।। २९ ।। नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्धाय च सवृधे नमोग्ग्र्याय प्रथमाय च ।। ३० ।। नमऽआशवे चाजिराय च नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च नम ऊर्म्याय चा-वस्वन्याय च नमो नादे याय च द्वीप्याय च ।। ३१ ।। नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नो जघन्याय च बुध्न्याय च ।। ३२ ।। नमः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नम उर्वर्याय च खल्याय च ।। ३३ ।। नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च नमऽआशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभेदिने च ।। ३४ ।। नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च ।। ३५ ।। नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च ।। ३६ ।। नमः स्त्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च ।। ३७ ।। नमः कूप्याय चावट्याय च नमो वीघ्र्याय चातप्याय च नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च ।। ३८ ।। नमो वात्याय च रेष्माय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च ।। ३९ ।। नमः शङ्गवे च पशुपतये च नमऽउग्राय च भीमाय च नमोऽग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय ।। ४० ।। नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ।। ४१ ।। नमः पार्याय चा वार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय चफेन्याय च ।। ४२ ।।

नमः सिकत्त्याय च प्रवाह्याय च नमः कि ँ शिलाय च क्षयणाय च नमःकपर्दिने च पुलस्तये च नमऽइरिण्याय च प्रपथ्याय च।। ४३।। नमो व्रज्याय च गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च नमोहृदय्याय च निवेष्प्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च।। ४४।। नमः शुष्क्याय च हरित्त्याय च नमः पाꣳसव्याय च रजस्याय च नमो लोप्याय चोलप्याय च नम ऊर्व्याय च सूर्व्याय च ।। ४५।। नमः पर्णाय च पर्णशदाय च नमऽउद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च नमऽआखिदते च प्रखिदते च नमऽइषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो नमो वः किरिकेभ्यो देवाना ँ हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्योनमआनिर्हतेभ्यः।।४६।। द्रापेऽअन्धसस्पत दरिद्र नीललोहित । आसां प्रजानामेषां पशूनां मा भेर्मारोङ्मोच नः किंचनाममत्।। ४७।। इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्र भरामहेमतीः । यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम् ।। ४८।। या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी । शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे ।।४९।। परि नो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परित्वेषयस्य दुर्मतिरघायोः । अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड ।।५०।। मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव । परमे वृक्ष आयुधं निधाय कृत्तिं वसानऽआ चर पिनाकं बिभ्रदा गहि ।। ५१।। विकिरिद्र विलोहित नमस्तेऽअस्तु भगवः । यास्ते सहस्त्र ँ हेतयोऽन्यस्मन्नि वपन्तु ताः ।। ५२।। सहस्त्राणि सहस्त्रशो बाह्वोस्तव हेतयः । तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि ।। ५३।। असंख्याता सहस्त्राणि ये रुद्राऽअधि भूम्याम् । तेषाꣳसहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि-तन्मसि।।५४।। अस्मिन् महत्त्यर्णवे ऽन्तरिक्षे भवाऽअधि। तेषाꣳ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ।।५५।।नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः

दिव ॐ रुद्राऽउपश्रिताः । तेषा ँ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ।।५६।। नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वाऽअधःक्षमाचराः । तेषा ॐ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ।। ५७।। ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः । तेषा ॐ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ।। ५८।। ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः । तेषा ॐ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ।। ५९।। ये पथां पथिरक्षयऽ-ऐलबृदाऽआयुर्युधः । तेषा ॐ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ।। ६०।। ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः । तेषा ॐसहस्त्र-योजनेऽव धन्वानि तन्मसि ।। ६१ ।। येऽन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् । तेषा ॐसहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ।। ६२ ।। य एतावन्तश्च भूयाॐ सश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे । तेषा ॐ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ।। ६३ ।। नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्द-शोदीचीर्दशोर्ध्वाः । तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तुते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ।। ६४।। नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वात इषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः । तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तुते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्ट्रि तमेषां जम्भे दध्मः ।।६५।। नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्न मिषवः तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः । तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्ट्रि तमेषां जम्भे दध्मः ।।६६ ।।

(षष्ठोऽध्यायः - महच्छिरः)

ॐ वय ँ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ।। १ ।। एष ते रुद्र भागः सह स्वस्त्राम्बिकया तं जुषस्व स्वाहै ष ते रुद्र भागऽआखुस्ते पशुः ।। २ ।। अव रुद्रमदीमह्यव देवं त्र्यम्बकम्। यथा नो वस्यसस्करद्यथा नः श्रेयसस्करद्यथा नो व्यवसाययात्

।।३।। भेषजमसि भेषजं गवेऽश्वाय पुरुषाय भेषजम् ।सुखं मेषाय मेष्यै ॥४।।त्र्यंम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् । त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पति वेदनम् ।उर्वारुकमिवबन्धनादितो मुक्षीय मामुतः ।।५।। एतत्ते रुद्रावसं तेन परो मूजवतोऽतीहि । अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासा अहि ६ सन्नः शिवोऽतीहि ।।६।। त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् ।यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्।।७।। शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽअस्तु मा मा हि ६ सीः । नि वर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ।।८।। न तं विदाथ यऽइमा जजानान्यद्युष्माकमन्तरं बभूव। नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृप उक्थशासश्चरन्ति।।९।। विश्वकर्मा ह्यजनिष्ट देवऽआदिगन्धर्वो अभवद् द्वितीयः ।तृतीयः पिता जनितौषधीनामपां गर्भं व्यदधात् पुरुत्रा ।।१०।।

(सप्तमोऽध्यायः)

ॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च ।सासह्वाँश्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा ।।१।। अग्नि ६ हृदयेनाशनि ६ हृदयाग्रेण पशुपतिं कृत्स्न-हृदयेन भवं यक्ना ।शर्वं मतस्नाभ्यामीशानं मन्युना महादेवमन्तः पर्शव्येनोग्रं देवं वनिष्ठुना वसिष्ठहनुःशिङ्गीनि कोश्याभ्याम्।।२।। उग्रँल्लोहितेन मित्र ६ सौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान् प्रमुदा । भवस्य कण्ठ्य ६ रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् ।।३।।लोमभ्यः स्वाहा लोमभ्यः स्वाहा त्वचे स्वाहा त्वचे स्वाहा लोहिताय स्वाहा लोहिताय स्वाहा मेदोभ्यः स्वाहा मेदोभ्यः स्वाहा ।मा ७३ सेभ्यः स्वाहा मा ७३ सेभ्यः स्वाहा स्नावभ्यः स्वाहा स्नावभ्यः स्वाहा ऽस्थभ्यः स्वाहा ऽस्थभ्यः स्वाहा मज्जभ्यः स्वाहा मज्जभ्यः स्वाहा रेतसे स्वाहा पायवे स्वाहा ।।४।। आयासाय स्वाहा प्रायासाय स्वाहा संयासाय स्वाहा

वियासाय स्वाहोद्यासाय स्वाहा ।। शुचे स्वाहा शोचते स्वाहा शोचमानाय स्वाहा शोकाय स्वाहा ।।५।। तपसे स्वाहा तप्यते स्वाहा तप्यमानाय स्वाहा तप्ताय स्वाहा घर्माय स्वाहा। निष्कृत्यै स्वाहा प्रायश्चित्यै स्वाहा भेषजाय स्वाहा ।।६।। यमाय स्वाहा ऽन्तकाय स्वाहा मृत्यवे स्वाहा । ब्रह्मणे स्वाहा ब्रह्महत्यायै स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्य: स्वाहा द्यावापृथिवीभ्या ᳫस्वाहा ।।७।।

(चमकानुवाक: - अष्टमोऽध्याय:)

ॐ वाजश्च मे प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे श्रवश्च मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे स्वश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।। १ ।। प्राणश्च मेऽपानश्च मे व्यानश्च मेऽसुश्च मे चित्तं च म ऽ आधीतं च मे वाक् च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रंच मे दक्षश्च मे बलं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।। २ ।। ओजश्च मे सहश्च म ऽ आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे परू ᳫ षि च मे शरीराणि च म ऽ आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।। ३।। ज्यैष्ठ्यं च मऽआधिपत्यं च मे मन्युश्च मे भामश्चमेऽमश्च मेम्भश्च मे जेमा च मे महिमा च मे वरिमा च मे प्रथिमा च मे वर्षिमा च मे द्राघिमा च मे वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।।४।।(च-१) सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनं च मे विश्वं च मे महश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे जनिष्यमाणं च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।।५।। ऋतं च मेऽमृतं च मे ऽयक्ष्मं च मे ऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च मे ऽभयं च मे सुखं च मे शयनं च मे सूषाश्च मे सुदिनं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।।६।। यन्ता च मे धर्ता च मे क्षेमश्च मे धृतिश्च मे विश्वं च मे महश्च मे संविच्च मे ज्ञात्रं च मे सूश्च मे प्रसूश्च मे सीरं च मे लयश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।।७।। शं

च मे मयश्च मे प्रियं च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे सौमनश्च मे भगश्चमे द्रविणं च मे भद्रं च मे श्रेयश्च मे वसीयश्च मे यशश्च मे यज्ञेन कल्पताम् ।।८।।(च-२)ऊर्क् चमे सूनृता चमे पयश्च मे रसश्च मे घृतं च मे मधु च मे सग्धिश्च मे सपीतिश्च मे कृषिश्च मे वृष्टिश्च मे जैत्रं च म औद्भिद्यं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।९।। रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टं च मे पुष्टिश्च मे विभु च मे प्रभु चं मे पूर्णं च मे पूर्णतरं च मे कुयवं च मेऽक्षितं च मेऽन्नं च मेऽक्षुच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।।१०।। वित्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भविष्यच्च मे सुगं च मे सुपथ्यं च म ऋद्धं च म ऋद्धिश्च मे क्लृप्तं च मे क्लृप्तिश्च मे मतिश्च मे सुमतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।११।।व्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।। १२ ।।(च-३) अश्मा च मे मृत्तिका च मे गिरयश्च मे पर्वताश्च मे सिकताश्च मे वनस्पतयश्च मे हिरण्यं च मेऽयश्च मे श्यामं च मे लोहं च मे सीसं च मे त्रपु च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।।१३।। अग्निश्च म आपश्च मे वीरुधश्च म ओषधयश्च मे कृष्टपच्याश्च मेऽकृष्टपच्याश्च मे ग्राम्याश्च मे पशव आरण्याश्च मे वित्तं च मे वित्तिश्च मे भूतं च मे भूतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।। १४।। वसु च मे वसतिश्च मे कर्म च मे शक्तिश्च मे ऽर्थश्च म एमश्च म इत्या च मे गतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।। १५ ।।(च-४) अग्निश्च म इन्द्रश्च मे सोमश्च म इन्द्रश्च मे सविता च म इन्द्रश्च मे सरस्वती च म इन्द्रश्च मे पूषा च म इन्द्रश्च मे बृहस्पतिश्च म इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।। १६ ।। मित्रश्च च इन्द्रश्च मे वरुणश्च म इन्द्रश्च मे धाता च म इन्द्रश्च मे त्वष्टा च म इन्द्रश्च मे मरुतश्च मे इन्द्रश्च मे विश्वे च मे देवा इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।। १७।। पृथिवी च म

इन्द्रश्च मेऽन्तरिक्षं च म इन्द्रश्च मे द्यौश्च म इन्द्रश्च मे समाश्च म इन्द्रश्च मे नक्षत्राणि च म इन्द्रश्च मे दिशश्च म इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।। १८ ।।(च-५) अ ६ शुश्च मे रश्मिश्च मेऽदाभ्यश्च मेऽधि-पतिश्च मऽउपा८शुश्च मेऽन्तर्यामश्च मऽऐन्द्रवायवश्चे मे मैत्रावरुणश्च मऽआश्विनश्च मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।। १९ ।। आग्रयणश्च मे वैश्वदेवश्च मे ध्रुवश्च मे वैश्वानरश्च मऽऐन्द्राग्निश्च मे महावैश्वदेवश्च मे मरुत्वतीयाश्च मे निष्केवल्यश्च मे सावित्रश्च मे सारस्वतश्च मे पात्नीवतश्च मे हारियोजनश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।।२०।। स्रुचश्च मे चमसाश्च मे वायव्यानि च मे द्रोणकलशश्च मे ग्रावाणश्च मेऽधिषवणे च मे पूतभृच्च मऽआधवनीयश्च मे वेदिश्च मे बर्हिश्च मेऽवभृथश्च मे स्वगाकारश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।। २१ ।।(च-६) अग्निश्च मे घर्मश्चमेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मेऽङ्गुलयः शक्वरयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।।२२।। व्रतं च मऽऋतवश्च मे तपश्च मे संवस्तरश्च मेऽहोरात्रेऽऊर्वष्ठीवे बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।। २३ ।।(च-७) एका च मे तिस्त्रश्च मे तिस्त्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च मऽएकादश च मऽएकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च मऽएकवि ६ शतिश्च मऽएकवि ६ शतिश्च मे त्रयो वि ६ शतिश्च मे त्रयोवि ६ शतिश्च मे पञ्चवि ६ शतिश्च मे पञ्चवि ६ शतिश्च मे सप्तवि ६ शतिश्च मे सप्तवि ६ शतिश्च मे नववि ६ शतिश्च मे नववि ६ शतिश्च म एकत्रि ६ शच्च मऽएकत्रि ६ शच्च मे त्रयस्त्रि ६ शच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।। २४ ।।(च-८) चतस्त्रश्च

मेऽष्टौ च मेऽष्टौ च मे द्वादश च मे द्वादश च मे षोडश च मे षोडश च मे वि ꣳ शतिश्च मे वि ꣳ शतिश्च मे चतुर्वि ꣳ शतिश्च मे चर्तुवि ꣳ शतिश्च मेऽष्टावि ꣳ शतिश्च मेऽष्टावि ꣳ शतिश्च मे द्वात्रि ꣳ शच्च मे द्वात्रि ꣳ शच्च मे षट्त्रि ꣳ शच्च मे षट्त्रि ꣳ शच्च मे चत्वारि ꣳ शच्च मे चत्वारि ꣳ शच्च मे चतुश्चत्वारि ꣳ शच्च मे चतुश्चत्वारि ꣳ शच्च मेऽष्टाचत्वारि ꣳ शच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।। २५ ।। (च-९) त्र्यविश्च मे त्र्यवी च मे दित्यवाट् च मे दित्यौही च मे पञ्चाविश्च मे पञ्चावी च मे त्रिवत्सश्च मे त्रिवत्सा च मे तुर्यवाट् च मे तुर्यौही च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।। २६ ।। पष्ठवाट् च मे पष्ठौही च मऽउक्षा च मे वशा च मऽऋषभश्च मे वेहच्च मेऽनड्वाँश्च मे धेनुश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।। २७ ।। (च-१०) वाजाय स्वाहा प्रसवाय स्वाहाऽपिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा वसवे स्वाहाऽहर्पतये स्वाहाऽह्ने मुग्धाय स्वाहा मुग्धाय वैन ꣳ शिनाय स्वाहा विन ꣳ शिनऽआन्त्यायनाय स्वाहाऽऽन्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहाऽधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा । इयं ते राण्मित्राय यन्ताऽसि यमनऽऊर्जे त्वा वृष्ट्यै त्वा प्रजानां त्वाऽऽधिपत्याय ।। २८ ।। आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पता ꣳ श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतां मनो यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पतां ब्रह्मा यज्ञेन कल्पतां ज्योतिर्यज्ञेन कल्पता ꣳ स्वर्यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम् । स्तोमश्च यजुश्च ऋक् च साम च बृहच्च रथन्तरं च । स्वर्देवाऽअगन्मामृताऽअभूम प्रजापतेः प्रजाऽअभूम वेट् स्वाहा ।। २९ ।। (च-११)

(शान्त्यध्यायः)

ॐ ऋचं वाचं प्रपद्ये मनो यजुः प्रपद्ये साम प्राणं प्रपद्ये चक्षुः श्रोत्रं

प्रपद्ये । वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ ।। १ ।। यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृण्णं बृहस्पतिर्मे तद्दधातु । शं नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः ।। २ ।। भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।। ३ ।। कया नश्चित्रऽआ भुवदूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता ।। ४ ।। कस्त्वा सत्यो मदाना म ६ हिष्ठो मत्सदन्धसः । दृढा चिदारुजे वसु ।। ५ ।। अभी षु णः सखीनामविताः जरितॄणाम् । शतं भवास्यूतिभिः ।।६।। कया त्वं नऽऊत्याभि प्र मन्दसे वृषन् । कया स्तोतृभ्य आऽभर ।। ७ ।। इन्द्रो विश्वस्य राजति । शं नोऽअस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ।। ८ ।। शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा । शं नऽइन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः ।। ९ ।। शं नो वातः पवता ७ शन्नस्तपतु सूर्यः । शं नः कनिक्रदेवः पर्जन्यो अभि वर्षतु ।। १० ।। अहानि शं भवन्तु नः श ६ रात्रीः प्रतिधीयताम् । शं नऽइन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं नऽइन्द्रावरुणा रातहव्या । शं नऽइन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः ।। ११ ।। शं नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये । शं योरभि स्त्रवन्तु नः ।। १२ ।। स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः ।। १३ ।। आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता नऽऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे ।। १४ ।। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः ।। १५ ।। तस्माऽअरंङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ।। १६ ।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्षः ६ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ६ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।। १७ ।। दृते दृ ६ ह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् । मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि

भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ।। १८ ।। दृते दृ ६ ह मा । ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासं ज्योक्ते सन्द्रशि जीव्यासम् ।। १९ ।। नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे । अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्य ६ शिवो भव ।। २० ।। नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्लवे । नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे ।। २१ ।। यतो-यतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरु । शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ।। २२ ।। सुमित्रिया नऽआपऽओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ।। २३ ।। तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ६ शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ।। २४ ।।

(स्वस्ति प्रार्थनादि मंत्राः)

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो० ॐ पयः पृथिव्यां० ॐ विष्णोरराट० । अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवता ऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ।। ॐ सद्योजातंप्रपद्यामिस-द्योजातायवैनमोनमः ।। भवेभवेनातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ।। वामदेवायनमो ज्येष्ठायनमः श्रेष्ठायनमो रुद्रायनमः । कालायनमः कलविकरणायनमो बलविकरणायनमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ।। अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ।। सर्व्वेभ्यः सर्व्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः ।। तत्पुरुषायविद्महे महादेवायधीमहि ।। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।। ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् ।। ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेऽअस्तु सदाशिवोम् ।। ॐ शिवोनामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽअस्तु मा मा हि ६ सीः ।।

निवर्त्तयाम्यायुषेन्नाद्द्यायप्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ।। ॐ विश्वानि देव० ॐ द्यौः शान्ति० ॐ सर्वेषां वा एष वेदानाꣳरसो यत्साम सर्वेषामेवैनमेतद्वेदाना ꣳरसेनाभि-षिंचति।। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ।।

अङ्गपूजा

गन्ध, अक्षत और पुष्प आदि से भगवान् शिव की इस प्रकार अङ्गपूजा करें

ॐ ईशानाय नमः, पादौ पूजयामि ।।१।।
ॐ शङ्कराय नमः, जङ्घौ पूजयामि ।।२।।
ॐ शूलपाणये नमः, गुल्फौ पूजयामि ।।३।।
ॐ शम्भवे नमः, कटीं पूजयामि ।।४।।
ॐ स्वयम्भुवे नमः, गुह्यं पूजयामि ।।५।।
ॐ महादेवाय नमः, नाभिं पूजयामि ।।६।।
ॐ विश्वकर्त्रे नमः, उदरं पूजयामि ।।७।।
ॐ सर्वतोमुखाय नमः, पार्श्वं पूजयामि ।।८।।
ॐ स्थाणवे नमः, स्तनौ पूजयामि ।।९।।
ॐ नीलकण्ठाय नमः, कण्ठं पूजयामि ।।१०।।
ॐ शिवात्मने नमः, मुखं पूजयामि ।।११।।
ॐ त्रिनेत्राय नमः, नेत्रे पूजयामि ।।१२।।
ॐ नागभूषणाय नमः, शिरः पूजयामि ।।१३।।
ॐ देवाधिदेवाय नमः, सर्वाङ्गं पूजयामि ।।१४।।

आवरणपूजा

ॐ अघोराय नमः ।। १ ।। ॐ पशुपतये नमः ।। २ ।। ॐ शिवाय नमः ।। ३ ।। ॐ विरूपाय नमः ।।४।। ॐ विश्वरूपाय नमः ।।५।। ॐ त्र्यम्बकाय नमः ।। ६ ।। ॐ भैरवाय नमः ।। ७ ।। ॐ कपर्दिने नमः ।।८ ।। ॐ शूलपाणये नमः ।।९।। ॐ ईशानाय नमः ।।१०।।

ॐ महेशाय नमः ।। ११ ।।

रुद्राभिषेक

शिवपूजन के बाद ब्राह्मण वरण करें, ब्राह्मण गण ॐ मनो जूतिः० से षड्गन्यास कर रुद्राभिषेक करें । अभिषेक कर उत्तरपूजन करें ।

उत्तरपूजन

षोडशोपचार पूजन करके संकल्प पूर्वक ब्राह्मणों को अभिषेक की दक्षिणा तथा ब्राह्मण भोजन आदि करायें । भगवान शिव से 'आवाहनं न जनामि' से क्षमा प्रार्थना करें ।

यजमान का अभिषेक

ब्राह्मण गण द्वारा '**ॐ द्यौः शान्तिः**'० आदि मन्त्रों से यजमान का अभिषेक करें । इसके बाद देव-विसर्जन, रक्षाबन्धन तथा आचार्य द्वारा तिलक आशीर्वाद के बाद समाप्त किया जाय ।

ब्राह्मण प्रार्थना

ॐ ब्रह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय राजन्यं मरुद्भ्यो वैश्यं तपसे शूद्रं तमसे तस्करं नारकाय वीरहणं पाप्मने क्लीबमाक्रयाया अयोग्ठ कामाय पुँश्चलू मतिक्रुष्टाय मागधम् ।। ॐ देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिंभगाय।दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।। ॐ ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्यमृषिमार्षेय ६ सुधातुदक्षिणम्। अस्मद्राता देवत्रा गच्छत प्रदातारमा विशत।।

ॐ इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम् ।
मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमां तस्यै ते स्वाहा ।।

ॐ वाचस्पतिं विश्वकर्माणमूतये मनोजुवं वाजे अद्या हुवेम । स नो विश्वानि हवनानि जौषद्विश्वशम्भूरवसे साधुकर्मा ।। ॐ युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः ।

वि होत्रा दधे वयुनाविदेक इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः स्वाहा ।
ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
आ ददे नार्यसीदमह ँ रक्षसां ग्रीवा अपि कृन्तामि ।
बृहन्नसि बृहद्रवा बृहतीमिन्द्राय वाचं वद ।।

अग्निसूक्तम्

ॐ समास्त्वाग्नऽ ऋतवो वर्धयन्तु संवत्सराऽ ऋषयो यानि सत्या। संदिव्येन दीदिहि रोचनेन विश्वाऽआ भाहि प्रदिशश्चतस्रः ।। १ ।। सं चेध्यस्वाग्ने प्र च बोधयैनमुच्च तिष्ठ महते सौभगाय । मा च रिषदुपसत्ता तेऽअग्ने ब्रह्माणस्ते यशसः सन्तु मान्ये ।। २ ।। त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणाऽइमे शिवोऽअग्ने संवरणे भवा नः । सपत्नहा नोऽअभिमातिजिच्च स्वे गये जागृह्यप्रयुच्छन् ।। ३ ।। इहैवाग्नेऽअधि धारया रयिं मा त्वा नि क्रन्पूर्वचितो निकारिणः । क्षत्रमग्ने सुयममस्तु तुभ्यमुपसत्ता वर्धतां तेऽअनिष्टृतः ।। ४ ।। क्षत्रेणाग्ने स्वायुः स ँ रभस्व मित्रेणाग्ने मित्रधेये यतस्व । सजातानां मध्यमस्थाऽ एधि राजामग्ने विहव्यो दीदिहीह ।। ५ ।। अति निहोऽअति स्रिधोऽत्य-चित्तिमत्यरातिमग्ने । विश्वा ह्यग्ने दुरिता सहस्वाथास्मभ्य ँ सहवीराꣳरयिं दाः ।। ६ ।। अनधृष्यो जातवेदा अनिष्टृतो विराडग्ने क्षत्रभृद्दीदिहीह । विश्वाऽआशाः प्रमुञ्चन्मानुषीर्भियः शिवेभिरद्य परि पाहि नो वृधे ।। ७ ।। बृहस्पते सवितर्बोधयैन ँ स ँ शितं चित्सन्तराः सः ँ शिशाधि । वर्धयैनं महत्ते सौभगाय विश्व एनमनु मदन्तु देवाः ।। ८ ।। अमुत्रभूयादध यद्यमस्य बृहस्पतेऽ-अभिशस्तेरमुञ्चः । प्रत्यौहतामश्विना मृत्युमस्माद्देवानामग्ने भिषजा शचीभिः ।। ९ ।।

विष्णुसूक्तम्

ॐ विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्र वोचं यः पार्थिवानि विममे रजाꣳसि।

यो॑ऽअस्कभायदुत्तर ॅं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायो विष्णवे त्वा ।। १ ।। दिवो वा विष्ण उत वा पृथिव्या महो वा विष्णऽउरोरन्त-रिक्षात् । उभा हि हस्ता वसुना पृणस्वा प्र यच्छ दक्षिणादोत सव्याद्विष्णवे त्वा ।। २ ।। प्र तद्विष्णु स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः । यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ।। ३ ।। विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि । वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ।। ४ ।। इदं विष्णुर्वि-चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् । समूढस्य पा ॅं सुरे स्वाहा ।। ५ ।।

सर्पसूक्तम्

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।। १ ।। या इषवो यातुधानानां ये वा वनस्पती ॅं रनु । ये वावटेषु शेरते तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।। २ ।। ये वामी रोचने दिवो ये वा सूर्यस्य रश्मिषु । येषामप्सु सदस्कृतं तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।। ३ ।।

रुद्रहोमः (स्वाहाकार)

देशकालौ संकीर्त्य यजमानस्य (मम) संकल्पित रुद्र होमे एकषष्टि उत्तरशतधा मंत्रविभाग पक्षेण पथांशेन विहितं हवनं करिष्ये । षडंगन्यासान् कृत्वा होम् आरभेत ।

संकल्प

यज्जाग्रत इति षण्णां शिवसंकल्प ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः मनो देवता श्रीमहारुद्रपीतये होमे विनियोगः । ॐ यज्जाग्रतो० येन कर्माण्य० यत्प्रज्ञान० येनेदंभूतं० यस्मिन्नृच० सुषारथि...शिवसंकल्पमस्तु स्वाहा ।।

सहस्त्रशीर्षेति षोडशर्चस्य नारायण पुरुष ऋषिः आद्यानां अनुष्टु
छन्दः अन्त्यायाः त्रिष्टुप्छन्दः जगद्बीजं पुरुषोदेवता श्रीमहारुद्र
प्रीतये होमे विनियोगः ।

ॐ सहस्त्रशीर्षा० पुरुष एवे० एतावानस्य० त्रिपादूर्ध्व० ततो विरा०
तस्माद्यज्ञात्सर्व० तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं० ।। तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः
ऋचः० तस्मादश्वा० तँयज्ञं० यत्पुरुषं० ब्राह्मणोऽस्य० चन्द्रमा
मनसो० नाभ्याऽआसी० यत्पुरुषेण० सप्तास्यासन्० यज्ञेन....देवाः
स्वाहा ।

अद्भ्यः संभृत इति षण्णां नारायण पुरुष ऋषिः आद्यानां तिसृणां
त्रिष्टुप् द्वयोः अनुष्टुप् अन्त्यायाः त्रिष्टुप् आदित्यो देवता
श्रीमहारुद्रप्रीतये होमे विनियोगः । ॐ अद्भ्यः संभृतः० व्वेदाह०
प्रजापति० यो देवेभ्य० रुचं ब्राह्म्यं० श्रीश्चते....ईषाण स्वाहा ।।

आशुः शिशान इति द्वादशानां (सप्तदशानां) अप्रतिरथ ऋषिः
त्रिष्टुप् छन्दः इन्द्रो देवता श्रीमहारुद्रप्रीतये होमे विनियोगः । ॐ
आशुः शिशानो० संक्रन्द्रने० सऽइषुहस्तैः० बृहस्पते० बलविज्ञाय०
गोत्रभि० अभिगोत्राणि० इन्द्रऽआसा० इन्द्रस्यवृष्णो० उद्धर्षय०
अस्माकमिन्द्रः० अमीषाञ्चित....सचन्ताम् स्वाहा (अवसृष्टा०
प्रेताजयता० असौ या० यत्र बाणाः० मर्म्माणि....मदन्तु स्वाहा)

व्विभ्राडित्यस्य विभ्राट् सौर्यऋषिः जगती छन्दः सूर्योदेवता
उदुत्यमिति तिसृणां प्रस्कण्व ऋषिः गायत्री छन्दः सूर्यो देवता
तम्प्रत्नथेत्यस्य ब्रह्मस्वयं भूऋषिः जगती छन्दः विश्वेदेवा देवता
अयं वेन इत्यस्य ब्रह्मस्वयंभूऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता
चित्रमित्यस्य ब्रह्मस्वयंभूऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता आन
इत्यस्य अगस्त्य ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता यदद्येत्यस्य
श्रुतकक्षसुतंकक्षावृषी गायत्री छन्दः सूर्यो देवता तरणिरित्यस्य

प्रस्कण्व ऋषिः गायत्री छन्दः सूर्यो देवता तत्सूर्यस्येति द्वयोः कुत्सऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता बण्महानिति द्वयोः जमदग्निर्ऋषिः आद्यस्य बृहती छन्दः द्वितीयस्य सतो बृहती छन्दः सूर्यो देवता श्रायन्त इवेत्यस्य नृमेध ऋषिः बृहती छन्दः सूर्यो देवता अद्या देवा इत्यस्य कुत्सऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता आकृष्णे-नेत्यस्य हिरण्यस्तूप आंगिरस ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता महारुद्रप्रीतये होमे विनियोगः । ॐ विभ्राड्० उदुत्यं० येना पावक० दैव्याव० तंप्रक्नथा० अयं वेन० चित्रं देवा० आ न इडा० यदद्य० तरणि० तत्सूर्यस्य० तन्मित्रस्य० बण्महाँ० बट् सूर्य० श्रायन्त इव० अद्या देवा० आ कृष्णेन....पश्यन् स्वाहा ।।

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिः दैवी गायत्री छन्दः अग्निः परमात्मा देवता महाव्याहृतीनां प्रजापतिर्देवता अग्निर्गन्धर्वा वा ऋषयः दैवी उष्णिक् दैवी गायत्री छन्दांसि अग्निवायुसूर्याः क्रमेण देवताः नमस्ते रुद्रेति रौद्राध्यायस्य परमेष्ठी ऋषिः देवता वा ऋषयः प्रजापतिर्वा ऋषिः नमस्ते रुद्रेत्यस्य गायत्री छन्दः या ते रुद्रेत्यादीनां तिसृणां अनुष्टुप् छन्दः अध्यवोचदधीत्यादि तिसृणां पंक्तिश्छन्दः नमोस्तु नीलग्रीवा-येत्यादि सप्तानां अनुष्टुप् छन्दः मानोमहान्तमिति द्वयोः कुत्स ऋषिः जगती छन्दः सर्वासामेको रुद्रो देवता नमो हिरण्य बाहव इत्यादीनि द्रापे इत्यतः....प्राक्तनानि सर्वाणि यजूंषि नमो हिरण्यबाहव इत्यादीनां श्वपतिभ्यश्चवो नम इत्यन्तानां यजुषां हिरण्यबाहुः सेनानीः दिशांपतिः इत्यादि मंत्रवर्णावगतनामका उभयतो नमस्कारा बहवो रुद्रा देवताः नमो भवाय च रुद्राय चेत्यादीनां प्रखिदते चेत्यन्तानां यजुषां भवादयो मंत्रलिंगावगता अन्यतरतो नमस्कारा बहवो रुद्रा देवताः नम इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नम इत्यस्य यजुष उभयतो नमस्कारा बहवो रुद्रा देवताः नमो हिरण्यबाहव इत्यादयो द्वन्द्विनो

रुद्राः नमः सभाभ्यः इत्यादयो जातसंज्ञता रुद्रा देवता नमो वः किरिकेभ्य इत्यादीनां अग्निवायुसूर्यहृदय भूतव्याहृतीनां अन्यतरतो नमस्कारा बहवो रुद्रा देवताः द्रापे इत्यस्य उपरिष्टाद् बृहती छन्दः इमारुद्रायेत्यस्य कुत्सऋषिः जगती छन्दः या त इत्यस्य अनुष्टुप्छन्दः परिनोरुद्र मीढुष्टमेति द्वयोः त्रिष्टुप्छन्दः विकिरिद्र सहस्राणि इति द्वयो अनुष्टुप्छन्दः सप्तानां एको रुद्रो देवता असंख्यातेत्यादीनां दशानामनुष्टुप् छन्दः बहवो रुद्रा देवताः नमोस्तु रुद्रेभ्यः इत्यादीनां त्रयाणां यजुषां धृतिश्छन्दः बहवो रुद्रा देवताः सकलाध्यायस्य शतशीर्षो रुद्रो वा देवता महारुद्रप्रीतये होमे विनियोगः ।।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ नमस्तेरुद्रमन्यव उतोत इषवे नमः बाहुभ्या मुत ते नमः स्वाहा ।। १ ।।

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा पापकाशिनी।
तयानस्तन्वा शं तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि स्वाहा ।। २ ।।

ॐ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।
शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरु माहि ६ सीः पुरुषञ्जगत स्वाहा ।। ३ ।।

ॐ शिवेन वचसा त्वा शिरिशाच्छा व्वदामसि ।
यथा नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मः ६ सुमना असत् स्वाहा ।। ४ ।।

ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्
अहींश्च सर्व्वा-ञ्जम्भयन् सर्व्वांश्च यातुधान्यो धराचीः परासुव स्वाहा ।। ५ ।।

ॐ असौ यस्ताम्रोऽअरुणऽ उत बब्भ्रुः सुमङ्गलः ।
येचैन६रुद्रा-ऽअभितो दिक्षुश्रिताःसहस्रशो वैषाॅ्ठह्वेडईमहे स्वाहा ।। ६ ।।

ॐ असौ योवसर्पति नीलग्रीवो व्विलोहितः ।
उतैनंगोपा-ऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः सदृष्टोमृडयातिनः स्वाहा ।। ७ ।।

ॐ नमोस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।
अथोयेऽअस्य सत्वानो ऽ हन्तेभ्यो ऽ करन्नमः स्वाहा ।। ८ ।।

ॐ प्रमुञ्चधन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम् ।
याश्च ते हस्तऽइषवः परा ता भगवो व्वप स्वाहा ।। ९ ।।
ॐ विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो विशल्यो बाणवां २ ऽउत ।
अनेशन्नस्य याऽ इषवऽ आभुरस्य निषंगधिः स्वाहा ॥ १० ।।
ॐ या ते हेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः।
तयास्मान्विश्व तस्त्वमयक्ष्मया परिभुज स्वाहा ।। ११ ॥
ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्म्मान्वृणक्तु विश्वतः।
अथो यऽइषुधिस्तवारेऽ अस्म्मन्निधेहि तम् स्वाहा ।। १२ ।।
ॐ अवतत्य धनुष्ट्व ँ सहस्त्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य शल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भव स्वाहा ।। १३ ॥
ॐ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे ।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने स्वाहा ।। १४ ॥
ॐ मानोमहान्तमुत मानो अर्ब्भकम्मानऽउक्षन्तमुतमानउक्षितम्।
मानोवधीः पितरम्मोत मातरम्मानः प्रियास्तन्वो रुद्ररीरिषः स्वाहा ।। १५ ॥
ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानोगोषुमानो अश्वेषुरीरिषः।
मानोव्वीरान्रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे स्वाहा ।। १६ ॥
ॐ नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशाञ्च पतये नमः स्वाहा ।। १७ ।।
ॐ नमो व्वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनाम्पतये नमः स्वाहा ।। १८ ।।
ॐ नमः शष्प्पिंजराय त्त्विषीमतेपथीनाम्पतये नमः स्वाहा ।। १९ ।।
ॐ नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्ट्टानाम्पतये नमः स्वाहा ।। २० ।।
ॐ नमो बब्भ्लुशाय व्याधिनेन्नानाम्पतये नमः स्वाहा ।। २१ ।।
ॐ नमो भवस्य हेत्त्यै जगताम्पतये नमः स्वाहा ।। २२ ।।
ॐ नमो रुद्द्रायाततायिने क्षेत्राणाम्पतये नमः स्वाहा ।। २३ ।।
ॐ नमः सूतायाहन्त्यै व्वनानाम्पतये नमः स्वाहा ।। २४ ।।
ॐ नमो रोहिताय स्थपतये व्वृक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा ।। २५ ।।

ॐ नमो भुवन्तये व्वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये नमः स्वाहा ।।२६।।
ॐ नमो मन्त्रिणे व्वाणिजायकक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा ।।२७।।
ॐ नमऽउच्चैर्ग्घोषायाक्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमः स्वाहा ।।२८।।
ॐ नमः कृत्स्नायतया धावते सत्वनाम्पतये नमः स्वाहा ।।२९।।
ॐ नमः सहमानाय निव्याधिन आव्याधिनीनाम्पतये नमः स्वाहा ।।३०।।
ॐ नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानाम्पतये नमः स्वाहा ।।३१।।
ॐ नमो निचेरवे परिचरायारण्ण्यानाम्पतये नमः स्वाहा ।।३२।।
ॐ नमो व्वञ्चते परिवञ्चते स्तायुनाम्पतये नमः स्वाहा ।।३३।।
ॐ नमो निषङ्गिण इषुधिमते तस्कराणाम्पतये नमः स्वाहा ।।३४।।
ॐ नमः सृकायिभ्यो जिघाᳬसद्भ्योमुष्णताम्पतये नमः स्वाहा।।३५।।
ॐ नमो सिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानाम्पतये नमः स्वाहा।।३६।।
ॐ नमऽउष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमः स्वाहा।।३७।।
ॐ नमऽइषुमद्भ्यो धन्वायिब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ।।३८।।
ॐ नमऽआतन्वानेभ्यः प्प्रतिदधानेब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा।।३९।।
ॐ नमऽआयच्छद्भ्यो स्यद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ।।४०।।
ॐ नमो व्विसृजद्भ्यो व्विद्ध्यद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा।।४१।।
ॐ नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ।।४२।।
ॐ नमः श्यानेभ्यः आसीनेब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ।।४३।।
ॐ नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ।।४४।।
ॐ नमः सभाब्भ्यः सभापतिब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा।।४५।।
ॐ नमो श्वेभ्यो श्वपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ।।४६।।
ॐ नमऽआव्याधिनीभ्यो व्विविद्ध्यन्तीब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा।।४७।।
ॐ नम उगणाब्भ्यस्तृ ᳬहतीब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ।।४८।।
ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ।।४९।।
ॐ नमो व्व्रातेभ्यो व्व्रातपतिब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ।।५०।।

ॐ नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ।।५१।।
ॐ नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ।।५२।।
ॐ नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ।।५३।।
ॐ नमो रथिभ्यो अरथेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ।।५४।।
ॐ नमः क्षतृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यश्च वो नमः स्वाहा ।।५५।।
ॐ नमो महद्भ्यो अर्भकेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ।।५६।।
ॐ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ।।५७।।
ॐ नमः कुलालेभ्य कर्मारेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ।।५८।।
ॐ नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्टेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ।।५९।।
ॐ नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः स्वाहा ।।६०।।
ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ।।६१।।
ॐ नमो भवाय च रुद्राय च स्वाहा ।।६२।।
ॐ नमः शर्वाय च पशुपतये च स्वाहा ।।६३।।
ॐ नमो नील ग्रीवाय च शितिकण्ठाय च स्वाहा ।।६४।।
ॐ नमः कपर्द्दिने च व्युप्तकेशाय च स्वाहा ।।६५।।
ॐ नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च स्वाहा ।।६६।।
ॐ नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च स्वाहा ।।६७।।
ॐ नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च स्वाहा ।।६८।।
ॐ नमो ह्रस्वाय च वामनाय च स्वाहा ।।६९।।
ॐ नमो बृहते च वर्षीयसे च स्वाहा ।।७०।।
ॐ नमो वृद्धाय च सवृधे च स्वाहा ।।७१।।
ॐ नमोग्र्याय च प्रथमाय च स्वाहा ।।७२।।
ॐ नमऽआशवे चाजिराय च स्वाहा ।।७३।।
ॐ नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च स्वाहा ।।७४।।
ॐ नमऽऊर्म्याय चावस्वन्याय च स्वाहा ।।७५।।

ॐ नमो नादेयाय च द्वीप्याय च स्वाहा ।। ७६ ।।
ॐ नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च स्वाहा ।। ७७ ।।
ॐ नमः पूर्वजाय चापरजाय च स्वाहा ।। ७८ ।।
ॐ नमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय च स्वाहा ।। ७९ ।।
ॐ नमो जघन्याय च बुद्ध्न्याय च स्वाहा ।। ८० ।।
ॐ नमः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च स्वाहा ।। ८१ ।।
ॐ नमो य्याम्म्याय च क्षेम्म्याय च स्वाहा ।। ८२ ।।
ॐ नमः श्लोक्याय चावसान्याय च स्वाहा ।। ८३ ।।
ॐ नमऽ उर्व्वर्य्याय च खल्याय च स्वाहा ।। ८४ ।।
ॐ नमो वन्याय च कक्ष्याय च स्वाहा ।। ८५ ।।
ॐ नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च स्वाहा ।। ८६ ।।
ॐ नमऽआशुषेणाय चाशुरथाय च स्वाहा ।। ८७ ।।
ॐ नमः शूराय चावभेदिने च स्वाहा ।। ८८ ।।
ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च स्वाहा ।। ८९ ।।
ॐ नमो व्वर्म्मिणे च वरुथिने च स्वाहा ।। ९० ।।
ॐ नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च स्वाहा ।। ९१ ।।
ॐ नमो दुन्दुभाय चाहनन्याय च स्वाहा ।। ९२ ।।
ॐ नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च स्वाहा ।। ९३ ।।
ॐ नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च स्वाहा ।। ९४ ।।
ॐ नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च स्वाहा ।। ९५ ।।
ॐ नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च स्वाहा ।। ९६ ।।
ॐ नमः स्त्रुत्याय च पथ्याय च स्वाहा ।। ९७ ।।
ॐ नमः काट्याय च नीप्याय च स्वाहा ।। ९८ ।।
ॐ नमः कुल्ल्याय च सरस्याय च स्वाहा ।। ९९ ।।
ॐ नमो नादेनाय च व्वैशन्ताय च स्वाहा ।। १०० ।।

ॐ नमः कूप्याय चावट्याय च स्वाहा।। १०१।।
ॐ नमो वीध्र्याय चातप्याय च स्वाहा।। १०२।।
ॐ नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च स्वाहा।। १०३।।
ॐ नमो व्वर्ष्याय चा वर्ष्याय च स्वाहा।।१०४।।
ॐ नमो वात्त्याय च रेष्म्याय च स्वाहा।। १०५।।
ॐ नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च स्वाहा।। १०६।।
ॐ नमः सोमाय च रुद्राय च स्वाहा।। १०७।।
ॐ नमस्ताम्राय चारुणाय च स्वाहा।। १०८।।
ॐ नमः शङ्गवे च पशुपतये च स्वाहा।। १०९।।
ॐ नमऽउग्राय च भीमाय च स्वाहा।। ११०।।
ॐ नमोग्रेवधाय च दूरेवधाय च स्वाहा।। १११।।
ॐ नमो हन्त्रे च हनीयसे च स्वाहा।। ११२।।
ॐ नमो व्वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः स्वाहा।। ११३।।
ॐ नमस्ताराय स्वाहा ।। ११४।।
ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च स्वाहा ।। ११५।।
ॐ नमः शङ्कराय च मयस्कराय च स्वाहा ।। ११६।।
ॐ नमः शिवाय च शिवतराय च स्वाहा ।। ११७।।
ॐ नमः पार्याय चावार्याय च स्वाहा ।। ११८।।
ॐ नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च स्वाहा ।। ११९।।
ॐ नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च स्वाहा ।। १२०।।
ॐ नमः शष्प्याय च फेन्याय च स्वाहा ।। १२१।।
ॐ नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च स्वाहा ।। १२२।।
ॐ नमः कि६ शिलाय च क्षणाय च स्वाहा ।। १२३।।
ॐ नमः कपर्दिने च पुलस्तये च स्वाहा ।। १२४।।
ॐ नमऽइरिण्याय च प्रपथ्याय च स्वाहा ।। १२५।।

ॐ नमो व्रज्याय च गोष्ठ्याय च स्वाहा ।। १२६ ।।
ॐ नमस्तल्प्याय च गेह्याय च स्वाहा ।। १२७ ।।
ॐ नमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च स्वाहा ।। १२८ ।।
ॐ नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च स्वाहा ।। १२९ ।।
ॐ नमः शुष्क्याय च हरित्याय च स्वाहा ।। १३० ।।
ॐ नमः पाᳬसव्याय च रजस्याय च स्वाहा ।। १३१ ।।
ॐ नमो लोप्याय चोलप्याय च स्वाहा ।। १३२ ।।
ॐ नमऽऊर्व्व्याय च सूर्व्याय च स्वाहा ।। १३३ ।।
ॐ नमः पर्ण्णाय च पर्ण्णशदाय च स्वाहा ।। १३४ ।।
ॐ नम ऽउद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च स्वाहा ।। १३५ ।।
ॐ नमऽआखिदते च प्रखिदते च स्वाहा ।। १३६ ।।
ॐ नम ऽइषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ।। १३७ ।।
ॐ नमो वः किरिकेभ्यो देवाना ᳬ हृदयेभ्यः स्वाहा ।। १३८ ।।
ॐ नमो विचिन्वत्केभ्यो देवाना ᳬ हृदयेभ्यः स्वाहा ।। १३९ ।।
ॐ नमो विक्षिणत्केभ्यो देवाना ᳬ हृदयेभ्यः स्वाहा ।। १४० ।।
ॐ नमऽआनिर्हतेभ्यो देवाना ᳬ हृदयेभ्यः स्वाहा ।। १४१ ।।
ॐ द्रापेऽ अन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित।
आसाम्प्रजानाम्मेषाम्पशूनाम्माभेर्मा रोङ्मोचनः किञ्चनामत् स्वाहा ।।१४२ ।।
ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहेमतीः ।
यथा शमसद्विपदे चतुष्पदे विश्वम्पुष्टङ्ग्रामे ऽअस्मिन्ननातुरम् स्वाहा ।। १४३ ।।
ॐ या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विस्वाहा भेषजी।
शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे स्वाहा ।। १४४ ।।
ॐ परि नो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परित्वेषस्य दुर्मतिरघायोः ।
अवस्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड स्वाहा ।। १४५ ।।
ॐ मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमनाभव।

परमे वृक्षऽआयुध-न्निधाय कृत्तिं वसानऽ आचर पिनाकम्बि-भ्रदागहि स्वाहा।। १४६।।
ॐ विकिरिद्र विलोहित नमस्तेऽ अस्तु भगवः।
यास्ते सहस्र ँ हेतयोन्न्यमस्मन्नि वपन्तु ताः स्वाहा।। १४७।।
ॐ सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः।
तासामीशानो भगवः पराचीन मुखा कृधि स्वाहा।। १४८।।
ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्राऽ अधि भूम्म्याम्।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा।। १४९॥
ॐ अस्मिन्महत्त्यर्णवेन्तरिक्षे भवाअधि।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेवधन्वानि तन्मसि स्वाहा।। १५०।।
ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः दिवꣳरुद्रा उपश्रिताः।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा।। १५१।।
ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वाऽअधः क्षमाचराः ।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा।। १५२।।
ॐ येव्वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा।। १५३।।
ॐ ये भूतानामधिपतयो व्विशिखासः कपर्द्दिनः ।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा।। १५४।।
ॐ ये पथाम्पथिरक्षयऽ ऐलबृदाऽ आयुर्युधः।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेवधन्वानि तन्मसि स्वाहा।। १५५।।
ॐ ये तीर्थानि प्प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः ।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा।। १५६।।
ॐ येन्नेषु विविद्धयन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा।। १५७।।
ॐ यऽएतावन्तश्च भूया ꣳसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे ।

तेषाꣳ सहस्त्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा।।१५८।।
ॐ नमोस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्ष्मिषवः।
तेभ्यो दशप्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्ध्वाः।
तेभ्यो नमोऽ अस्तु ते नोवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्चनो द्वेष्टितमेषां जम्भे दद्ध्मः स्वाहा।। १५९।।
ॐ नमोस्तु रुद्रेभ्यो येन्तरिक्षे येषां वात इषवः।
तेभ्यो दशप्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्ध्वाः।
तेभ्यो नमोऽ अस्तु ते नोवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्चनो द्वेष्टितमेषां जम्भे दद्ध्मः स्वाहा।। १६०।।
ॐ नमोस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः।
तेभ्यो दशप्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्ध्वाः।
तेभ्यो नमोऽ अस्तु ते नोवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्चनो द्वेष्टितमेषां जम्भे दद्ध्मः स्वाहा।। १६१।।
एवम् एकषष्ट्युत्तरशतधा मन्त्रविभागात्मक रौद्राध्यायेनैकादशवारं जुहुयात्।।
वयः सोमेत्यस्य बन्धुर्ऋषिः गायत्रीछन्दः सोमो देवता एषत इत्यनयोः बन्धुर्ऋषिः सामपंक्तिं यजुः जगती छन्दांसि रुद्रो देवता अवरुद्रमित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः पंक्तिश्छन्दः रुद्रो देवता भेषजमसीत्यस्य प्रजापति ऋषिः ककुप् छन्दः रुद्रो देवता त्र्यंबकमित्यनयोः क्रमेण वसिष्ठ प्रजापती ऋषि अनुष्टुप्छन्दः त्र्यंबको रुद्रो देवता एतत्त इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः आस्तारपंक्ति छन्दः रुद्रो देवता त्र्यायुषमित्यस्य नारायणऋषिः उष्णिक् छन्दः आशीर्देवता शिवोनामेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः प्राजापत्या बृहतीछन्दः क्षुरो देवता निवर्तयामीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः प्राजापत्यात्रिष्टुप् छन्दः लिंगोक्ता देवता श्री महारुद्र प्रीतये होमे विनियोगः।

ॐ व्वय ँ सोम० एषतेरुद्र० अवरुद्रम० भेषजमसि० त्र्यंम्बकँ-व्यजा० एतत्तेरुद्रा० त्र्यायुषञ्जम० शिवोनामासि....सुवीर्याय स्वाहा।।८॥ इति अष्टकंडिकात्मकेन महच्छिरसा प्रतिलघुरुद्रान्ते एकाम् आहुतिं जुहुयात्।।

ऋचं वाचमित्यस्य दध्यङ्आथर्वणऋषिः चतुर्णां यजुषां दैवीजगतीछन्दः ऋगादयो लिंगोक्ता देवताः वागोज इत्यस्य यजुर्जगतीछन्दः वागादिलिंगोक्ता देवताः यन्म इत्यस्य दध्यङ् आथर्वणऋषिः पंक्तिः छन्दः बृहस्पतिर्देवता तिसृणां महाव्याहृतीनां दध्यङ् आथर्वणऋषिः दैवी गायत्री दैवी उष्णिक् दैवी अनुष्टुप् छन्दांसि अग्निवायुसूर्या देवताः तत्सवितुरित्यस्य दध्यङ् आथर्वण ऋषिः गायत्रीछन्दः सविता देवताः कयान इत्यस्य दध्यङ् आथर्वणऋषिः गायत्रीछन्दः इन्द्रो देवताः कस्त्वेत्यस्य दध्यङ् आथर्वण ऋषिः गायत्रीछन्दः इन्द्रो देवता अभीषुण इत्यस्य दध्यङ् आथर्वणऋषिः पादनिचृद्गायत्रीछन्दः इन्द्रो देवताः कयात्वमित्यस्य दध्यङ्आथर्वण ऋषिः अनिरुक्ता गायत्रीछन्दः इन्द्रो देवताः इन्द्रो विश्वस्येति दध्यङ्आथर्वणऋषिः द्विपदाविराट् छन्दः इन्द्रो देवताः शन्नो मित्र इत्यस्य दध्यङ्आथर्वणऋषिः अनुष्टुप् छन्दः वाय्वादयो लिंगोक्ता देवताः अहानिशमित्यस्य दध्यङ्आथर्वणऋषिः द्विपदा गायत्री छन्दः अहानिरात्रयश्च देवताः शन्नऽइन्द्राग्नीत्यस्य दध्यङ् आथर्वणऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः इन्द्राग्नी इन्द्रावरुणौ इन्द्रापूषणौ इन्द्रासोमौ च देवताः स्योना पृथिवीत्यस्य दध्यङ् आथर्वणऋषिः गायत्री छन्दः पृथ्वी देवताः आपोहिष्ठेत्यस्य दध्यङ्आथर्वणऋषिः गायत्रीछन्दः आपो देवताः योवः शिवतम इत्यस्य दध्यङ् आथर्वणऋषिः गायत्रीछन्दः आपो देवताः तस्माऽअरंग मामव इत्यस्य दध्यङ् आथर्वणऋषिः गायत्रीछन्दः आपो देवताः द्यौः

शान्तिरित्यस्य दध्यङ् आथर्वणऋषिः एकाधिकशक्करी छन्दः द्यौरादयो लिंगोक्ता देवताः दृतेदृ ६ हमा इत्यस्य दध्यङ् आथर्वण ऋषिः ब्राह्मी अनुष्टुप् छन्दः धर्मो देवता दृतदृ हमा ज्योक्ते इत्यस्य दध्यङ् आथर्वण ऋषिः उष्णिक् छन्दः धर्मो देवता नमस्ते हरस इत्यस्य दध्यङ् आथर्वण ऋषिः बृहतीछन्दः अग्निर्देवता नमस्तेऽअस्त्वित्यस्य दध्यङ् आथर्वण ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः विद्युत् स्तनयित्नुं भगवान् देवता यतोयत इत्यस्य दध्यङ् आथर्वण ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः महावीरो देवता सुमित्रियन् इत्यस्य दध्यङ् आथर्वण ऋषिः प्राजापत्या जगती आपो देवता तच्चक्षुरित्यस्य दध्यङ् आथर्वण ऋषिः उष्णिक् छन्दः सूर्यो देवताः सर्वेषां शान्त्यर्थहोमे विनियोगः।।

ॐ ऋचंवाचम्प्रपद्ये० स्वाहा।। १ ।। ॐ यन्मेछिद्रं० स्वाहा।। २।। ॐ भूर्भुवः स्वः।। तत्सवितु० स्वाहा।। ३ ।। ॐ कयानश्चित्रऽआ० स्वाहा।। ४।। ॐ कस्त्वासत्यो० स्वाहा।। ५।। ॐ अभीषुणः० स्वाहा।। ६ ।। ॐ कयात्त्वन्न० स्वाहा।। ७।। ॐ इन्द्रोविश्वस्य० स्वाहा।। ८।। ॐ शन्नोमित्रः० स्वाहा।। ९।। ॐ शन्नोव्वातः० स्वाहा।। १०।। ॐ अहानिशं० स्वाहा।। ११।। ॐ शन्नोदेवी० स्वाहा।। १२।। ॐ स्योनापृथिवि० स्वाहा।। १३।। ॐ आपोहिष्ठा० स्वाहा।। १४।। ॐ योवःशिवतमो० स्वाहा।। १५।। ॐ तस्माऽअरङ्ग० स्वाहा।। १६।। ॐ द्यौः शान्ति० स्वाहा।। १७।। ॐ दृतदृ ६ हमामित्रस्यमा० स्वाहा।। १८।। ॐ दृतेदृ ६ हमा ज्योक्ते० स्वाहा।। १९।। ॐ नमस्ते हरसे० स्वाहा।। २०।। ॐ नमस्तेऽअस्तु० स्वाहा।। २१।। ॐ यतोयतः० स्वाहा।। २२।। ॐ सुमित्रियान० स्वाहा ।। २३।। ॐ तच्चक्षुर्द्देवहितं० स्वाहा।। २४।। एवम् ऋचंव्वाचमित्यादिभिः शान्त्यध्यायमन्त्रैः

चतुर्विंशतिभिः आहुतिभिर्जुहुयात्।। एवं क्रमेण लघुरुद्रहोमं विधाय सर्वे ऋत्विजः षडंगन्यासं कुर्युः।।

अथ अष्टचत्वारिंशन्मन्त्रहोमात्मकरुद्रस्वाहाकाराः

ॐ नमस्तेरुद्रमन्यव० स्वाहा।।१।। ॐ यातेरुद्रशिवातनू० स्वाहा।।२।। ॐ यामिषुङ्गिरिशन्तहस्ते० स्वाहा।।३।। ॐ शिवेनवचसा० स्वाहा।।४।। ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्ता० स्वाहा।।५।। ॐ असौयस्ताम्रो० स्वाहा।।६।। ॐ असौयो० स्वाहा।।७।। ॐ नमोस्तु नीलग्रीवाय० स्वाहा।।८।। ॐ प्रमुञ्च धन्वस्त्वमु० स्वाहा।।९।। ॐ विज्ज्यन्धनुःकपर्द्दिनो० स्वाहा।।१०।। ॐ याते हेतिर्म्मीढुष्टमहस्ते० स्वाहा।।११।। ॐ परितेधन्न्वनो हेति० स्वाहा।।१२।। ॐ अवतत्यधनु० स्वाहा।।१३।। ॐ नमस्तऽआयुधानाया० स्वाहा।।१४।। ॐ मानो महान्तमुत मानो० स्वाहा।।१५।।ॐ मानस्तोकेतनये० स्वाहा।।१६।। ॐ नमोहिरण्ण्यबाहवे० नमो बब्भ्लुशाय ० नमो रोहिताय० नमः कृत्स्नाय नमो व्वञ्चते....विकृन्तानाम्पतये नमः स्वाहा।।१७।। ॐ नमऽउष्णीषिणे० नमो व्विसृजद्भ्यो० नमः सभाब्भ्यः० नमो गणेब्भ्यो० नमः सेनाब्भ्यः....अर्भकेभ्यश्श्च वो नमः स्वाहा।।१८।। ॐ नमः स्तक्षभ्यो० नमः श्वब्भ्यः० नमः कपर्द्दिने ० नमो ह्रस्वाय० नमऽआशवे....द्वीप्याय च स्वाहा।।१९।। ॐ नमो ज्येष्ठाय० नमः सोब्भ्याय० नमो वन्याय० नमो विल्मिने० नमो धृष्णवे....सुधन्वने च स्वाहा।।२०।। ॐ नमऽ स्रुत्याय ० नमः कूप्प्याय० नमो वात्याय नमः शङ्गवे....नमस्ताराय स्वाहा।।२१।। ॐ नमः शम्भवाय....शिवतराय च स्वाहा।।२२।। ॐ नमः पार्य्याय० नमः सिकत्याय० नमो व्रज्याय० नमशुष्क्याय० नमः पर्ण्णाय.... धनुष्कृद्भ्यश्श्च वो नमः स्वाहा।।२३।। ॐ नमो वः किरिकेब्भ्यः स्वाहा।।२४।।ॐ देवाह्रदयेब्भ्यः स्वाहा।।२५।।

ॐ नमो विचिन्वत्केभ्यः स्वाहा।। २६।। ॐ नमो विक्षिणत्केभ्यः स्वाहा ।। २७।। ॐ नमऽ आनिर्हतेभ्यः स्वाहा ।।२८।। ॐ द्रापेऽअन्धसस्पते.....भेर्म्मा रोङ्मो च नः किञ्च नाममत् स्वाहा ।। २९।। ॐ इमारुद्राय..... विश्श्व-म्पुष्टङ्ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरं स्वाहा ।। ३०।। ॐ यातेरुद्राशिवातनूः शिवा....भेषजीतयानो मृडजीवसे स्वाहा।। ३१।। ॐ परिनोरुद्रस्य....स्तनुष्ष्वमीढ्व स्तोकाय तनयायमृड स्वाहा।।३२।। ॐ मीढुष्टम शिवतमशिवो.... आचरपिनाकम्बिब्भ्रदागहि स्वाहा।। ३३।। ॐ विकिरिद्द्र विलोहित....हेतयो न्न्यमस्म न्निवपन्तुताः स्वाहा।। ३४।। ॐ सहस्राणि सहस्रशो....भगवः पराचीना मुखाकृधि स्वाहा।। ३५।। ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि.... योजनेवधन्वानि तन्मसि स्वाहा ।। ३७।। ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्रा... तन्मसि स्वाहा।।३८।।ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वाऽअधः.... धन्न्वानितन्न्मसि स्वाहा।। ३९।।ॐ येव्वृक्षेषु.....तेषा सहस्त्रयोजनेव धन्न्वानितन्न्मसि स्वाहा।। ४०।। ॐ येभूताना...सहस्त्रयोजनेव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा।। ४१।। ॐ येपथाम्पथि.....सहस्त्रयोजनेव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा।।४२।। ॐ येतीर्त्थानि....सहस्त्रयोजनेव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा।।४३।। ॐ येन्नेषु विविद्ध्यन्ति... सहस्त्रयोजनेव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा।। ४४।। ॐ यऽएतवान्तश्च.... सहस्त्रयोजनेव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा।।४५।।ॐ नमोस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवियेषां....तमेषाञ्जम्भेदध्मः स्वाहा।। ४६।। ॐ नमोस्तु रुद्रेभ्यो येन्तरिक्षे येषां...तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा।। ४७।। ॐ नमोस्तु रुद्रेभ्यो पृथिव्याँय्येषां...तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा।। ४८।।

इत्यष्टचत्वारिंशन्मन्त्र विभागात्मको रुद्रहोमस्वाहाकारः।।

रुद्राक्ष-मुख-क्रम, उनके ग्रहादि-अधिपति तथा ज्योतिषशास्त्रीय प्रयोग

एकमुखी रुद्राक्ष (तथा द्वादशमुखी रुद्राक्ष)

ये दोनों रुद्राक्ष सूर्य के द्वारा संचालित होते हैं। ज्योतिष-शास्त्रीय दृष्टिकोण से इस रुद्राक्ष को धारण करने से सूर्य-जनित दोषों का निवारण हो जाता है। जन्म-कुण्डली में सूर्य की विभिन्न स्थितियाँ होती हैं। सूर्य प्रतिकूल स्थानीय होकर विभिन्न रोगों को जन्म देते हैं, जैसे- दक्षिण-नेत्र सम्बन्धी रोग, सरदर्द, हृदयरोग, हड्डी का टूटना, त्वचा रोग, उदर सम्बन्धी रोग, तेज बुखार, सरकार तथा उच्च अधिकारी से विरोध । इन सभी दोषों के निवारण के लिए एकमुखी या द्वादशमुखी रुद्राक्ष को धारण करना चाहिए।

ज्योतिषीय दृष्टि से सूर्य दक्षिण-नेत्र, हृदय, मस्तिष्क, मस्तक, अस्थि इत्यादि का कारक है। यह ग्रह भगन्दर, स्नायु रोग, अतिसार, उपांत्र, मुखपाक, अग्निमंदता, इत्यादि रोगों का भी कारक बनता है, जब वह प्रतिकूल बन जाता है। यह ग्रह विटामिन ए और विटामिन डी को भी संचालित करता है। इसकी कमी से निशान्धता, अविकसित अस्थिरूप, बालवक्रता जैसे रोग होते हैं। इन सबों के निवारण एवं निदान के लिए एकमुखी एवं द्वादशमुखी रुद्राक्ष उपयुक्त एवं धारणीय है।

द्विमुखी रुद्राक्ष

इस रुद्राक्ष के संचालक ग्रह चंद्रमा है। इस रुद्राक्ष के धारण से चन्द्रमा की प्रतिकूलता से उत्पन्न सभी दोषों का निवारण हो जाता है। ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से चन्द्रमा हृदय, फेफड़ा, मस्तिंष्क, वामनेत्र, गुर्दा, भोजन-नलिका, शरीरस्थ जल-मात्रा इत्यादि से कारक है। चन्द्रमा की प्रतिकूल स्थिति तथा दुष्प्रभाव के कारण हृदय तथा फेफड़े की बीमारी होती है। बायीं आँख की खराबी, खून की कमी, जल सम्बन्धी रोग, गुर्दा-

कष्ट, मासिक धर्म-रोग, पयोधर-पीड़ा, स्मृति-भ्रंश इत्यादि रोग होते हैं। इसके दुष्प्रभाव से दरिद्रता तथा मस्तिष्क विकार भी होते हैं।

ज्योतिष के विभिन्न प्रकार के अरिष्ट योगों में केन्द्रुम योग बहुत प्रमुख है। यह योग चन्द्रमा के घर से आगे या पीछे के घर में किसी ग्रह के नहीं होने से बनता है। इन सभी प्रकार की प्रतिकूलताओं तथा दुष्प्रभावों से बचने के लिए द्विमुखी रुद्राक्ष लाभकारी रूप में धारणीय हैं।

त्रिमुखी रुद्राक्ष

इसके संचालक मङ्गल है। मङ्गल को ज्योतिष शास्त्र में सेनापति का दर्जा दिया गया है। यह अग्निरूप है। यह ग्रह रक्त, मस्तक, ग्रीवा, कर्ण, अण्डकोश, अस्थि का आन्तरिक तत्व, मज्जा, जननेन्द्रिय, गुर्दा, लाल रक्त-कण, विटामिन इन सभी का कारक है। मङ्गल यदि किसी भी दुष्प्रभाव में होता है तो उससे रक्त रोग, हैजा, प्लेग, चेचक, रक्तचाप, शक्ति-क्षीणता, नारी-अंग-रोग, अस्थिभ्रंश, बवासीर, मासिक धर्म-रोग, अल्सर, अतिसार, कटना और घाव इत्यादि रोग होते हैं।

जन्म कुण्डली में मङ्गल की प्रतिकूल स्थिति से विवाहादि प्रसंग में मङ्गल दोष उत्पन्न होते हैं। यह गर्भपात का भी कारक ग्रह है। मङ्गल की प्रतिकूलता से उत्पन्न इन सभी रोगों और दोषों के निदान और निवारण के लिए त्रिमुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

चतुर्मुखी रुद्राक्ष

इस रुद्राक्ष पर बुध का नियन्त्रण होता है। ज्योतिष शास्त्र में बुध को युवराज कहा जाता है। यह नपुंसक तथा सौम्य ग्रह है। बुध ग्रह विद्या, गणित, ज्ञान, लेखन, ज्योतिष, वाणिज्य, त्वचा, गॉल ब्लाडर, नाड़ी-संस्थान इत्यादि का कारक है। इस ग्रह की प्रतिकूलता से इन सबों में प्रतिकूलता और अनियमितता आती है। इस ग्रह के सदोष होने पर अपस्मार, मानसिक रोग, पक्षाघात, पीतज्वर, नासिका रोग, दमा इत्यादि रोग होते हैं। इन सबों के निदान के लिए चतुर्मुखी रुद्राक्ष का धारण लाभप्रद है। व्यापारियों के

लिए चतुर्मुखी रुद्राक्ष विशेष-रूप से लाभदायक और फलप्रद है।

पंचमुखी रुद्राक्ष

इसका संचालक ग्रह बृहस्पति है। यह ग्रह ज्ञान, गौरव का भी कारक है। यह मज्जा, यकृत, चरण, नितम्ब, इत्यादि का भी कारक ग्रह है। बृहस्पति धर्म तथा धन-सम्पत्ति का भी नियामक ग्रह है।

बृहस्पति यदि बुरे प्रभाव में होते हैं तो व्यक्ति को अनेक तरह के कष्ट होते हैं। बृहस्पति स्त्री के लिए पति का और पुरुष के लिए पत्नी का भी कारक ग्रह है। इसकी प्रतिकूलता से निर्धनता और दाम्पत्य-सुख में विघ्न उत्पन्न होता है। इससे अनेक प्रकार की बीमारियाँ भी उत्पन्न होती हैं। इससे चर्बी की बीमारी, गुर्दा, जाँघ और कान की भी बीमारी होती है। इसका एक दुष्प्रभावित रोग मधुमेह भी है। इन सभी बीमारियों के निदान और निवारण के लिए पंचमुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

पंचमुखी रुद्राक्ष सभी रुद्राक्षों में सस्ता तथा सर्वाधिक संख्या में उपलब्ध है जबकि इसके नियन्त्रक और संचालक ग्रह बृहस्पति हैं जो सभी ग्रहों में सबसे बड़े और देवताओं के गुरु हैं।

षण्मुखी रुद्राक्ष

इसके नियंत्रक और संचालक ग्रह शुक्र है जो भोग-विलास और सुख-सुविधा के प्रतिनिधि हैं। शुक्र ग्रह गुप्तेन्द्रिय, वीर्य, स्त्री, मुख, गला, पुरुषार्थ, काम-वासना, उत्तम भोग्य वस्तु, प्रेम, संगीत, भागीदारी इत्यादि के भी कारण हैं। शुक्र के दुष्प्रभाव से नेत्ररोग, यौनरोग, मुखरोग, मूत्ररोग, ग्रीवारोग, और जलशोध इत्यादि रोग होते हैं। इन सभी रोगों के निदान एवं निवारण के लिए षण्मुखी रुद्राक्ष धारणीय है।

आज के युग में यंत्र-तंत्र का प्रभाव बढ़ गया है। इसके नियामक शुक्र हैं । वर्तमान युग में वैदिक-संस्कारों की परम्परा क्षीणतर हुई है और तंत्रानुष्ठान बढ़ गया है। लोगों के मानस में लोकान्तर जीवन और परलोक-सुख से भी आस्था कम हो गई है। समाज इहलोक के सुख में ही ज्यादा विश्वास करने लगा है। इसलिए भोग-विलास के उपकरण अधिकाधिक

आविष्कृत-प्रचलित हुए हैं। संगीत, परिवहन, नारियों की जीवन शैली और सामाजिक-स्थिति में भी काफी परिवर्तन हुआ है। इन सभी के कारक शुक्र ग्रह हैं। इस युग में बृहस्पति की अपेक्षा शुक्र-ग्रह की महत्ता अधिक हो गई है। यही कारण है कि षण्मुखी रुद्राक्ष इस युग के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण हो गया है।

सप्तमुखी रुद्राक्ष

इस रुद्राक्ष के संचालक तथा नियन्त्रक ग्रह शनि है। ये रोग तथा मृत्यु के कारक हैं। यह ग्रह ठढक, नपुंसकता, श्रम, पैरों के बीच तथा नीचे वाले भाग, गतिरोध, पृथक्कता, विष, दीर्घ प्रभाव, (लम्बी अवधि तक रोग) वायु, स्नायु अभाव का नियामक है। यह लोहा, पेट्रोल, चमड़ा आदि का भी प्रतिनिधित्व करने वाला ग्रह है।

शनि के प्रभाव से दुर्बलता, उदर-पीड़ा, विकलांगता, हड्डी एवं मांस में दर्द, पक्षाघात, मृगी, बधिरता, मनश्चितता, अस्थि-राज-यक्ष्मा, इत्यादि रोग इसके प्रतिकूल होने पर उत्पन्न होते हैं। ज्योतिष-शास्त्र में शनि का महत्त्वपूर्ण स्थान है। हस्तरेखा-विद्या में भाग्य-रेखा को शनि-रेखा भी कहते हैं। इस प्रकार शनि भाग्य का कारक भी है। प्रकूपित होने पर यह हताशा, कार्य-विलंबन इत्यादि उत्पन्न करता है। जन्म-कुण्डली में यह ग्रह यदि नवें घर तथा नवें घर के स्वामी से किसी भी तरह सम्बद्ध हो जाता है तो उस व्यक्ति का भाग्योदय देर से होता है। शनि ग्रह को नियंत्रित और शान्त करने के लिए सप्तमुखी रुद्राक्ष अत्यन्त लाभकारी है।

कलियुग में सप्तमुखी रुद्राक्ष की महत्ता अधिक बढ़ी है। इसका कारण यह है कि सप्तमुखी रुद्राक्ष शनि द्वारा संचालित होता है और शनि सेवा-भाव या दास्य भाव का ग्रह है। यह लोहा, चमड़ा और पेट्रोल का कारक है। आधुनिक युग में इन तीनों की उपयोगिता बढ़ गई है। यह युग नौकरी पेशा लोगों का युग भी है। लोगों में नौकरी के प्रति आग्रह भी बढ़ा है। इस रुद्राक्ष के देव हनुमान हैं जो सेवा-वृत्ति और दास्य-भावना के

प्रतीक हैं। इसलिए इन सभी दृष्टियों से सप्तमुखी रुद्राक्ष आधुनिक युगीन सिद्ध होता है।

अष्टमुखी रुद्राक्ष

इसका नियंत्रक और संचालक ग्रह राहु है, जो छाया-ग्रह है। इनमें शनि की भाँति या शनि से भी बढ़कर प्रकाशहीनता का दोष है। यह शनि की तरह लम्बा, मूर्ख, अभाव एवं रोगकारक ग्रह है। यह योजनाओं को विलंबित करानेवाला भी ग्रह है। यह ग्रह घटनाओं को अकस्मात भी घटित करा देता है। फेफड़े की बीमारी, पैरों का कष्ट, चर्मरोग, सर्पभय, मोतियाबिन्द, अण्डकोष वृद्धि, श्वास कष्ट, इत्यादि रोगों का कारक राहु हैं। अष्टमुखी रुद्राक्ष के धारण से एतत्संबंधी सभी प्रकार के रोगों का निवारण एवं निदान संभव है।

नवमुखी रुद्राक्ष

इसके नियंत्रक और संचालक ग्रह केतु हैं, जो राहु की तरह ही छाया ग्रह है। जिस प्रकार राहु शनि के सदृश है, उसी प्रकार केतु मङ्गल के सदृश है। मङ्गल की तरह केतु अपनी युति (साहचर्य) अथवा दृष्टि के प्रभाव में आने वाले पदार्थों को हानि पहुँचाता है।

इसके कुपित होने पर फेफड़े का कष्ट, ज्वर, नेत्रपीड़ा, उदर-कष्ट, फोड़े-फुन्सियाँ, शरीर में दर्द, दुर्घटना एवं अज्ञात कारणों से उत्पन्न रोग परेशान करते हैं। केतु को मोक्ष का कारक भी माना गया है। इस ग्रह की शान्ति के लिए नवमुखी रुद्राक्ष शुभात्मक और लाभात्मक है।

दशमुखी रुद्राक्ष

दशमुखी रुद्राक्ष के ऊपर सभी रुद्राक्ष नवग्रहों के प्रभा-प्रभाव-मण्डल से ऊपर होते हैं। अतः इन पर किसी ग्रह विशेष का आधिपत्य नहीं होता।

दशमुखी रुद्राक्ष सभी ग्रहों को नियंत्रित करता है। यदि अनेक ग्रह प्रतिकूल हों तो दशमुखी रुद्राक्ष लाभकारी ढंग से धारणीय हो जाता है।

एकादशमुखी रुद्राक्ष

यह रुद्राक्ष योग-साधना में प्रवृत्त व्यक्तियों के लिए बहुत अनुकूल है। यह शरीर स्वास्थ्य, यम-नियम-आसन-षट्कर्म या अन्य यौगिक क्रियाओं में आने वाली बाधाओं को दूर करता है। योग-साधकों के लिए यह रुद्राक्ष सर्वाधिक अनुकूल है।

द्वादशमुखी रुद्राक्ष

यह एकमुखी रुद्राक्ष का स्थानापन्न माना गया है। वैसे तो गौरीशंकर रुद्राक्ष भी एकमुखी रुद्राक्ष का स्थानापन्न है, किन्तु रोगों के निवारण की दृष्टि से गौरीशंकर रुद्राक्ष की स्थानापन्नता प्रभावहीन होती है। इसलिए एकमुखी रुद्राक्ष का रोग-निवारक एवं ग्रह-शान्तिदायक रुद्राक्ष द्वादशमुखी रुद्राक्ष ही हो सकता है, क्यों कि एकमुखी और द्वादशमुखी दोनों रुद्राक्षों के संचालक सूर्य हैं।

त्रयोदशमुखी रुद्राक्ष

साधना और सिद्धि के लिए त्रयोदशमुखी रुद्राक्ष लाभदायक है। यह षण्मुखी रुद्राक्ष का स्थानापन्न है। भौतिक समृद्धि के लिए यह रुद्राक्ष परम सिद्धिदायक है। इसका साधक सिद्ध होकर अंतर्मुखी नहीं होता, बल्कि विश्व कल्याण के लिए अपनी साधना-सिद्धियों का उपयोग करता है।

चतुर्दशमुखी रुद्राक्ष

यह सप्तमुखी रुद्राक्ष का स्थानापन्न है। शनि-शांति के लिए चतुर्दशमुखी रुद्राक्ष को सप्तमुखी रुद्राक्ष के साथ पहनने से और अधिक लाभ होता है। चतुर्दशमुखी रुद्राक्ष श्रीकण्ठस्वरूप है। यह रुद्रदेव की आँखों से विशेष रूप से उत्पन्न हुआ है। जो व्यक्ति इस रुद्राक्ष को भक्तिपूर्वक मस्तक पर धारण करता है , वह सदैव ब्राह्मणों और देवताओं के द्वारा पूज्य होता है और अन्त में परागति को प्राप्त करता है। इस रुद्राक्ष के धारण करने से धारणकर्ता का शरीर शिव का शरीर हो जाता है। वह शिव-

शक्ति-पिण्ड बन जाता है, अर्थात् वह शक्ति पीठ और ज्योतिर्लिंग दोनों बन जाता है। इस रुद्राक्ष को धारण करने वाले व्यक्ति के भी दर्शन पुण्य और भाग्य से होते हैं। यह वंशोद्धारक (धारणकर्ता के वंश में मृत सभी व्यक्तियों की आत्मा का उद्धार करने वाला) तथा धारणकर्ता के निधन पर परलोक की सुगम और सुखद यात्रा करानेवाला होता है। इस प्रकार यह अतीतोद्धारक और भविष्य-दर्शक दोनों है। यह वर्तमान को भी समृद्ध करता है । इस प्रकार यह त्रिकाल-सुखदायक है । यह सभी रोगों का हरण करनेवाला सदैव आरोग्य प्रदान करनेवाला है । इसमें वंशवृद्धि भी होती है।

इसके धारण से व्यक्ति बहुमान-पुरस्सर और यशस्वी बनता है। चतुर्दशमुखी रुद्राक्ष में हनुमत् देव का भी अधिवास माना गया है। यह रुद्राक्ष भूत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी से भी रक्षा करता है। इससे बल और उत्साह का भी वर्धन होता है। इससे निर्भयता प्राप्त होती है और संकटकाल में संरक्षण प्राप्त होता है।

यह रुद्राक्ष चमत्कारी माना गया है। इसमें अनन्त गुणं अध्युषित है। शास्त्र-प्रमाण के अनुसार मानव-वाणी से इसके गुणों का व्याख्यान सम्भव नहीं है। इसका धारणकर्ता सर्वोच्च स्वर्ग को प्राप्त करता है।

चतुर्दशमुखी रुद्राक्ष वाला चौदहों भुवनों का रक्षक और स्वामी बन जाता है।

राशि-नियंत्रित अर्थागमोपाय और रुद्राक्ष

संख्या	लग्न या राशि	धनदायक शुभ ग्रह	उपयुक्त धारणीय रुद्राक्ष
१.	मेष	मङ्गल, गुरु	त्रिमुखी तथा पञ्चमुखी
२.	वृष	बुध, शनि	चतुर्मुखी तथा सप्तमुखी
३.	मिथुन	बुध, शुक्र	चतुर्मुखी तथा सप्तमुखी
४.	कर्क	चंद्र, मङ्गल	त्रिमुखी तथा द्विमुखी
५.	सिंह	सूर्य, मङ्गल	द्वादशमुखी तथा त्रिमुखी
६.	कन्या	बुध, शुक्र	चतुर्मुखी तथा षण्मुखी
७.	तुला	शुक्र, शनि	षण्मुखी तथा सप्तमुखी
8.	वृश्चिक	गुरु, चंद्र	पंचमुखी तथा द्विमुखी
9.	धनु	गुरु, शुक्र	पंचमुखी तथा द्वादशमुखी
१०.	मकर	शनि, शुक्र	षण्मुखी तथा सप्तमुखी
११.	कुम्भ	शनि, शुक्र	षण्मुखी तथा सप्तमुखी
१२.	मीन	गुरु, मङ्गल	पंचमुखी तथा त्रिमुखी

१. एक मुखी रुद्राक्ष का (ॐ ह्रीं नमः) मंत्र है।
२. दो मुखी रुद्राक्ष का (ॐ नमः) मंत्र है।
३. तीन मुखी रुद्राक्ष का (ॐ क्लीं नमः) मंत्र है।
४. चार मुखी रुद्राक्ष का (ॐ ह्रीं नमः) मंत्र है।
५. पाँच मुखी रुद्राक्ष का (ॐ ह्रीं नमः) मंत्र है।
६. छः मुखी रुद्राक्ष का (ॐ हुं नमः) मंत्र है।
७. सात मुखी रुद्राक्ष का (ॐ हुं नमः) मंत्र है।
८. आठ मुखी रुद्राक्ष का (ॐ हुं नमः) मंत्र है।
९. नौ मुखी रुद्राक्ष का (ॐ ह्रीं हुं नमः) मंत्र है।
१०. दस मुखी रुद्राक्ष का (ॐ ह्रीं नमः) मंत्र है।
११. ग्यारह मुखी रुद्राक्ष का (ॐ ह्रीं हुं नमः) मंत्र है।
१२. बारह मुखी रुद्राक्ष का (ॐ क्रौ क्षौं रौं नमः) मंत्र है।
१३. तेरह मुखी रुद्राक्ष का (ॐ ह्रीं नमः) मंत्र है।
१४. चौदह मुखी रुद्राक्ष का (रू नम) मंत्र है।

तुलसी विवाह विधि

लोकोपचार के समान तुलसी को अपनी कन्या के समान गोद लेने की प्रथा भी है। यजमान तुलसी विवाह का लग्न लिखकर मन्दिर में भिजवायें। गणपति निमन्त्रण करें। कंकण बंधन करें।

यजमान के यहाँ विवाह के एक दिन पहले जागरण प्रबोधोत्सव किया जाता है।

मंदिर से पुजारी विद्वानों के साथ ठाकुरजी को पालकी में सजाकर, बारात सजाकर, गाजे-बाजे के साथ आता है।

सीमान्त सामेला का भी कहीं-कहीं लोकोपचार से प्रचलन है। लोकोपचार के अनुसार यजमान के द्वार पर तोरण लगाने की प्रथा भी है। वैसे तोरण सभी यज्ञीय कार्यों में विवाह, गृह-प्रवेश आदि में लगाते ही हैं।

यजमान चाँदी या सुवर्ण की शालिग्राम सूर्य व तुलसी के पौधे के रूप में तुलसी की प्रतिमा बनायें। विष्णु व तुलसी के लिए आचार्य दो अलग-अलग मण्डल बनायें।

आचार्य, वेदी विधान की तैयारी करें

दिग्रक्षण, गणपति मातृका नवग्रह कलशार्चन करायें।

संकल्प

ॐ अद्येतत्....शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रोत्पन्न अमुकोऽहं श्री परमेश्वर प्राप्ति द्वारा धर्म अर्थ काम मोक्ष पुरुषार्थ चतुष्टय सिद्ध्यर्थम् अस्या तुलसी नाम्नी कन्याया श्री शालिग्रामविष्णुसहितेन ब्रह्म सम्बन्ध साङ्गता सिद्धि द्वारा कन्यादानोक्त पुराणोक्त फलवाप्त्यर्थं तुलसी विवाह कर्मणि विष्णु अर्चनं चाऽहं करिष्ये तत्राद्यौ गणपत्यादि पूजनं चाहं करिष्ये।

गणपत्यादि पूजनोपरांत विष्णु एवं तुलसी का षोडशोपचार पूजन करें।

पुरुष सूक्त से विष्णु का एवं श्री सूक्त से तुलसी का अर्चन अभिषेक आदि करें।

विष्णु आवाहन

ॐ इदं विष्णुर्विचक्र मे त्रेधा निदधेपदम्। समूढमस्यपा ४ सुरे स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः।। विष्णु इहागच्छ इहतिष्ठ।।

तुलसी आवाहन

तुलसि श्री सखि शुभे पापहारिणि शिवे।
नमस्ते नारदनुते नारायण सदा प्रिये।।

ॐ भूर्भुवः स्वः तुलस्यै नमः। तुलसि इहागच्छ इहतिष्ठ।।

हरिद्रा तैल, नागवल्लीदल व उष्णोदक से विष्णु और तुलसी का मंगल स्नान -मंगल गीत बाजों सहित सुवासिनी स्त्री से करावें।

तुलसी एवं विष्णु का षोडशोपचार से पूजन करें।

तुलसी को हरिद्रा कुंकुम, कण्ठसूत्र आदि अलंकारों को देखकर अर्पण करें।

कंकण बंधन करें

यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्य ६ शतानीकाय सुमनस्य मानाः।
तन्म आबध्नामि शत शारदाया युष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्।।

पुष्पाञ्जलि

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।।
ॐ श्री त्रिपुराय विद्महे तुलसी पत्राय धीमहि। तन्नस्तुलसी प्रचोदयात्।।

विवाह विधि

यजमान पहले पूर्वाभिमुख होकर वेदी के पश्चिम में बैठा हो, तुलसी व विष्णु पूर्व में स्थापित किये हुए हों तो अब व्यवस्था इस प्रकार कर सकते हैं :

१. यथावत् स्थिति में ही आसन व मण्डल लगाये रखें।
२. यजमान दक्षिण में आकर उत्तराभिमुख होकर बैठे।

३. वेदी के पश्चिम में तुलसी व विष्णु को आसन देवें। विष्णु को विष्टर, पाद्य,अर्घ,आचमन एवं मधुपर्क प्रदान करें। मधुपर्क के बाद आचमन करायें।

अंतरपटधारण

विष्णु को तुलसी के पूर्व में स्थापित करें (तुलसी के आगे विष्णु को करें)। विष्णु और तुलसी के मध्य में अंतर्पट करें। मंगलाष्टक पढ़ें। तुलसी व विष्णु के ऊपर अक्षत फेकें। शालिग्राम प्रतिमा हो तो यवाक्षत फेकें, चावल नहीं। तुलसी पर चावल फेकें।

अंतर्पट को उत्तर की ओर खींचते हुए निकाल लें।

यथाचारान्तुलसी संमुखां श्रीकृष्ण प्रतिमां कृत्वा मध्येन्तः पटं धृत्वा मङ्गलाष्टक पद्यानि पठित्वांतः पटं विसृज्याक्षत प्रक्षेपं कृत्वा दामोदरहस्ते तुलसीदानं कुर्यात्।

विष्णु प्रतिमा को तुलसी विवाह हेतु दान करें।

संकल्प

ॐ अद्येतत् अमुकाहं मम इह जन्मनि जन्मांतरे वा कृत कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक दोष परिहारार्थं तथा च विष्णु प्रसन्नार्थं श्री दामोदराया विष्णवेवराय इमां कन्यावत्स वर्द्धितां तुलसी श्रीरूपिणी। देवीं कनक संपन्नां कनकाभरणैर्युताम्। दास्यामि विष्णवे तुभ्यं ब्रह्मलोक जिगीषया।। मया संवर्धितां यथा शक्त्यलंकृतामिमां तुलसीं देवी दामोदराय श्रीधराय वराय तुभ्यमहं संप्रददे।

इस तरह संकल्प करके विष्णु के आगे जल छोड़े। प्रार्थना करें।

पार्वतीभ्यो संभूतां वृन्दाभस्मनि संस्थितां।
अनादिमयनिधना वल्लभां ते ददाम्यहम्।। १ ।।
पयोघटेश्च सेवाभिः कन्यावद वाद्धतामया।
त्वत्प्रियांतुलसी तुभ्यं दास्यामि त्वं गृहाणभो।। २ ।।

फिर विष्णु के हाथ से तुलसी का स्पर्श करके आचार्य व अन्य ब्राह्मण मंत्र पढ़ें।

ततो देवहस्तस्पर्श तुलस्याः कृत्वा।
कदं कस्मा अदात्कामः कामाया दात्कामो।।
दाता कामः प्रतिगृह्णामि कामं।।
समुद्रमाविश कामेन त्वा प्रतिगृह्णामि कामैतत्ते।
वृष्टिरसि द्योस्त्वा ददातु पृथिवी प्रतिगृह्णातु।।

यजमान तुलसी की ओर हाथ जोड़कर कहें।

त्वं देवि मेऽअग्रतो भूयास्तुलसी देवी पार्श्वतः।
देवी त्वं पृष्ठतोभूयास्त्वद्दाननान्मोक्षमाप्नुयाम्।।
दानस्य प्रतिष्ठासिद्ध्यर्थमिमां दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे।

इसके बाद भगवान को दक्षिणा अर्पण करें।

अंचल ग्रंथि बंधनं

तुलसी को जो ओढ़ना ओढ़ाणा है उससे ग्रंथि बंधन करके विष्णु का स्पर्श करें। इसके बाद ब्राह्मण **स्वस्तिसूक्त, शांतिसूक्त** पढ़ें।

इसके पश्चात् ॐ नमो भगवते वासुदेवाय इष्ट मंत्र की १०८ आहुति वेदी विधान पूर्वक देवें।

कुशकण्डिका हवन

(ब्रह्मा से अन्वारब्ध करें)

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये।। १ ।। (इतिमनसा)
ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय।। २ ॥ इत्याधारौ।
ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये।।
ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय।। इत्याज्य भागौ।

अग्निपूजनं

अन्वारब्ध हटा लेवें। हाथ में अक्षत लेकर अग्नि का आवाहन करें।

ॐ शांतिके वरदनाम्ने वैश्वानराय नमः।

विवाहे योजकनाम्ने वैश्वानराय नमः।।

सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पादीनि समर्पयामि। स्रुवे गंधं वस्त्रं च।

पुनः अन्वारब्ध करें। एवं आहुति प्रदान करें।

ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये।। ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे।।

ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय ।। एता महाव्याहृतयः।।

ॐ त्वन्नो अग्नेवरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिपीष्ठाः।

यजिष्ठो वन्हितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा ७ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा।।

इदमग्निवरुणाभ्यां न मम।। १ ॥

ॐ सत्वन्नो अग्नेऽवमोभवोतीनेदिष्ठो अस्याऽउषसोव्युष्टौ अवयक्ष्वनो

व्वरुण ६ रराणोव्वीहि मृडीक ६ सुहवो नऽएधि स्वाहा।।

इदमग्नि वरुणाभ्यां न मम।। २ ॥

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य नभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽअसि।

अयानो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषज ७ स्वाहा।।

इदमग्नये अयसे न मम ।। ३।।

ॐ ये ते शतं व्वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा व्वितता महान्तः।

तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा।।

इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।। ४।।

ॐ उदुत्तमं व्वरुण पाशमस्मदवाधमं व्विमध्यम ६ श्रथाय।

अथा व्ययमादित्य व्व्रते तवानागसो ऽ अदितये स्याम स्वाहा।।

इदं वरुणदित्यायदितये न मम।। ५।।

ब्रह्मा से अन्वारब्ध हटाकर हवन करें।।

पुरुषसूक्त की आहुति तथा **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** मंत्र की १०८ आहुति प्रदान करें।

लोकाचार के अनुसार भाई बंधु भी दान दक्षिणा विष्णु को अर्पण करें।।
ब्रह्मा से अन्वारब्ध करें। आहुति देवें।

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।।

स्विष्टकृत् होमः ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदं स्विष्टकृते न मम।।

संस्रवप्राशनम्

प्रोक्षणी पात्र में से यजमान प्राशन्न ग्रहण करें। **प्रणीता पात्र** को ईशान में उलट दें।

मंत्र : **ॐ दुर्मित्रायास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं चं वयं द्विष्मः।**

बर्हिर्होमः

आस्तरण क्रम से रखी हुई कुशाओं को उठाकर घी में भिगोकर हाथ से आहुति दें।

ॐ देवागातु विदो गातुं वित्वा गातु मित।
मनसस्पतऽइदं यज्ञ ७ स्वाहा व्वाते धाः स्वाहा।।

(पूर्णाहुति न दद्यात्‌विवाहे न करणीयम्)

त्र्यायुष करणम्

ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने। इति ललाटे।।

ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्। इति ग्रीवायाम्।।

ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्। इति दक्षिण बाहुमूले।।

ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्। इति हृदि।।

महाआरती

इसके बाद तुलसी सहित श्री विष्णु की महाआरती करें। यजमान बंधु-बांधव सहित इनके व अग्नि सहित चार परिक्रमा करें। पुष्पांजलि अर्पण करें।

आचार्य दक्षिणा भूयसी दक्षिणा प्रदान करें।

ब्राह्मण भोजन संकल्प करें।

(इति तुलसी विवाह)

श्री महालक्ष्मी पूजन

कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावस्या को भगवती श्री महालक्ष्मी एवं भगवान् श्री गणेश की नूतन प्रतिमाओं का प्रतिष्ठा पूर्वक विशेष पूजन किया जाता है। पूजन के लिए किसी चौकी अथवा कपड़े के पवित्र आसन पर गणेशजी के दाहिने भाग में माता महालक्ष्मी को स्थापित करना चाहिए। मूर्तिमयी श्री महालक्ष्मीजी के पास ही किसी पवित्र पात्र में केसरयुक्त चन्दन से अष्टदल कमल बनाकर उसपर द्रव्य-लक्ष्मी (रुपयों) को भी स्थापित करके एक साथ ही दोनों की पूजा करनी चाहिए।

सर्वप्रथम पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख हो आचमन, पवित्रीधारण, मार्जन-प्राणायाम कर हाथ में जल-अक्षतादि लेकर पूजन का संकल्प करें।

देशकालौ सङ्कीर्त्य....स्थिरलक्ष्मीप्राप्त्यर्थं श्री महालक्ष्मी प्राप्त्यर्थं सर्वारिष्टनिवृत्तिपूर्वकसर्वाभिष्टफलप्राप्त्यर्थम् आयुरारोग्येश्वार्याभि-वृद्ध्यर्थं व्यापारे लाभार्थं च गणपतिनवग्रह-कलशादिपूजनपूर्वकं श्री महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-लेखनी-कुबेरादीनां च पूजनं करिष्ये, कहकर जल छोड़ें। पश्चात् गणपति, कलश और नवग्रहादि का पूजन करके महालक्ष्मी का पूजन करें।

ध्यान

ॐ या सा पद्मासनस्थाविपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी।
गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया।।
या लक्ष्मीर्दिव्य-रूपैर्मणिगणखचितैःस्नापिता हेमकुम्भैः।
सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता।।

इसके पश्चात् षोडशोपचार से लक्ष्मीजी का पूजन करें ।

१. आवाहन **'ॐ हिरण्यवर्णाम्'** इस मन्त्र से आवाहन करें।

२. आसन **'ॐ तां म ऽआवह'** इस मन्त्र से आसन समर्पण करें।

३. पाद्य	'**ॐ अश्वपूर्वाम्**' इस मन्त्र से पाद्य समर्पण करें।
४. अर्घ्य	'**ॐ कां सोस्मिताम्**' इस मन्त्र से अर्घ्य दें।
५. आचमन	'**ॐ चन्द्रां प्रभासाम्**' इस मन्त्र से आचमन करावें। अनन्तर पञ्चामृत से स्नान करावें।
६. स्नान	'**ॐ आदित्यवर्णे**' इस मन्त्र से स्नान करावें। अनन्तर पञ्चोपचार से पूजन कर बाद में '**ॐ हिरण्यवर्णाम्**' इत्यादि १६ मन्त्रों से लक्ष्मीजी का अभिषेक करें।
७. वस्त्र	'**ॐ उपैतु माम्**' इस मन्त्र से वस्त्र चढ़ावें।
८. उपवस्त्र	'**ॐ क्षुत्पिपासामलाम्**' इस मन्त्र से कंचुकी (चोली) चढ़ावें।
९. गन्धाक्षत	'**ॐ गन्धद्वाराम्**' इस मन्त्र से चन्दन चढ़ावें।
१०. पुष्प	'**ॐ कर्दमेन**' इस मन्त्र से पुष्प चढ़ावें।
११. सौभाग्यद्रव्य	'**ॐ मनसः कामम्**' इस मन्त्र से सौभाग्यद्रव्य, सिन्दूर आदि चढ़ावें।
१२. धूप	'**ॐ आपः सृजन्तु**' इस मन्त्र से धूपबत्ती दिखावें।
१३. दीप	'**ॐ आर्द्रां पुष्करिणीम्**' इस मन्त्र से दीपक दिखावें।
१४. नैवेद्य	'**ॐ आर्द्रां यः करिणीम्**' इस मन्त्र से नैवेद्य समर्पण करें।
१५. दक्षिणा	'**ॐ तां म ऽआवह**' इस मन्त्र से दक्षिणा अर्पण करें

अथाङ्गपूजा

ॐ चपलायै नमः पादौ पूजयामि। ॐ चञ्चलायै नमः जानुनी पूजयामि। ॐ कमलायै नमः कटिं (कमर) पूजयामि। ॐ कात्यायन्यै नमः नाभिं (नाभि) पूजयामि। ॐ जगन्मात्रे नमः जठरं पूजयामि। ॐ विश्ववल्लभायै नमः वक्षस्थलं पूजयामि। ॐ कमलवासिन्यै नमः भुजौ (दोनों भुजाएँ) पूजयामि। ॐ

पद्मकमलायै नमः मुखं (मुख) पूजयामि। ॐ कमलपत्राक्ष्यै नमः नैत्रत्रयं (तीनों नेत्र) पूजयामि। ॐ श्रियै नमः शिरः (मस्तक) पूजयामि। महालक्ष्म्यै नमः सर्वाङ्गं पूजयामि। अंग पूजा समाप्त।

पूर्वादिक्रम से आठों दिशाओं में अष्टसिद्धि की पूजा करें।

ॐ अणिम्ने नमः। ॐ महिम्ने नमः। ॐ गरिम्णे नमः। ॐ लघिम्ने नमः। ॐ प्राप्त्यै नमः। ॐ प्राकाम्यै नमः। ॐ ईशितायै नमः। ॐ वशितायै नमः। ।। इति अष्टसिद्धिपूजन।।

इसी प्रकार पूर्वादिक्रम से अष्टलक्ष्मी पूजन करें।

ॐ आद्यलक्ष्म्यै नमः। ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः। ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः। ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः। ॐ कामलक्ष्म्यै नमः। ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः। ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः। ॐ योगलक्ष्म्यै नमः।

।। इति अष्टलक्ष्मीपूजन।।

महाकाली पूजन

दवात में मौली बाँध तथा स्वस्तिक बनाकर नीचे लिखा ध्यान करें।

ॐ मसि त्वं लेखनीयुक्ता चित्रगुप्ताशयस्थिता।
सदक्षराणां पत्रे च लेख्यं कुरु सदा मम।।
या मया प्रकृतिः शक्तिश्चण्डमुण्डविमर्दिनी।
सा पूज्या सर्वदेवैश्च ह्यस्माकं वरदा भव।।

ॐ श्री महाकाल्यै नमः

पूजन कर नीचे लिखी प्रार्थना करें...

ॐ या कालिका रोगहरा सुवन्द्या वैश्यै समस्तैर्व्यवहारदक्षैः।
जनैर्जनानां भयहारिणी च सा देवमाता मयि सौख्यदात्री।।

लेखनी पूजन

कलम पर मौली बाँधकर नीचे लिखा ध्यान करके पूजन करें।

ॐ शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं।
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।।
हस्ते स्फाटिक मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।।
।। लेखिन्यै नमः ।।

पूजन कर नीचे लिखी प्रार्थना करें...

ॐ कृष्णानने ! द्विजिह्वे ! च चित्रगुप्तकरस्थिते।
सदाक्षराणां पत्रे च लेख्यं कुरु सदा मम।।

बही, वसना आदि में केशर या रोली से स्वस्तिक बनाकर नीचे लिखा ध्यान करके पूजन करें....

ॐ या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेत पद्मासना।।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा।।
।। वीणापुस्तकधारिण्यै नमः ।।

पूजन कर नीचे लिखी प्रार्थना करें...

ॐ शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे।
सर्वदासर्वदाऽस्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात्।।

कुबेर पूजन

संदूक आदि में सिन्दूर से स्वष्तिक बनाकर, आवाहन करके पूजन करें।

आवाहयामि देव त्वमिहायाहिकृपां कुरु।
कोशं वर्द्धय नित्यं त्वं परिरक्ष सुरेश्वर।।

प्रार्थना..

ॐ धनाध्यक्षाय देवाय नरयानोपवेशिने।
नमस्ते राजराजाय कुबेराय महात्मने।।

तुला तथा मान-पूजा

सिन्दूर से स्वष्तिक बनाकर पूजन करें पश्चात् नीचे लिखी प्रार्थना करें।

नमस्ते सर्वदेवानां शक्तित्वे सत्यमाश्रिते।

साक्षीभूता जगद्धात्री निर्मिता विश्वयोनिना।।

दीपावली पूजन

दीप जलाकर पात्र में रखकर, पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें।

भो दीप त्वं ब्रह्मरूप अन्धकारनिवारक।

इमां मया कृतां पूजां गृह्णंस्तेजः प्रवर्धय।।

॥ ॐ दीपेभ्यो नमः।।

आरती एवं पुष्पाञ्जलि करें...

१६. नमस्कार - 'ॐ यः शुचि' इस मन्त्र से नमस्कार करें ।

पश्चात्

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।

न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्योवन्दे तमच्युतम्।।

इस मन्त्र को कहकर

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

इस प्रकार तीन बार कहें।

श्रीमद्भागवत पूजन विधि

प्रात:काल स्नान के पश्चात् अपना नित्य-नियम समाप्त करके पहले भगवत्सम्बन्धी स्तोत्रों एवं पदों के द्वारा मङ्गलाचरण एवं वन्दना करें। इसके बाद आचमन और प्राणायाम करके....

ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ३ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।

इत्यादि मन्त्रों से शान्तिपाठ करें। इसके पश्चात् भगवान् श्रीकृष्ण, श्री व्यासजी, शुकदेवजी तथा श्रीमद्भागवत-ग्रन्थ की षोडशोपचार से पूजा करनी चाहिए। निम्नाङ्कित वाक्य पढ़कर पूजन के लिए संकल्प करना चाहिए। संकल्प के समय दाहिने हाथ की अनामिका अङ्गुलि में पवित्री पहनें और हाथ में जल लिए रहें।

संकल्प वाक्य इस प्रकार है...

ॐ तत्सत् ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः....अमुकगोत्रोत्पन्नस्य अमुक-शर्मणः (वर्मणः गुप्तस्य वा) मम सकुटुंबस्य सपरिवारस्य श्री गोवर्धनधरणचरणारविन्दप्रसादात् सर्वसमृद्धिप्राप्त्यर्थं भगवद-नुग्रहपूर्वकभगवदीयप्रेमोपलब्धये च गणपति नवग्रह कलशादि-पूजनपूर्वकं श्री भगवन्नामात्मकभगवत्स्वरूपश्रीभागवतस्य-पाठेऽधिकार-सिद्ध्यर्थं श्रीमद्भागवतस्य प्रतिष्ठां पूजनं चाहं करिष्ये।

इस प्रकार संकल्प करके...

तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शंयोऽस्मभ्यमिदमस्तु शस्तम्।
अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे वृहते सादनाय।।

यह मन्त्र पढ़कर श्रीमद्भागवत की सिंहासन या अन्य किसी आसन पर स्थापना करें। तत्पश्चात् पुरुषसूक्त के एक-एक मन्त्र द्वारा क्रमशः षोडश उपचार अर्पण करते हुए पूजन करें।

प्रार्थना

वन्दे श्रीकृष्णदेवं सुरनरकमिदं वेदवेदान्तवेद्यं।
लोके भक्तिप्रसिद्धं यदुकुलजलधौ प्रादुरासीदपारे।।
यस्यासीद् रूपमेवं त्रिभुवनतरणे भक्तिवच्च स्वतंत्रं।
शास्त्रं रूपं च लोके प्रकटयति मुदा यः स नो भूतिहेतुः।।
श्री भागवतरूपं तत् पूजयेद् भक्तिपूर्वकम् ।
अर्चकायाखिलान् कामान् प्रयच्छति न संशयः।।

विनियोग

दाहिने हाथ की अनामिका में कुश की पवित्री पहन लें। फिर हाथ में जल लेकर नीचे लिखे वाक्य को पढ़कर भूमि पर गिरा दें।

ॐ अस्य श्रीमद्भागवताख्यस्तोत्र मन्त्रस्य नारद ऋषिः। बृहती छन्दः। श्रीकृष्णः परमात्मा देवता। ब्रह्म बीजम्। भक्तिः शक्तिः। ज्ञानवैराग्ये कीलकम्। मम श्रीमद्भागवत्प्रसादसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

नारदर्षये नमः शिरसि।।१।।बृहतीच्छन्दसे नमो मुखे।।२।।श्रीकृष्ण-परमात्मदेवतायै नमो हृदये।। ३।। ब्रह्मबीजाय नमो गुह्ये।। ४।। भक्तिशक्त्यै नमः पादयो।। ५।। ज्ञानवैराग्यकीलकाभ्यां नमो नाभौ।। ६।। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

पहला वाक्य पढ़कर दाहिने हाथ की अङ्गुलियों से सिर का स्पर्श करें, दूसरा वाक्य पढ़कर मुख का, तीसरे वाक्य से हृदय का, चौथे से गुदा का, पाँचवें से पैरों का, छठें से नासिका और सातवें वाक्य से सम्पूर्ण अङ्गों का स्पर्श करना चाहिए।

करन्यास - ॐ

करन्यास इसमें **'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'** इस द्वादशाक्षर मन्त्र में एक-एक अक्षर प्रणव से सम्पुटित करके दोनों हाथों की अङ्गुलियों

में स्थापित करना है। मन्त्र नीचे दिये जा रहें हैं।

ॐ ॐ ॐ नमो दक्षिणतर्जन्याम्।
ॐ नं ॐ नमो दक्षिणमध्यमायाम्।
ॐ मों ॐ नमो दक्षिणानामिकायाम्।
ॐ भं ॐ नमो दक्षिणकनिष्ठिकायाम्।
ॐ गं ॐ नमो वामकनिष्ठिकायाम्।
ॐ वं ॐ नमो वामानामिकायाम्।
ॐ ते ॐ नमो वाममध्यमायाम्।
ॐ वा ॐ नमो वामतर्जन्याम्।
ॐ सुं ॐ नमः ॐ दें ॐ नमो दक्षिणाङ्गुष्ठपर्वणोः।
ॐ वां ॐ नमः ॐ यं ॐ नमो वामाङ्गुष्ठपर्वणोः।

अङ्गन्यास

यहाँ द्वादशाक्षर मन्त्र के पदों का हृदयादि अङ्गों में न्यास करना है।

ॐ नमो हृदयाय नमः।
ॐ भगवते नमः शिरसे स्वाहा।
ॐ वासुदेवाय नमः शिखायै वषट्।
ॐ नमो नमः कवचाय हुम्।
ॐ नमो नमः नेत्राभ्यां वौषट्।
ॐ वासुदेवाय नमः अस्त्राय फट्।

ध्यान

किरीटकेयूरमहार्हनिष्कैर्मण्युत्तमालङ्कृतसर्वगात्रम्।
पीताम्बरं काञ्चनचित्रनद्धं मालाधरं केशवमभ्युपेमि।।

ध्यान के बाद श्रीमद्भागवत का पाठ प्रारम्भ करना चाहिए।

संतानगोपाल मन्त्र

संतान प्राप्ति के लिए : पुत्र प्राप्ति के लिए यह अमोघ मन्त्र है। श्रद्धा से अनुष्ठान करने से दैवी संतान होता है। तदर्थ गणपति पूजन, पुण्याहवाचन तथा दशांश होम की विधि जान लें। स्वयं अनुष्ठान करना चाहें तो ब्राह्मण से विधि जानें। होम ब्राह्मण से करावें।

संकल्प : मम (यजमानस्य) आत्मनः श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं पुत्रसन्तति प्राप्त्यर्थं लक्षात्मकं श्रीगोपालसंतान मंत्रस्य जपानुष्ठानं (दशांश होम ब्राह्मण भोजनादि) करिष्ये।

तदर्थ प्रतिदिन गणेश पूजन, विष्णु पूजन, ब्राह्मण पूजन, न्यासादि करें। अधिक ब्राह्मण हों तो कम दिन में भी यह अनुष्ठान हो सकता है।

संकल्प

अस्य श्रीगोपाल संतान मंत्रस्य नारदऋषिः अनुष्टुप् छन्दः संतानप्रदः श्रीकृष्णो देवता ग्लौं बीजम् नमः शक्तिः पुत्रप्राप्त्यर्थं जपे विनियोगः।

षडंगन्यासाः

ॐ देवकीसुत अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। गोविन्द तर्जनीभ्यां नमः। वासुदेव मध्यमाभ्यां नमः। जगत्पते अनामिकाभ्यां नमः। देहि मे तनयं कृष्ण कनिष्ठिकाभ्यां नमः। त्वामहं शरणं गतः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादिन्यासाः।

ध्यानम्

विजयेन युतो रथस्थितः प्रसमानीय समुद्रमध्यतः।
प्रददौ तनयान् द्विजन्मनः स्मरणीयो वसुदेवनन्दनः।।

भगवान का पूजन, अभिषेक, मालापूजन आदि करके जप करें।

मन्त्र : ॐ (श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं)

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वाम् अहं शरणं गतः।।

(मन्त्र के अर्थ का ध्यान रखते हुए जप करें। प्रभु से पुत्र प्राप्ति के लिए भावार्द्र हृदय से याचना करें। जप पश्चात् षडंगन्यास, सायं पूजन, आरती आदि करें। लक्षजप होने पर दशांश होम करें। सवा लक्ष जप करने पर होम का फल मिलता है। यह सिद्ध मन्त्र है। सात्विक ब्राह्मणों से यथाविधि अनुष्ठान एवं दक्षिणा देने पर अभीष्ट सिद्धि होती है।)

जन्मोत्सव विधि

ब्राह्म मुहूर्त में उठकर स्नान करने हेतु निम्न संकल्प करें....

स्नानसङ्कल्प

अद्येहेत्याद्युच्चार्य्य अमुकगोत्रोऽमुकराशिरमुकशर्म्माहं आयुरभिवृद्धये संवत्सराविच्छिन्नसुखप्राप्ति कामस्शीतलोदकेन स्नानं करिष्ये।

स्नान कर सन्ध्यादि नित्यकर्म सम्पादित करें। यदि जन्म शनिवार या मङ्गलवार को हुआ हो तो तत्सूचित दोष परिहार के लिए आठ मुट्ठी धान या अन्य कोई अनाज ब्राह्मण को देकर नया वस्त्र निम्न विनियोग मन्त्र पढ़कर पहनें।

परिधास्यै इत्याथर्वणऋषिः पंक्तिश्छन्दो वासोदेवता वस्त्रपरिधाने विनियोगः। ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुष्ट्वाय जरदष्टिरस्मि शतं च जीवामि शरदः पुरूची रायस्पोषमभिसंव्ययिष्ये।।

नया वस्त्र धारण कर निम्न विनियोग एवं मन्त्र पढ़कर उत्तरीय (दुपट्टा) धारण करें।

यशसामेत्याथर्वणऋषिः पंक्तिश्छन्दः लिङ्गोक्ता देवता उत्तरीय-परिधाने विनियोगः। ॐ यशसा मा द्यावापृथिवी यशसेन्द्रा-बृहस्पती यशो भगश्च मा विन्दद्यशो मा प्रतिपाद्यताम्।

यदि दुपट्टा न हो तो कोई भी अश्वेत वस्त्र पहन नीम, गुग्गुल, दूव, गोरोचन आदि की पोटली बना निम्न मन्त्र से प्रतिष्ठा करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः पोटलिके सुप्रतिष्ठिता वरदा भव च।

उक्त पोटली को दाहिने हाथ में बाँध लें। पुनः गणेश पूजन करें। सम्भव हो तो कलश स्थापन करें। पुनः प्रधान संकल्प करें।

प्रधान संकल्प

अद्येहेत्यादि अमुकगोत्रोऽमुकराशिरमुकशर्माहं ममायुष्याभिवृद्धये वर्षवृद्धिकर्म करिष्ये तदङ्गत्वेन दध्यक्षतपुञ्जेषु आवाहितानां कुलदेवतादिषष्ठीदेवीपर्य्यन्तानां कलशे आवाहितानां ब्रह्मवरुणसहितादित्यादिनवग्रहाणां च पूजनं करिष्ये।

थाली में नया सफेद वस्त्र फैलाकर दही एवं अक्षत लेकर निम्न कुलदेवता से षष्ठी देवी तक का पूजनार्थ आवाहन करें।

1. **ॐ भूर्भुवः स्वः कुलदेवते इहागच्छेहतिष्ठ पूजार्थं त्वामावाहयामि।**
2. **ॐ भूर्भुवः स्वः स्वनक्षत्रेश अमुक इहागच्छेहतिष्ठ पूजार्थं त्वामावाहयामि।**
3. **ॐ भूर्भुवः स्वः प्रकृतिपुरुषात्मकमातापितरौ इहागच्छतं इहतिष्ठतं पूजार्थं युवामावाहयामि।**
4. **ॐ भूः० ब्रह्मन् इहागच्छेहतिष्ठ पू०**
5. **ॐ भूः० भानो इहा०**
6. **ॐ भूः० विघ्नेश इहा०**
7. **ॐ भूः० मार्कण्डेय इहा०**
8. **ॐ भूः० बले इहा०**
9. **ॐ भूः० व्यास इहा०**
10. **ॐ भूः० जामदग्न्य राम इहा०**
11. **ॐ भूः० अश्वत्थामा इहा०**
12. **ॐ भूः० कृपाचार्य्य इहा०**

13. ॐ भूः० प्रहलाद इहा०

14. ॐ भूः० हनुमन् इहा०

15. ॐ भूः०विभीषण इहा०

16. ॐ भूर्भुवः स्वः षष्ठीदेवि इहागच्छेहतिष्ठ पूजार्थं त्वामावाहयामि

आवाहन करें तथा षष्ठी देवी पर्यन्त का ध्यान करें

ॐ भूर्भुवः स्वः कुलदेवतादिदेवताः षष्ठीदेवीपर्य्यन्ताः इहागच्छन्तु इह तिष्ठन्तु सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु,ॐ वरदाभयपाणय इति मार्कण्डेयध्याने ।

विशेषः

ॐ द्विभुजं, जटिलं, सौम्यं, सुवृद्धं चिरजीविनम्।
मार्कण्डेयं नरो भक्त्या पूजयेत्प्रयतः शुचिः।।

इनका ध्यान कर नाममात्र से पूजन करें..

ॐ कुलदेवतायै नमः। ॐ जन्मनक्षत्रेशाय अमुकाय नमः। ॐ प्रकृतिपुरुषात्मकमातापितृभ्यां नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ भानवे नमः। ॐ विघ्नेशाय नमः। ॐ मार्कण्डेयाय नमः। ॐ बलये नमः। ॐ व्यासाय नमः। ॐ अश्वत्थाम्ने नमः। ॐ कृपाचार्याय नमः। ॐ प्रहलादाय नमः। ॐ हनुमते नमः। ॐ विभीषणाय नमः। ॐ षष्ठीदेव्यै नमः।

ॐ जोड़कर प्रत्येक नाम मन्त्र से षोडशोपचार पूजन, आरती कर नवग्रहों का भी नाम लेते हुए पुष्पाञ्जलि समर्पित करें। पुनः...

मार्कण्डेय की प्रार्थना

मार्कण्डेय महाभाग सप्तकल्पान्तजीवन।
आयुरारोग्यसिद्धयर्थमस्माकं वरदो भव ।।
चिरजीवी यथा त्वं भो भविष्यामि तथा मुने।
रूपवान्वित्तवाँश्चैव श्रिया युक्तश्च सर्वदा।।

मार्कण्डेय नमस्तेस्तु सप्तकल्पान्तजीवन।
आयुरारोग्यसिद्ध्यर्थं प्रसीद भगवन्मुने।।
चिरजीवी यथा त्वं तु मुनीनां प्रवर द्विज।
कुरुष्व मुनिशार्दूल तथा मां चिरजीविनम्।।

पुनः षष्ठी प्रार्थना -

जय देवि जगन्मातर्जगदानन्दकारिणि।
प्रसीद मम कल्याणि महाषष्ठि नमोस्तुते।।
रूपं देहि यशो देहि भगं भगवति देहि मे।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान्कामाँश्च देहि मे।।
त्रैलोक्ये यानिभूतानि स्थावराणि चराणि च।
ब्रह्मविष्णुशिवैः सार्द्धं रक्षां कुर्वन्तु तानि मे।।

प्रार्थना कर अंजलि से मार्कण्डेय के लिए निवेदित दूध को पांच बार पीयें।

मन्त्र -

सतिलं गुडसम्मिश्रमञ्जल्यर्द्धमितं पयः।
मार्कण्डेयाद्वरं लब्ध्वा पिबाम्यायुःप्रवृद्धये।।

मुख धोकर दक्षिणा देने हेतु संकल्प करें।

अद्येहेत्यादि अमुकराशिरमुकशर्म्माहं आयुरभिवृद्धये कृतायाः कुलदेवतादीनाम् आदित्यादिनवग्रहाणां च पूजायाः साद्गुण्यार्थमिमां दक्षिणां ब्राह्मणेभ्यो विभाज्य दास्ये ॐ तत्सत् तथा यथोपन्नेनान्नेन ब्राह्मणाश्च भोजयिष्ये।

अभिषेक, तिलक, मन्त्र आदि कराकर घृतछाया, ब्राह्मणभोजन पूर्वक स्वयं भोजन करें।

खण्डनं नखकेशानां मैथुनाध्वगमौ तथा।
आमिषं कलह-हिंसां वर्षवृद्धौ विवर्ज्जयेत्।।

।।इति।।

संक्षिप्तयज्ञोपवीतधारणविधिः

आचम्य। प्राणानायम्य। संकल्पः अत्राद्य...मासे.... पक्षे....तिथौ... वासरे एवं ग्रहगणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ मम अमुकगोत्रोत्पन्नस्य अमुकशर्मणः (वर्मणः, गुप्तस्य वा) श्रौतस्मार्तकर्मानुष्ठानसिद्ध्यर्थं अमुक कर्मांगत्वेन नवीनं यज्ञोपवीतधारणम् अहं करिष्ये।

यज्ञोपवीत प्रक्षालनम्

ॐ आपो हिष्ठा० यज्ञोपवीतं करसंपुटे धृत्वा दशवारं गायत्रीं जपेत्।

तंतुदेवता आवाहनम्

प्रथमतंतौ ॐ काराय नमः ॐ कारं आवाहयामि स्थापयामि।
द्वितीयतंतौ अग्नये नमः अग्निं ०।
तृतीयतंतौ नागेभ्यो नमः नागान्०।
चतुर्थतंतौ सोमाय नमः सोमं०।
पंचमतंतौ पितृभ्यो नमः पितृन्०।
षष्ठतंतौ प्रजापतये नमः प्रजापतिं ०।
सप्तमतंतौ अनिलाय नमः अनिलं०।
अष्टमतंतौ यमाय नमः यमं०।
नवमतंतौ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः विश्वान् देवान्० यज्ञोपवीतग्रंथिमध्ये ब्रह्मविष्णुरुद्रेभ्यो नमः ब्रह्मविष्णुरुद्रान् आवा० (ऋग्वेदं प्रथमदोरके न्यसामि। यजुर्वेदं द्वितीयदोरके न्य०। सामवेदंतृतीयदोरके न्य०। अथर्ववेदं ग्रन्थे न्यसामि।) आवाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत। पंचोपचारैः मानसोपचारैः वा पूजनम्।

ध्यानम्

प्रजापतेर्यत् सहजं पवित्रं कार्पाससूत्रोद्भवब्रह्मसूत्रम्।
ब्रह्मत्वसिद्ध्यै च यशःप्रकाशं जपस्य सिद्धिं कुरु ब्रह्मसूत्रम्॥

सूर्याय दर्शयेत् ॐ तच्चक्षुः०

यज्ञोपवीतधारणं

यज्ञोपवीतमिति मंत्रस्य परमेष्ठी ऋषिः लिंगोक्ता देवता त्रिष्टुप् छन्दः यज्ञोपवीतधारणे विनियोगः।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीते नोपनह्यामि। यज्ञोपवीतं धारयित्वा आचमनं। द्वे त्रीणि वा धारयेत्

जीर्णयज्ञोपवीतत्यागः

एतावद्दिनपर्यंतं ब्रह्म त्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात् त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथा सुखम्।।

शुद्धभूमौ निधाय यथाशक्ति गायत्रीजपं कुर्यात्।

अर्पणम्

अनेन गायत्रीजपकर्मणा श्रीसवितादेवता प्रीयताम्।

संकल्पः

अनेन कर्मणा मम श्रौतस्मार्तकर्म अनुष्ठान सिद्धिद्वारा श्री भगवान् परमेश्वरः प्रीयतां न मम।।

।। इति संक्षिप्त यज्ञोपवीत धारणविधिः ।।

अथ संक्षिप्तदंपतीप्रायश्चित्तसंकल्पः

हस्ते जलमादाय... अद्येत्यादि० तिथौ मम अनेकजन्मनीह जन्मनि वा जन्मतोऽद्यदिनं यावद्बालयौवन-वार्धक्येषुजाग्रत्स्वप्न सुषुप्त्यवस्थासु वाङ्मनःकायकृतानां बुद्धिपूर्वकाणां सकृदभ्यास-विषयाणां ज्ञाताज्ञात कामाकामस्पृष्टास्पृष्ट-भुक्ताभुक्त-पीतापीत गुरुलघुपातकोपपातक-मध्ये संभावितपापानां नाशार्थं प्रायश्चित्त-महं याचयिष्ये।। ब्रह्महा मद्यपः स्तेयी गुरुतल्पगः इत्येतेषां संसर्गित्वम्।।गोवधः, व्रात्यता, स्तेयम्, ऋणानपक्रिया, अनाहिताग्निता, अपण्यविक्रयः, परिवेदनं, भृतकाध्ययनाध्यापने, स्त्रीशूद्र-विट्क्षत्रवधः, अशुष्कद्रुमच्छेदन, निंदितार्थोपजीवनं, नास्तिक्यं, व्रतलोपः, सुतविक्रयः, धान्यपुष्पपशुस्तेयम्, अयाज्ययाजनं, पितृ-मातृसुतभार्यात्यागः, तडागारामविक्रयः,हिंसया चौषधेन-जीवनं, हिंसकप्रवर्तनं, द्यूतादिव्यसनम्, आत्मविक्रयः, शूद्रप्रेष्यता, हीनयोनिनिषेवणम्, अनाश्रमित्वं, परान्नपुष्टता, असच्छात्राभिगमनम्, असत्प्रतिग्रहः, निन्दितान्नादनं, मिथ्याभि-शंसनं, क्रोधोत्पादनं, गुरौमहाद्वेषः, अभक्ष्यभक्षणम्, अलेह्यलेहनम्, अचौष्यचोषणम्, अखाद्यखादनम्, अशक्तौ शय्यायां स्थितिः, औषधादीनां भक्षणम्, अप्रतिकूल-व्रतादिकरणम्, सहशयनासन-भोजनसम्पर्ककरणम्, एकादशाह-नारायण-बल्यादि-जातकर्मादि सीमन्तोन्नयनान्नभक्षणं, घृतरहितकुत्सितान्नभोजनं, प्रायश्चित्तान्न-भोजनं, सूर्योदयास्तसमये भोजनं, दीपरहितान्नभोजनं स्नानरहितान्न-भोजनं, वह्नौ पादप्रतापनं, गुरुदेवद्विजाभिमुखपादप्रसारणम्, पितृमातृ-ज्येष्ठभ्रातृ-गुर्वादीनां वचनाकरणम्, शरणागततापाहरणं, पतितगीताश्रवणं, देवब्राह्मणद्रव्यहरणं, गोवृषभताम्रतिलतुलसी-

दर्भादीनां पादस्पर्शनं, साधु-साध्वी वृथाकरणं, गोविक्रय मनुष्यविक्रय-कन्याविक्रय, जलदधिदुग्धमधु-घृतलवणादि-रसविक्रय, हेमरजतादिधातुविक्रय, काष्ठतृणादिविक्रय, दिवामैथुनं, विश्वासघातकरणं, अगम्यागमनमगम्यगमनं, जल-मध्येमुखदर्शनं, तर्जन्यादंतशोधनं, विवाहितायाः पुनर्विवाहकरणं, मातापितृवाक्येन स्वीयस्त्रीत्यागकरणं, साधुसाध्वीषु द्वेषकरणं, माताशिश्वोः वियोगकरणं, लशूनगृंजन द्रव्यहरणं, विधर्मिशाला-प्रवेशः, वनशालाप्रवेशः, यतिम्लेच्छहीन-जातिगृहप्रवेशः, विण्मूत्राद्यमेध्यवस्तुस्पर्शे स्नानाकरणम्, अवाच्यवाचनं, ग्रामवन गृहतृणादिनानाविध-जीवदाहकरणं, कठोरवाक्येन परहृदय-दाहकरणं, आत्मस्तुतिकरणं, हरिहरयोर्विभेदगणनं, कन्यादेव-वेदस्मृतिब्राह्मण-पुराण तीर्थादिनिन्दाकरणं, स्वेदजांडजोद्भिज्ज-रायुज-नानाविधप्राणीनां हिंसाकरणं, श्वानमार्जारादिमुखस्पर्श, गणगणिका-कुब्जसूतिका बलात्कारास्नेह, गुदडधि-मिश्रिता-नैवेद्यशिवनिर्माल्यरजस्वलावीक्षितासंकल्पितानामत्रितपतितान्न-भक्षणं, स्वजनमित्रद्रोहकरणं, कूटसाक्षिभाषणं, सेतुदेवालयगृह-यात्रा-देवदर्शन चातुर्वर्ण्य भंगकरणं, धर्म-न्याय-ब्राह्मण-मान-प्रतिमा महाजलाशय वाटिका-कूपवापी-खंडनं, द्यूतक्रीडा-जलमध्येनग्नक्रीडा नग्नस्नानं, नग्नशयनकरणं ताम्रपात्रेपयःपानं पाखंडपैशुन-भूतप्रेतपिशाचराक्षसयक्षिण्याद्युन्मतोपासनम्, अनध्यायाध्ययनाध्यापनकरणं, वेदविभैष्टिकाग्निश्रोतृ-श्रौतस्मार्तादि कर्मवित्तपस्विब्रह्मचारिमस्करि निंदाकरणं, रजक-नट-बर्बर-कैवर्तक-भिल्ल मेह-म्लेच्छादीनां प्रतिग्रहकरणं, कार्पास-लवण-माष-लोहानां प्रतिग्रहणकरणं, देवप्रतिमा-यज्ञोपवीत-कुश-रुद्राक्ष-तुलसीमाला-विद्यासरस्वती-पुस्तकादीनां

विक्रयकरणं देवगुरुपूजाव्युत्क्रमणं, चरणेन चरणप्रक्षालनं कुग्रामवासः, असाक्षितांबूलभक्षणं, एकादशी-जन्माष्टमी-शिवरात्री-रामनवम्यादिषु अनन्तांबूल-स्त्रक्चंदनांगीकारः, अमावास्याप्रतिपदष्टमी व्यतिपात-संक्रात्यादिकालेषु तैलाभ्यंग-करणं, पुत्रप्रसूतेःप्राक्पुत्रीगृहे भोजनं, मासिक-त्रैपाक्षिक-षाण्मासिकोनमासिकादि निषिद्धान्नभोजनं, प्रेतस्थानासनभोजनं, सूतकेषु दशाह्नयन्तभोजनं, परपीडनं च कायिक-वाचिक-मानसिक-सांगर्गिकोत्पन्नानां पापानां नाशार्थं नरकादिभय निवारणार्थम् उपविष्टब्राह्मणानामनुज्ञया सभ्योपविष्टेन यथाप्रत्याम्नायद्वारा प्रायश्चित्तमहमाचरिष्ये।।

।। इति संक्षिप्तदंपतीप्रायश्चित्तसंकल्पः ।।

स्त्रीप्रायश्चित्तप्रयोगः

सुवर्णनारिकेलकुशतिल यवाक्षतान् गृहीत्वा स्त्री श्रृणुयात्....

पाणिग्रहणमारभ्य स्वकर्मपरिपालनम् ।
इंद्रियाभिरतिस्त्रीणां नानाजातिषु या भवेत्।।
कृमिकीटादिदहनं पंक्तिभेदादिकं तथा।
पतिशुश्रूणाभावो रतिभेदादिकं तथा ।।
स्पृष्टास्पृष्टमनाचारं मनसा दोषकल्पितम्।
तस्य सर्वस्य नाशार्थं प्रायश्चित्तं करोम्यहम्।।
पतिरेव गुरुस्त्रीणां दैवतं पतिरेव च।
पतिशुश्रूषणं तस्मात् स्त्रीणां धर्मास्सनातनः।।

(कुरूप कृच्छितदुर्वृत्त दुःस्वभाव रोगान्वित पिशाचग्रस्त मद्यप क्रोधवत् वृद्ध-अविदग्ध-मूर्ख बधिरांध रौद्र दरिद्रि-कंदर्प-ललनालंपटो भर्ता स्त्रीभिर्न त्याज्यःकिन्तु तस्य शुश्रूषा कर्तव्या अतः बालयौवन वार्द्धकेषु स्वतंत्रकरणं भर्ताहंकार क्रोधकरणं

पतिमनसि व्यथोत्पादनं परपुरुषनिरीक्षण संभाषणादि संसर्गादि अंगदर्शन-नग्नदर्शन-जनित हर्षस्वेद रोमांचोद्भवोदयं गंधर्वादिपुरुषस्य सुखश्रवणं विदेशस्थे भर्तरि हरिद्रा कुंकुम कज्जल सिंदूर कार्पास पुष्पाभरण-केशसंस्करणम् स्वदेशस्थे भर्तरि कुवस्त्रधारणं तिलकांजल पर्यटनं च आलस्येन बहुशयनं निद्रा कलहोच्चैर्हास्यकरणम् अंगुष्ठस्य वस्त्राणां वेष्टनं च रजक्यादि-दुर्भगायाः भर्तुर्द्वेषिण्यां उदक्या सह संवसनम् असंमार्जित चुल्यामग्निस्थापनम् असंमार्जितपेषण्यां पेषणम् असंशोधित पर्युषित जलेनान्न पचनं गुरुब्राह्मण पतिसन्निधौ उच्चासनोपवेशनं, भर्तुरननुज्ञया स्वबंधुभ्यः अन्नवस्त्र धनदानं, तृषिते क्षुधिते भर्तरि जलान्नस्वीकरणं, क्षेत्रादागते भर्तरि प्रत्युत्थानासनोदक दानाकरणं पतिपादोदकाग्रहणं, पतिसेवायाम् अनादरकरणं, बंधुभुवने चिरकालवसनं, कुत्सितायाः मृतवत्सायाः रौद्रकथाश्रवणं गुर्वान्नाहारः, भर्तुः पूर्वशयनम्।। विधवाविषये विशेषः मृते भर्तरि सह गमनाकरणं केशसंरक्षणं कंचुकीधारणं द्विवारभोजनं परशय्यास्पर्शः शयनं स्त्रक्चंदन तांबूलपरिमल द्रव्यस्वीकरणं शरीरपोषणम् आलस्येन शय्यासनस्थ भोजनं आरब्धवर्तानाम् अनुद्यापनम्) इत्यादि ज्ञाताज्ञात कामाकाम मनोवाक्काय कृतानां सर्वेषां पापानां दोषपरिहारार्थं यथाशक्ति प्राजापत्य प्रायश्चित्त प्रत्याम्नायीभूतमिदं गोमिथुनीभूतं द्रव्यं गन्धपुष्पाद्यर्चितं सभोपविष्ट ब्राह्मणेभ्योऽहं दास्ये।। इति स्त्रीप्रायश्चित्तप्रयोगः।।

अथ दशविधस्नानम्

भस्मस्नानम्

यथाग्निर्दहते भस्म तृणकाष्ठादि संचयम्।
तथा मे दहता पापं कुरु भस्म शुचे शुचिम्।।

मृत्तिकास्नानम्

अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुंधरे।
शिरसा धारयिष्यामि रक्षस्व मां पदे पदे।।
उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना ।
मृत्तिके हर मे पापं यन्मया दृष्कृतं कृतम्।।
मृत्तिके ब्रह्मपूताऽसि काश्यपेनाभिवन्दिता।
मृत्तिके देहि मे पुष्टिं त्वयि सर्वं प्रतिष्ठितम्।।

गोमयस्नानम्

गोमये वसते लक्ष्मीः पवित्रा सर्वमङ्गला।
स्नानार्थं संस्कृतं देवि पापं मे हर गोमय।।
अग्रमग्रं चरन्तीनामोषधीनां वने वने।
ताषामृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम्।
यन्मे रोगं च शोकं च तन्मे दहतु गोमय।।

पञ्चगव्यस्नानम्

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्।
सर्वपापविशुद्ध्यर्थं पञ्चगव्यं पुनातु माम्।।

गोरजस्नानम्

गवां क्षुरेण निर्धूतं यद्रेणु गगने गतम्।
शिरषा तेन संलेपो महापातकनाशनम्।।

धान्यस्नानम्

धान्यौषधि मनुष्याणां जीवनं परमं स्मृतम्।
तेन स्नानेन देवेश मम पापं व्यपोहतु।।

फलस्नानम्

वनस्पतिरसो दिव्यः फलपुष्पवृतः सदा।
तेन स्नानेन मे देव फलं लब्धमनन्तकम्।।

सर्वौषधिस्नानम्

ओषध्यः सर्ववृक्षाणां तृणगुल्मलतोद्भवाः।
दूर्वासर्षपसंयुक्ताः सर्वौषध्यः पुनन्तु माम्।।

कुशोदकस्नानम्

कुशमूले स्थितो ब्रह्मा कुशमध्ये जनार्दनः।
कुशाग्रे शङ्करः प्रोक्तः तेन नश्यतु पातकम्।।

हिरण्यस्नानम्

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदं मम पापं व्यपोहतु।।

ततो गंगोदकस्नानम्। शुद्धोदकस्नानञ्च।

।। इति दशविधस्नानम्।।

गोमुख प्रसवशान्ति

अशुभनक्षत्र, अशुभयोग, अशुभतिथि आदि में बालक का जन्म होने पर शान्ति का विधान है। प्रसव अरिष्ट निवारणार्थ प्रथम गोमुख प्रसव गाय के मुख से प्रसव कराना चाहिए। अगर बालक बड़ा हो तो गोस्पर्श, गोवंदन आदि करें।

विधि :-आचमनम्। प्राणायामः। शान्तिसूक्तपाठः। देवतानमस्कारः।

संकल्प

ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः.....अस्य शिशोः अमुक नक्षत्र, योग, तिथि, काल (अनिष्ट काल का उल्लेख करें) जनन सूचित अरिष्ट शान्ति अर्थं श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं गोमुखप्रसवं शान्तिं करिष्ये।

पुनर्जलमादाय

तदंगत्वेन दिग्रक्षणं कलशार्चनं गणेशपूजनं आचार्यवरणं च करिष्ये।

गणेश पूजन व आचार्य वरण पश्चात् आचार्य अक्षत से अष्टदल बनाकर, उसके ऊपर सूप में ब्रीहि डालकर, उसके ऊपर रक्तवस्त्र बिछाकर उसके ऊपर तिल डालकर, पूर्वाभिमुख बालक को रखकर सूप के ऊपर सूत लपेटकर बालक के पास गाय को लावें। गाय मुँह से बालक का स्पर्श करें। गाय के बालक का जन्म हुआ ऐसा सोचें। गाय की प्रार्थना करें...

ॐ त्र्यविश्च मे त्र्यवी च मे दित्यवाट् च मे दित्यौही च मे पञ्चाविश्च मे पञ्चावी च मे त्रिवत्सश्च मे त्रिवत्सा च मे तुर्यवाट् च मे तुर्यौही च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। षष्ठवाट् च मे पष्ठौही च म ऽ उक्षा च मे बसा च म ऽ ऋषभश्च मे वेहच्च मेऽ नड्वाँश्च मे धेनुश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।

गौ से बालक का जन्म हुआ ऐसी भावना करें....

ॐ विष्णुयोनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिशतु।
आसिंचतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते।।
गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति।
गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्त्रजा।।
हिरण्यमयी अरणीयं निर्मन्थतो अश्विना।
तं ते गर्भ हवामहे दशमे मासि सूतवे।।

पश्चात् निम्न श्लोक से गाय का स्पर्श करें...

ॐ गवां अंगेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश।
यस्मात् तस्मात् शिवं मे स्यात् इह लोके परत्र च।।

पश्चात् निम्न मंत्र से आचार्य बालक को माता की गोंद में दें...

ॐ विष्णोः श्रेष्ठेन रूपेण गवि नार्यां प्रसूतवे।
पुत्रान् पुमांसमाधेहि दशमे मासि सूतवे।।

पश्चात् माता पिता को दें और पिता माता को दें। फिर वस्त्र हटाकर

माता-पिता बालक का मुख देखें। पंचगव्य से स्नान करावें....

ॐ आपो हिष्ठा०

आदि तीन मंत्र एवं अन्य मन्त्र पढ़ें...

ॐ व्वाचं ते शुन्धामि प्राणन्ते शुन्धामि चक्षुस्ते शुन्धामि श्रोत्रन्ते शुन्धामि नाभिस्ते शुन्धामि मेढ्रन्ते शुन्धामि पायुं ते शुन्धामि चरित्राँस्ते शुन्धामि।। मनस्त आप्यायन्तां वाक्त आप्यायतां प्राणस्त आप्याय-ताञ्चक्षुस्त आप्यायता ॐ श्रोत्रं त आप्यायताम्। यत्ते क्रूरं यदास्थितं तत्त् आप्यायतान्निष्टयायतान्तत्ते शुध्यतु शमहोभ्यः। ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैन ꣳ हि ꣳ सीः।।

अपवित्रः पवित्रो०

बालक को शुद्ध कर पिता निम्न मन्त्र से मस्तक को सूँघें...

ॐ अंगादंगात् संभवसि हृदयादधि जायसे।
आत्मा वै पुत्र नामासि स जीव शरदां शतम्।।

इस मन्त्र से तीन बार सूँघकर माँ को दें। पञ्चवाक्य से पुण्याहवाचन करें...

भो ब्राह्मणाः गोमुखप्रसवकर्मणः पुण्याहं...कल्याणं....ऋद्धिं.... स्वस्तिं....श्रीम् अस्तु इति भवन्तः ब्रुवन्तु.... ।।

आचार्य को गाय और अन्य दान दें। पञ्चभूसंस्कार पूर्वक स्थंडिल ऊपर अग्नि स्थापन करें। केवल नवग्रह का स्थापन पूजन करें। कुशकंडिका करें। अग्नि के ईशान कोण में पीठ पर श्वेत वस्त्र बिछाकर, अष्टदल बनाकर, पूर्णपात्रान्त कलश स्थापन कर उसमें पंचगव्य, पीपल, वट, उदुम्बर आदि दूधवाले वृक्षों के पत्तों को पानी में उबालकर कषाय बनाकर कलश में डालें और तिल भी डालें। वहाँ तीन देवों का आवाहन करें...

ॐ तद्विष्णोः परमं पद ꣳ सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुम् आवाहयामि। स्थापयामि।
भो विष्णो इह आगच्छ इह तिष्ठ।।

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्त दाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो व्वरुणेहबोध्युरुश ँ समान आयुः प्रमोषीः।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय०।

ॐ नाशयित्री बलासस्यार्शसऽउपचितामसि । अथो शतस्य यक्ष्माणाम्पाकारोरसि नाशनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यक्ष्मणे नमः। यक्ष्माणम् आवाहयामि। स्थापयामि। भो यक्ष्मन् इह आगच्छ इह तिष्ठ।।

ॐ मनोजूतिः० आवाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत।

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णु आदि स्थापित देवताभ्यो नमः ध्यायामि, यथाशक्ति पूजयेत्।

द्रव्यत्याग संकल्पः। वराहुतिः। प्रत्येक ग्रहाणां अष्टौ आहुतयः। विष्णु आदि स्थापित देवतानां मिलित दधि मधु आज्यैः होमः। विष्णोः एकाहुतिः वरुणस्य चत्वारः यक्ष्मणः अष्टौ अष्टाविंशतिः वा नाममन्त्रेण मन्त्रेण वा।

उत्तरतंत्रम्

पूजा स्विष्टं नवाहुतयः बलिः पूर्णाहुतिः संस्रवप्राशनम्। पवित्राभ्यां मार्जनम्। अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः। पूर्णपात्रदानम्। प्रणीताविमोकः। संकल्पः। देवताविसर्जनम्।।

होम आदि ग्रहशान्ति के अनुसार करें। उत्तरतंत्र विविध संकल्प आवश्यकतानुसार करें। आशीर्वाद से समापन करें।

आशीर्वाद अष्टक

ब्राह्मणा ऊचुः-

पार्थ प्रजविता साक्षात् इक्ष्वाकुरिव मानवः।
ब्रह्मण्यः सत्यसंधश्च रामो दाशरथिर्यथा।।

एष दाता शरण्यश्च यथा ह्यौशीनरः शिबिः।
यशोवितनिता स्वानां दौष्यन्तिरिव यज्वनाम्।।
धन्विनामग्रणीरेषः तुल्यश्चार्जुनयोः द्वयोः।
हुताश इव दुर्धर्षः समुद्र इव दुस्तरः।।
मृगेन्द्र इव विक्रान्तो निषेव्यो हिमवानिव।
तितिक्षुः वसुधेवासौ सहिष्णुः पितराविव।।
पितामहसमः साम्ये प्रसादे गिरिशोपमः।
आश्रयः सर्वभूतानां यथा देवो रमाश्रयः।।
सर्वसद्गुण माहात्म्ये एष कृष्णमनुव्रतः।
रन्तिदेव इवोदारो ययातिरिव धार्मिकः।।
धृत्या बलिसमः कृष्णे प्रह्लाद एव सद्ग्रहः।
आहर्तैषोऽश्वमेघानां वृद्धानां पर्युपासकः।।
राजर्षीणां जनयिता शास्ता चोत्पथगामिनाम्।
निग्रहीता कलेरेष भुवो धर्मस्य कारणात्।।

।। इति गोमुखप्रसवशान्तिः ।।
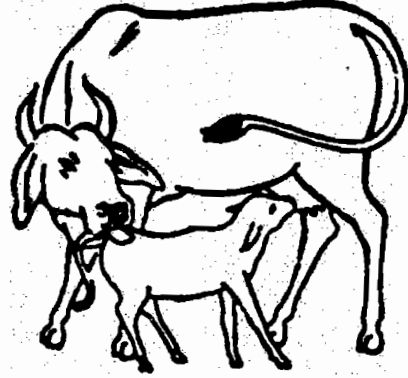
आश्लेषाशांतिप्रयोग

आश्लेषा के कोई भी पाद में जन्म हो तो शांति करनी चाहिए । जन्म पश्चात् बारहवें दिन, पुनः जन्मनक्षत्र के दिन (अर्थात् २६ दिन पश्चात्) अथवा शुभ दिन में करें । गोमुखप्रसव शांति प्रथम करें ।

आचमन, प्राणायाम, शांतिपाठ, तिलकधारण, देवता नमस्कार आदि पूर्ववत् ।

संकल्प

देशकालौ संकीर्त्य, गोत्रोच्चारः, अस्य बालकस्य आश्लेषा जनन सूचित सर्व अरिष्ट परिहार द्वारा श्री परमेश्वरप्रीत्यर्थम् आश्लेषा जनन शान्तिं करिष्ये । पुनः जलम् आदाय-तदंगतया गणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्धारा पूजनम् आयुष्यमंत्रजपं नांदीश्राद्धम् आचार्यादिऋत्विक् वरणं च करिष्ये ।

रुद्रकलशस्थापनम्

श्वेतवस्त्र बिछाकर पंचवर्ण के तंडुल से स्वस्तिक करें । पाँच कलश महीद्यौ० इत्यादि से पूर्णपात्र स्थापन तक कर्म द्वारा अभिमंत्रित कर के स्वस्तिक पर स्थापन करें-मध्य में एक तथा चार दिशा में चार । मध्य कलश में आपोहिष्ठा० मंत्र से पंचगव्य भी डालें । उसके ऊपर अग्न्युत्तारणपूर्वक सुवर्ण की रुद्र प्रतिमा का स्थापन करें । ॐ त्र्यंबक० इत्यादि मंत्र से षोडशोपचार पूजा करें । एक विप्र रुद्रसूक्त एवं चमकानुवाक का जप करें । अन्य चार कलश में, पूर्व कलश में रक्तचंदन, कमल, नीलोत्पल, प्रियंगु, शुंठी, आमलक, सर्षप, अगर, उशीर, दक्षिण कलश में पंचामृत, तीर्थोदक, सप्तधान्य, सुर्वण, पश्चिम कलश में सप्तमृद्, चतुष्पथ मृत्तिका तथा उत्तर कलश में मुक्ता, प्रवाल, आदि पंचरत्न, पंचपल्लव, निंब, कदंब, वट, उदुंबर, आम्र आदि की त्वचा, सर्व कूप जल डालें । चारों कलश को स्पर्श कर के क्रमशः **शांतिसूक्त, अग्निसूक्त, अप्रतिरथसूक्त** का पाठ एवं **रक्षोघ्नमंत्र** का जप करें ।

प्रधानदेवतास्थापन

श्वेतवस्त्र बिछाकर, अक्षत से अष्टदल तथा चतुर्विंशतिदल बनाकर उसके ऊपर कलश स्थापन करें । उसमें शतऔषधि अथवा जितनी औषधी मिलें, विष्णुक्रान्ता, सहदेवी, तुलसी, शतावरी, कुश, दूर्वा आदि डालें । तदुपरि सुर्वण की सर्पप्रतिमा स्थापित करें ।

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । येऽ अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।। याऽ इषवो यातुधानानां ये वा वनस्पतीं २ रनु। ये वावटेषु शेरते तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।। ये वामी रोचने दिवो ये वा सूर्य्यस्य रश्मिषु । येषामप्सु सदस्कृतं तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।

एह्येहि नागेन्द्र धराधरेश सर्वामरैर्वंदितपादपद्म ।
नानाफणा मंडल राजमान गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पाय नमः सर्पम् आ० स्था० ।। पूर्वादि दिक्षु नागाष्टकम् आवाहयेत् । ॐ अनंताय० वासुकये० तक्षकाय० कर्कोटकाय० पद्माय० शेषाय० कंबलाय० शंखपालाय० आ०स्था० ।। कालियाय नमः इति नवनागाः ।

(सर्प पूजन के लिए आवश्यक विशेषमंत्र नागपूजन में दिये गये हैं । नवनाग के श्लोक नागस्तोत्र आदि का प्रयोग करें ।)

तत् दक्षिण कलशे पुष्याधिपतिं बृहस्पतिं स्थापयेत् - ॐ बृहस्पतेऽअति यदर्योऽ अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवसऽ ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ।।

देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसंनिभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्याधिष्ठित बृहस्पते इहागच्छ इह तिष्ठ वरदो भव।।

वाम कलशे मघाधिपतीन् पितृन् आवाहयेत्

ॐ उदीरतामवरऽ उत्परासऽ उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः । असुंयऽईयुर-वृकाऽऋतज्ञास्तेनोवन्तु पितरो हवेषु ।। सुखाय पितृन् कुलवृद्धि कर्तृन् रक्तोत्पलाभान् इह रक्तनेत्रान् । सुरक्तमाल्यांबर भूषितान् च नमामि पीठे कुलवृद्धि हेतोः । ॐ भूर्भुवः स्वः मघाधिष्ठित पितरः इहागच्छत इत तिष्ठत वरदा भवत ।

इस प्रकार तीन कलश स्थापन करने के पश्चात् चतुर्विंशति दल में शेष चौबीस नक्षत्र के अधिदेवता का आवाहन स्थापन पूर्वादि क्रम से करें । आवाहयामि स्थापयामि इहागच्छ इह तिष्ठ वरदो भव आदि उच्चारण करें।

नक्षत्रनाम	देवतानाम	मंत्रप्रतीक
पूर्वाफाल्गुन्यधिष्ठित	भगाय नमः	ॐ भगप्रणेत०
उत्तराफाल्गुन्यधिष्ठित	अर्यम्णे नमः	ॐ तान्पूर्वया०
हस्ताधिष्ठित	सूर्याय नमः	ॐ चित्रदेवाना०
चित्राधिष्ठित	त्वष्ट्रे नमः	ॐ त्वष्टातुरीयो०
स्वात्यधिष्ठित	वायवे नमः	ॐ वायो ये ते०
विशाखाधिष्ठितौ	इन्द्राग्नीभ्यां नमः	ॐ इन्द्राग्नीऽआगत०
अनुराधाधिष्ठित	मित्राय नमः	ॐ मित्रस्य चर्षणि०
ज्येष्ठाधिष्ठित	इन्द्राय नमः	ॐ त्रातारमिन्द्र०
मूलाधिष्ठित	निर्ऋतये नमः	ॐ असुन्वन्त०
पूर्वाषाढाधिष्ठित	वरुणाय नमः	ॐ तत्वायामि०
उत्तराषाढाधिष्ठित	विश्वेभ्योदेवेभ्यो०	ॐ विश्वेदेवास०
श्रवणाधिष्ठित	विष्णवे नमः	ॐ इदं विष्णुः०
धनिष्ठाधिष्ठित	अष्ट वसुभ्यो नमः	ॐ वसुभ्यस्तवा०
शतभिषाधिष्ठित	वरुणाय नमः	ॐ उदुतम०
पूर्वाभाद्रपदाधिष्ठित	अजैक पदे नमः	ॐ समुद्रोऽसि०
उत्तराभाद्रपदाधिष्ठित	अहिर्बुध्न्याय नमः	ॐ उतनोऽहिर्बुध्न्यः०

रेवत्यधिष्ठित	पूष्णे नमः	ॐ पूषन्तव०
अश्विन्यधिष्ठित	अश्विभ्यां नमः	ॐ या वां कशा०
भरण्यधिष्ठित	यमाय नमः	ॐ यमाय त्वा०
कृत्तिकाधिष्ठित	अग्नये नमः	ॐ त्वं नो अग्ने तव०
रोहिण्यधिष्ठित	प्रजापतये नमः	ॐ प्रजापते०
मृगशीर्षाधिष्ठित	सोमाय नमः	ॐ वय ᳬ सोम०
आर्द्राधिष्ठित	रुद्राय नमः	ॐ नमस्तेरुद्रः०
पुनर्वस्वधिष्ठित	अदितये नमः	ॐ अदितिर्द्यौ०
पुष्याधिष्ठित	बृहस्पतये नमः	ॐ बृहस्पते०
आश्लेषाधिष्ठित	सर्पेभ्यो नमः	ॐ नमोऽस्तु०
मघाधिष्ठित	पितृभ्यो नमः	ॐ उदीरतामवर०

पश्चात् इन्द्रादि दिक्पालों का आवाहन करें –

पूर्वे इंद्राय नमः। आग्नेयां अग्नये नमः। दक्षिणे यमाय नमः। नैर्ऋत्यां निर्ऋतये नमः। पश्चिमे वरुणाय नमः। वायव्यां वायव्याय नमः। उत्तरे सोमाय नमः। ईशान्यां ईशानाय नमः। ऊर्ध्वं ब्रह्मणे नमः। अधः अनंताय नमः। प्रतिष्ठापन करें। ॐ मनोजूति० ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पादि आवाहितदेवता सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवत। लाभोपचारैः पंचोपचारै वा पूजनम् – लं पृथव्यात्मक० पश्चात् सर्प आदि तीन देवताओं की षोडशोपचार पूजा करें। महिम्नः स्तोत्र से अभिषेक ।। पूजा समाप्ति ।।

अग्निस्थापनं, ग्रहस्थापनम् पूजनम् – कुशकंडिकां समाप्य आघारौ आज्यभागौ हुत्वा वरदनामाग्निं संपूज्य द्रव्यत्यागं कृत्वा वराहुतिं दत्वा ग्रहहोमं कुर्यात्।

प्रधानहोमः

घृतमिश्रित-पायस-समिदाज्य-चरुणा होमः। ॐ नमोऽस्तु

सर्पेभ्यो० १०८, ॐ बृहस्पते० २८, ॐ उदीरतामवर० २८, नव नागदेवतानां ८, भगादिनक्षत्र देवतानां प्रतिदेवता ८, दिक्पालानां ८, प्रतिद्रव्यम् ।। ततः पायसमध्ये तिलान् निक्षिप्य तेन कृसरेण प्रतिदेवतायाः अष्ट आहुतीः देयाः - ॐ निर्ऋतये० ॐ सवित्रे० ॐ रुद्राय० ॐ दुर्गायै० ॐ वास्तोष्पतये० ॐ अग्नये० ॐ क्षेत्राधिपतये० ॐ मित्रावरुणाभ्यां० ॐ अग्नये० ।। समिदाज्य-चरुद्रव्यैः अष्ट आहुतीः ॐ श्रियै नमः स्वाहा ।। केवल पायसेन अष्ट आहुतीः ॐ सोमाय स्वाहा ।। चतुर्वारं स्रुचिं पूरयित्वा ॐ त्र्यंबकं० रुद्राय स्वाहा इति चतुर्वारं होमः ।। आचारात् फलहोमः अन्यहोमाश्च । उत्तरतंत्रम् - पूजा स्विष्टं नवाहुतयः बलिः पूर्णाहुतिः तथा । श्रेयः संपादनम्।

अभिषेकः

शांति में अभिषेक का विशेष महत्व है । सभी कलशों का पानी पात्र में लेकर यजमान, पत्नी एवं शिशु पर शतछिद्र कुंभ रखकर अभिषेक करें ।

पौराणिक मंत्राः

योऽ सौ वज्रधरो देवो महेन्द्रो गजवाहनः ।
सार्पजातं शिशोर्दोषं मातापित्रोर्व्यपोहतु ।।
योऽ सौ शक्तिधरौ देवो हुतभुग् मेषवाहन ।
सप्तजिह्वश्च देवोऽग्निः सार्पदोषं व्यपोहतु ।।
योऽ सौ दंडधरो देवो धर्मो महिषवाहनः ।
सार्पजातशिशोर्दोषं व्यपोहतु यमो मम ।।
योऽ सौ खड्गधरो देवो निर्ऋती राक्षसाधिपः ।
प्रशामयतु सार्पोत्थं दोषं गंडांत संभवम् ।।
योऽसौ पाशधरो देवा वरुणश्च जलेश्वरः ।
नक्रवाहः प्रचेतानो सार्पोत्थाघं व्यपोहतु ।।

योऽ सौ देवो जगत्प्राणो मारुतो मृगवाहनः ।
प्रशामयतु सार्पोत्थं दोषं बालस्य शांतये ।।
योऽसौ निधिपतिर्देवः खड्गभृद् वाजिवाहनः ।
मातापित्रोः शिशोश्चैव सार्पदोषं व्यपोहतु ।।
योऽ सौ पशुपतिर्देवः पिनाकी वृषवाहनः ।
आश्लेषामूलगंडांतं दोषम् आशु व्यपोहतु ।।
विघ्नेशः क्षेत्रपो दुर्गा लोकपाला नवग्रहाः ।
सार्पदोषप्रशमनं सर्वे कुर्वन्तु शांतिदाः ।।
आश्लेषाऋक्षजातस्य मातापित्रोर्धनस्य च ।
भ्रातृज्ञातिकुलस्थानां दोषं सर्वं व्यपोहतु ।।
योऽ सौ वागीश्वरो नाम ह्यधिदेवो बृहस्पतिः ।
मातापित्रोः शिशोश्चैव गंडांतं संव्यपोहतु ।।
पितरः सर्वभूतानां रक्षंतु पितरः सदा ।
सार्पनक्षत्रजातस्य वित्तं च ज्ञातिबान्धवान् ।।

सुरास्त्वामभिषिंचंतु० अमृताभिषेकोऽस्तु ।। पश्चात् स्नात्वा मुखावलोकनं मातापित्रोः शिशोश्च घृतपूरिते कांस्यपात्रे- ॐ रूपेण वो रूप० ।

तिलपात्रदानं

ॐ व्रीहयश्चमे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियंगवश्च मेऽणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।।

अर्घदानं

ॐ सर्पाधीश नमस्तुभ्यं नागानां च गणाधिप ।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं सर्वारिष्ट प्रशांतये ।।

दक्षिणादानम्, सोपस्कारमंडलदानम्, पात्रादिदानम्, भोजनसंकल्पः ।

आशीर्वादः। देवताविसर्जनम्।

।। इति आश्लेषाशान्तिप्रयोगः ।।

ज्येष्ठाशांतिप्रयोग

ज्येष्ठा में शिशु का जन्म अशुभ दर्शक है। अतः अन्य शांति की तरह बारहवें दिन अथवा शुभदिन में यह विधि करें। गोमुखप्रसव शांति एवं आचमन, प्राणायाम, संकल्प, दिग्रक्षण, कलशार्चन, गणेशपूजन, मातृकापूजन, वसोर्द्धारा, नान्दीश्राद्ध, आचार्यादिवरण, अग्निस्थापन आदि नियमानुसार करें। नक्षत्र के अधिष्ठित देवता की सूचि मूलशांति में देखें।

संकल्प

देशकालौ संकीर्त्य...अस्य शिशोः ज्येष्ठाजनन सूचित सकल अरिष्ट प्रशमन द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं सग्रहमखां ज्येष्ठां शांतिम् अहं करिष्ये। तदंगत्वेन गणेशपूजनं पुण्याहवाचनं मातृका पूजनं वसोर्धारा पूजनं नांदीश्राद्धम् आचार्यादीनां वरणम् अग्निस्थापनं च करिष्ये।

इन्द्रस्थापनम्

पीठोपरि श्वेतवस्त्रं प्रसार्य तदुपरि अष्टदलं परितः षड्विंशति दलं कमलं विरच्य अष्टदले पूर्णपात्रान्त कलशं संस्थाप्य अग्नि-उत्तारणपूर्विकां इन्द्रमूर्तिं स्थापयेत् । ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवेहवे सुहव ꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ꣳ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः ।।

शचीपते महाबाहो सर्वाभरणभूषित ।
आगच्छ भगवन् इन्द्र स्थाने चात्र स्थिरो भव ।।
देवराज गजारूढ पुरंदर शतक्रतो ।
वज्रहस्त महाशक्ते वांछितार्थप्रदो भव ।।

एह्येहि सर्वामरसिद्धसाध्यैः अभिष्टुतो वज्रधरामरेश ।
संवीज्यमानोऽप्सरसां गणेन रक्षाध्वरं नो भगवन् नमस्ते ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ज्येष्ठाधिष्ठित इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ । वरदो भव । षड्विंशतिदलेषु निर्ऋत्यादि षड्विशं नक्षत्राधिष्ठित देवताः स्थापयेत्। मंडलाद् बहिः इन्द्रादि दिक्पालान् स्थापयेत् लाभोपचारैः पूजयेत् । अन्यपीठे श्वेतवस्त्रं प्रसार्य स्वस्तिकं कृत्वा पंच कलशान् पूर्णपात्रान्तान् संस्थाप्य तेषु पंचगव्यं, पंचामृतं, पंचरत्नं, सप्तमृद्, पंचपल्लवं आदि निक्षिप्य ।

मध्यकलशे

ॐ तत्वायामि० एह्येहि यज्ञे मम रक्षणाय यादोगणैः सार्धमपाम-धीश। झषाधिरूढ त्वमिह प्रभो मणि - रत्नप्रभाभास्वर पाशपाणे।

पूर्वकलशे

ॐ त्वन्नोऽअग्ने व्वरुणस्य व्विद्वान् देवस्य हेडोऽ अवया सिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वा द्वेषा ꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् ।।
नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमंगलाय ।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ।।

दक्षिणकलशे

ॐ सत्त्वन्नोऽअग्ने वमो भवोती नेदिष्टोऽअस्याऽ उषसो व्युष्टौ ।
अवयक्ष्वन्नो व्वरुण ꣳ रराणो व्वीहि मृडीक ꣳ सुहवो नऽएधि ।।

पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनी जीवनायक ।
यावत्पूजां करिष्यामि तावत् त्वं सुस्थिरो भव ।।

पश्चिमकलशे

ॐ व्वनेषु व्यन्तरिक्षं ततान वाजमर्वत्सु पयऽउस्त्रियासु । हृत्सु क्रतुं व्वरुणो व्विक्ष्वग्निं दिवि सूर्य्यमदधात् सोममद्रौ ।।

मकरस्थं पाशहस्तम् मंभसां पतिमीश्वरम् ।
आवाहये प्रतीचीशं वरुणं यादसां पतिम् ।।

उत्तर कलशे

ॐ निषसाद धृतवतो वरुणः पस्त्यास्वा साम्राज्याय सुक्रतु ।।
सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि जलदा नदाः ।
आगच्छन्तु पवित्राणि पूजाकाले सदा मम ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ वरदो भव ।। लाभोपचारैः वरुणं पूजयेत । पश्चात् विप्राः पूर्वादिक्रमतः शांतिसूक्तं, अग्निसूक्तं, रुद्रसूक्तं, त्र्यम्बकमंत्रं मध्यकलशे इन्द्रमंत्रं च कलशान् स्पृष्ट्वा जपेयुः ।। ततः ग्रहस्थापनं, द्रव्यत्यागं, ग्रहहोमं, प्रधानहोमं कुर्यात् । ॐ त्रातारमिन्द्र० १०८, नक्षत्रदेवतानां ८, लोकपालदेवतानां ८, त्र्यंबकमंत्रस्य १०८ आहुतयः देयाः । पूजा स्विष्ट नवाहुत्यः बलिः पूर्णाहुतिः तथा । श्रेयः संपादनं कृत्वा अभिषेकः पूर्वोक्त प्रकारेण पुराणोक्तमंत्रेषु ज्येष्ठा दोषं, ज्येष्ठोत्थं, ज्येष्ठानक्षत्र जातस्य – इत्यादि पठेत् । पश्चात् आज्यावलोकनं तिलपात्रदानं, दक्षिणासंकल्पः पूर्ववत्।

अर्घदानं

नमस्ते सुरनाथाय नमस्तुभ्यं शचीपते । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं गंडदोष प्रशान्तये ।। इति अर्घं निवेद्य आशीर्वादं गृहीत्वा देवताविसर्जनं कृत्वा आचार्यादीनां क्षमाप्रार्थना –

अज्ञानाद् दुर्मनस्याद्वा वैकल्यात् वा धनस्य च ।
यदपूर्णं भवेत्कृत्यं तत्सर्वं क्षन्तुमर्हसि ।।

इति नत्वा ब्राह्णान् भोजयेत् ।।

।। इति ज्येष्ठा शान्तिप्रयोगः ।।

मूलशांति

आचमनम्, प्राणायाम, तिलकधारणं, शांतिसूक्तपाठः, देवतानमस्कारः ।

संकल्पः

देशकालौ संकीर्त्य....मम अस्य शिशोः मूल प्रथमचरणादि जनन सूचित सर्व अरिष्ट निरसनार्थं शुभफल प्राप्ति अर्थम् आयुः आरोग्य धनधान्यादि समृद्धि कामनया श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं सग्रहमखां मूलजनन शांतिं करिष्ये ।

पुनः संकल्पः

तदंगतया दिग्रक्षणं कलशार्चनं गणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्द्धारां नान्दीश्राद्धं ब्राह्मणवरणम्, अग्निस्थापनं देवतास्थापनं च करिष्ये ।

रुद्रकलशस्थापनम्

प्राच्यां श्वेतवस्त्रं प्रसार्य स्वस्तिकं कृत्वा पूर्णपात्रान्तं कलशं, मध्यसंस्थाप्य चतुर्दिक्षु अन्यान् चतुरः कलशान् स्थापयेत् । मध्यकलशोपरि कृत अग्न्युत्तारणपूर्विकां सुवर्णमयीं रुद्रप्रतिमां संस्थाप्य ॐ त्र्यंबकं० लाभोपचारैः संपूज्य कलशं स्पृष्ट्वा रुद्राध्यायं पठेत् । चत्वारः ब्राह्मणाः चतुरः कलशान् स्पृष्ट्वा पूर्वादिक्रमतः *शांतिसूक्तम्, अग्निसूक्तम्, रुद्रसूक्तम् त्र्यंबकमंत्र जपेयुः ।*

प्रधानदेवतास्थापनम्

अन्य पीठोपरि श्वेतवस्त्रं प्रसार्य तदुपरि पंचवर्णैः तंडुलैः अष्टदलं च चतुर्विंशतिपत्रात्मकं पंकजं विरच्य अष्टदले पूर्णपात्रान्तं कलशत्रयं स्थाप्य, तेषु शतमूलानि, सहदेवी, विष्णुक्रान्तां, तुलसीं,

शतावरीं, कुशं कुंकुमं च प्रक्षिप्य मध्य कलशोपरि निर्ऋतिं वामे वरुणं च दक्षिणे इन्द्रं स्थापयेत् ।।

निर्ऋतिस्थापनम्

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य ।
अन्यमस्मदिच्छ सा त ऽ इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ।।
संस्मरेत् निर्ऋतिं श्यामं सुमुखं नरवाहनम् ।
रक्षोधिपं खड्गहस्तं दिव्याभरणभूषितम् ।।
एह्येहि रक्षोगणनायक त्वं विशाल वैताल पिशाचसंघैः ।
ममाध्वरं पाहि पिशाचनाथ लोकेश्वर त्वं प्रणमामि नित्यम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मूल नक्षत्राधिष्ठित भगवन् निर्ऋते इहागच्छ इह तिष्ठ वरदो भव ।।

दक्षिणकलशे इन्द्र स्थापनम्

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवे -हवे ँ सुहव शूरमिन्द्रम् ।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ँ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ।।
एह्येहि सर्वामरसिद्धसाध्यैः अभिष्टुतो वज्रधरामरेश ।
संवीज्यमानोऽ प्सरसां गणेन रक्षाध्वरन्नो भगवन्नमस्ते।।
देवराज गजारूढ पुरंदर शतक्रतो ।
वज्रहस्त महाबाहो वांछितार्थ प्रदो भव ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ज्येष्ठाधिष्ठित भगवन् इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ वरदो भव ।।

वामकलशे वरुणस्थापनम्

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यम ँ श्रयाय ।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसोऽ अदितये स्याम ।।

एह्येहि यज्ञे मम रक्षणाय यादोगणैः सार्धमपामधीश ।
झषाधिरूढ त्वमिह प्रभो मणि रत्नप्रभाभास्वर पाशपाणे ।।
आवाहयामि देवेशं वरुणं त्वां जलाधिपम् । यादः पृष्ठसमारूढं श्वेतछत्रं महाबलम् ।।
ॐ भूर्भुवः स्वः पूर्वाषाढाधिष्ठित भगवन् वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ वरदो भव ।। चतुर्विंशतिदले उत्तराषाढादि अनुराधांताः नक्षत्रदेवताः पूर्वादिक्रमेण स्थाप्या ।

सरलता के लिए स्वाहाकार साथ में दिया है । ॐ जोड़ दें ।

	नक्षत्र	देवता	नमः / स्वाहा
१	उत्तराषाढाधिष्ठित	विश्वेदेवा इहागच्छत इह तिष्ठत।	विश्वेभ्यो देवेभ्यः०
२	श्रवणाधिष्ठित	विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ ।	विष्णवे०
३	धनिष्ठा अधिष्ठिताः	अष्टवसवः इहागच्छत इह तिष्ठत।	अष्टवसुभ्यः०
४	शतभिषा अधिष्ठित	वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ ।	वरुणाय०
५	पूर्वाभाद्रपदा अधिष्ठित	अजैकपाद् इहागच्छ इह तिष्ठ।	अजैकपदे०
६	उत्तराभाद्रपदा अधितिष्ठत	अहिर्बुध्न्य इहागच्छ इह तिष्ठ ।	अहिर्बुध्न्याय०
७	रेवती अधिष्ठित	पूषन् इहागच्छ इह तिष्ठ।	पूष्णे०
८	अश्विनी अधिष्ठित	अश्विनौ इहागच्छतम् इह तिष्ठतम्।	अश्विभ्यां०
९	भरणी अधिष्ठित	यम इहागच्छ इह तिष्ठ ।	यमाय०
१०	कृत्तिका अधिष्ठित	अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ ।	अग्नये०
११	रोहिणी अधिष्ठित	प्रजापते इहागच्छ इह तिष्ठ ।	प्रजापतये०
१२	मृगशीर्ष अधिष्ठित	सोम इहागच्छ इह तिष्ठ ।	सोमाय०
१३	आर्द्रा अधिष्ठित	रुद्र इहागच्छ इह तिष्ठ ।	रुद्राय०
१४	पुनर्वसु अधिष्ठित	अदिते इहागच्छ इह तिष्ठ ।	अदितये०
१५	पुष्य अधिष्ठित	बृहस्पते इहागच्छ इह तिष्ठ ।	बृहस्पतये०

१६ आश्लेषा अधिष्ठित	सर्प इहागच्छ इह तिष्ठ ।	सर्पाय०
१७ मघा अधिष्ठित	पितरः इहागच्छत इह तिष्ठ ।	पितृभ्यः०
१८ पूर्वाफाल्गुनी अधिष्ठित	भग इहागच्छ इह तिष्ठ ।	भगाय०
१९ उत्तराफाल्गुनी अधिष्ठित	अर्यमन् इहागच्छ इह तिष्ठ ।	अर्यम्णे०
२० हस्त अधिष्ठित	सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ ।	सूर्याय०
२१ चित्रा अधिष्ठित	त्वष्टः इहागच्छ इह तिष्ठ ।	त्वष्ट्रे०
२२ स्वाती अधिष्ठित	वायो इहागच्छ इह तिष्ठ ।	वायवे०
२३ विशाखा अधिष्ठित	इन्द्राग्नी इहागच्छतम् इह तिष्ठतम् ।	इन्द्राग्नीभ्यां०
२४ अनुराधा अधिष्ठित	मित्र इहागच्छ इह तिष्ठ ।	मित्राय०
२५ ज्येष्ठा अधिष्ठित	इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ ।	इन्द्राय०
२६ मूल अधिष्ठित	निर्ऋते इहागच्छ इह तिष्ठ ।	निर्ऋतये०
२७ पूर्वाषाढा अधिष्ठित	वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ ।	वरुणाय०

ज्येष्ठा से पूर्वाषाढा नक्षत्रदेवता पूर्ण सूचि के लिए दिये हैं, जिससे अन्य शांति में सहायता मिले । इस शांति में उनका स्थापन हो चुका है ।

इन्द्रादि दशदिक्पालदेवतानां आवाहनम्

(नीचे होम में देखें)

ॐ मनोजूति० ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋत्यादि आवाहित देवताभ्यो नमः ध्यायामि - षोडशोपचारैः पूजनम् । नक्षत्रदेवतास्मरणम् - भेषादस्त्रय-माग्निकेन्दुगिरीशाः प्रोक्ताः अदित्यंगिराः, सर्पः कव्यभुजो भगो यमरवी त्वष्ट्रा समीरः क्रमात् । इन्द्राग्नीत्वथ मित्र इन्द्र निर्ऋतिः नीरं च विश्वे विधिः, वैकुंठो वसुपाश्यजैकचरणाहिर्बुध्न्य पूषाभिधाः ।।

ग्रहस्थापनम्

ग्रहपीठे ग्रहस्थापनम् अग्निप्रतिष्ठापनं गृह्यसूत्रानुसारं संपाद्य कुश-कंडिकां समाप्य आघारौ आज्यभागौ हुत्वा द्रव्यत्यागं कुर्यात् ।

अग्निपूजनम्

ॐ अग्ने नय सुपथा०

इष्टं शक्तिं स्वस्तिकाभीतिमुच्चै र्दीर्घैः दोर्भिः धारयन्तं जपाभम् ।
हैमं कल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं ध्यायेत् वह्निं बद्धमौलिं जटाभिः ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शांतिके वरद नामाग्नये नमः गंधं पुष्पं सम० नमस्कारः ।

वराहुतिः

ॐ गणानान्त्वा० गणपतये स्वाहा । पश्चात् ग्रहहोमः समित्-चरु-तिल-आज्येन ।

प्रधानदेवता होमः

ॐ असुन्वन्त० ॐ निर्ऋतये स्वाहा-१०८ । ॐ त्रातारमिन्द्र० ॐ इन्द्राय स्वाहा-२८ । ॐ उदुत्तमं० ॐ वरुणाय स्वाहा-२८ । नक्षत्रदेवतानां नाममंत्रेण अष्ट अष्ट आहुतयः । इन्द्रादि दशदिक्पालानां प्रतिद्रव्यं एक एक आहुतिः- ॐ इन्द्राय स्वाहा । अग्नये० यमाय० निर्ऋतये० वरुणाय० वायवे० सोमाय० ईशानाय० ब्रह्मणे० अनंताय स्वाहा ।

कृसरपायसहोमः

पायसमध्ये तिलान् निक्षिप्य प्रतिमंत्रं अष्ट आहुतीः देयाः ।। ॐ असुन्वन्त० ॐ निर्ऋतये नमः स्वहा-८ । ॐ सवितात्वा० ॐ सवित्रे नमः स्वाहा-८ । ॐ अम्बेऽअंबिके० ॐ दुर्गायै नमः स्वाहा-८ । ॐ नमो वात्याय च० ॐ वास्तोष्पतये नमः स्वाहा-८ ।

ॐ त्वन्नोऽअग्ने०

ॐ अग्नये नमः स्वाहा-८ । ॐ नहिस्पश० ॐ क्षेत्राधिपतये नमः स्वाहा-८ । ॐ हिरण्यरूपा० ॐ मित्रावरुणाभ्यां नमः स्वाहा-८ । ॐ अग्ने नय० ॐ अग्नये नमः स्वाहा-८ ।

लक्ष्मीहोमः

समित्-आज्य-चरुद्रव्यैः श्रीसूक्तेन प्रति मंत्रं होमः । अथवा ॐ श्रियै नमः स्वाहा-८ ।।

सोमहोमः

पायसद्रव्येण ॐ अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा । सोमाय पितृमते स्वाहा । अपहता ऽ असुरा रक्षा थ्ठसि वेदिषदः स्वाहा । अथवा ॐ सोमाय स्वाहा इतिनाममंत्रेण १३ आहुतीः देयाः ।।

रुद्रहोमः

स्त्रुचि मध्ये चतुर्वारं आज्यं गृहीत्वा - ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां० ॐ रुद्राय नमः स्वाहा ।। पश्चात् आचारात् फलहोमादि संपाद्य उत्तरतंत्रम् आरभेत् । पूजा स्विष्टं नवाहुतयः बलिः पूर्णाहुतिः तथा । प्रणीताविमोकः ।

अभिषेकः

ॐ सर्वौषधिभिः पितरं शिशुं चानुलिप्य नवंवस्त्रं परिधाय्य शतछिद्रं कुंभम् उपरि धृत्वा शूर्पमन्तर्धाय कलशजलैः अभिषिंचेयुः। अभिषेकेपत्नीवामतः। पुराणोक्तमंत्रेषु मूलदोषं, मूलोत्थं, मूलनक्षत्र-जातस्य इति ऊहः कार्यः । आश्लेषा शांति के अनुसार शेष कर्म करें । अभिषेकपश्चात् स्नात्वा मुखावलोकनम् कृत्वा घृतपात्रदानम्, तिलपात्रदानम्, दक्षिणासंकल्पः, ब्राह्मणभोजनसंकल्पः । देवतां संपूज्य विसर्जनम्, कर्मपूर्णतावाचनम् । कर्म ईश्वरार्पणम् इति।

।। मूलशांति नक्षत्रदेवता स्थापन ।।

इन्द्राय नमः

।। इति मूलशान्ति प्रयोगः ।।

वैधृतिशांति

वैधृति और व्यतीपात अमंगल माने गये हैं । व्यतीपात विषयक ज्योतिर्विदो में मतान्तर है । अतः स्वपंचांगानुसार निर्णय करें । शांति में प्रायः साम्य होने से वैधृति शांति का विस्तार से वर्णन दिया है । तदनुसार व्यतीपात शांति का जान लें । देवता भेद होने से आहुति भेद है । व्यतीपात शांति और संक्रातिशांति में नाममात्र भेद है । विधि एक ही है ।

संकल्प

देशकालौ संकीर्त्य....अस्य शिशोःवैधृति/व्यतीपात जनन सूचित सर्वारिष्ट प्रशमन द्वारा दारिद्र्यदुःखादि निवारणार्थं श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं वैधृति/व्यतीपात जनन शांतिं करिष्ये ।

पुनः जलम् आदाय

तत्रादौ दिग्रक्षणं कलशार्चनं गणेशाम्बिकापूजनं पुण्याहवाचनं
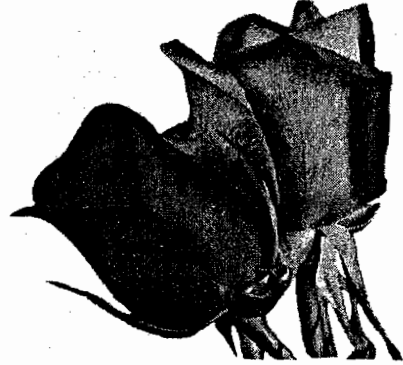
मातृकापूजनं आयुष्यमंत्र जप नान्दी श्राद्धं आचार्यादीनां वरणं अग्निस्थापनं गोमुखप्रसवशांतिं च करिष्ये ।

प्रधानदेवतास्थापनम्

पूर्व में काष्ठपीठ पर श्वेत वस्त्र बिछाकर उसके ऊपर पंचद्रोण व्रीहि बिछाकर उसके ऊपर ढाई द्रोण चावल बिछाकर उसके ऊपर सवा द्रोण तिल बिछायें । उसमें अष्टपत्र बनायें । पूर्णपात्रान्त कलश स्थापन करें । तीन कलश भी रख सकते हैं । मध्य में वैधृति (शिव) दक्षिण में सूर्य और बायीं ओर चन्द्र । तीनों मूर्तियों की पूजा करें ।

प्रधानदेवता स्थापनम् ॐ त्र्यंबकं यजामहे०

शान्तं पद्मासनस्थं शशिधरमुकुटं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं।
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणांगे वहन्तम्।।
नागं पाशं च घंटां डमरुकसहितं सांकुशं वामभागे।
नानालंकारदीप्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्र इहागच्छ इह तिष्ठ वरदो भव ।

अधिदेवतास्थापनम्

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ।
आ प्राद्यावापृथिवीऽअंतरिक्ष ँ सूर्यऽआत्मा जगतस्तस्थुषश्च।।
यस्योदयेनेह जगत्प्रबुध्यते, प्रवर्तते चाखिलकर्मसिद्धये ।
ब्रह्मेन्द्रनारायणरुद्रवन्दितः, स नः सदा यच्छतु मंगलं रविः ।।
ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ वरदो भव ।।

प्रत्यधिदेवता स्थापनम्

ॐ इमन्देवा ऽ असपत्न०

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुटभूषणम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ । ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राद्यावाहित

देवताभ्यो नमः ध्यायामि-लाभोपचारैः पूजयेत्। कुभं स्पृष्ट्वा रुद्रसूक्तं, अप्रतिरथसूक्तं, इन्द्रसूक्तं, त्र्यंबकमंत्रं च जपेयुः ।

आदित्यहृदय का भी पाठ करें ।

अग्निस्थापनम्, ग्रहस्थापनम्, कुशकुंडिका, ग्रहहोमः । समित् आज्य चरुद्रव्यैः प्रधानदेवतायाः ८०००, १०००, वा १०८ सूर्यसोमयोः १०८, २८ वा आहुतिः त्र्यम्बकमंत्रेण १०८ तिलाहुतिः। आचारप्राप्ताः होमाः फलहोमः, गुग्गुलहोमः, सर्षपहोमः, लक्ष्मी होमः व्याहृतिहोमश्च । उत्तरतंत्रम् । अभिषेकः। पौराणिक मंत्रेषु - वैधृत्यं, वैधृतियोगजातस्य इति परिवर्तनं ज्ञेयम्।

अथ व्यतिपातशान्तिप्रयोगः

प्रधानदेवतास्थापनम्

ॐ चित्रंदेवानां० ॐ भूर्भुवः स्वः भो सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ वरदो भव । अधिदेवता स्थापनम् (दक्षिणे) - ॐ चत्वारिशृंगा० ह्रीं अग्निं प्रज्वलितम्० ॐ भूर्भुवः स्वः भो अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ वरदो भव ।

प्रत्यधिदेवता स्थापनम् (वामे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे०

हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैः आप्लावयन्तं शिरः।
द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं परम्।।
अंके न्यस्त करद्वयामृत घटं कैलासकान्तं शिवं।
स्वेच्छांभोजगतं नवेन्दुमुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भो त्र्यंबक इहागच्छ इह तिष्ठ वरदो भव।।
ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याद्यावाहित देवताभ्यो नमः ध्यायामि - लाभोपचारैः पूजयेत् ।। आदित्यहृदय पाठः । अन्यसूक्तानि वैधृतिशांतिवत् । होम समये सूर्यस्य समित् आज्य चरुभिः ८०००, १०००, वा १०८ च अग्निरुद्रयोः १०८, २८ वा आहुतयः । त्र्यंबकमंत्रेण १०८ तिलाहुतिः।

शेषं वैधृतिशांतिवत् । इति व्यतिपातशान्तिप्रयोगः।

।। इति व्यतिपातशान्तिप्रयोगः ।।

दर्शशांतिः

संकल्पः अत्राद्य....अस्य शिशोः दर्श (अमावस्या) जनन सूचित सकल अरिष्ट निरसन द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं दर्शजनन शांतिं करिष्ये। ऋत्विक्वरणान्तं कर्म पूर्ववत्। मंडले कलशं संस्थाप्य तस्मिन् पंचगव्यं, वट अश्वत्थ उदुम्बर प्लक्ष आम्र-वृक्षाणां मूलत्वक्पल्लवान्, पंच रत्नानि निक्षिप्य वरुणं संपूज्य वारुणमंत्रैः अभिमंत्रयेत् ।

मध्ये पितृस्थापनम्

ॐ आ यन्तु नः पितरः सोम्यासो ऽ ग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः ।
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ।।
सुखाय पितृन् कुलवृद्धिकर्तॄन् रक्तोत्पलाभान् इह रक्तनेत्रान् ।
सुरक्तमाल्यांबर भूषितांश्च नमामि पीठे कुलवृद्धि हेतोः ।।
ॐ भूर्भुवः स्वः पितरः इहागच्छ इह तिष्ठत वरदाः भवत ।

दक्षिणे चन्द्र स्थापनम्

ॐ इमन्देवा० दधिशंख० ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ वरदो भव ।

वामे सूर्यस्थापनम्

ॐ सविता पश्चात्तात् सविता पुरस्तात् सवितोत्तरात्तात् सविताधरात्तात्।
सवितानः सुवतु सर्वतातिं सविता नो रासतां दीर्घमायुः ।।
यन्मंडलं दीप्तिकरं विशालं, रत्नप्रभं तीव्रमनादिरूपम् ।
दारिद्र्य दुःखक्षयकारणं च, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।
ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ वरदो भव । लाभोपचारैः पूजयेत् । ॐ सविता त्वा० ।

क्रमानुसारं अग्निं संस्थाप्य प्रार्थयेत्

आयुः आरोग्यसिद्ध्यर्थं सर्वारिष्टप्रशांतये । पुत्रस्य दर्शजनन दोषनिर्हरणाय च।। मातापित्रोः कुमारस्य सर्वारिष्टप्रशांतये । तेषामायुः श्रिये चैव शांतिहोमं करोम्यहम्।। अन्वाधानमनुसृत्य पूजामंत्रैः होमः। पितृभ्यः० १०८, सोमाय० २८ सूर्याय० २८ समित् चरु आज्येन जुहुयात्। अभिषेकार्थं श्रीसूक्तं आयुष्यमंत्रान् च जपेत्। उत्तरतंत्रम् । कर्म ईश्वरार्पणम् ।

कालसर्पशांति

ज्योतिषशास्त्र अनुसार जातक की कुंडली का परीक्षण करें । राहु के अधिदेवता काल और प्रत्यधिदेवता सर्प है । ज्योतिषाचार्यों के मतानुसार ग्रह की शांति के लिए अधिदेवता व प्रत्यधिदेवता की पूजा करनी चाहिए । इस प्रकार इस शांति का नाम 'कालसर्पशांति' रखा गया है । राहु, काल और सर्प तीनों की पूजा, मंत्रजप, दशांश होम, ब्रह्मभोजन, दान आदि करना आवश्यक है ।

कालसर्पयोगजननशांतिप्रयोगः

श्री गणेशाय नमः शांतिसूक्तपाठः शिखाबंधनम्, आचमनं प्राणायामः तिलकं कृत्वा देवतान्नमस्कृत्य-

संकल्पः

ॐ विष्णु.... गोत्रः.... राशि....अहं मम जन्म कुंडल्यां राहुकेतुसंज्ञक - क्रूरग्रहान्तराले पतित आदित्य आदि सकल ग्रह संभूत कालसर्पनामक अनिष्ट योगेन शरीरे व्यवहारे च उत्पन्नानाम् उत्पद्यमानानां च विघ्नानां प्रशमनार्थं ज्वरादिपीडा निवृत्त्यर्थं त्रिविध ताप उपशमनार्थं संपत्ति संतति आदि वृद्धये मनःकामना परिपूर्तये अभीष्टसिद्धये श्री परमेश्वरप्रीतये सग्रहमखां कालसर्पयोग जनन शांतिं करिष्ये । गणेशपूजनमारभ्य ऋत्विक्वरणान्तं पूर्वतंत्रं समाप्य

वरदनामाग्निं संस्थाप्य सर्वतोभद्रमंडले ब्रह्मादिदेवान् आवाह्य संपूज्य तत्र पूर्णपात्रसहितान् त्रीन्कलशान् कलशमेकं वा स्थापयेत्। पूजाधिकारार्थं न्यासविधिं कुर्यात् ।

संकल्पः

कया नश्चित्र० इति मंत्रस्य वामदेवऋषिः गायत्रीछन्दः राहुर्देवता कया न इति बीजं, शचीरिति शक्तिः, राहुप्रीत्यर्थे न्यासे पूजने च विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासाः

वामदेवऋषये नमः शिरसि ।गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे ।राहुदेवतायै नमः हृदि। कया न बीजाय नमः गुह्ये। शचीरिति शक्तये नमः पादयोः।करादिन्यासाः -कयानश्चित्र अंगुष्ठाभ्यां नमः।आभुवदूती तर्जनीभ्यां नमः।सदा वृधः मध्यमाभ्यां नमः।सखा अनामिकाभ्यां नमः। कया शचिष्टया कनिष्ठिकाभ्यां नमः। वृता करतलकर-पृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादिन्यासाः। शचिष्टया गुल्फयोः। वृता पादयोः।बीजन्यासाः - ॐ हृदयाय नमः। भ्रां शिरसे स्वाहा ।भ्रीं शिखायै वषट्। भ्रौं कवचाय हुम्। सः अस्त्राय फट्। मूर्तौ प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ।

राहुध्यानम्

नीलांबरो नीलवपुः किरीटी करालवक्त्रः करवालशूली ।
चतुर्भुजः शक्तियुतश्च राहुः सिंहासनस्थो वरदोऽस्तु मह्यम् ।।

बर्बरदेशोत्पन्नाय कायवर्जिताय सिंहासनाय वरप्रदाय पौर्णमासीदिने भरणीनक्षत्रसंजाताय शूद्रवर्गाय हुताग्निरूपिणे करालवदनाय श्रेष्ठाकपालरूपाय अंजनप्रभाय पैठिनसगोत्राय रोदनवदनाय कालसर्परूपाधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय राहवे नमः राहुं ध्यायामि ।

ॐ भू० भो राहो इहागच्छ इह तिष्ठ वरदो भव । ॐ कया नश्चित्रऽ आभुवदूती सदा वृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता ।।

कालध्यानम्

एह्येहि दंडायुध धर्मराज कालंजनाभास विशालनेत्र ।
विशालवक्षस्थल रुद्ररूप गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ।।

चित्रगुप्तादि संयुक्त दंडमुद्गरधारक ।
आगच्छ भगवन् काल (धर्म) पूजार्थं संनिधो भव ।।
कालाय कालरूपाय कालांजनसम प्रभो ।
दक्षिणस्यां कृतावास कालदेव नमोऽस्तु ते ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः० भो काल इहागच्छ इह तिष्ठ० ।। ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि । समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ।।

सर्पध्यानम्

एह्येहि नागेन्द्र धराधरेश सर्वामरैर्वंदितपादपद्म ।
नानाफणामंडलराजमान गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ।।
आशीविषसमोपेत नागकन्या विराजित ।
आगच्छ नागराजेन्द्र कलशे संनिधो भव ।। ॐ भू० भो सर्प इहागच्छ इह तिष्ठ वरदो भव ।

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।। या इषवो यातुधानानां ये वा वनस्पतीं १ रनु । ये वावटेषु । शेरते तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।। ये वामी रोचने दिवो ये वा सूर्यस्य रश्मिषु । येषामप्सु सदस्कृतं तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।। ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पाय० । राहु आदि देवताभ्यो नमः ध्यायामि लाभोपचारैः पूजनम् । पूजन में – कृष्ण वस्त्र, कुंकुम,

अगरुचंदन, नीले-कृष्ण वर्ण के अक्षत, कृष्णपुष्प, लाक्षाधूप, घृतदीप, माष नैवेद्य आदि।

राहुनामपूजनम्

ॐ विधुंतुदाय नमः ।सदा कालाय० कालाय० कराल वदनाय० अनंताय० राहवे० ।।

कालपूजनम्

ॐ दमन्यै नमः ।दामन्यै० छायायै० ।

कालनामपूजनम्

ॐ यमाय० धर्मराजाय० मृत्यवे० अंतकाय० वैवस्वताय० कालाय० सर्वभूतक्षयाय० औदुंबराय० दध्नाय० नीलाय० परमेष्ठिने० वृकोदराय० चित्राय० चित्रगुप्ताय नमः ।

सर्पदेवतानां पूजनम्

ॐ अनंताय० शेषाय० वासुकये० शंखाय० पद्माय० कंबलाय० कर्कोटकाय० अश्वतराय० धृतराष्ट्राय० शंखपालाय० तक्षकाय० कालियाय० कपिलाय नमः ।

पुष्पांजलि समर्प्य०

विशेषार्घः

राहुग्रहः सदा क्रूरः सोमसूर्ययोः पीडकः ।
शान्त्यर्थं तु मया दत्तः अर्घ्योऽयं प्रतिगृह्यताम् ।।

कालप्रार्थना

यमो निहंता पितृधर्मराजो वैवस्वतो दंडधरश्च कालः ।
प्रेताधिपो दत्तकृतानुसारि कृतान्त एतत् दशभिर्जपन्ति ।।
धर्मराज महाकाय दक्षिणाधिप ते नमः ।
रक्तेक्षण महाबाहो मम पीडां निवारय ।।

सर्पप्रार्थना

ब्रह्मलोके च ये सर्पाः शेषनाग पुरोगमाः ।।
नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीता प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ।।
विष्णुलोके च ये सर्पाः वासुकिप्रमुखाश्च ये । नमोऽस्तु० ।।
रुद्रलोके च ये सर्पाः तक्षकप्रमुखास्तथा । नमोऽस्तु० ।।
खांडवस्य तथा दाहे स्वर्गं ये च समाश्रिताः । नमोऽस्तु० ।।
सर्पसत्रे च ये सर्पाः आस्तिकेन च रक्षिताः । नमोऽस्तु० ।।
प्रलये चैव ये सर्पाः कर्कोटप्रमुखाश्च ये । नमोऽस्तु० ।।
धर्मलोके च ये सर्पाः वैतरण्यां समाश्रिताः । नमोऽस्तु० ।।
ये सर्पाः पार्वतीयेषु दरीसंधिषु संस्थिताः । नमोऽस्तु० ।।
ग्रामे वा यदि वारण्ये ये सर्पाः प्रचरन्ति हि । नमोऽस्तु० ।।
पृथिव्यां चैव ये सर्पा ये सर्पा बिलसंस्थिताः । नमोऽस्तु० ।।
रसातले च ये सर्पा अनंताद्या महाबलाः । नमोऽस्तु० ।।

नवनागनामस्तोत्रम्

अनन्तं वासुकिं शेषं पद्मनाभं च कंबलम् ।
शंखपालं धार्तराष्ट्रं तक्षकं कालीयं तथा ।।
एतानि नव नामानि नागानां च महात्मनाम् ।
सायंकाले पठेन्नित्यं प्रातःकाले विशेषतः ।।
तस्मै विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत् ।।

स्तुतिपाठः

एतैत सर्पाः शिवकंठभूषा लोकोपकाराय भुवं वहन्तः ।
भूतैः समेता मणिभूषितांगा गृह्णीत पूजां परमां नमो वः ।।
कल्याणरूपं फणिराजमग्र्यं नानाफणामंडलराजमानम् ।
भक्त्यैकगम्यं जनताशरण्यं यजाम्यहं नः स्वकुलाभिवृद्ध्यै ।।

नागमंत्र

ॐ नवकुलाय विद्महे विषदन्ताय धीमहि । तन्नः सर्पः प्रचोदयात् ।।

संकल्प

अनया पूजया अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित राहुः प्रीयताम् ।
(अग्निस्थापनम् कुशकंडिका ग्रहहोमः)

प्रधानहोमः

राहुमंत्रेण नाममंत्रेण वा अष्टोत्तरशतं अधिदेवता प्रत्यधिदेवतयोः अष्टाविशंतिः अन्वाधानानुसारं वा । ब्रह्मादिसर्वतोभद्रमंडल देवतानां होमः । व्याहृतिहोमः ।

उत्तरतंत्रम्

पूजा स्विष्टं० घृतपात्रदानम्, तिलपात्रदानम् ।

दानानि

सुवर्ण, सीसकं, गोमेद, तैलम्, नीलवस्त्रम् ।

राहुशांत्यर्थ जप

१८,००० उसका दशांश होम दानादि करना चाहिए । कालसर्पशांति के लिए भी १८,००० राहुमंत्र का जप एवं होम करना श्रेयस्कर है । दान में लिखी गयी वस्तुएँ भी यथाशक्ति दें ।

राहुप्रीत्यर्थ अन्य प्रार्थना, राहुकवच एवं राहुस्तोत्र का पाठ श्रेयस्कर है ।

नागपूजनम्

शांतिपाठः गुरुपादाभिवंदनम् - आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजभावयुक्तम् । योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद्‌गुरुं नित्यमहं नमामि ।। गुरुर्ब्रह्मा० ब्रह्मानन्दम्० नमो गुरुभ्यो० आचमनम् प्राणायामः देवतानमस्कारः ।

संकल्पः

विष्णुः विष्णुः विष्णुः ममात्मानः पुत्रपौत्रादि अनवच्छिन्नसन्तति

स्थिरलक्ष्मीः कीर्तिलाभ शत्रुपराजय द्वारा सदभीष्ट (यदभीष्टं तत् वदेत्) कार्यसिद्ध्यर्थं नागदेवताप्रीत्यर्थं नागपूजां हवनं च करिष्ये । दिग्रक्षणं कलशपूजां दीपपूजां च विधाय, गणपतिपूजनं, पुण्याहवाचनं, मातृकापूजनम्, नान्दीश्राद्धं, आचार्यदिवरणम् कृत्वा अग्निप्रतिष्ठापनं कुर्यात् । पश्चात् प्रधानपीठे ब्रह्मादिभद्र-मंडलदेवान् प्रतिष्ठाप्य तदुपरि माषपूरितान् पूर्णपात्रसहितान् नवकलशान् संस्थाप्य सुर्वणमूर्तिषु नागान् आवाहयेत् ।

प्रधानदेवता आवाहनम्

मध्ये

अनन्तं विप्रवर्गं च तथा कुंकुमवर्णकम्।
फणासहस्त्रसंयुक्तं तं देवं प्रणमाम्यहम् ।।
ॐ भू० अनंताय नमः ।
अनंतम् आवाहयामि स्थापयामि ।।

पूर्वे

क्षत्रवर्गं पीतवर्णं फणैः सप्तशतैर्युतम् ।
युक्तमुत्तुंगकायं च वासुकिं प्रणमाम्यहम् ।।
ॐ भू० वासुकये नमः० ।

आग्नेय्यां

शूद्रवर्गं श्वेतवर्णं शतत्रयफणायुतम् ।
युक्तमुत्तुंगकायं च कर्कोटं च नमाम्यहम् ।।
ॐ भू० कर्कोटकाय नमः० ।

दक्षिणे

वैश्यवर्गं नीलवर्णं फणैः पंचशतैर्युतम् ।
युक्तमुत्तुंगकायं च तक्षकं प्रणमाम्यहम् ।।

ॐ भू० तक्षकाय० ।

नैर्ऋत्यां

शंखपालं क्षत्रियं च पीतं सप्तशतैः फणैः ।
युक्तमुत्तुंगकायं च शिरसा प्रणमाम्यहम् ।।
ॐ भू० शंखपालाय० ।

पश्चिमे

वैश्यवर्गं नीलवर्णं फणैः पंचशतैर्युतम् ।
युक्तमुत्तुंगकायं च महापद्मं नमाम्यहम् ।।
ॐ भू० महापद्माय० ।

वायव्यां

वैश्यवर्गं नीलवर्णं फणैः पंचशतैर्युतम् ।
युक्तमुत्तुंगकायं च तन्नीलं प्रणमाम्यहम् ।।
ॐ भू० नीलाय० ।

उत्तरे

कंबलं शूद्रवर्गं च शतत्रयफणैर्युतम् ।
आवाहयामि नागेशं प्रणमामि पुनः पुनः ।।
ॐ कंबलाय० ।

ऐशान्यां

विप्रवर्गं श्वेतवर्णं सहस्त्रफण संयुतम् ।
आवाहयाम्यहं देवं शेषं वै विश्वरूपिणम् ।।
ॐ भू० शेषाय० ।

ॐ भूर्भुवः स्वः अनंतादि नवनागदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत ।
लाभोपचारैः पूजनम् ।

अन्यदेवतास्थापनम्

श्वेतवस्त्रं प्रसार्य कलशं संस्थाप्य अमृतरक्षिणीं मनसादेवीं च आवाहयेत् - ॐ अमृतरक्षिण्यै नमः आ० स्था० ।। ॐ ह्रीं श्रीं

क्रीं ऐं मनसादेव्यै स्वाहा - मनसादेवीं आ० स्था० । ॐ मनोजूति० ।

मनसादेवीस्तोत्रम्

महेन्द्र उवाच -

देवि त्वां स्तोतुमिच्छामि साध्वीनां प्रवरां पराम् ।
परात्परां च परमां नहि ज्ञातुं क्षमोऽधुना ।।
स्तोत्राणां लक्षणं वेदे स्वभावाख्यानतः परम् ।
न क्षमः प्रकृतिं वक्तुं गुणानां तव सुव्रते ।।
शुद्धसत्त्वस्वरूपा त्वं कोपहिंसाविवर्जिता ।
न च शप्तो मुनिस्तेन त्यक्तया च त्वया यतः ।।
त्वं मया पूजिता साध्वी जननी च यथाऽदितिः ।
दयारूपा च भगिनी क्षमारूपा यथा प्रसूः ।।
त्वया मे रक्षिताः प्राणाः पुत्रदाराः सुरेश्वरिः ।
अहं करोमि त्वां पूज्यां मम प्रीतिश्च वर्धते ।।
नित्यं यद्यपि पूज्या त्वं भवेऽव जगदम्बिके ।
तथाऽपि तव पूजां वे वर्धयामि पुनः पुनः ।।
ये त्वामाषाढसंक्रांत्यां पूजयिष्यन्ति भक्तितः ।
पंचम्यां मनसाख्यायां मासान्ते वा दिने दिने ।।
पुत्रपौत्रादयस्तेषां वर्धन्ते च धनानि च ।
यशस्विनः कीर्तिमन्तो विद्यावन्तो गुणान्विताः ।।
ये त्वां न पूजयिष्यन्ति निन्दंत्यज्ञानतो जनाः ।
लक्ष्मीहीना भविष्यन्ति तेषां नागभयं सदा ।।
त्वं स्वर्गलक्ष्मीः स्वर्गे च वैकुंठे कमलाकला ।
नारायणांशो भगवान् जरत्कारुर्मुनीश्वरः ।।
तपसा तेजसा त्वां च मनसा ससृजे पिता ।
अस्माकं रक्षणायैव तेन त्वं मनसाभिधा ।।

20

मनसा देवितुं शक्ता चाऽऽत्मना सिद्धयोगिनी ।
तेन त्वं मनसादेवी पूजिता वंदिता भवे ।।
यां भक्त्या मनसा देवाः पूजयन्त्यनिशं भृशम् ।।
तेन त्वां मनसादेवी प्रवदन्ति पुराविदः ।
सत्त्वरूपा च देवी त्वं शश्वत्सत्त्वनिषेवया ।।
यो हि यद्भावयेन्नित्यं शतं प्राप्नोति तत्समम् ।
इदं स्तोत्रं पुण्यबीजं तां संपूज्य च यः पठेत् ।।
तस्य नागभयं नास्ति तस्य वंशोद्भवस्य च ।
विषं भवेत्सुधातुल्यं सिद्धस्तोत्रं सदा पठेत् ।।
पंचलक्षजपेनैव सिद्धस्तोत्रो भवेन्नरः ।
सर्पशायी भवेत्सोऽपि निश्चितं सर्पवाहनः ।।
इति श्री ब्रह्मवैवर्तपुराणे महेन्द्रकृतं मनसास्तोत्रं संपूर्णम् ।

मनसादेवीनागस्तोत्रम्

ॐ नमो मनसायै

जरत्कारु जगद्गौरी मनसा सिद्धयोगिनी ।
वैष्णवी नागभगिनी शैवी नागेश्वरी तथा ।।
जरुत्कारुप्रियाऽऽस्तीकमाता विषहरीति च ।
महा ज्ञानयुता चैव सा देवी विश्वपूजिता ।।
द्वादशैतानि नामानि पूजाकाले च यः पठेत् ।
तस्य नागभयं नास्ति तस्य वंशोद्भवस्य च ।।
नागभीते च शयने नागग्रस्ते च मंदिरे ।
नागक्षते महादुर्गे नागविष्टित विग्रहे ।।
इदं स्तोत्रं पठित्वा तु मुच्यते नात्रसंशयः ।
नित्यं पठेद् यः तं दृष्ट्वा नागवर्गं पलायते ।।
नागौघं भूषणं कृत्वा स भवेत् नागवाहनः ।
नागासनो नागतल्पो महासिद्धो भवेन्नरः ।।

क्षमापनम्

मंत्रहीनं० संकल्पः अनेन ध्यानावाहनादिषोडशोपचारैः अन्यो-पचारैश्च पूजनेन अमृतरक्षिणी च मनसादेवी सहिताः अनंतादिन-वनागाः प्रीयन्ताम् ।

होमक्रमः – बलवर्धन नामाग्निं संपूज्य होमः कार्यः । ग्रहहोमं समाप्य 'ॐ ह्रीं तत्कारिणी विषहारिणी विषरूपिणी विषं हन इन्द्रस्य वज्रेण नमः स्वाहा' इति मंत्रेण चर्वादिद्रव्यैः अष्टोत्तरशतं जुहुयात् ।

तथा च मनसादेवी मंत्रस्य होमः । नवनागमंत्रैः पृथक् पृथक् संकल्पानुसारं होमः । सर्पसूक्तेन यथा शक्त्या होमः – शतं, सहस्त्रं अयुतं वा । व्याहृतिहोमः । उत्तरतंत्रम् । क्षीरबलिदानम् नागेभ्यः ।

पूर्णाहुति

पश्चात् सर्पनिर्मलीकरण करें व जल में विसर्जन करें ।

सर्पापसर्प भद्रं ते गच्छ सर्प महाविष ।
जन्मेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीक वचनं स्मर ।।
आस्तीकस्य वचः श्रुत्वा यः सर्पो न निवर्तते ।
शतधा भिद्यते मूर्धा शिंशवृक्षफलं यथा ।।

कर्मसंपूर्णतावाचनम् ।

।। इति कालसर्प शान्तिप्रयोगः ।।

कार्तिकजननशान्ति

संकल्प :- देशकालौ संकीर्त्य.....अस्य शिशोः.....

ज्ञाताज्ञातकायवाङ्मनस्कृतसकलपापक्षयपूर्वकश्रुतिस्मृति-पुराणोक्तफलप्राप्तिकामः सौरकार्तिकमासाधिकरणकैतत्स्वीयस्त्रीप्रसवसंसू-चितैतत्कुमारैतत्पित्राद्यरिष्टोपशमनपूर्वक-श्रीब्रह्मप्रभृतिदेवताप्रसादाऽव्यवहितो-त्तरकालिकेतद्बालके - तत्पित्रादिजनाधिकरणकायुःसुखसम्पद्रक्षादिसिद्ध्यर्थं श्रीब्रह्मादिपूजनरूपा कार्तिकस्त्रीसूताशान्तिमहं करिष्ये। तदङ्गभूतं गणपत्यादि-पूजनञ्च करिष्ये।

पूर्व :- धान्योपरि कलशं संस्थाप्य तस्योपरि श्रीब्रह्मणः पूजां कुर्यात्।

जप :- पूर्वस्यां दिशि तत्रावाहनमन्त्र :- ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः।। इति मन्त्रेण ब्रह्माणं पाद्यादिभिः पूजयेत्। ततो वरण-संभृतमादाय - ॐ अद्येत्यादि पूर्वप्रतिज्ञातार्थसिद्ध्यर्थं क्रियमाणकार्तिकस्वस्त्री-प्रसूताशान्त्यङ्गत्वेन ब्रह्मजज्ञानमिति मन्त्रेण यथापरिमितं जप कारयितमेभि-वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं जापकत्वेन त्वां वृणे। इति वृणुयात्।

दक्षिण :- ततोदक्षिणस्यांदिशिगोधूमान्नोपरिकलशं संस्थाप्य श्रीविष्णु पूजयेत्।

जप :- ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदं समुढमस्यपाᳪसुरे स्वाहा इति मन्त्रेण पाद्यादिभिर्विष्णु पूजयेत्।

पश्चिमायां :- ततः पश्चिमायां दिशि तण्डुलान्नोपरि कलशं संस्थाप्य श्रीरुद्रं पूजयेत।

जप :- ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इष - वे नमः बाहुभ्यामुत ते नमः।

उत्तरस्यां :- ततः उत्तरस्यां दिशि धान्योपरि कलशं स्थाप्य तस्योपरि श्रीसूर्यंपूजा कुर्यात्।

जप :- ॐ आकृष्णेनेति मंत्रेण पाद्यादिभिः सूर्यं पूजयेत्। ततो वरणसंभृतमादाय ॐ अद्येत्यादि पूर्वं प्रतिज्ञातार्थसिद्ध्यर्थं क्रियमाणकार्तिक-स्वस्त्रीप्रसूताशान्त्यंगत्वेन ॐ आकृष्णेति मंत्रेण यथापरिमितं जपं कारयितुं एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं जापकत्वेन त्वामहं वृणे। ततः

त्र्यम्बकमंत्रस्य जपं ब्राह्मणद्वारा यथाशक्ति कारयेत्। तत्र संकल्प :- ॐ अद्येत्यादि पूर्वं संकल्प सिद्ध्यर्थं क्रियमाणकार्तिकमासस्त्रीप्रसूताशान्त्यङ्गत्वेन त्र्यम्बकमिति मन्त्रस्य लक्षं वा पञ्चाशत् सहस्रं अयुतं वा जपं चत्वार एव ब्राह्मणाः यथादेशे प्रयताः जपं कुर्युः ॐ प्रजापतये स्वाहा इत्यारभ्य ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमित्यन्तं हुत्वा ॐ सूर्याय स्वाहा।।१।। ॐ ब्राह्मणे स्वाहा।।२।। ॐ विष्णवे स्वाहा।।३।। ॐ रुद्राय स्वाहा।।४।। ॐ शंभवे स्वाहा।।५।। ॐ ईशाय स्वाहा।।६।। ॐ पशुपतये स्वाहा।।७।। ॐ शिवाय स्वाहा।।८।। ॐ शूलिने स्वाहा।।९।। ॐ महेश्वराय स्वाहा।।१०।। ॐ ईश्वराय स्वाहा।।११।। ॐ शर्वाय स्वाहा।।१२।। ॐ ईशानाय स्वाहा ।।१३।। ॐ शंकराय स्वाहा।।१४।। ॐ चन्द्रशेखराय स्वाहा।।१५।। ॐ भूतेशाय स्वाहा।।१६।। ॐ खण्डपरशवे स्वाहा।।१७।। ॐ गिरीशाय स्वाहा।।१८।। ॐ मृडाय स्वाहा।।१९।। ॐ मृत्युंजयाय स्वाहा।।२०।। ॐ कृत्तिवाससे स्वाहा।।२१।। ॐ पिनाकिने स्वाहा।।२२।। ॐ प्रमथाधिपाय स्वाहा।।२३।। ॐ उग्राय स्वाहा।।२४।। ॐ कपर्दिने स्वाहा ।।२५।। ॐ श्रीकण्ठाय स्वाहा।।२६।। ॐ शितिकंठाय स्वाहा।।२७।। ॐ कपालभृते स्वाहा।।२८।। ॐ वामदेवाय स्वाहा।।२९।। ॐ विरूपाक्षाय स्वाहा।।३०।। ॐ त्रिलोचनाय स्वाहा।।३१।। ॐ कृशानुरेतसे स्वाहा ।।३२।। ॐ सर्वज्ञाय स्वाहा।।३३।। ॐ धूर्जटये स्वाहा।।३४।। ॐ नीललोहिताय स्वाहा।।३५।। ॐ स्मरहराय स्वाहा।।३६।। ॐ भर्गाय स्वाहा।।३७।। ॐ त्र्यम्बकाय स्वाहा।।३८।। ॐ त्रिपुरान्तकाय स्वाहा ।।३९।। ॐ गंगाधराय स्वाहा।।४०।। एवं त्र्यम्बकमंत्रस्य दशांशेन धृताक्तैः बिल्वपत्रैः होमं कुर्यात्।।

त्रिकुशेनाभिषेकं कुर्यात् तत्र मन्त्रा :- सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु इत्यादि अग्नितो मे भयं मास्तु रोगाच्च व्याधिवंधनात्। सशस्त्रविषतोयौघात् भयं नाशय मे सदा। योऽसौ पशुपतिर्देवः पिनाकी वृषवाहनः कार्तिकस्त्रीप्रसूतायाः दोषमाशु व्यपोहतु। अभिषेकान्ते प्रार्थना - रक्ष मां पुत्रपौत्रांश्च रक्ष मां पशुबन्धनात् रक्ष पत्नीं पतिं चैव पितरं मातरं धनम्।। इति।।

अर्क विवाहः

वर की कुण्डली में मंगल व पापग्रह बली हों, कन्या की कुण्डली में पापग्रहों के अभाव से स्त्री हानि की संभावना हो अथवा विवाह संबंध बोलते नाम से तय हो जाय बाद में ज्ञात हो कि वर मंगली है कन्या की कुण्डली नहीं होने से स्त्री हानि की शंका हो, द्विपत्नियोग हो तो वर का अर्क विवाह करना चाहिए।

गोमय से लिप्य करके मंडल एवं स्थण्डिल की रचना करें । वर अर्क के पश्चिम दिशा में आसन लगाकर बैठे, आचमन, प्राणायाम करें पवित्री करें । प्रतिज्ञा संकल्प करें ।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्री भगवतो....एवं ग्रह गुण विशेषेण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलप्राप्ति पूर्वकं मम जन्म कुण्डल्यां विधुरादिदोष निवारणार्थे, तृतीय मानुषी विवाह तज्जन्यदोष निवृत्यर्थं श्री परमेश्वर सूर्यनारायण प्रीतये तृतीयमर्क-विवाह (प्रथमर्क विवाह) महं करिष्ये ।

पुनः जल लेकर संकल्प करें – **(सांगोपांग वैवाहिक पद्धति)**
तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्धये गणपति पूजनं, स्वस्ति पुण्याहवाचनं षोडशमातृका सूर्यादि नवग्रह दिग्पालादि पूजनं नान्दीश्राद्धं आचार्यऋत्विग्वरणञ्च करिष्ये ।
दिग्रक्षण करें, कलशार्चन, गणेश मातृका नवग्रह रुद्रकलश का पूजन करें । ब्रह्मा आचार्य का वरण करें ।

नान्दी श्राद्ध

मातृका पूजन समय के बाद नान्दी श्राद्ध हेतु द्रव्य दान करायें ।
यथा – ॐ पूर्वोक्त शुभ पुण्यतिथौ मम तृतीय (प्रथम) मानुषी विवाहाङ्गत्वेन कर्तव्याभ्युदयिक श्राद्धे इदमग्निदैवतकंहिरण्यं यथा

नामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजेत् ।

अर्क कन्या दान हेतु आचार्य का वरण

ॐ अद्येत्यादि मम तृतीय (प्रथम मानुषी) विवाह जन्य दोष परिहारार्थे अर्ककन्या प्रादानार्थम् एभिर्वरण द्रव्यैः अमुक गोत्रम-मुकशर्माणं ब्राह्मणमाचार्यत्वेनाहं वृणे ।

प्रार्थना करें

कन्यापिता यथा सूर्यो देवानाञ्च प्रजापतिः ।
तथा त्वमर्क दानार्थमाचार्यत्वं कुरु प्रभो ।।

आचार्य कहे - वृतोऽऽस्मीति प्रति वचनं ।

इसके बाद अर्ककन्यापिता (आचार्य) वर का विवाह विधि की तरह अर्चन करें ।

यथा - ॐ साधुभवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तम् ।

विष्टर, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, मधुपर्क प्राशनं पुनः आचमन करायें । वर अर्क के समीप जाकर प्रार्थना करें ।

त्रैलोक्यव्यापिन सप्ताश्व छायया सहितो रवे ।
तृतीयो (प्रथमो) द्वाहजं दोषं निवारय सुखं कुरु ।।

इसके बाद अर्क के पास में मंडल बनाकर कलश स्थापित करें, रक्त वस्त्र से वेष्टन करें । सुवर्ण की बनायी हुई सूर्यप्रतिमा उस पर स्थापित करें । इसके बाद "**आकृष्णेन**" मंत्र से छाया सहित सूर्य का आवाहन करें ।

ॐ भूर्भुवः स्वः छायासहिताय सूर्याय नमः, छाया सहित सूर्यमस्मिन्नर्के आवा० स्था० ।

श्वेत वस्त्र से अर्क का वेष्टन करें । **पाद्यादिभिः सम्पूज्य** षोडशोपचार से पूजन करें, आरती करें । **ॐ आपोहिष्ठा०** मंत्र से अर्क का अभिषेचन करें।

इसके बाद वर अर्क की तीन प्रदक्षिणा करें । प्रार्थना करें ।

प्रथम वारम्

मम प्रीतिकरा चेयं मया सृष्टा पुरातनी ।
अर्कजा ब्रह्मणा सृष्टा अस्माकं परिरक्षतु ।।

द्वितीय प्रदक्षिणा

नमस्ते मङ्गले देवि नमः सवितुरात्मजे ।
त्राहिमां कृपया देवि पत्नी त्वं मद्गृहागता ।।

तृतीय प्रदक्षिणा

अर्क त्वं ब्रह्मणा सृष्टः सर्वप्राणि हिताय च।
वृक्षाणामादिभूत त्वं देवानां प्रीतिवर्द्धनः ।।
तृतीयो (प्रथमो) द्वाहजं दोषं मृत्युञ्चाषु निवारय ।।

इसके बाद पंचभूसंस्कार करके अग्नि स्थापन करें । वर अर्क के समीप में पूर्व की तरफ मुँह करके बैठे ।

अर्क तथा वर के मध्य अन्तर्पट करें । मङ्गलाष्टक पढ़े ।

आचार्य संकल्प करें

ॐ पूर्वोक्त ग्रह गुण विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अस्य वरस्य तृतीयो (प्रथमो) द्वाहजनित सर्वारिष्ट विनाशार्थं तथा च श्रीसवितृसूर्यनारायण प्रीतये (ब्रह्म विधिना) अर्क विवाह विधिना अर्क विवाहं करिष्ये ।

वर के हाथों में जल का प्रोक्षण करें ।

शिवा आपः सन्तु। सन्तु शिवाः आपः। सौमनस्यमस्तु। अस्तु सौमनस्यम् । अक्षतञ्चारिष्टञ्चास्तु । अस्त्वक्षतमरिष्टञ्च । गन्धाः पातु। सौमङ्गल्यं चास्तु। अक्षताः पान्तु। आयुष्यमस्तु। पुष्पाणि पान्तु। सौश्रियमस्तु ।

भूमि पर जल छोड़ें – **तृतीयो (प्रथमो) द्वाहजन्यदोषपरिहारोऽस्तु ।**

ततोवरस्य गोत्रोच्चारपूर्वकं दान सङ्कल्पः

ॐ अद्यामुकमासेऽमुकतिथौ अमुकवासरादि संयुतायां शुभवेलायां अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरान्वितस्य अमुक वेदशाखाऽध्यायिनः अमुक शर्मणः प्रपौत्राय ।अमुक गोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुक शर्मणः पौत्राय । अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरान्वितस्य अमुक शर्मणः पुत्राय।अमुकनाम्ने वराय ।काश्यपगोत्रस्यत्रिप्रवरस्य आदित्यस्य प्रपौत्रीम् । काश्यप गोत्रस्य त्रिप्रवरान्वितस्य सवितुः पौत्रीम् । काश्यपगोत्रस्य त्रिप्रवरान्वितस्य सूर्यस्य पुत्रीम् ।आर्कीनाम्नीं कन्यां सूर्यदैवत्यां भार्यात्वेन तुभ्यमहं समप्रददे ।

इस संकल्प से वर के हस्त में जल छोड़ें ।

स्वस्ति सूक्त पढ़कर ब्राह्मण वर को आशीष प्रदान करें ।

पुनः संकल्प करें

ॐ अद्य कृतैतदर्क कन्या दान प्रतिष्ठार्थमिदं सुवर्णमग्नि दैवतं अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे वराय तुभ्यमहं संप्रददे ।

इस प्रकार सुर्वण दक्षिणा देवें । वरं कहे ॐ स्वस्ति ।

इसके बाद वर **अर्कवृक्ष** पर तीन अञ्जलि प्रदान करें । यथा –

ॐ यज्ञो मे काम कामः समृद्ध्यताम् । ॐ धर्मो मे कामः समृद्ध्यताम् । ॐ यशो मे कामः समृद्ध्यताम् ।।

यद्यपि संकल्प में ब्रह्मविधि विवाह का उल्लेख है परन्तु अर्क विवाह पद्धति में राष्ट्रभृत होम, सप्तपदी का लेख नहीं है ।

यहाँ सूर्य अरुण संवाद में विष्णु विवाह या कुंभ विवाह के लिये विवाह विधान के पश्चात् जिन १० मंत्रों से सूत्र वेष्टन करने को कहा है (वही विधि आगे लिखी है ।)वर तथा अर्ककन्या का आञ्चल ग्रंथि बंधन करें।

पांच या दशतन्तु का सूत्र लेवें, गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित करें, कुंकुमादि लगायें ।

गायत्री मंत्र व निम्न दश मंत्रों को पढ़ते हुये उस सूत्र से अर्कवृक्ष को ५ बार वेष्टन करें । (कहीं दश बार वेष्टन का लिखा है ।)

ॐ परित्वागिर्वणो गिर इमा भवन्तु विश्वतः । वृद्धायु मनुवृद्धायो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः ।। १ ।। इन्द्रस्यूरसीन्द्रस्य ध्रुवोसि । ऐन्द्रमसि वैश्वदेवमसि ।। २ ।। विभुरसि प्रवाहणो वह्निरसि हव्यवाहनः । श्वात्रोऽसि प्रचेतास्तुथोऽसि विश्ववेदाः ।। ३ ।। उशिगसि कविङ्गारिरसि बम्भारिरवस्युरसि दुवस्वान् शुन्ध्यूरसि मार्जालीयः सम्राडसि कृशानुः परिषद्योऽसिपवमानो नभोऽसि प्रतक्वा मृष्टोऽसि हव्यसूदन ऋतधामासि स्वर्ज्योतिः ।। ४ ।। समुद्रोऽसि विश्वव्यचा अजोऽस्येकपादहिरसि बुध्न्यो वागस्यैन्द्रमसि सदोऽस्युतस्य द्वारो मा मा संताप्तमध्वना मध्वपते प्रमातिर स्वस्ति भेऽस्मिन्मथि देवयाने भूयात् ।।५।। मित्रस्य मा चक्षुषे क्षध्वमग्नयः सगराः सगराः स्थ सगरेण नाम्ना रौद्रेणानीकेन पातमाग्नयः । पितृतमागन्ये गोपायत मा नमो वोऽस्तु मा माहि ७ सिष्ठ ।। ६ ।। ज्योतिरसि विश्वरूपं विश्वेषां देवानां समित् । त्व ७ सोमतनूकृद्भ्यो द्वेषेभ्योऽन्यकृतेभ्य उरुयन्तासि वरुथ ७ स्वाहा जुषाणो अप्तुराजस्य वेतु स्वाहा ।। ७ ।। अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ।। ८ ।। अयं नो अग्निर्वरिवस्कृणोत्वयं मृधः पुर एतु प्रभिन्दन । अयं वाजाञ्जयतु वाजसाता वय ७ शत्रूञ्जयतु जर्हृषाण स्वाहा ।। ९ ।। उरू विष्णोः विक्रमस्वोरु क्षयात् नस्कृधि। धृतं धृतयोने दिवः प्रपयज्ञपतिं तिरः स्वाहा ।। १० ।।

इसके बाद निम्न मंत्र से पुनः पञ्चगुणी सूत्र अर्क के दक्षिण कंधे पर रखें ।

ॐ वृहस्सामक्षत्रभृद् वृद्धवृण्यं त्रिटुभोजः शुभितमुग्रवीरम् । इन्द्रस्तोमेन पंचदशेन मध्यविदं वातेन सगरेण रक्ष ।।

निम्न मंत्र से सूत्र से अर्क के रक्षासूत्र बांधें ।

ॐ यदा बद्ध्नन्दाक्षायणा हिरण्य ꣳ शतानीकाय समनस्य माना तन्नमऽ आबद्ध्नामि शत शारदायायुष्मा ञ्जरदष्टिर्यथासम् ।।

इसके बाद अर्क के पूर्वादि अष्ट दिशाओं में आठ कुंभ स्थापित करें । वस्त्र, त्रिसूत्री से वेष्टन करें, हरिद्रा कुंकुम से चर्चित करें । हरिद्रा सप्तधान्य निक्षेप करें तथा कलशों में विष्णु का आवाहन करें ।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदं। समूढमस्य पा ꣳ सुरे स्वाहा ।।

विष्णु का षोडशोपचार पूजन करके प्रार्थना करें ।

विश्व व्यापिन नमस्तेऽस्तु भक्तप्रिय जनार्दन ।
तुरीयस्य (अस्य) विवाहस्य अधिकारं प्रयच्छ मे ।।

तत्पश्चात् अर्क की उत्तर दिशा में स्थाण्डिल बनाकर पंचभूसंस्कार पूर्वक वरदनाम्नी अग्नि का स्थापन करें ।

हवन विधि प्रारम्भ करें ।

संकल्प करें

अद्येह अर्कविवाहकर्मणाहं यक्ष्ये तत्र प्रजापति इन्द्रम् अग्नि सोमं बृहस्पतिम् अग्नि वायुं सूर्य प्रजापतिं चाज्येनाहं यक्ष्ये ।

(खड़े होकर) **ॐ समिधोऽभ्याधायस्वाहा** (इत्यारम्भ) । अन्वारब्ध करें।

ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये (इति मनसा) ।।

ॐ इन्द्राय स्वाहा । इदमिन्द्राय (इत्याधारौ) ।।

ॐ अग्न्ये स्वाहा । इदमग्नये ।।

ॐ सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय (इत्याज्यभागौ) ।।

अन्वारब्ध हटा लेवें । योजक नाम की अग्नि का पूजन करें तत्पश्चात् हवन करें ।

ॐ सङ्गोभिराङ्गिरसो नक्षमाणो भग इवेदर्यमणं निनाय ।

जने मित्रो न दम्पति अनक्ति बृहस्पतेय वाजयाशूँरिवाजौ स्वाहा।।
इदं बृहस्पतये न मम ।।
ॐ यस्मै त्वा काम कामाय वयं सम्राड्यजामहे ।
तमस्मभ्यं कामं दत्वाथेदं त्वं घृतं पिब स्वाहा ।।(इदमग्नये)
ॐ भूः स्वाहा ।इदमग्नये ।। ॐ भुवः स्वाहा ।इदं वायवे ।।
ॐ स्वः स्वाहा ।इदं सूर्याय ।।ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा ।इदं प्रजापतये ।।

इसके बाद प्राजापतये इत्यादि नव आहुति प्रदान करें ।स्विष्टकृद्धोम करें। संस्त्रवप्राशन ब्रह्मग्रंथि विमोक पूर्णपात्र दानादि करें ।दशतंतु निष्कासन करें। *अर्क की प्रदक्षिणा करके प्रार्थना करें ।*

मयाकृतमिदं कर्म स्थावरेषु जरायुणा ।अर्कापत्यानि मे देहि तत्सर्वं क्षन्तुमर्हसि ।। आचार्य शांतिसूक्त का पाठ करें, देव विसर्जन करें ।सूर्य मूर्ति आचार्य को प्रदान करें, गोदान अष्टब्राह्मण भोजन का संकल्प करायें। वस्त्र अलंकार आचार्य को देवें ।उसी दिन या पांचवें दिन कलशों के जल का विसर्जन करें, सूर्य को अर्घ देवें ।कंकण विमोचन करें ।

जल लेकर कहे

अनेन यथाज्ञान कृतेनार्कविवाह कर्मणा ।श्री परमेश्वरस्वरूपी श्री सूर्यनारायणः प्रीयतां न मम ।अनेन कर्मणा तृतीय (प्रथम स्त्री हानि) मानुषी विवाह जन्य दोष परिहारोऽस्तु ।

क्षमा प्रार्थना करें ।

इति अर्क विवाहः

कुंभ विवाह

अगर कन्या की कुण्डली में वैधव्यता, मृतवत्सा, काकवन्ध्या योग हो तो मार्कण्डेय पुराणानुसार कुंभ विवाह या विष्णु प्रतिमा पीपल के साथ कन्या का विवाह करने को कहा है ।

बालवैधव्ययोगे तु कुंभेषु प्रतिमादिभिः ।
कृत्वा लग्नं ततः पश्चात्कन्योद्वाह्येति चापरे ।।

इस विवाह को करने के बाद वर से विवाह को पुनर्भू दोष (पुनर्विवाह) नहीं मानना चाहिये ।

स्वर्णांबुपिप्पलानां च प्रतिमा विष्णुरूपिणी ।
तया सह विवाहे तु पुर्नभूत्वं न जायते ।।

सूर्यारुण संवादे

विवाहात्पूर्वकाले च चन्द्रतारावलान्विते ।
विवाहोक्तेन मन्थन्या कुंभेन सह चोद्वहेत् ।।
सूत्रेण वेष्टयेत् पश्चात् दशतन्तु विधानतः ।
कुंकुमालंकृतं देहं तयोरेकान्त मंदिरे ।।
ततः कुंभं च निःसार्य प्रभज्य सलिलाशये ।
ततोभिषेचनं कुर्यात् पञ्चपल्लव वारिभिः ।।

अर्थात् विवाह के पहिले चन्द्र व तारा के बली होने पर विवाहोक्त विधि से घट के साथ एकान्त वा मंदिर में विवाह करके दश बार सूत्र से घट सहित वेष्टन करें । कुंकुम से देह अलंकृत करें तत्पश्चात् घट निकालकर तालाब या नदी में विसर्जन करके पंचपल्लवों से अभिषेक करना चाहिये ।

कुंभविवाह विधिः

कन्या पिता विवाह के पूर्व शुभ दिन चन्द्र तारा बल अनुकूल देखकर एकान्त स्थान, विष्णु मंदिर, नदी, तालाब या कुएँ के पास उपर्युक्त

स्थान में पीपल वृक्ष के नीचे, कर्म करायें । स्थान शुद्ध करें, मंडल वेदी रचना करें, दीप प्रज्वलित करें, गणपति स्मरण पूर्वक संकल्प करें ।

ॐ पूर्वोक्त शुभ पुण्यतिथौ अमुक वासरे ममामुकगोत्रायाः, अमुक राशि अमुक कन्याया जन्म समय काले लग्नाद् अमुक स्थान स्थिता क्रूर, दुष्टग्रहा संसूचित वैधव्य विषकन्या मृतवत्सा काकवन्ध्यादि दोष निराकरण पूर्वकं सौभाग्य प्राप्ति द्वारा भविष्य- द्भर्तुरायुः आरोग्यैश्वर्य सुखावाप्तये श्री परमेश्वर प्रीतये च कुंभेन सह कन्योद्वाहकर्माहं करिष्ये । तदङ्गत्वेन कलश, गणपति मातृका वसोर्द्धारा पूजनं नान्दी श्राद्ध, पुण्याहवाचन आयुष्य मंत्र जपार्चनं करिष्ये तत्रादौ दिग्रक्षण पूर्वकं वरुण गणपत्यादि पूजनं चाहं करिष्ये ।

कन्या को मङ्गलस्नान कराये, वस्त्रादि अलंकार से विभूषित करें । कंकण बंधन करें । मुख्य देवता का कलश स्थापित करें ।

स्वर्ण की विष्णु प्रतिमा का "अग्न्युत्तारण" संस्कार करें । मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा संस्कार करें ।

ॐ आँ ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं हं सः अस्यां विष्णुमूर्तौ प्राणा इह प्राणा ।। ॐ आँ ह्रीं क्रों ..... अस्यां विष्णुमूर्तौ जीव इह स्थितः ।। ॐआं ह्रीं क्रों..अस्यां विष्णुमूर्तौ वाङ्मनस्त्वक्चक्षु श्रोत्रजिह्वा घ्राण पाणि पादपायूप स्थानी सर्वेन्द्रियाणि सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।।

१६ बार "ॐ" का जप करते हुये षोडश संस्कार की भावना करें ।। मूर्ति को कलश पर स्थापित करें । ॐ मनोजूतिर्मजिस्य.....से प्रतिष्ठा करें । वरुणरूप विष्णु की षोडशोपचार पूजन करें एवं प्रार्थना करें ।

वरुणाङ्गस्वरूपाय जीवनानां समाश्रय ।
पतिं जीवय कन्यायाश्चिरं पुत्र सुखं कुरु ।।
देहि विष्णो वरं देव कन्यां पालय दुःखतः ।।

तत्पश्चात् विष्णुमूर्ति को जलपूर्ण कलश में स्थापित करें ।

विवाह विधि करें । कन्या को कलश के दाहिंनी ओर पूर्व की तरफ मुँह करते हुये वेदी के पश्चिम में बिठाये । विवाह विधि की तरह वरुणरूप विष्णु का अर्चन करें । विष्टर प्रदान करें तथा मधुपर्क प्राशन्न कराये ।
कन्या तथा कुंभ के मध्य अन्तपर्ट करें । मङ्गलाष्टक पढ़ें ।
अन्तर्पट हटाकर कन्या पिता सपत्नीक कन्यादान का संकल्प करें ।
(कहीं किसी पद्धति में पंचसूत्र से "परित्वा" इत्यादि मंत्रों से जो कि अर्क विवाह में दिये हैं, कन्याकुंभ को दश बार वेष्टन कन्यादान से पहले लिखा है । परन्तु सूर्य वरुण संवाद के अनुसार तंतु बंधन विवाह विधि के बाद ही करना चाहिये ।)

कन्यादान संकल्प

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य...शुभ पुण्यतिथौ अमुकाहं मम अस्या कन्याया विषकन्यायोग, मृतवत्सा, काकवन्ध्या, जनन वैधव्य दोष अनुपत्तये श्री विष्णु स्वरूपिणे अश्वत्थकुंभाय श्रीरूपिणी वरार्थिनी इमां कन्यां तुभ्यमहं संप्रददे।

प्रार्थना करें

गौरीं कन्यामिमांश्लक्ष्णां यथा शक्ति विभूषिताम् ।
ददामि विष्णवे तुभ्यं सौभाग्यं देहि सर्वदा ।।

इसके बाद अञ्चलग्रंथिबंधन करें विवाह विधि की तरह सर्व कार्य करें । लाजा होम वारे तो कन्या वरुण कलश प्रणीता ब्रह्मा सहित अग्नि की प्रदक्षिणा करें । विवाहवत करें । वरुण कलश को कन्या के साथ नहीं घुमावें । सप्त अक्षत पुञ्जों पर वधु के पैर का स्पर्श करें सप्तपदी पढ़ें । सप्तवचन कहना व वर-वधू की तरह अग्नि के फेरे करना हमें उपर्युक्त कम लगता है, यहाँ कन्या का विष्णुरूपी वरुण से ब्रह्म सम्बन्ध ही होता है ।
(अन्य ब्राह्मण का वरण किया हो तो विधि के अनंतर उससे आयुष्य मंत्र का जाप करवाये ।)

आयुष्य मंत्र

ॐ आयुष्यं वर्चस्य६ रायस्पोष मौदिद्धदम् ।
इदं६ हिरण्यं वर्चस्व जैत्राया विशतादुमाम् ।।
दीर्घायुस्त ओषधे खनितायस्मै चत्वाखनाम्यहम् ।
अथो त्वन् दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात् ।।

इसके बाद कन्याकुंभ को पंचगुणित सूत्र से "परित्वादि दश मंत्रों से" जो कि अर्क विवाह में कहे हैं- से दश बार वेष्टन करें । स्वस्ति सूक्त पढ़ें, शांति स्तोत्र पढ़ें । कुछ देर ठहरकर कन्या कुंभ के दश बार वेष्टित सूत्र में से कुंभ को निकाल लेवें । विष्णु प्रतिमा कलश में से निकाल लेवें तथा कुंभ को जल में विसर्जन करें ।

पहिने हुये वस्त्र अलंकार सौभाग्य सूत्र का परित्याग करें । लोकाचार मे कन्या की चूड़ियाँ बड़ी करते हैं, अलग रख देते हैं, रुदन करते हैं ।
कन्या शुद्ध स्नान करके वस्त्रादि धारण करें, आचार्य पंचपल्लव जल से अभिषेक करें । कन्या विष्णुप्रतिमा वैवाहिक वस्त्र सुवर्ण अलंकार आचार्य को दान करें ।

ॐ अद्येह अमुकगोत्रा अमुकनामधेयाहं मम जन्मसामयिक लग्नाद अमुक स्थान स्थिता क्रूर दुष्टग्रह संसूचित वैधव्य दोष परिहार द्वारा सौभाग्यफल प्राप्तिपूर्वक भविष्यन्मद्भर्तृ शरीरारोग्यायुर्वृद्धि कामा इमे सुपूजिते विष्णुवरुण प्रतिमा इमानि वैवाहिक वस्त्रा-लंकारदीनि च अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। आचार्य कहें, "स्वस्ति" प्रतिवचनं ।

इसके बाद यथाशक्ति दान, दक्षिणा, ब्राह्मण भोजन का संकल्प करायें । ब्राह्मण आशीर्वाद देवें ।

(इति कुंभ विवाह)

नित्य तर्पण

तर्पण-विधि

आचारादर्शादि ग्रन्थों में लिखा है कि घर में अमावस्या, पितृपक्ष, विशेष, तिथि श्राद्ध के दिन तिल से तर्पण करें । किन्तु अन्य दिनों में घर में तिल से तर्पण न करें ।

तर्पण का फल सूर्योदय से आधे पहर तक अमृत, एक पहर तक मधु, डेढ़ पहर तक दूध और साढ़े तीन पहर तक जल रूप से पितरों को प्राप्त होता है । इसके उपरान्त का दिया हुआ जल राक्षसों को प्राप्त होता है ।

अग्रैस्तु तर्पयेद्देवान् मनुष्यान् कुशमध्यतः ।
पितृंस्तु कुशमूलाग्रैर्विधिः कौशो यथाक्रमम् ।।

कुशा के अग्र भाग से देवताओं का, मध्य भाग से मनुष्यों का और मूल अग्र भाग से पितरों का तर्पण करें ।

संकल्प

तीन कुशाओं को बाँधकर ग्रन्थी लगाकर कुशाओं का अग्रभाग पूर्व में रखते हुए दाहिने हाथ में जलादि लेकर संकल्प पढ़ें ।

ॐ विष्णुः...' श्रुति-स्मृति-पुराणोक्त-फलप्राप्त्यर्थं पितृतर्पणं करिष्ये'

तदनन्तर एक तांबे अथवा चांदी के पात्र में श्वेत चन्दन, चावल, सुगन्धित पुष्प और तुलसीदल रखें, फिर उस पात्र के ऊपर एक हाथ या प्रादेशमात्र लम्बे तीन कुश रखें जिनका अग्रभाग पूर्व की ओर रहें । इसके बाद उस पात्र में तर्पण के लिए जल भर दें । फिर उसमें रखे हुए तीनों कुशों को तुलसी सहित सम्पुटाकार दायें हाथ में लेकर बायें हाथ से ढक लें और निम्नाङ्कित मंत्र पढ़ते हुए देवताओं का आवाहन करें ।

ॐ विश्वेदेवास ऽआगत श्रृणुता म ऽइम हवम् । एदं बर्हिर्निषीदत ।।
विश्वेदेवाः श्रृणुतेम हवं मे ये ऽअन्तरिक्षे य उपद्यविष्ठ ।

:1

येऽअग्निजिह्वाऽउत वा यजत्राऽआसद्यास्मिन्वर्हिषि मादयद्ध्वम् ।।

आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः ।

ये तर्पणेऽत्र विहिताः सावधाना भवन्तु ते ।।

इस प्रकार आवाहन कर कुश का आसन दें और उन पूर्वाग्र कुशों द्वारा दायें हाथ की समस्त अङ्गुलियों के अग्रभाग अर्थात् देवतीर्थ से ब्रह्मादि देवताओं के लिए पूर्वोक्त पात्र में से एक-एक अंजलि चावल मिश्रित जल लेकर दूसरे पात्र में गिरावें और निम्नाङ्कित रूप से उन-उन देवताओं के नाम मन्त्र पढ़ते रहें ।

देवतर्पण

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम् । ॐ विष्णुस्तृप्यताम् । ॐ रुद्रस्तृप्यताम् । ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम् । ॐ देवास्तृप्यन्ताम् । ॐ छन्दांसि स्तृप्यन्ताम् । ॐ वेदास्तृप्यन्ताम् । ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम् । ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम् । ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम् । ॐ इतरोचार्या-स्तृप्यन्ताम् । ॐ संवस्तरः सावयवस्तृप्यताम् । ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ अप्सरसरतृप्यन्ताम् । ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम् । ॐ नागा-स्तृप्यन्ताम् । ॐ सागरास्तृप्यन्ताम् । ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम् । ॐ सरितस्तृप्यन्ताम् । ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम् । ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम् । ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम् । ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम् । ॐ सुपर्णा-स्तृप्यन्ताम् । ॐ भूतानि तृप्यन्ताम् । ॐ पशवस्तृप्यन्ताम् । ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम् । ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम् । ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यताम् ।

ऋषितर्पण

इसी प्रकार निम्नाङ्कित मन्त्रवाक्यों से मरीचि आदि ऋषियों को भी एक-एक अंजलि जल दें ।

ॐ मरीचिस्तृप्यताम् । ॐ अत्रिस्तृप्यताम् । ॐ अङ्गिरास्तृप्यताम्।

ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम् । ॐ पुलहस्तृप्यताम् । ॐ क्रतुस्तृप्यताम् । ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम् । ॐ प्रचेतास्तृप्यताम् । ॐ भृगुस्तृप्यताम् । ॐ नारदस्तृप्यताम् ।।

दिव्यमनुष्यतर्पण

इसके बाद जनेऊ को माला की भांति गले में धारण करके (अर्थात् निवीती हो) पूर्वोक्त कुशों हो दायें हाथ की कनिष्ठिका के मूल-भाग में उत्तराग्र रखकर स्वयं उत्तराभिमुख हो निम्नाङ्कित मन्त्र वचनों को दो-दो बार पढ़ते हुए दिव्य मनुष्यों के लिए दो-दो अंजलि यवसहित जल प्राजापत्यतीर्थ **(कनिष्ठिका के मूल भाग) से अर्पण करें ।**

ॐ सनकस्तृप्यताम् ।।२।। **ॐ सनन्दनस्तृप्यताम् ।।२।।**
ॐ सनातनस्तृप्यताम् ।।२।। **ॐ कपिलस्तृप्यताम् ।।२।।**
ॐ आसुरिस्तृप्यताम् ।।२।। **ॐ वोढुस्तृप्यताम् ।।२।।**
ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम् ।।२।।

दिव्य पितृतर्पण

तत्पश्चात् उन कुशों को द्विगुण भुग्न करके उनका मूल और अग्रभाग दक्षिण की ओर किये हुए ही उन्हें अंगूठे और तर्जनी के बीच में रखें और स्वयं दक्षिणाभिमुख हो बायें घुटने को पृथ्वी पर रखकर अपसव्यभाव से (जनेऊ को दायें कंधे पर रखकर) पूर्वोक्त पात्रस्थल जल में काला तिल मिलाकर पितृतीर्थ से (अंगूठा और तर्जनी के मध्य भाग से) दिव्य पितरों के लिए निम्नाङ्कित मन्त्र-वाक्यों को पढ़ते हुए तीन-तीन अंजलि जल दें ।

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः ।। ३ ।। ॐ सोमस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः ।। ३ ।। ॐ यमस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः ।। ३ ।। ॐ अर्यमा तृप्यताम् इदं

सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः ।। ३ ।। ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तेभ्यः स्वधा : नमः ।। ३ ।। ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तेभ्यः स्वधा नमः ।। ३ ।। ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तेभ्यः स्वधा नमः ।। ३ ।।

यमतर्पणः

इसी प्रकार निम्नलिखित मन्त्र-वाक्यों को पढ़ते हुए चौदह यमों के लिये भी पितृतीर्थ से ही तीन-तीन अंजलि तिल सहित जल दें ।

ॐ यमाय नमः ।। ३ ।। ॐ धर्मराजाय नमः ।। ३ ।। ॐ मृत्यवे नमः ।। ३ ।। ॐ अन्तकाय नमः ।।३।। ॐ वैवस्वताय नमः ।। ३ ।। ॐ कालाय नमः ।। ३ ।। ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः ।। ३ ।। ॐ औदुम्बराय नमः ।। ३ ।। ॐ दध्नाय नमः ।। ३ ।। ॐ नीलाय नमः ।। ३ ।। ॐ परमेष्ठिने नमः ।।३।। ॐ वृकोदराय नमः ।। ३ ।। ॐ चित्राय नमः ।।३ ।। ॐ चित्रगुप्ताय नमः ।।३ ।।

दक्षिण की ओर बैठकर आचमन कर बायाँ घुटना मोड़ जनेऊ तथा उत्तरीय को दाहिने कंधे पर पितृतीर्थ तर्जनी के मूल तथा कुशा के अग्रभाग और मूल से तिल सहित प्रत्येक नाम से दक्षिण में तीन-तीन अंजलि देवें । पवित्री दाहिने तथा तीन को बायें हाथ की अनामिका में धारण करें ।

मनुष्य पितृ तर्पण

आवाहन (तीर्थों में नहीं करें ।)

ॐ उशन्तस्त्वा निधीमह्युशन्तः समिधीमहि ।
उशन्नुशत आवाह पितृन्हविषे अत्तवे ।।

ॐ आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः । अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ।

तदन्तर अपने पितृगणों का नाम-गोत्र आदि उच्चारण करते हुए प्रत्येक के लिए पूर्वोक्त विधि से तीन-तीन अंजलि तिल सहित जल दें । यथा -
अमुकगोत्रः अस्मत्पिता (बाप) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः ।।३।। अमुकगोत्रः अस्मत्पितामहः (दादा) अमुकशर्मा रुद्ररूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः ।।३।। अमुकगोत्रः अस्मत्प्र-पितामहः (परदादा) अमुकशर्मा आदित्यरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः ।।३।। अमुकगोत्रा अस्मन्माता अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ।।३।। अमुकगोत्रा अस्मत्पितामही (दादी) अमुकी देवी रूद्ररूपा तृप्यताम् इदं सतिलं तलं तस्यै स्वधा नमः ।।३।। अमुकगोत्रा अस्मत्प्रपितामही (परदादी) अमुकी देवी आदित्यरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ।।३।। अमुकगोत्रा अस्मत्सापत्नमाता (सौतेली मां) अमुकी देवी वसुरूपी तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ।।२।।

इसके बाद निम्नाङ्कित नौ मन्त्रों को पढ़ते हुए पितृतीर्थ से जल गिराता रहें।

ॐ उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः । असुं यऽ ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु...अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा ऽअथर्वाणो भृगवः सोम्यासः । तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम ।। आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽ-ग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः । अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान ।।

उर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्त्रुतम् स्वधास्थ तर्पयत मे पितृन् ।

पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा

नमः प्रतिपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । अक्षन्पितरोऽ-मीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् । ये चेह पितरो ये च नेह यांश्च विद्म याँ २ ।।
उ च न प्रविद्म त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञँ सुकृतं जुषस्व ।।
ॐ मधु व्वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ।।
ॐ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता ।।
ॐ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँऽ२अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ।।
ॐ मधु । मधु । मधु । तृप्यध्वम् । तृप्यध्वम् । तृप्यध्वम् ।

फिर नीचे लिखे मन्त्र का पाठमात्र करें ।

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः देष्मैतद्वः पितरो वास आधत्त ।

द्वितीय गोत्रतर्पण

इसके बाद द्वितीय गोत्र मातामह आदि का तर्पण करें, यहाँ भी पहले की ही भाँति निम्नलिखित वाक्यों को तीन-तीन बार पढ़कर तिल सहित जल की तीन-तीन अञ्जलियाँ पितृतीर्थ से दें । यथा-

अमुकगोत्रः अस्मन्मातामहः (नाना) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः ।।३।। अमुकगोत्रः अस्मत्प्रमातामहः (परनाना) अमुकशर्मा रुद्ररूप-स्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ।।३।। अमुकगोत्रः अस्मद्वृद्धप्रमातामहः (बूढ़े परनाना) अमुकशर्मा आदित्यरूप-स्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ।।३।। अमुकगोत्रा अस्मन्मातामही (नानी) अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ।।३।। अमुकगोत्रा अस्मत्प्रमातामही

(परनानी) अमुकी देवी रूद्ररूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ।।३।। अमुकगोत्रा अस्मद्वृद्धप्रमातामही (बूढ़ी परनानी) अमुकी देवी आदित्यरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ।।३।।

पत्न्यादितर्पण

अमुकगोत्रा अस्मत्पत्नी (भार्या) अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ।।१।। अमुकगोत्रः अस्मत्सुतः (बेटा) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ।।३।। अमुकगोत्रा अस्मत्कन्या (बेटी) अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ।।१।। अमुकगोत्रः अस्मत्पितृव्यः (पिता के भाई) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ।।३।। अमुकगोत्रा अस्मन्मातुलः (मामा) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ।।३।। अमुकगोत्रा अस्मद्भ्राता (अपना भाई) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ।।३।। अमुकगोत्रः अस्मद् सापत्न सौतेला भ्राता (सौतेला भाई) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ।।३।। अमुकगोत्रा अस्मत्पितृभगिनी (बूआ) अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ।। अमुकगोत्रा अस्मन्मातृभगिनी (मौसी) अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ।।१।। अमुकगोत्रा अस्मदात्मभगिनी (अपनी बहिन) अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ।।१।। अमुकगोत्रा अस्मत्सापत्नभगिनी (सौतेली बहिन) अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ।।१।। अमुकगोत्रः अस्मच्छ्वशुरः (श्वसुर) अमुकशर्मा

वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ।।३।। अमुकगोत्रः अस्मद्गुरु अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ।।३।। अमुकगोत्रा अस्मदाचार्यपत्नी अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ।।२।। अमुकगोत्रः अस्मच्छिष्यः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ।।३।। अमुकगोत्रः अस्मत्सखा अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ।।३।। अमुकगोत्रः अस्मदाप्तपुरुषः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ।।३।।

इसके बाद सव्य होकर पूर्वाभिमुख हो नीचे लिखे श्लोकों को पढ़ते हुए जल गिरावें ।

देवासुरास्तथा यज्ञा नागा गन्धर्वराक्षसाः ।
पिशाचा गुह्यकाः सिद्धाः कूष्माण्डास्तरवः खगाः ।।
जलेचरा भूनिलया वाय्वाधाराश्च जन्तवः ।
प्रीतिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाखिलाः ।।
नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः ।
तेषामाप्यायनायैतद् दीयते सलिलं मया ।।
येऽबान्धवा बान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु ये चास्मत्तोयकाङ्क्षिणः ।।
ॐ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः ।
तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः ।।
अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम् ।
आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् ।।
येऽबान्धवा बान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मया दत्तेन वारिणा ।।

वस्त्र-निष्पीडन

तत्पश्चात् वस्त्र को चार आवृत्ति लपेटकर जल में डुबावे और बाहर ले आकर निम्नाङ्कित मन्त्र को पढ़ते हुए अपसव्य-भाव से अपने बायें भाग में भूमि पर उस वस्त्र को निचोड़ें । (पवित्रक को तर्पण किये हुए जल में छोड़ दें । यदि घर में किसी मृत पुरुष का वार्षिक श्राद्ध आदि कर्म हो तो वस्त्र-निष्पीडन को नहीं करना चाहिये ।)

वस्त्र-निष्पीडन का मन्त्र यह है ।

ये चास्माकं कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः ।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम् ।।

भीष्मतर्पण

इसके बाद दक्षिणाभिमुख हो पितृतर्पण के समान ही जनेऊ अपसव्य करके हाथ में कुश धारण किये हुए ही बालब्रह्मचारी भक्तप्रवर भीष्म के लिए पितृतीर्थ से तिलमिश्रित जल के द्वारा तर्पण करें । उनके तर्पण का मन्त्र निम्नाङ्कित है ।

वैयाघ्रपदगोत्राय साङ्कृतिप्रवराय च ।
गङ्गापुत्रायस भीष्माय प्रदास्येऽहं तिलोदकम् ।
अपुत्राय ददाम्येतत्सलिलं भीष्मवर्मणे ।।

अर्घदानं

फिर शुद्ध जल से आचमन करके प्राणायाम करें । तदनन्तर यज्ञोपवीत बायें कंधे पर करके एक पात्र में शुद्ध जल भरकर उसके मध्यभाग में अनामिका से षड्दल कलम बनावे और उसमें श्वेत चन्दन, अक्षत पुष्प तथा तुलसीदल छोड़ दें । फिर दूसरे पात्र में चन्दन से षड्दल-कमल बनाकर उसमें पूर्वादि दिशा के क्रम से ब्रह्मादि देवताओं का आवाहन-पूजन करें तथा पहले पात्र के जल से उन पूजित देवताओं के लिए **अर्घ** अर्पण करें । **अर्घदान** के मन्त्र निम्नाङ्कित हैं ।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथम पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो ब्वेनऽआवः ।
स बुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ।।

ॐ ब्रह्मणे नमः । ब्रह्माणं पूजयामि ।।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्यपाँ ७ सुरे स्वाहा ।।

ॐ विष्णवे नमः । विष्णुं पूजयामि ।।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतो तऽइषवे नमः ।। बाहुभ्यामुत ते नमः ।।

ॐ रुद्राय नमः । रुद्रं पूजयामि ।।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

ॐ सवित्रे नमः । सवितारं पूजयामि ।।

ॐ मित्रस्य चर्षणीधृतोऽवो देवस्य सानसि । द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम् ।।

ॐ मित्राय नमः । मित्रं पूजयामि ।।

ॐ इमं मे व्वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युराचक्रे ।।

ॐ वरुणाय नमः । वरुणं पूजयामि ।।

सूर्योपस्थान

इसके बाद निम्नाङ्कित मन्त्र पढ़कर सूर्योपस्थान करें ।

ॐ अदृश्रमस्य केतवो विरश्मयो जनाँ ।।२।। अनु । भ्राजन्तो ऽअग्नयो यथा । उपयामगृहीतोऽसि सूर्याय त्वा भ्राजायैष ते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजाय । सूर्य भ्राजिष्ठ भ्राजिष्ठस्त्वं देवेष्वसि भ्राजिष्ठोऽहमनुष्येषु भूयासम् ।।

ॐ हꣳ सः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता व्वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् । नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऽऋतजा ऽअद्रिजा ऽऋतं वृहत् ।।

इसके पश्चात् दिग्देवताओं को पूर्वादि क्रम से नमस्कार करें ।

ॐ इन्द्राय नमः, प्राच्यै० ।। ॐ अग्नये नमः, आग्नेय्यै० ।। ॐ यमाय नमः, दक्षिणायै० ।। ॐ निर्ऋतये नमः, नैर्ऋत्यै० ।। ॐ वरुणाय नमः, पश्चिमायै० ।। ॐ वायवे नमः, वायव्यै० ।। ॐ सोमाय नमः, उदीच्यै० ।। ॐ ईशानाय नमः, ऐशान्यै० ।। ॐ ब्रह्मणे नमः, ऊर्ध्वायै० ।। ॐ अनन्ताय नमः, अघोरायै० ।।

इसके बाद जल में नमस्कार करें ।

ॐ ब्रह्मणे नमः । ॐ अग्नये नमः । ॐ पृथिव्यै नमः । ॐ ओषधिभ्यो नमः । ॐ वाचे नमः । ॐ वाचस्पतये नमः । ॐ महद्भ्यो नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ अद्भ्यो नमः । ॐ अपाम्पतये नमः । ॐ वरुणाय नमः ।।

मुखमार्जन

फिर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर जल से मुँह धो डालें ।

ॐ संवर्चसा पयसा सन्तनूभिरगन्महि मनसा सँ शिवेन ।
त्वष्टा सुदत्रे विदधातु रायोऽनुमार्ष्टुतन्वो यद्विलिष्टम् ।।

विसर्जन

नीचे लिखे मन्त्र पढ़कर देवताओं का विसर्जन करें ।

ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित ।
मनसस्पतऽइमं देव यज्ञँ स्वाहा व्वाते धाः ।।

समर्पण

अनेन यथाशक्तिकृतेन देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणाख्येन कर्मणा भगवान् मम समस्त पितृस्वरूपी जनार्दनवासुदेवः प्रीयतां न मम ।

ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः ।

पंचक मरण शान्ति

पंचक से मृत्यु होने पर वंश के लिए अनिष्ट कारक होता है इसलिए जहाँ पर शव जलाना हो वहाँ भूमि शुद्धकर कुश से मनुष्याकृति की पाँच प्रतिमा बनाकर यव के आटे से उनका लेपन कर, अपसव्य हो पूजन संकल्प करें।

अद्येत्यादि अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य धनिष्ठादि पंचकेमरण-सूचितवंशानिष्ट विनाशार्थं पंचकशान्तिं करिष्ये ।

प्रतिमाओं को स्थापित कर पूजन करें ।

१. प्रेतवाहाय नमः ।। **२. प्रेतसखायै नमः ।।**
३. प्रेतपाय नमः ।। **४. प्रेतभूमिपाय नमः ।।**
५. प्रेत हर्त्रे नमः ।।

नाम मंत्र से प्रत्येक प्रतिमा को गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीपक और नैवेद्य से पूजन कर दाह से पहले शव के ऊपर रख दें ।

पहली प्रतिमा शिर पर । दूसरी दक्षिण कुक्षी पर । तीसरी बांयी कुक्षी पर । चौथी नाभी के ऊपर । पांचवीं पैरों के ऊपर रख घी की आहुति दें।

१. प्रेतवाहाय स्वाहा ।। **२. प्रेतसखायै स्वाहा ।।**
३. प्रेतपाय स्वाहा ।। **४. प्रेत भूमिपाय स्वाहा ।।**
५. प्रेतहर्त्रे स्वाहा ।।

उपर्युक्त आहुति देकर पूर्व प्रकार से शव का दाह कर अशौचान्तर (ग्यारहवें, बारहवें दिन पंचक शान्ति करें।)

कर्मकर्ता नदी, तालाब, तीर्थ आदि के पास जाकर श्राद्ध भूमि को साफ कर गोबर से लीप स्नान के बाद नया यज्ञोपवीत वस्त्र धारण करें । होम के लिये वेदी बनावें । कलश स्थापन पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर तथा चारों के मध्य में करें । गणेश नवग्रह आदि का पूजन कर अपसव्य हो

संकल्प करें ।

अद्येत्यादि, अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य धनिष्ठादिपंचक जनित दुर्मरण दोष निवृत्यर्थं (सव्य हो) मम गृहे सपरिवाराणामायुरारोग्य सुख प्राप्त्यर्थं विष्णुपूजनपूर्वकं पंचक शांतिकर्माहं करिष्ये ।

संकल्प कर भगवान विष्णु (शालिग्राम) का पूजन षोडशोपचार से करके पुनः संकल्प करें ।

अद्येत्यादि० अमुकप्रेतस्य पंचकशांतिकर्मांगतया विहितं कलश-पंचक देवतानां स्थापनं प्रतिष्ठापूजनं च करिष्ये ।

।। इति पंचक मरण शान्ति ।।

स्वागतगीतम्

महामहनीय मेधाविन् त्वदीयं स्वागतं कुर्मः।
गुरोर्गीर्वाणभाषायां त्वदीयं स्वागतं कुर्मः।। ध्रु।।
दिनं नो धन्यतममेतत् इयं मङ्गलमयी बेला।
वयं यद् बालका एते त्वदीयं स्वागतं कुर्मः।। १।।
न काचिद् भावनाभक्तिःन काचित् साधनाशक्तिः।
परं श्रद्धासुमाञ्जलिभिः त्वदीयं स्वागतं कुर्मः।। २।।
किमधिकं ब्रूमहे श्रीमन् निवेदनमेत देवैकम्।
न बाला विस्मृतिं नेयाः त्वदीयं स्वागतं कुर्मः।। ३।।
न धूपं दीप-नैवेद्यं न किञ्चिद् भक्ति साहित्यं।
न पुष्पं चन्दनं श्रीमन् त्वदीयं स्वागतं कुर्मः।। ४।।
महामहनीय मेधाविन् त्वदीयं स्वागतं कुर्मः।।

श्री सङ्कटनाशनगणेशस्तोत्रम्

श्री नारदजी कहते हैं कि इस गणपति स्तोत्र का नित्य पाठ करें। पाठकर्ता को महीने में अभीष्ट फल की प्रप्ति होती है। एक वर्ष पाठ करने से मनुष्य सिद्धि को प्राप्त कर लेता है। इसमें संशय नहीं है। जो इस स्तोत्र को लिखकर आठ ब्रह्मणों को अर्पित करता है, उसे गणेश जी की कृपा से सम्पूर्ण विद्या की प्राप्ति होती है।

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्।
भक्त्या वासं स्मरेन्नित्यमायुःकामार्थसिद्धये।। १।।
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम्।। २।।

लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टकम्।।३।।
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम्।।४।।
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम्।।५।।
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम्।।६।।
जपेद् गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैःफलं लभेत्।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः।।७।।
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः।।८।।

।। श्री नारदपुराणे सङ्कटनाशनं नाम गणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

श्री पञ्चरत्नगणेशस्तोत्रम्

हिमांगजा सुतं भजे, गणेशमीश नन्दनं।
एकदंत वक्रतुण्ड, नागयज्ञ सूत्रकम्।।
रक्तगात्र धूम्रनेत्र, रक्त वस्त्र मण्डितम्।
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष, ते नमो गजाननम्।।
नमो नमो गजाननम्, नमो नमो गजाननम्।। १।।
पाश पाणि चक्रपाणि, मूषकाधिरोहणम्।
अग्निकोटि वज्रकोटि, सूर्यकोटिमुज्वलम्।।
चित्रमाल मुक्त जाल, भालचन्द्र शोभितम्।

कल्पवृक्ष भक्तरक्ष, ते नमो गजाननम्।।
नमो नमो गजाननम्, नमो नमो गजाननम्।। २।।
विश्ववीर्य विश्वधैर्य विश्वकर्म निर्मितम्।
विश्वकर्ता विश्व हर्ता, यंत्र-तंत्र पूजितम्।।
चतुर्भुजं गजाननं चतुर्युगादि सेवितम्।
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष, ते नमो गजाननम्।।
नमो नमो गजाननम्, नमो नमो गजाननम्।। ३।।
भूत भव्य हव्य कव्य भार्गवादि सेवितम्।
दिव्य ताल ज्वाल भाल, लोकपाल वंदितम्।।
पूर्ण ब्रह्म सूर्प कर्ण पार्षदं पुरातनम्।
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष, ते नमो गजाननम्।।
नमो नमो गजाननम्, नमो नमो गजाननम्।। ४।।
अष्ट सिद्धि, सिद्धि बुद्धि सद्गति प्रदायकम्।
यज्ञ कर्म सर्व धर्म पूजनादि निश्चितम्।।
भूत दृष्टि दिव्य वृष्टि दानवादि नाशनम्।
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष, ते नमो गजाननम्।।
नमो नमो गजाननम्, नमो नमो गजाननम्।। ५।।

श्री भगवतीस्तोत्रम्

जय भगवति देवि नमो वरदे, जयपापविनाशिनिबहुफलदे।
जय शुंभनिशुंभकपालधरे, प्रणमामि तु देवि नरार्तिहरे।। १।।
जय चन्द्र दिवाकर नेत्रधरे, जय पावकभूषितवक्त्रवरे।
जय भैरवदेहनिलीनपरे, जय अन्धकदैत्यविशोषकरे ।। २।।
जय महिषविमर्दिनिशूलकरे, जय लोकसमस्तकपापहरे।
जय देवि पितामहविष्णुनुते, जय भास्करशक्रशिरोऽवनते।। ३।।

जय षण्मुखसायुधईशनुते, जय सागरगामिनि शंभुनुते।
जय दुःखदरिद्रविनाशकरे, जय पुत्रकलत्रविवृद्धि करे।। ४।।
जय देवि समस्तशरीरधरे, जय नाकविदर्शिनि दुःखहरे।
जयव्याधिविनाशिनिमोक्षकरे,जयवाञ्छितदायिनिसिद्धिवरे।। ५।।

एतद्व्यासकृतं स्तोत्रं यः पठेन्नियतः शुचिः।
गृहे वा शुद्धभावेन प्रीता भगवती सदा।। ६।।

श्री कालभैरवाष्टकम्

देवराजसेव्यमानपावनाङ्घ्रिपङ्कजं ।
व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम् ।।
नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगम्बरं ।
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ।। १।।
भानुकोटिभास्वरंभवाब्धितारकंपरं ।
नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकंत्रिलोचनम् ।।
कालकालमम्बुजाक्षमक्षशूलमक्षरं ।
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ।। २।।
शूलटङ्कपाशदण्डपाणिमादिकारणं ।
श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम् ।।
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्रताण्डवप्रियं।
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ।। ३।।
भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहं ।
भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोकविग्रहम्।।
विनिक्वणन्मनोज्ञहेमकिङ्किणीलसत्कटिं ।
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ।। ४।।

धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशकं।
कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम्।।
स्वर्णवर्णशेषपाशशोभिताङ्गमण्डलं ।
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ।।५।।
रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मकं ।
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरञ्जनम् ।।
मृत्युदर्पनाशनं करालदंष्ट्रमोक्षणं ।
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।६।।
अट्टहासभिन्नपद्मजाण्डकोशसन्ततिं ।
दृष्टिपातनष्टपापजालमुग्रशासनम् ।।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकंधरं ।
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ।।७।।
भूतसंघनायकं विशालकीर्तिदायकं ।
काशिवासलोकपुण्यपापशोधकं विभुम्।।
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं।
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ।।८।।
कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं।
ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यवर्धनम् ।।
शोकमोहदैन्यलोभकोपतापनाशनं ।
प्रयान्ति कालभैरवाङ्घ्रिसंनिधिंनरा ध्रुवम्।।९।।

।। श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं कालभैरवाष्टकं सम्पूर्णम्।।

मधुराष्टकम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।। १।।
वचनं मधुर चरितं मधुर वसनं मधुर वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।। २।।
वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।। ३।।
गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।। ४।।
करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।। ५।।
गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।। ६।।
गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं भुक्तं मधुरम्।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।। ७।।
गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।। ८।।

।। इति श्रीमद्वल्लभाचार्यकृतं मधुराष्टकं सम्पूर्णम्।।

श्री शिवमानसपूजा

शास्त्रों में पूजा को हजारगुना अधिक महत्त्वपूर्ण बनाने के लिए मानसपूजा का विधान बताया गया है। इस पूजा को सर्वप्रथम करके फिर बाह्य वस्तुओं से पूजन करें। इसमें मन कल्पित एक फूल भी चढ़ा दिया

जाय तो करोड़ों बाहरी फूल चढ़ाने के बराबर होता है। इसी प्रकार मानस चन्दन धूप दीप नैवेद्य भगवान को करोड़ों गुना अधिक संतोष दे सकेंगे। अतः मानस पूजा बहुत उपयोगी है। अर्थात् भगवान के चरणों में सम्पूर्ण वस्तुएँ भावना से अर्पण करते हैं। इसे ही मानस पूजा कहते हैं।

रत्नैः कल्पितमानसं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं।
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम्।।
जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा।
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम्।। १।।
सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं।
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानसम्।।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं।
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु।। २।।
छत्रं चामरयोयुगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं।
वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा।।
साष्टाङ्गं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया।
सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो।। ३।।
आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं।
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो।
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्।। ४।।
करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा।
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व।
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो।। ५।।

।। इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचिता शिवमानसपूजा समाप्ता।।

शिवाष्टकम्

प्रभुं प्राणनाथं विभुं विश्वनाथं जगन्नाथनाथं सदानन्द भाजम्।
भवद्भव्यभूतेश्वरं भूतनाथं शिवं शंकरं शम्भुमीशानमीडे।। १।।
गले रूण्डमालं तनौ सर्पजालं महाकालकालंगणेशाधिपालम्।
जटाजूटगङ्गौत्तरङ्गैर्विशालं शिवं शंकरं शम्भुमीशानमीडे।। २।।
मुदामाकरं मण्डनं मण्डयन्तं महामण्डलंभस्मभूषाधरंतम्।
अनादिह्यपारं महामोहमारं शिवं शंकरं शम्भुमीशानमीडे।। ३।।
तटाधोनिवासं महाट्टाट्टहासं महापापनाशं सदा सुप्रकाशम्।
गिरीशं गणेशं सुरेशं महेशं शिवं शंकरं शम्भुमीशानमीडे।। ४।।
गिरीन्द्रात्मजासंगृहीतार्धदेहं गिरौसस्थितं सर्वदासन्नगेहम्।
परब्रह्मब्रह्मादिभिर्वन्द्यमानं शिवं शंकरं शम्भुमीशानमीडे।। ५।।
कपालं त्रिशूलं कराभ्यां दधानं पदाम्भोजनम्राय कामं ददानम्।
बलीवर्दयानं सुराणां प्रधानं शिवं शंकरं शम्भुमीशानमीडे।। ६।।
शरच्चन्द्रगात्रं गुणानन्दपात्रं त्रिनेत्रं पवित्रं धनेशस्य मित्रम्।
अपर्णाकलत्रं चरित्रं विचित्रं शिवं शंकरं शम्भुमीशानमीडे।। ७।।
हरं सर्पहारं चिताभूविहारं भवं वेदसारं सदा निर्विकारम्।
श्मशाने वसन्तं मनोजं दहन्तं शिवं शंकरं शम्भुमीशानमीडे।। ८।।
स्तवं यःप्रभाते नरः शूलपाणेः पठेत्सर्वदा भर्गभावानुरक्तः।
सुपुत्रं धनं धान्यमित्रं कलत्रं विचित्रं समासाद्य मोक्षं प्रयाति।। ९।।

।। इति श्री शिवाष्टकम् सम्पूर्णम्।।

भवान्यष्टकम्

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता।
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव ।
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।। १ ।।

भवाब्धावपारे महादुःखभीरु ।
पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः।।
कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाहम् ।
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।। २ ।।

न जानामि दानं न च ध्यानयोगं।
न जानामि तंत्रं न च स्तोत्रमन्त्रम्।।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगम्।
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।। ३ ।।

न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं।
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मातः।
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।। ४ ।।

कुकर्मी कुसंगी कुबुद्धिः कुदासः।
कुलाचारहीनः कदाचारलीनः ।।
कुदृष्टिं कुवाक्यप्रबन्धः सदाहम्।
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।। ५ ।।

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं ।
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।।
न जानामिचान्यत् सदाहं शरण्ये।
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।। ६ ।।

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे ।
जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये ।।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि।
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।। ७।।

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो ।
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः।।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाहम्।
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।। ८।।

लिङ्गाष्टक स्तोत्रम्

ब्रह्म-मुरारि-सुरार्चित-लिङ्गं निर्मल-भाषित शोभित-लिङ्गम्।
जन्मज-दुःख-विनाशक-लिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिव-लिङ्गम्।। १।।
देवमुनि प्रवरार्च्चित-लिङ्गं कामदहं करुणाकर-लिङ्गम्।
रावणदर्प-विनाशन-लिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिव-लिङ्गम्।। २।।
सर्व्वसुगंधि-सुलेपित-लिङ्गं बुद्धि-विवर्धन-कारण-लिङ्गम्।
सिद्ध-सुरासुर-वन्दित-लिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिव-लिङ्गम्।। ३।।
कनक-महामणि-भूषित-लिङ्गं फणिपति-वेष्टित-शोभित-लिङ्गम्।
दक्ष-सुयज्ञ-विनाशक-लिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिव-लिङ्गम्।।४।।
कुंकुम-चन्दन-लेपित-लिङ्गं पंकजहार-सुशोभित-लिङ्गम्।
सञ्चितपाप-विनाशन-लिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिव-लिङ्गम्।। ५।।
देवगणार्च्चित-सेवित-लिङ्गं भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम्।
दिनकर-कोटि-प्रभाकर-लिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिव-लिङ्गम्।। ६।।
अष्टदलोपरि-वेष्टित-लिङ्गं सर्वसमुद्भव - कारण - लिङ्गम्।
अष्टदरिद्र-विनाशन-लिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिव-लिङ्गम्।।७।।

सुरगुरु-सुरवर-पूजित-लिङ्गं सुर-वनपुष्प-सदार्चित-लिङ्गम्।
परात्परं-परमात्मक-लिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिव-लिङ्गम् ।।८।।

लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिव सन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।।

कनकधारास्तोत्र

कनकधारा स्तोत्र आदि शङ्कराचार्यादि के द्वारा रचित है। यह स्तोत्र स्वर्ण की वर्षा करानेवाला कहा गया है। रंक को भी राजा बनाने में समर्थ है। अटूट श्रद्धा, विश्वास, भक्तिपूर्वक पाठ करने से आश्चर्यजनक लाभ, व्यापार में वृद्धि, दरिद्र नाशक, कार्यसिद्धि, ऐश्वर्यता एवं ऋण से मुक्ति मिलती है।

अङ्गंहरे पुलकभूषणमाश्रयन्ती भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम्।
अङ्गीकृता खिलविभूतिरपाङ्गलीला माङ्गल्यदाऽस्तुमम् मङ्गलदेवतायाः।।१।।
मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि।
मालादृशोर्मधुकरीव महोत्पले या सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः।।२।।
विश्वामरेन्द्रपदविभ्रमदानदक्षम् आनन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्धमिन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः ।।३।।
आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्दमानन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम्।
आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः।।४।।
बाह्वन्तरे मुरजितःश्रितकौस्तुभे या हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला कल्याणमाहवतु मे कमलालयायाः।।५।।
कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारेर्धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव।
मातुःसमस्तजगतां महनीयमूर्तिर्भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः।।६।।
प्राप्तं पदं प्रथमतःकिल यत्प्रभावान्माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन।
मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्धं मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः।।७।।

दद्याद्दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारामस्मिन्नकिञ्चनविहङ्गशिशो विषण्णे।
दुष्कर्मधर्म मपनीय चिराय दूरं नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः ।।८।।
इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्रदृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं भजन्ते।
दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टां पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः।।९।।
गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति ।
सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थिताया तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै।।१०।।
श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै रत्यै नमोऽस्तुरमणीयगुणार्णवायै।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै।।११॥
नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूम्यै।
नमोऽस्तु सोमामृतसौदरायै नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै ।।१२।।
सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये।।१३।।
यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः सेवकस्य सकलार्थ सम्पदः।
संतनोति वचनाङ्गमानसैस्त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे ।।१४।।
सरसिजनयने सरोजहस्ते धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ।।१५।।
दिग्घस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्टस्वर्वाहिनीविमलचारुजलप्लुताङ्गीम्।
प्रार्तनमामि जगतां जननीमशेषलोकाधिनाथगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम्।।१६।।
कमले कमलाक्षवल्लभे तं करुणापूरतरङ्गितैरपाङ्गैः।
अवलोकय मामकिञ्चनानां प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः ।।१७।।
स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम् ।।
गुणाधिका गुरुतरभाग्यभाजिनो भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः।।१८।।

।। श्रीभगवत्पादशङ्करविरचितं कनकधारास्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

श्री सरस्वती स्तोत्रम्

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीम्।
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं, पद्मासने संस्थिताम्।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं, बुद्धिप्रदां शारदाम्।। १ ।।
रविरुद्रपितामहविष्णुनुतं, हरिचन्दनकुंकुमपंक युतम्।
मुनिवृन्दगणेन्द्रसमानयुतं, तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।।२ ।।
शशिशुद्धसुधाहिमधामयुतं, शरदंबरबिंबसमानकरम्।
बहुरत्नमनोहरकान्तियुतं, तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।। ३ ।।
कनकाब्जविभूषितभूतिभवं भवभावविभाषितभिन्नपदम्।
प्रभुचित्तसमाहितसाधुपदं, तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।। ४ ।।
भवसागरमज्जनभीतिनुतं, प्रतिपादितसंततिकारमिदम्।
विमलाधिकशुद्धविशुद्धपदं, तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।। ५ ।।
मतिहीनजनाश्रयपादमिदं, सकलागमभाषितभिन्नपदम्।
परिपूरितविश्वमनेकभवं, तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।। ६ ।।
परिपूर्णमनोरथधामनिधिं, परमार्थविचारविवेकविधिम्।
सुरयोषितसेवितपादतलं, तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।। ७ ।।
सुरमौलिमणिद्युतिशुभ्रकरं, विषयादिमहाभयवर्णहरम्।
निजकान्तिविलेपितचन्द्रशिवं,तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।। ८ ।।
गुणनैककुलस्थितिभीतिपदं गुणगौरवगर्वितसत्यपदम्।
कमलोदरकोमलपादतलं, तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।। ९ ।।
त्रिसंध्यं यो जपेन्नित्यं जले वापि स्थले स्थितिः ।
पाठमात्राद् भवेत्प्राज्ञो ब्रह्मनिष्ठः पुनः पुनः ।।१०।।

।। इति सरस्वतीस्तोत्रम्।।

श्री सूक्तम्

हिरण्यवर्णामिति पंचदशर्चस्य सूक्तस्य आनंदकर्दमचिक्लतेंदिरासुता ऋषयः। श्रीरग्निर्देवते। आद्यास्तिस्रोऽनुष्टुभः। चतुर्थी बृहती। पंचमीषष्ठ्यौ त्रिष्टुभौ। ततोऽष्टावनुष्टुभः। अंत्या प्रस्तारपंक्तिं। श्री महालक्ष्मीप्रीत्यर्थं जपे। अभिषेके। होमे विनियोगः।

हरिः ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चंद्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।। १।।
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।। २।।
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवीजुषताम्।। ३।।
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।४।।
चंद्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।। ५।।
आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोथबिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः।। ६।।
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।। ७।।
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।। ८।।
गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।। ९।।

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयिश्रीः श्रयतां यशः।। १०।।
कर्दमेन प्रजाभूता मयि संभव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।। ११।।
आपः स्त्रजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।। १२।।
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्।
चंद्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।। १३।।
आर्द्रां यष्करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।। १४।।
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विंदेयं पुरुषानहम।। १५।।
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।१६।।

लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री सूक्त सर्व श्रेष्ठ माना गया है। यह धन का अक्षय भंडार देने में समर्थ है। इसके पाठ से जीवन में धन मान यश सुरम्य देह परमोच्चता सब कुछ प्राप्त हो जाता है। १५ रिचाओंका पाठ प्रतिदिन करने से अपार धन की प्राप्ति होती है। घृत से हवन करने पर विशेष फलदायी है।
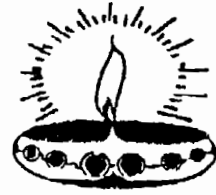
अथ प्रज्ञावर्धन स्तोत्रम्

ॐ अथास्य प्रज्ञावर्धन-स्तोत्रस्य भगवान् शिव-ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, स्कन्द-कुमारो देवता, प्रज्ञासिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः, इति संकल्पः।

योगेश्वरो महासेनः कार्तिकेयोऽग्निनन्दनः।
स्कन्दः कुमारः सेनानी स्वामी शंकरसंभवः।। १ ।।
गाङ्गेयस्ताम्रचूडश्च ब्रह्मचारी शिखिध्वजः।
तारकारिरुमापुत्रः क्रौंचारिश्च षडाननः।। २ ।।
शब्दब्रह्मसमूहश्च सिद्धः सारस्वतो गुहः।
सनत्कुमारो भगवान् भोगमोक्षप्रदः प्रभुः।। ३ ।।
शरजन्मा गणाधीशः पूर्वजो मुक्तिमार्गकृत्।
सर्वागमप्रणेता च वांछितार्थप्रदर्शकः।। ४ ।।
अष्टाविंशति नामानि मदीयानीति यः पठेत्।
प्रत्यूषे श्रद्धया युक्तो मूको वाचस्पतिर्भवेत्।। ५ ।।
महामन्त्रमयानीति मम नामानि कीर्तयेत्।
महाप्रज्ञामवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा।। ६ ।।
पुष्यनक्षत्रमारभ्य पुनः पुष्ये समाप्य च।
अश्वत्थमूले प्रतिदिनं दशवारं तु सम्पठेत्।। ७ ।।
सप्तविंश-दिनैरेकं पुरश्चरणकं भवेत्।

।। इति प्रज्ञावर्धनस्तोत्रम् ।।

-: पुष्य नक्षत्र :-

पुष्य नक्षत्र से प्रारंभ करके दूसरे पुष्य नक्षत्र तक पीपल वृक्ष के नीचे १० बार पाठ करने से मनुष्य बुद्धिमान्, प्रखर वक्ता, विद्या के क्षेत्र में पारंगत होता है तथा स्मरणशक्ति बढ़ती है। अनुष्ठान के दिन में मयूरो को तण्डुल खिलाना चाहिये ।

सूर्यपूजा का महत्त्व

शास्त्रों में सूर्यपूजा का बहुत महत्त्व बतलाया गया है। दूध देने वाली एक लाख गायों के दान का जो फल प्राप्त होता है, उससे भी बढ़कर फल एक दिन की सूर्यपूजा से होता है।

धन-धान्य की वृद्धि, आरोग्य प्राप्ति एवं शत्रुओं का नाश होता है। पूजा के बाद सूर्य को अर्घ देना चाहिए और आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

श्री आदित्यहृदयस्तोत्रम्

ततो युद्ध परिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम्।
रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम्।। १।।
दैवतश्चसमागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम्।
उपागम्याब्रवीद्राममगस्त्यो भगवांस्तदा।। २।।
राम राम महाबाहो श्रृणु गुह्यं सनातनम्।
येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसे।। ३।।
आदित्य हृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्।
जयावहं जपं नित्यमक्षयं परमं शिवम्।। ४।।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम्।
चिन्ताशोकप्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम् ।।५।।
रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम्।
पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम्।। ६।।
सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः।
एष देवः सुरगणाँल्लोकान् पाति गभस्तिभिः।। ७।।
एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः।
महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपाम्पतिः।। ८।।

पितरो वसवः साध्या अश्विनौ मरुतो मनुः।
वायुर्वह्निं प्रजाः प्राणा ऋतुकर्ता प्रभाकरः।। ९।।
आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान्।
सुवर्णस्तपनो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकरः।। १०।।
हरिदश्वः सहस्त्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान्।
तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्डकोंऽशुमान्।। ११।।
हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनोऽभास्करो रविः।
अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रं शङ्खः शिशिरनाशनः।। १२।।
व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुः सामपारगः।
घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवङ्गमः।। १३।।
आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः।
कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः।। १४।।
नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावनः।
तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन् नमोऽस्तु ते।। १५।।
नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः।
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः।। १६।।
जयाय जय भद्राय हर्यश्वाय नमो नमः।
नमो नमः सहस्त्रांशो आदित्याय नमो नमः।। १७।।
नमः उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः।
नमः पद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोऽस्तुते।। १८।।
ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूरायादित्यवर्चसे।
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः।। १९।।
तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने।
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः।। २०।।

तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे।
नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे।। २१।।
नाशयत्येष वै भूतं तदेव सृजति प्रभुः।
पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष, गभस्तिभिः।। २२।।
एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः।
एष चैवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम्।। २३।।
देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च।
यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमप्रभुः।। २४।।
एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च।
कीर्यतन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव।। २५।।
पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम्।
एतत्त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसि।। २६।।
अस्मिन्क्षणे महाबाहो रावणं त्वं जहिष्यसि।
एवमुक्त्वा ततोऽगस्त्यो जगाम स यथागतम्।। २७।।
एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत् तदा।
धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान्।। २८।।
आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वेदं परं हर्षमवाप्तवान्।
त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान्।। २९।।
रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा युद्धार्थं समुपागमत्।
सर्वयत्नेन महता वधोस्तस्य धृतोऽभवत् ।। ३०।।
अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः।
निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति।। ३१।।

आदित्यस्तोत्रम्

नवग्रहाणां सर्वेषां सूर्यादीनां पृथक्पृथक्।
पीडा च दुःसहा राजन् जायते सततं नृणाम्।। १।।
पीडानाशाय राजेन्द्र नामानि श्रृणु भास्वतः।
सूर्यादीनां च सर्वेषां पीडा नश्यति श्रृण्वतः।। २।।
आदित्यःसविता सूर्यः पूषाऽर्कः शीघ्रगो रविः।
भगस्त्वष्टाऽर्यमा हंसो हेलिस्तेजो निधिर्हरिः।। ३।।
दिननाथो दिनकरः सप्तसप्तिः प्रभाकरः।
विभावसुर्वेदकर्ता वेदांगो वेदवाहनः ।।४।।
हरिदश्वः कालवक्त्रः कर्मसाक्षी जगत्पतिः।
पद्मिनीबोधको भानुर्भास्करः करुणाकरः।।५।।
द्वादशात्मा विश्वकर्मा लोहितांगस्तमोनुदः।
जगन्नाथोऽरविन्दाक्षः कालात्मा कश्यपात्मजः।। ६।।
भूताश्रयो ग्रहपतिः सर्वलोकनमस्कृतः।
जपाकुसुमसंकाशो भास्वानदितिनन्दनः ।।७।।
ध्वान्तेभसिंहः सर्वात्मा लोकनेत्रो विकर्तनः।
मार्तण्डो मिहिरः सूरस्तपनो लोकतापनः।। ८।।
जगत्कर्ता जगत्साक्षी शनैश्चरपिता जयः।
सहस्त्ररश्मिस्तरणिर्भगवान्भक्तवत्सलः ।। ९॥
विवस्वानादिदेवश्च देवदेवो दिवाकरः।
धन्वन्तरिर्व्याधिहर्ता दद्रुकुष्ठविनाशकः ।। १०।।
चराचरात्मा मैत्रेयोऽमितो विष्णुर्विकर्तनः ।
लोकशोकापहर्ता च कमलाकर आत्मभूः।। ११।।

नारायणो महादेवो रुद्रः पुरुष ईश्वरः।
जीवात्मा परमात्मा च सूक्ष्मात्मा सर्वतोमुखः।। १२।।
इन्द्रोऽनलो यमश्चैव नैर्ऋतो वरुणोऽनिलः।
श्रीद ईशान इन्दुश्च भौमः सौम्यो गुरुः कविः।। १३।।
सौरिर्विधुन्तुदः केतुःकालः कालात्मको विभुः।
सर्वदेवमयो देवः कृष्णः कामप्रदायकः।। १४।।
य एतैर्नामभिर्मर्त्यो भक्त्या स्तौति दिवाकरम्।
सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वरोगविवर्जितः ।। १५।।
पुत्रवान् धनवान् श्रीमान् जायते स न संशयः।
रविवारे पठेद्यस्तु नामान्येतानि भास्वतः।। १६।।
पीडाशान्तिर्भवेत्तस्य ग्रहाणां च विशेषतः।
सद्यः सुखमवाप्नोति चार्युर्दीर्घं च नीरुजम्।। १७।।

।। इति श्रीभविष्यपुराणे आदित्यस्तोत्रं समाप्तम्।।

चन्द्राष्टाविंशतिनामस्तोत्रम्

।। श्री गणेशाय नमः।।

चन्द्रस्य श्रृणु नामानि शुभदानि महीपते।
यानि श्रुत्वा नरो दुःखान्मुच्यते नात्र संशयः।। १।।
सुधाकरश्च सोमश्च ग्लौरब्जः कुमुदप्रियः।
लोकप्रियः शुभ्रभानुश्चन्द्रमा रोहिणीपतिः।। २।।
शशीहिमकरो राजा द्विजराजोनिशाकरः।
आत्रेय इन्दुः शीतांशुरोषधीशः कलानिधिः।। ३।।
जैवातृको रमाभ्राता क्षीरोदार्णवसम्भवः।
नक्षत्रनायकः शम्भुःशिरश्चूडामणिर्विभुः।। ४।।

तापहर्ता नभोदीपो नामान्येतानि यः पठेत्।
प्रत्यहं भक्तिसंयुक्तस्तस्य पीडा विनश्यति।। ५।।
तद्दिने च पठेद्यस्तु लभेत् सर्वं समीहितम्।
ग्रहादीनां च सर्वेषां भवेच्चन्द्रबलं सदा।। ६।।

।। इति श्री चन्द्राष्टाविंशतिनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

अङ्गारकस्तोत्रम्

।। श्री गणेशाय नमः।।

अङ्गारकः शक्तिधरो लोहिताङ्गो धरासुतः।
कुमारो मङ्गलो भौमो महाकायो धनप्रदः।। १।।
ऋणहर्ता दृष्टिकर्ता रोगकृद्रोगनाशनः।
विद्युत्प्रभो व्रणकरः कामदो धनहृत्कुजः।। २।।
सामगानप्रियो रक्तवस्त्रो रक्तायतेक्षणः।
लोहितो रक्तवर्णश्च सर्वकर्मावबोधकः।। ३।।
रक्तमाल्यधरो हेमकुण्डलो ग्रहनायकः।
नामान्येतानि भौमस्य यः पठेत्सततं नरः।। ४।।
ऋणं तस्य च दौर्भाग्यं दारिद्र्यं च विनश्यति।
धनं प्राप्नोति विपुलं स्त्रियं चैव मनोरमाम्।। ५।।
वंशोद्योतकरं पुत्रं लभते नात्र संशयः।
योऽर्चयेदह्नि भौमस्य मण्डलं बहुपुष्पकैः।
सर्वा नश्यंति पीडाश्च तस्य ग्रहकृता ध्रुवम्।। ६।।

।। इति श्रीस्कन्दपुराणे अङ्गारकस्तोत्रं संपूर्णम्।।

बुधपञ्चविंशतिनामस्तोत्रम्

।। श्री गणेशाय नमः ।।

बुधो बुद्धिमतां श्रेष्ठो बुद्धिदाता धनप्रदः।
प्रियंगुकलिकाश्यामः कञ्जनेत्रो मनोहरः।। १ ।।
ग्रहोपमो रोहिणेयो नक्षत्रेशो दयाकरः ।
विरुद्धकार्यहन्ता च सौम्यो बुद्धिविवर्धनः।। २ ।।
चन्द्रात्मजो विष्णुरूपी ज्ञानी ज्ञो ज्ञानिनायकः।
ग्रहपीडाहरो दारपुत्रधान्यपशुप्रदः ।। ३ ।।
लोकप्रियः सौम्यमूर्तिर्गुणदो गुणिवत्सलः।
पञ्चविंशति नामानि बुधस्यैतानि यः पठेत्।। ४ ।।
स्मृत्वा बुधं सदा तस्य पीडा सर्वा विनश्यति।
तद्दिने वा पठेद्यस्तु लभते स मनोगतम्।। ५ ।।

।। इति श्री पद्मपुराणे बुधपञ्चविंशतिनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

बृहस्पतिस्तोत्रम्

।। श्री गणेशाय नमः ।।

अस्य श्री बृहस्पति स्तोत्रस्य गृत्समदऋषिः अनुष्टुप् छन्दः
बृहस्पतिः देवता बृहस्पतिप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

गुरुर्बृहस्पतिर्जीवः सुराचार्यो विदाम्बरः।
वागीशो धिषणो दीर्घश्मश्रुः पीताम्बरो युवा।। १ ।।
सुधादृष्टिर्ग्रहाधीशो ग्रहपीडापहारकः ।
दयाकरः सौम्यमूर्तिः सुरार्च्यः कुड्मलद्युतिः ।। २ ।।

लोकपूज्यो लोकगुरुर्नीतिज्ञो नीतिकारकः।
तारापति श्चांगिरसो वेदवैद्यपितामहः ।। ३ ।।
भक्त्या बृहस्पतिं स्मृत्वा नामान्येतानि यः पठेत्।
अरोगी बलवान् श्रीमान् पुत्रवान् स भवेन्नरः ।। ४ ।।
जीवेत् वर्षशतं मर्त्यो पापं नश्यति नश्यति।
यः पूजयेत् गुरुदिने पीतगंधाक्षताम्बरैः ।। ५ ।।
पुष्पदीपोपहारैश्च पूजयित्वा बृहस्पतिम्।
ब्राह्मणान् भोजयित्वा च पीडाशान्ति र्भवेत् गुरोः ।। ६ ।।

।। इति श्री स्कन्दपुराणे बृहस्पतिस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

शुक्रस्तोत्रम्

।। श्री गणेशाय नमः ।।

शुक्रः काव्यः शुक्ररेता शुक्लाम्बरधरः सुधीः।
हिमाभः कुन्तधवलः शुभ्रांशु शुक्लभूषणः ।। १ ।।
नीतिज्ञो नीतिकृन्नीतिमार्गगामी ग्रहाधिपः ।
उशना वेदवेदांगपारगः कविरात्मवित् ।। २ ।।
भार्गवः करुणासिन्धुर्ज्ञानगम्यः सुखप्रदः।
शुक्रस्यैतानि नामानि शुक्रं स्मृत्वा तु यःपठेत् ।। ३ ।।
आयुर्धनं सुखं पुत्रं लक्ष्मीं वसतिमुत्तमाम्।
विद्यां चैव स्वयं तस्मै शुक्रस्तुष्टो ददाति च ।। ४ ।।

।। इति श्री स्कन्दपुराणे शुक्रस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

शनैश्चरस्तोत्रम्

।। श्री गणेशाय नमः ।।

अस्य श्री शनैश्चरस्तोत्रस्य दशरथ ऋषिः श्री शनैश्चरो देवता त्रिष्टुप् छन्दः शनैश्चरप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

दशरथ उवाच....

कोणोऽन्तकोरौद्रयमोऽथ बभ्रुः कृष्णःशनिःपिंगलमन्दसौरिः।
नित्यं स्मृतो यो हरते च पीडां तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।। १ ।।
सुरासुराः किंपुरुषोरगेन्द्रा गन्धर्वविद्याधरपन्नगाश्च।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।। २ ।।
नरा नरेन्द्राःपशवो मृगेन्द्रा वन्याश्च ये कीटपतङ्गभृङ्गाः।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।। ३ ।।
देशाश्च दुर्गाणि वनानि यत्र सेनानिवेशाः पुरपत्तनानि।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।। ४ ।।
तिलैर्यवैर्माषगुडान्नदानैर्लोहेन नीलाम्बरदानतो वा।
प्रीणाति मन्त्रैर्निजवासरे च तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।। ५ ।।
प्रयागकूले यमुनातटे च सरस्वतीपुण्यजले गुहायाम्।
यो योगिनां ध्यानगतोऽपि सूक्ष्मस्तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।। ६ ।।
अन्यप्रदेशात्स्वगृहं प्रविष्टस्तदीयवारे स नरःसुखी स्यात्।
गृहाद्गतो यो न पुनः प्रयाति तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।। ७ ।।
स्त्रष्टा स्वयंभूर्भुवनत्रयस्य त्राता हरीशो हरते पिनाकी।
एकस्त्रिधा ऋग्यजुःसाममूर्तिस्तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।। ८ ।।
शन्यष्टकं यः प्रयतः प्रभाते नित्यं सुपुत्रैः पशुबान्धवैश्च।
पठेत्तु सौख्यं भुवि भोगयुक्तः प्राप्नोति निर्वाणपदं तदन्ते।। ९ ।।

कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः।।१०।।
एतानि दश नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
शनैश्चरकृता पीडा न कदाचिद्भविष्यति।।११।।

।। इति श्रीशनैश्चरस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

राहुस्तोत्रम्

राहुर्दानवमंत्री च सिंहिकाचित्तनन्दनः।
अर्धकायः सदा क्रोधी चन्द्रादित्यविमर्दनः।। १ ।।
रौद्रो रुद्रप्रियो दैत्यः स्वर्भानुर्भानुभीतिदः।
ग्रहराजः सुधापायी राकातिथ्यभिलाषकः।। २ ।।
कालदृष्टिः कालरूपः श्रीकण्ठहृदयाश्रयः।
विधुन्तुदः सैंहिकेयो घोररूपो महाबलः।। ३ ।।
ग्रहपीडाकरो दंष्ट्री रक्तनेत्रो महोदरः।
पंचविंशति नामानि स्मृत्वा राहुं सदा नरः।। ४ ।।
यःपठेत् महती पीडा तस्य नश्यति केवलम्।
आरोग्यं पुत्रमतुलं श्रियं धान्यं पशून् तथा।। ५ ।।
ददाति राहुस्तस्मै यः पठते स्तोत्रमुत्तमम्।
सततं पठते यस्तु जीवेत् वर्षशतं नरः ।। ६ ।।

।। इति श्री स्कन्दपुराणे राहुस्तोत्रं संपूर्णम्।।

केतुपञ्चविंशतिनामस्तोत्रम्

।। श्री गणेशाय नमः।।

केतुःकालःकलयिता धूम्रकेतुर्विवर्णकः।
लोककेतुर्महाकेतुः सर्वकेतुर्भयप्रदः।। १ ।।

रौद्रो रुद्रप्रियो रुद्रः क्रूरकर्मासुगन्धधृक्।
पलाशधूम्रसंकाशः चित्रयज्ञोपवीतधृक्।। २।।
तारागणविमर्दी च जैमिनेयो ग्रहाधिपः।
शीखीध्वजः प्राणहरोऽनिलो धूम्रोयमात्मजः।
पञ्चविंशतिनामानि केतोर्यः सततं पठेत्।। ३।।
तस्य नश्यन्ति बाधाश्च सर्वाः केतुप्रसादतः।
धनधान्यपशूनां च भवेद्वृद्धिर्न संशयः।। ४।।

।। इति श्री स्कन्दपुराणे केतोः पञ्चविंशतिनामस्तोत्रं संपूर्णम्।।

श्रीहनुमत्स्तोत्रम्

अञ्जनीगर्भसंभूतं कपीन्द्रं सचिवोत्तमम्।
रामप्रियं नमस्तुभ्यं हनुमन् रक्ष सर्वदा।। १।।
सीताशीर्वादसम्पन्न समस्तावयवाक्षत।
लोललांगूलपातेन ममारातीन्निवारय।। २।।
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये।। ३।।
इत्येवमश्वत्थतलोपविष्टं शत्रुञ्जयं नाम पठेत्स्वयं यः।
स शीघ्रमेवास्तसमस्तशत्रुः प्रमोदते मारुतजप्रसादात्।। ४।।

श्री हनुमत्स्तोत्र के पाठ मात्र से वाद-विवाद मुकदमें में विजय प्राप्त होती है। शत्रुभय, क्लेश व आपत्ति का निवारण होता है। यह पाठ पीपल वृक्ष के पास बैठकर करें और हनुमानजी को तेल सिंदूर चढ़ावें या दिन तक पाठ करने से प्रभु हनुमान जी की कृपा से कार्यसिद्धि होती है। पाठ के समय दीपक प्रज्वलित रखें ।

।। इति हनुमत्स्तोत्रं समाप्तम्।।

कार्तवीर्यस्तोत्रम्

कार्तवीर्यं खलद्वेषी कृतवीर्यसुतो बली।
सहस्त्रबाहुः शत्रुघ्नो रक्तवासा धनुर्धरः ।।१।।
रक्तगंधो रक्तमाल्यो राजा स्मर्तुरभीष्टदः।
द्वादशैतानि नामानि कार्तवीर्यस्य यः पठेत्।।२।।
सम्पदस्तस्य जायन्ते जनास्तस्य वशंगताः।
आनयत्याशु दूरस्थं क्षेमलाभयुतं प्रियम्।।३।।
कार्तवीर्योऽर्जुनो नाम राजा बाहुसहस्त्रभृत्।
तस्य स्मरणमात्रेण हृतं नष्टं च लभ्यते।।४।।
कार्तवीर्य महाबाहो सर्वदुष्टनिबर्हण ।
सर्व रक्ष सदा तिष्ठ दुष्टान्नाशय पाहि माम्।।५।।

यदि धन उधार दिया हो या व्याज से कोई ले गया हो अथवा माल बेचने का पैसा बाकी हो या व्यापार से सम्बन्धित कार्यों में फँस गया हो तो इसके नियमित पाठ करने से धन सुरक्षित वापस आ जाता है।

।। इति श्री डामरतंत्रे उमामहेश्वरसंवादे कार्तवीर्यस्तोत्रं संपूर्णम्।।

महामृत्युञ्जयस्तोत्रम्

यह स्तोत्र मृत्यु पर विजय प्राप्त करनेवाला कहा गया है। इसका वर्णन पद्म पुराण में वर्णित है। इसके पाठ करने से भगवान शंकर स्वयं उसकी रक्षा करते हैं और यमराज भी उसका कुछ नहीं कर पाता। मृत्यु भय से छुटकारा पाने के लिए यह स्तोत्र पूर्ण सक्षम है। शत आवर्तन करने से घोर संकट से मुक्ति मिलती है और मृत्यु का भय समाप्त हो जाता है।

श्री गणेशाय नमः।।

ॐ अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयस्तोमन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः।। श्री मृत्युञ्जयो देवता।। गौरी शक्तिः।। मम सर्वारिष्टसमस्तमृत्युशान्त्यर्थं सकलैश्वर्यप्राप्त्यर्थं च जपे विनियोगः।।

ध्यानम्

चन्द्रार्काग्निविलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तःस्थितं।
मुद्रापाशमृगाक्षसूत्रविलसत्पाणिं हिमांशुप्रभम्।।
कोटीन्दुप्रगलत्सुधाप्लुततनुं हारादिभूषोज्ज्वलं।
कान्तं विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जयं भावयेत्।।

ॐ रुद्रं पशुपतिं स्थाणुं नीलकण्ठमुमापतिम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युःकरिष्यति।। १।।
नीलकण्ठं कालमूर्तिं कालज्ञं कालनाशनम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युःकरिष्यति।। २।।
नीलकण्ठं विरूपाक्षं निर्मलं निलयप्रभम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युःकरिष्यति।। ३।।
वामदेवं महादेवं लोकनाथं जगद्गुरुम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युःकरिष्यति।। ४।।
देवदेवं जगन्नाथं देवेशं वृषभध्वजम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युःकरिष्यति।। ५।।
गङ्गाधरं महादेवं सर्वाभरणभूषितम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युःकरिष्यति।। ६।।
अनाथं परमानन्दं केवल्यपददायिनम्।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।७।।
स्वर्गापवर्गदातारं सृष्टिस्थितिविनाशकम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।८।।
उत्पत्तिस्थितिसंहारकर्त्तारमीश्वरं गुरुम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।९।।
मार्कण्डेयकृतं स्तोत्रं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
तस्य मृत्युभयं नास्ति नाग्निचोरभयंक्वचित्।।१०।।
शतावर्तं प्रकर्त्तव्यं संकटे कष्टनाशनम्।
शुचिर्भूत्वा पठेत्स्तोत्रं सर्वसिद्धिप्रदायकम्।।११।।
मृत्युञ्जय महादेव त्राहि मां शरणागतम्।
जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः।।१२।।
तावतस्त्वद्गतप्राणस्त्वश्चित्तोऽहं सदा मृड।
इति विज्ञाप्य देवेशं त्र्यंबकाख्यमनुं जपेत्।।१३।।
नमः शिवाय साम्बाय हराय परमात्मने।
प्रणतक्लेशनाशाय योगिनां पतये नमः।।१४।।

शताङ्गायुर्मन्त्रः

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रौं ह्रें ह्रः हन हन दह दह पच पच गृहाण गृहाण मारय मारय मर्दय मर्दय महामहाभैरव भैरवरूपेण धुनुय धुनुय कम्पय कम्पय विघ्नय विघ्नय विश्वेश्वर क्षोभय क्षोभय कटु कटु मोह्य मोह्य हुंफट् स्वाहा।

इति मन्त्रमात्रेण समाभिष्टो भवति।।१५।।

।। इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे मार्कण्डेकृतं महामृत्युञ्जयस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

अपराजितास्तोत्र

यह स्तोत्र चमत्कार देनेवाला त्रैलोक्य विजया के नाम से जाना जाता है। इस स्तोत्र के पाठ से असाध्य कार्य भी साध्य होते हैं। जैसे सर्व शत्रुमर्दन, सर्व ग्रह निवारण, सर्व रोग प्रशमन, सर्व पाप विनाशन एवं समस्त उपद्रवों को नाश करने में अद्भुत है । इसलिए इस स्तोत्र को चमत्कारी स्तोत्र कहा गया है। जो इस स्तोत्र का नित्य पाठ करता है उसे सर्वत्र विजय की प्राप्ति होती है और उसके घर में सर्वदा सुख-शान्ति बनी रहती है।

अथ अपराजित स्तोत्रम् (चमत्कृतिकरम्)

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

ॐ अस्य श्री अपराजितामन्त्रस्य वेदव्यास ऋषिरनुष्टुप्छन्दः।
क्लीं बीजं हूँ शक्तिः सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे पाठे विनियोगः।

मार्कण्डेय उवाच

श्रृणुध्वं मुनयः सर्वे सर्वकामार्थसिद्धिदां।
असिद्धसाधनीं देवीं वैष्णवीमपराजितम्॥

ध्यानम्

नीलोत्पल-दल-श्यामां भुजङ्गाभरणोज्वलाम् ।
बालेन्दु-मौलिसदृशीं नयनत्रितयान्विताम् ॥
शङ्खचक्रधरां देवीं वरदां भयशालिनीम्।
पीनोत्तुङ्गस्तनी साध्वीं बद्ध-पद्मासनां शिवाम्॥
अजितां चिन्तयेद्देवीं वैष्णवीमपराजिताम्।
शुद्धस्फटिक-संकाशां चन्द्रकोटि-सुशीतलाम्॥
अभयां वर-हस्तां च श्वेतवस्त्रैरलंकृताम्।
नानाभरणसंयुक्तां जयन्तामपराजिताम् ॥
त्रिसन्ध्य यः स्मरेद्देवीं ततः स्तोत्रं पठेत्सुधीः॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय। ॐ नमोस्त्वनन्ताय सहस्त्रशीर्षाय क्षीरार्णवशायिने, शेषभोग-पर्यङ्काय गरुण-वाहनाय अमोघाय अजाय अजिताय अपराजिताय पीतवाससे। वासुदेव-संकर्षण-प्रद्युम्नानिरुद्ध-हयशीर्ष-मत्स्यकूर्म-वराह नृसिंह वामन राम राम वर-प्रद। नमोस्तुते। असुर दैत्य-दानव-यक्ष-राक्षस-भूत-प्रेत-पिशाच किन्नर-कूष्माण्ड सिद्ध-योगिनि डाकिनी स्कन्दमुरोगान् ग्रहान्नक्षत्रग्रहांश्चान्यान् हन हन, पच पच, मथ मथ, विध्वंसय विध्वंसय विद्रावय, विद्रावय, चूर्णय चूर्णय, शंखेन चक्रेण वज्रेण शूलेन गदया मुशलेन हलेन भस्मीकुरु कुरु स्वाहा।। ॐ सहस्त्राबाहो सहस्त्रप्रहरणायुध जय, जय, विजय, विजय, अजित अमित अपराजित अप्रतिहत सहस्त्रनेत्र ज्वल, ज्वल, प्रज्वल, प्रज्वल, विश्वरूप, बहुरूप मधुसूदन महावराहच्युत महापुरुष पुरषोत्तम पद्मनाभ वैकुण्ठानिरुद्ध-नारायण गोविन्द दामोदर ऋषीकेष केशव सर्वासुरोत्सादन सर्वमन्त्रप्रभञ्जन, सर्वदेवनमस्कृत सर्वबन्धनविमोचन, सर्वशत्रु वशंकर सर्वाहितप्रमर्दन, सर्वग्रह-निवारण, सर्वरोगप्रशमन, सर्व-पाप-विनाशन जनार्दन नमोस्तुते स्वाहा। य इमां अपराजिता परमवैष्णवी पठति, सिद्धां जपति, सिद्धां स्मरति, सिद्धां महाविद्या पठति, जपति, स्मरति, श्रृणोति, धारयति, कीर्तयति वा न तस्याग्निवायुर्वज्रोपलाशनिभयं नववर्षणि भयं, न समुद्रभयं, न ग्रह-भयं न चौर भयं वा भवेत्। क्वचिद्रात्र्यन्ध-कारस्त्रीराजकुविषोपविषगरलवशीकरणविद्वेषोच्चाटनवधबन्धनभयं वा न भवेत्। एतैर्मन्त्रैः सदाहतैः सिद्धैः संसिद्ध-पूजितैः, तद्यथा ॐ नमस्तेस्त्वनघेऽजितेऽपराजिते पठति सिद्धे, पठति सिद्धे, जपति सिद्धे, जपति सिद्धे, स्मरति सिद्धे, महाविद्ये एकादशे उभे ध्रुवे अरुन्धति सावित्रि, भयन्नि, जातवेदसे मानस्तोके सरस्वति धरणि

धारिणि सौदामिनि अदिति दिति गौरि गांधारि मातंगि कृष्णे यशोदे सत्यवादिनि ब्रह्मवादिनि कालि कपालि करालनेत्रे सद्योपयाचितकरिजलगतस्थलगतमंतरिक्षगं वा मां रक्ष रक्ष सर्वभूतेभ्यः सर्वोपद्रवेभ्यः स्वाहा।

यस्यां प्रणश्यते पुष्पं गर्भो वा पतते यदि।
म्रियन्ते बालकाः यस्याः काकबन्ध्या च या भवेत्।।
भूर्जपत्रेत्विमां विद्यां लिखित्वा धारयेद्यदि।
एतैर्दोषेनं लिप्येत सुभगा पुत्रिणी भवेत्।।
शस्त्रं वार्यते ह्येषा समरे काण्डवारिणी।
गुल्मशूलाक्षि-रोगाणां क्षिप्रं नाशयते व्यथाम्।।

शिरोरोगज्वराणां च नाशिनी सर्वदेहिनाम् तद्यथा-एकाहिक-द्व्याहिक-त्र्याहिक-चातुर्थिकार्धमासिक-द्वैमासिक-त्रैमासिक-चातुर्मासिक-पञ्चमासिक-षाण्मासिक वातिक-पैत्तिक, श्लैष्मिक-सान्निपातिक-सततज्वर-विषमज्वराणां नाशिनी सर्वदेहिनां ओं हर हर कालि सर सर गौरि धम धम विद्ये आले ताले माले गन्धे पच पच विद्ये मथ मथ विद्ये, नाशय पापं हर दुःस्वप्नं, विनाशय मातः, रजनि सन्ध्ये दुन्दुभि-नादे मानसवेगे शंखिनि चक्रिणी वज्रिणी शूलिनी अपमृत्युविनाशिनी विश्वेश्वरी द्राविडि द्राविडि केशवदयिते, पशुपतिसहिते, दुन्दुभिनादे मानसवेगे दुन्दुभि-दमनी शवरि किराती मातंगी ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ओं ओं श्रां श्रीं श्रुं श्रैं श्रौं श्रः ॐ क्ष्वौ तुरु तुरु स्वाहा। ओं ये क्ष्मां द्विषन्ति प्रत्यक्ष परोक्ष वा तान् दम दम मर्दय मर्दय पातय पातय शोषय शोषय उत्सादय उत्सादय ब्रह्माणि माहेश्वरि।

वैष्णवी वैनायकी कौमारी नारसिंही ऐन्द्री चेन्द्री आग्नेयी चामुंडे वारुणि वायव्ये रक्ष रक्ष प्रचण्डविद्ये ॐ इन्द्रोपेन्द्र-भगिनी जये विजये शान्तिपुष्टितुष्टिविवर्द्धिनी।। कामांकुशे कामदुघे सर्वकामफलप्रदे सर्वभूतेषु मां प्रियं कुरु कुरु स्वाहा। आकर्षिणी आवेशिनी तापिनी, धरणि धारिणी मदोन्मादिनी शोषिणी सम्मोहिनी महानीले नीलपताके महागौरि महाप्रिये महामान्द्रिका महासौरि महामायूरि आदित्यरश्मिनी जाह्नवी यमघण्टे किलि किलि चिन्तामणि सुरभि सुरोत्पन्ने सर्व-काम-दुघे यथाभिलषितं कार्यं तन्मे सिध्यतु स्वाहा। ओं भूः स्वाहा। ॐ भुवः स्वाहा। ॐ स्वः स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। ॐ यत एवागतं पापं तत्रैव प्रतिगच्छतु स्वाहा। ॐ बले बले महाबले असिद्धि साधिनी स्वाहा।

।। इति श्रीत्रैलोक्य विजया अपराजिता सम्पूर्णम्।।

चाक्षुषोपनिषद् (चाक्षुषी विद्या)

विनियोग

ॐ अस्याश्चाक्षुषीविद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषिर्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता चक्षुरोगनिवृत्तये विनियोगः।

ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजः स्थिरो भव। मां पाहि पाहि। त्वरितं चक्षूरोगान् शमय शमय। मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय। यथा अहम् अन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय। कल्याणं कुरु कुरु। यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुः प्रतिरोधकदुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय।

ॐ नमः चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय। ॐ नमः करुणा-करायामृताय। ॐ नमः सूर्याय। ॐ नमो भगवते सूर्यायाक्षितेजसे नमः। खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय। उष्णो भगवाञ्छुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः।

य इमां चाक्षुष्मतीविद्यां ब्रह्मणो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति। न तस्य कुले अन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति।

ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनी अहोवाहिनी स्वाहा।

।। श्रीकृष्णयजुर्वेदीया चाक्षुषी विद्या सम्पूर्णा।।

इस चाक्षुषी विद्या के श्रद्धा-विश्वासपूर्वक पाठ करने से नेत्र के समस्त रोग दूर हो जाते हैं। आँख की ज्योति स्थिर रहती है। इसका पाठ नित्य करनेवाले कुल में कोई अन्धा नहीं होता। पाठ के अन्त में गन्धादियुक्त जल से सूर्य को अर्घ्य देकर नमस्कार करना चाहिये।

शिवमहिम्नः स्तोत्रम्

।। श्री गणेशाय नमः ।।

पुष्पदंत उवाच

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी।
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्।
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः।। १ ।।
अतीतः पंथानं तव च महिमा वाङ्मनसयोः।
अतद्व्यावृत्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः।
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः।। २ ।।
मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवतः।
स्तवब्रह्मन्किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्।।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः।
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता।। ३ ।।
तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्।
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।।
अभव्यानामस्मिन्वरद रमणीयामरमणीं।
विहंतुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः।। ४ ।।
किमीहः किंकायःस खलु किमुपायस्त्रिभुवनं।
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः।
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः।। ५ ।।

अजन्मानो लोका:किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।।
अनीशो वा कुर्याद्भुवनजनने कः परिकरो।
यतो मंदास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे।। ६।।
त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति।
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां ।
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव।। ७।।
महोक्षः खट्वांगं परशुरजिनं भस्म फणिनः।
कपालं चेतीयत्तव वरद तंत्रोपकरणम्।।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद् भ्रूप्रणिहितां।
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णाभ्रमयति।। ८।।
ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं।
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।।
समस्तेऽप्येतस्मिन्पुरमथन तैर्विस्मित इव।
स्तुवन् जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता।। ९।।
तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिञ्चिर्हरिरधः।
परिच्छेतुं यातावनलमनलस्कंधवपुषः।।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्।
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति।। १०।।
अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं ।
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकंडूपरवशान्।।
शिरः पद्मश्रेणीरचितचरणांभोरुहबलेः ।
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम्।। ११।।

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं।
बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलितांगुष्ठशिरसि।
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः।। १२।।
यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती।
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनः।।
न तच्चित्रं तस्मिन्वरिवसितरि त्वच्चरणयो-
र्नकस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः।। १३।।
अकाण्डब्रह्माण्ड क्षयचकितदेवासुरकृपा।
विधेयस्याऽऽसीद्यस्त्रिनयनविषं संहृतवतः ।।
सकल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो।
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभंगव्यसनिनः।। १४।।
असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवा सुरनरे।
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्।
स्मर स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यःपरिभवः।। १५।।
मही पादाघाताद्व्रजति सहसा संशयपदं।
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम्।।
मुहुर्द्यौर्दौःस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा।
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता।। १६।।
वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः।
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते।।
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः।। १७।।

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेंद्रो धनुरथो।
रथांगे चंद्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति।।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडंबरविधि-
र्विधेयैःक्रीडंत्यो न खलु परतंत्राः प्रभुधियः।। १८।।
हरिस्ते साहस्त्रं कमलबलिमाधायपदयो-
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ।।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा।
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जागताम्।। १९।।
क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां।
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।।
अतस्त्वां संप्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं।
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः।। २०।।
क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता-
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याःसुरगणाः।।
क्रतुभ्रंशः त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो।
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः।। २१।।
प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं।
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा।।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं।
त्रसंतं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः।। २२।।
स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नायतृणवत् ।
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि।।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटना।
दवैतित्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः।। २३।।

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाःसहचरा।
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः।।
अमंगल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं।
तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मंगलमसि।। २४।।
मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः।
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्संगितदृशः।।
यदालोक्याहूलादं ह्रद इव निमज्ज्यामृतमये।
दधत्यंतस्तत्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान्।। २५।।
त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वंहुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमुधरणिरात्मा त्वमिति च।।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतुगिरः।
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि।। २६।।
त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपिसुरा ।
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति ।।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः।
समस्तव्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम्।। २७।।
भवः शर्वो रुद्रः पशुपति रथोग्रः सहमहां-
स्तथाभीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्।।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि।
प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहितनमस्योऽस्मि भवते।। २८।।
नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो।
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः।।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो।
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः।। २९।।

बहलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः।
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः।।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः।
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः।। ३०।।
कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं।
क्व च तव गुणसीमोल्लंघिनी शश्वदृद्धिः।।
इति चकितममंदीकृत्य मां भक्तिराधाद्।
वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ।। ३१।।
असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिंधुपात्रे ।
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं।
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति।। ३२।।
असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौलै- ।
ग्रंथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य।।
सकलगणवरिष्ठः पुष्पदंताभिधानो ।
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ।। ३३।।
अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत् ।
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः।।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र।
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान्कीर्तिमांश्च ।। ३४।।
महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः।
अघोरान्नापरो मंत्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम्।। ३५।।
दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः।
महिम्नः स्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्।। ३६।।

कुसुमदशननामा सर्वगंधर्वराजः ।
शशिधरवरमौलेर्देवदेवस्य दासः ।।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्यरोषात्।
स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ।। ३७।।
सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं ।
पठति यदि मनुष्यः प्रांजलिर्नान्यचेताः।।
व्रजति शिव समीपं किन्नरैः स्तूयमानः।
स्तवनमिदममोघं पुष्पदंत प्रणीतम् ।। ३८।।
श्री पुष्पदंतमुखपंकजनिर्गतेन ।
स्तोत्रेण किल्विषहरेण हरप्रियेण ।।
कंठस्थितेन पठितेन समाहितेन ।
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ।। ३९।।
इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छंकरपादयोः।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः।।
तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वरः।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः।।
एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यःपठेन्नरः।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते।।

।। इति श्री पुष्पदंतविरचितं शिवमहिम्नः स्तोत्रं संपूर्णम्।।

अथ विनियोग:

अस्य श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्त्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य भगवान् वेदव्यास ऋषि:, श्रीविष्णु: परमात्मा देवता, अनुष्टुप् छन्द:, अमृतांशूद्भवो भानुरिति बीजम्, देवकीनन्दन: स्त्रष्टेति शक्ति: त्रिसामा सामग: सामेति हृदयम्, शंखभृन्नन्दकी चक्रीति कीलकम्, सार्ङ्गधन्वा गदाधर इत्यस्त्रम्, रथाङ्गपाणिरक्षोभ्य: इति कवचम्, उद्भव: क्षोभणो देव इति परमो मन्त्र: श्री विष्णुप्रीत्यर्थे जपे विनियोग: ।

अथ ध्यानम्

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नम: ॥

अथ श्रीविष्णुसहस्त्रनाम स्तोत्रम्

यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात् ।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे ॥
नम: समस्तभूतानामादिभूताय भूभृते ।
अनेकरूपरूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे ॥

वैशम्पायन उवाच

श्रुत्वा धर्मानशेषेण पावनानि च सर्वश: ।
युधिष्ठिर: शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत ॥ 1 ॥

युधिष्ठिर उवाच

किमेकं दैवतं लोके किं वाप्येकं परायणम् ।
स्तुवन्त: कं कमर्चन्त: प्राप्नुयुर्मानवा: शुभम् ॥ 2 ॥

को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः।
किं जपन्मुच्यते जन्तुर्जन्मसंसारबन्धनात् ॥ 3 ॥

भीष्म उवाच

जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमम्।
स्तुवन्नामसहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः ॥ 4 ॥
तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययम्।
ध्यायन्स्तुवन्नमस्यंश्च यजमानस्तमेव च ॥ 5 ॥
अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोकमहेश्वरम्।
लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्वदुःखातिगो भवेत् ॥ 6 ॥
ब्रह्मण्यं सर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्तिवर्धनम्।
लोकनाथं महद्भूतं सर्वभूतभवोद्भवम् ॥ 7 ॥
एष मे सर्वधर्माणां धर्मोऽधिकतमो मतः।
यद्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैरर्चेन्नरः सदा ॥ 8 ॥
परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः।
परमं यो महद्ब्रह्म परमं यः परायणम् ॥ 9 ॥
पवित्राणां पवित्रं यो मङ्गलानां च मङ्गलम्।
दैवतं देवतानां च भूतानां योऽव्ययः पिता ॥ 10 ॥
यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे।
यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये ॥ 11 ॥
तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते।
विष्णोर्नामसहस्रं मे श्रृणु पापभयापहम् ॥ 12 ॥
यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः।
ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये ॥ 13 ॥
ॐ विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः।
भूतकृद्भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः ॥ 14 ॥
पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमा गतिः।

अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च ॥ 15 ॥
योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः ।
नारसिंहवपुः श्रीमान्केशवः पुरुषोत्तमः ॥ 16 ॥
सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः ।
सम्भवो भावनो भर्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः ॥ 17 ॥
स्वयम्भूः शम्भुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः ।
अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः ॥ 18 ॥
अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः ।
विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः ॥ 19 ॥
अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः ।
प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं मङ्गलं परम् ॥ 20 ॥
ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः ।
हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः ॥ 21 ॥
ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः ।
अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान् ॥ 22 ॥
सुरेशः शरणं शर्म विश्वरेताः प्रजाभवः ।
अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥ 23 ॥
अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः ।
वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिः सृतः ॥ 24 ॥
वसुर्वसुमनाः सत्यः समात्मा सम्मितः समः ।
अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः ॥ 25 ॥
रुद्रो बहुशिरा बभ्रुर्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः ।
अमृतः शाश्वतः स्थाणुर्वरारोहो महातपाः ॥ 26 ॥
सर्वगः सर्वविद्भानुर्विष्वक्सेनो जनार्दनः ।
वेदो वेदविदव्यङ्गो वेदाङ्गो वेदवित्कविः ॥ 27 ॥
लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृताकृतः ।

चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः ॥ 28 ॥
भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः ।
अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः ॥ 29 ॥
उपेन्द्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरूर्जितः ।
अतीन्द्रः संग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमो यमः ॥ 30 ॥
वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः ।
अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः ॥ 31 ॥
महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः ।
अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक् ॥ 32 ॥
महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतां गतिः ।
अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदां पतिः ॥ 33 ॥
मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः ।
हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः ॥ 34 ॥
अमृत्युः सर्वदृक् सिंहः सन्धाता सन्धिमान्स्थिरः ।
अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा ॥ 35 ॥
गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः ।
निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः ॥ 36 ॥
अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान्न्यायो नेता समीरणः ।
सहस्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ 37 ॥
आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृत्तः सम्प्रमर्दनः ।
अहः संवर्तको वह्निरनिलो धरणीधरः ॥ 38 ॥
सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः ।
सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः ॥ 39 ॥
असंख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः ।
सिद्धार्थःसिद्धसंकल्पःसिद्धिदः सिद्धिसाधनः॥ 40 ॥
वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः ।

वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः ॥ 41 ॥
सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसुः।
नैकरूपो बृहद्रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः ॥ 42 ॥
ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः।
ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मन्त्रश्चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः ॥ 43 ॥
अमृतांशूद्भवो भानुः शशविन्दुः सुरेश्वरः।
औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः ॥ 44 ॥
भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः।
कामहा कामकृत्कान्तः कामः कामप्रदः प्रभुः ॥ 45 ॥
युगादिकृद्युगावर्तो नैकमायो महाशनः।
अदृश्योऽव्यक्तरूपश्च सहस्त्रजिदनन्तजित् ॥ 46 ॥
इष्टोऽविशिष्टः शिष्टेष्टः शिखण्डी नहुषो वृषः।
क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः ॥ 47 ॥
अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः।
अपां निधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः ॥ 48 ॥
स्कन्दः स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः।
वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरन्दरः ॥ 49 ॥
अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः।
अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः ॥ 50 ॥
पद्मनाभोऽरविन्दाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृत्।
महर्द्धिऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वजः ॥ 51 ॥
अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः।
सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान्समितिञ्जयः ॥ 52 ॥
विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः।
महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः ॥ 53 ॥
उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः।

करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुहः ॥ 54 ॥
व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो ध्रुवः ।
परर्द्धिः परमस्पष्टस्तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः ॥ 55 ॥
रामो विरामो विरजो मार्गो नेयो नयोऽनयः ।
वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तमः ॥ 56 ॥
वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः ।
हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः ॥ 57 ॥
ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः ।
उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः ॥ 58 ॥
विस्तारः स्थावरस्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम् ।
अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः ॥ 59 ॥
अनिर्विण्णः स्थविष्ठोऽभूर्धर्मयूपो महामखः ।
नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः ॥ 60 ॥
यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां गतिः ।
सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम् ॥ 61 ॥
सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत् ।
मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः ॥ 62 ॥
स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत् ।
वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः ॥ 63 ॥
धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मी सदसत्क्षरमक्षरम् ।
अविज्ञाता सहस्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः ॥ 64 ॥
गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः ।
आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद्गुरुः ॥ 65 ॥
उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः ।
शरीरभूतभृद्भोक्ता कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः ॥ 66 ॥
सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित्पुरुसत्तमः ।

विनयो जयः सत्यसंधो दाशार्हः सात्वतां पतिः ॥ 67 ॥
जीवो विनयिता साक्षी मुकुन्दोऽमितविक्रमः ।
अम्भोनिधिरनन्तात्मा महोदधिशयोऽन्तकः ॥ 68 ॥
अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः ।
आनन्दो नन्दनो नन्दः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः ॥ 69 ॥
महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः ।
त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाश्रृङ्गः कृतान्तकृत् ॥ 70 ॥
महावराहो गोविन्दः सुषेणः कनकाङ्गदी ।
गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः ॥ 71 ॥
वेधाः स्वाङ्गोऽजितः कृष्णो दृढः संकर्षणोऽच्युतः ।
वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः ॥ 72 ॥
भगवान् भगहानन्दी वनमाली हलायुधः ।
आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः ॥ 73 ॥
सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः ।
दिविस्पृक्सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः ॥ 74 ॥
त्रिसामा सामगः साम निर्वाणं भेषजं भिषक् ।
संन्यासकृच्छमः शान्तो निष्ठा शान्तिः परायणम् ॥ 75 ॥
शुभाङ्गः शान्तिदः स्त्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः ।
गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः ॥ 76 ॥
अनिवर्ती निवृत्तात्मा संक्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः ।
श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतां वरः ॥ 77 ॥
श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः ।
श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रयः ॥ 78 ॥
स्वक्षः स्वङ्गः शतानन्दो नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वरः ।
विजितात्मा विधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः ॥ 79 ॥
उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतस्थिरः ।

भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः ॥ 80 ॥
अर्चिष्मानर्चितः कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधनः।
अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः ॥ 81 ॥
कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः।
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः ॥ 82 ॥
कामदेवः कामपालः कामी कान्तः कृतागमः।
अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनञ्जयः ॥ 83 ॥
ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद्ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः।
ब्रह्मविद्ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः ॥ 84 ॥
महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः।
महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः ॥ 85 ॥
स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः।
पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः ॥ 86 ॥
मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः।
वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः ॥ 87 ॥
सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः।
शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः ॥ 88 ॥
भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोऽनलः।
दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरोऽथापराजितः ॥ 89 ॥
विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान् ।
अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः ॥ 90 ॥
एको नैकः सवः कः किं यत्तत्पदमनुत्तमम्।
लोकबन्धुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः ॥ 91 ॥
सुवर्णवर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी।
वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरचलश्चलः ॥ 92 ॥
अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक्।

सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः ॥ 93 ॥
तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतां वरः ।
प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकश्रृङ्गो गदाग्रजः ॥ 94 ॥
चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः ।
चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात् ॥ 95 ॥
समावर्तोऽनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः ।
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा ॥ 96 ॥
शुभाङ्गो लोकसारङ्गः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः ।
इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः ॥ 97 ॥
उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः ।
अर्को वाजसनः श्रृङ्गी जयन्तः सर्वविज्जयी ॥ 98 ॥
सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः ।
महाह्रदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः ॥ 99 ॥
कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनिलः ।
अमृताशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ॥ 100 ॥
सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः ।
न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः ॥ 101 ॥
सहस्त्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः ।
अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद्भयनाशनः ॥ 102 ॥
अणुर्बृहत्कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महान् ।
अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्द्धनः ॥ 103 ॥
भारभृत्कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः ।
आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः ॥ 104 ॥
धनुर्धरो धनुर्वेदो दण्डो दमयिता दमः ।
अपराजितः सर्वसहो नियन्तानियमोऽयमः ॥ 105 ॥
सत्त्ववान्सात्त्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः ।

अभिप्रायः प्रियार्होऽर्हः प्रियकृत्प्रीतिवर्धनः ॥ 106 ॥
विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग्विभुः ।
रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः ॥ 107 ॥
अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः ।
अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः ॥ 108 ॥
सनात्सनातनतमः कपिलः कपिरप्ययः ।
स्वस्तिदः स्वस्तिकृत्स्वस्ति स्वस्तिभुक्स्वस्तिदक्षिणः ॥ 109 ॥
अरौद्रः कुण्डली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः ।
शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः ॥ 110 ॥
अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणां वरः ।
विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥ 111 ॥
उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः ।
वीरहा रक्षणः सन्तो जीवनः पर्यवस्थितः ॥ 112 ॥
अनन्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः ।
चतुरस्त्रो गभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः ॥ 113 ॥
अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिराङ्गदः ।
जननो जनजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रमः ॥ 114 ॥
आधारनिलयोऽधाता पुष्पहासः प्रजागरः ।
ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः ॥ 115 ॥
प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत्प्राणजीवनः ।
तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः ॥ 116 ॥
भूर्भुवःस्वस्तरुस्तारः सविता प्रपितामहः ।
यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञाङ्गो यज्ञवाहनः ॥ 117 ॥
यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञी यज्ञभुग्यज्ञसाधनः ।
यज्ञान्तकृद्यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च ॥ 118 ॥
आत्मयोनिः स्वयंजाता वैखानः सामगायनः ।
देवकीनन्दनः स्त्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः ॥ 119 ॥

शङ्खभृन्नन्दकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः ।
रथाङ्गपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः ॥ 120 ॥

॥ सर्वप्रहरणायुध ॐ नमः इति ॥

इतीदं कीर्तनीयस्य केशवस्य महात्मनः ।
नाम्नां सहस्रं दिव्यानामशेषेण प्रकीर्तितम् ॥ 121 ॥
य इदं श्रृणुयान्नित्यं यश्चापि परिकीर्तयेत् ।
नाशुभं प्राप्नुयात्किञ्चित्सोऽमुत्रेह च मानवः ॥ 122 ॥
वेदान्तगो ब्राह्मणः स्यात्क्षत्रियो विजयी भवेत् ।
वैश्यो धनसमृद्धः स्याच्छूद्रः सुखमवाप्नुयात् ॥ 123 ॥
धर्मार्थी प्राप्नुयाद्धर्ममर्थार्थी चार्थमाप्नुयात् ।
कामानवाप्नुयात्कामी प्रजार्थी प्राप्नुयात्प्रजाम् ॥ 124 ॥
भक्तिमान्यः सदोत्थाय शुचिस्तद्गतमानसः ।
सहस्रं वासुदेवस्य नाम्नामेतत्प्रकीर्तयेत् ॥ 125 ॥
यशः प्राप्नोति विपुलं ज्ञातिप्राधान्यमेव च ।
अचलां श्रियमाप्नोति श्रेयः प्राप्नोत्यनुत्तमम् ॥ 126 ॥
न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विन्दति ।
भवत्यरोगो द्युतिमान्बलरूपगुणान्वितः ॥ 127 ॥
रोगार्तो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।
भयान्मुच्येत भीतस्तु मुच्येतापन्न आपदः ॥ 128 ॥
दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण नित्यं भक्तिसमन्वितः ॥ 129 ॥
वासुदेवाश्रयो मर्त्यो वासुदेवपरायणः ।
सर्वपापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम् ॥ 130 ॥
न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित् ।
जन्ममृत्युजराव्याधिभयं नैवोपजायते ॥ 131 ॥
इमं स्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ।

युज्येतात्मसुखक्षान्तिश्रीधृतिस्मृतिकीर्तिभिः ॥ 132 ॥
न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां पुरुषोत्तमे ॥ 133 ॥
द्यौः सचन्द्रार्कनक्षत्रा खं दिशो भूर्महोदधिः ।
वासुदेवस्य वीर्येण विधृतानि महात्मनः ॥ 134 ॥
ससुरासुरगन्धर्वं सयक्षोरगराक्षसम् ।
जगद्वशे वर्ततेदं कृष्णस्य सचराचरम् ॥ 135 ॥
इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः सत्त्वं तेजो बलं धृतिः ।
वासुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रं क्षेत्रज्ञ एव च ॥ 136 ॥
सर्वागमानामाचारः प्रथमं परिकल्पते ।
आचारप्रभवो धर्मो धर्मस्य प्रभुरच्युतः ॥ 137 ॥
ऋषयः पितरो देवा महाभूतानि धातवः ।
जङ्गमाजङ्गमं चेदं जगन्नारायणोद्भवम् ॥ 138 ॥
योगो ज्ञानं तथा सांख्यं विद्याःशिल्पादी कर्म च।
वेदाः शास्त्राणि विज्ञानमेतत्सर्वं जनार्दनात् ॥ 139 ॥
एको विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः ।
त्रीँलोकान्व्याप्य भूतात्मा भुङ्क्ते विश्वभुगव्ययः ॥ 140 ॥
इमं स्तवं भगवतो विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम् ।
पठेद्य इच्छेत्पुरुषः श्रेयः प्राप्तुं सुखानि च ॥ 141 ॥
विश्वेश्वरमजं देवं जगतः प्रभवाप्ययम् ।
भजन्ति ये पुष्कराक्षं न ते यान्ति पराभवम् ॥ 142 ॥

ॐ तत्सदिति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां
वैयासिक्यामानुशासनिके पर्वणि भीष्मयुधिष्ठिरसंवादे
श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्

अथ सप्तश्लोकी दुर्गा

शिव उवाच —

देवि त्वं भक्तसुलभे सर्वकार्यविधायिनी।
कलौ हि कार्यसिद्ध्यर्थमुपायं ब्रूहि यत्नतः।।

देव्युवाच —

शृणु देव प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्टसाधनम्।
मया तवैव स्नेहेनाप्यम्बास्तुतिः प्रकाश्यते।।

ॐ अस्य श्रीदुर्गासप्तश्लोकीस्तोत्रमन्त्रस्य नारायण ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, श्री दुर्गाप्रीत्यर्थं सप्तश्लोकी-दुर्गापाठे विनियोगः।

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।।1।।
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणी का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।।2।।
सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तु ते।।3।।
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।4।।
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।5।।

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।6।।
सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्।।7।।
इति श्री सप्तश्लोकी दुर्गा सम्पूर्णा

ॐ
।। श्री दुर्गायै नमः।।

श्री दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

ईश्वर उवाच

शतनाम प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने।
यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती।।1।।
ॐ सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी।
आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी।।2।।
पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपाः।
मनो बुद्धिरहंकारा चित्तरूपा चिता चितिः।।3।।
सर्वमन्त्रमयी सत्ता सत्यानन्दस्वरूपिणी।
अनन्ता भाविनी भाव्या भव्याभव्या सदागतिः।।4।।
शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा।
सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी।।5।।
अपर्णानेकवर्णा च पाटला पाटलावती।
पट्टाम्बरपरीधाना कलमञ्जीररञ्जिनी।।6।।

अमेयविक्रमा क्रूरा सुन्दरी सुरसुन्दरी।
वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनिपूजिता ।।7।।
ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा।
चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः ।।8।।
विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा।
बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहनवाहना ।।9।।
निशुम्भशुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी।
मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी।।10।।
सर्वासुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी ।
सर्वशास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्रधारिणी तथा।।11।।
अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रस्य धारिणी।
कुमारी चैककन्या च कैशोरी युवती यतिः ।।12।।
अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला।।13।।
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी।
नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी।।14।।
शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी।
कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी।।15।।
य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानामशताष्टकम् ।
नासाध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वती।।16।।
धनं धान्यं सुतं जायां हयं हस्तिनमेव च।
चतुर्वर्गं तथा चान्ते लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीम्।।17।।
कुमारीं पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम्।
पूजयेत् परया भक्त्या पठेन्नामशताष्टकम्।।18।।

तस्य सिद्धिर्भवेद् देवि सर्वैः सुरवैरपि।
राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवाप्नुयात्।। 19।।

गोरोचनालक्तककुङ्कुमेन
सिन्दूरकर्पूरमधुत्रयेण ।
विलिख्य यन्त्रं विधिना विधिज्ञो
भवेत् सदा धारयते पुरारिः।। 20।।

भौमावास्यानिशामग्रे चन्द्रे शतभिषां गते।
विलिख्य प्रपठेत् स्तोत्रं स भवेत् सम्पदां पदम्।। 21।।

इति श्रीविश्वसारतन्त्रे दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम्।

पाठविधिः*

साधक स्नान करके पवित्र हो, आसन-शुद्धि की क्रिया सम्पन्न करके शुद्ध आसन पर बैठे, साथ में शुद्ध जल, पूजन सामग्री और श्री दुर्गा-सप्तशती की पुस्तक रखे। पुस्तक को अपने सामने काष्ठ आदि के शुद्ध आसन पर विराजमान कर दे। ललाट में अपनी रुचि के अनुसार भस्म, चन्दन अथवा रोली लगा ले, शिखा बाँध ले, फिर पूर्वाभिमुख होकर तत्त्व-शुद्धि के लिए चार बार आचमन करे। उस समय अग्रोक्ति चार मन्त्रों को क्रमशः पढ़े—

---

* यह विधि यहाँ संक्षिप्त रूप से दी जाती है। नवरात्र आदि विशेष अवसरों पर तथा शतचण्डी आदि अनुष्ठानों में विस्तृत विधि का उपयोग किया जाता है। उसमें यन्त्रस्थ कलश, गणेश, नवग्रह, मातृका, वास्तु, सप्तर्षि, सप्त चिरञ्जीव, 64 योगिनी, 50 क्षेत्रपाल, तथा अन्यान्य देवताओं की वैदिक विधि से पूजा होती है। अखण्ड दीप की व्यवस्था की जाती है। देवी प्रतिमा की अङ्ग-न्यास और अग्न्युत्तारण आदि विधि के साथ विधिवत पूजा की जाती है। नवदुर्गा पूजा, ज्योतिः पूजा, वटुक-गणेशादि सहित कुमारी पूजा, अभिषेक, नान्दीश्राद्ध,

ॐ ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।।
ॐ क्लीं शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।।

तत्पश्चात् प्राणायाम करके गणेश आदि देवताओं एवं गुरुजनों को प्रणाम करे, फिर ''पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ'' इत्यादि मन्त्र से कुश की पवित्री धारण करके हाथ में लाल फूल, अक्षत और जल लेकर निम्नाङ्कित रूप से संकल्प करें—

संकल्प

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः। ॐ नमः परमात्मने, श्री पुराणपुरुषोत्तमस्य श्री विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीय-परार्द्धे श्रीश्वेत-वाराहकल्पे वैवस्वत्मन्वन्तरेअष्टविंशातितमे कलियुगे प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्यप्रदेशे बौद्धावतारे वर्तमाने यथानामसंवत्सरे अमुकायने महामाङ्गल्यप्रदे मासानाम् उत्तमे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरान्वि-तायाम् अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकामुकराशिस्थितेषु चन्द्रभौमबुधगुरुशुक्रशनिषु सत्सु शुभे योगे शुभकरणे एवंगुणविशेषण

रक्षाबन्धन, पुण्याहवाचन, मङ्गलपाठ, गुरुपूजा, तीर्थावाहन, मन्त्र-स्नान आदि आसन शुद्धि, प्राणायाम, भूतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, अन्तर्मातृकान्यास, बहिर्मातृकान्यास, सृष्टिन्यास, स्थितिन्यास, शक्तिकलान्यास, शिवकलान्यास, हृदयादिन्यास, षोढान्यास, विलोमन्यास, तत्त्वन्यास, अक्षरन्यास, व्यापकन्यास, ध्यान, पीठपूजा, विशेषार्घ्य, क्षेत्रकीलन, मन्त्रपूजा, विविध मुद्राविधि, आवरणपूजा एवं प्रधान पूजा आदि का शास्त्रीय पद्धति के अनुसार अनुष्ठान होता है। इस प्रकार विस्तृत विधि से पूजा करने की इच्छा वाले भक्तों को अन्यान्य पूजा-पद्धतियों की सहायता से भगवती की आराधना करके पाठ आरम्भ करना चाहिए।

विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ सकलशास्त्रश्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफल-प्राप्तिकामः अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्माहं ममात्मनः सपुत्रस्त्रीबान्धवस्य श्रीनवदुर्गानुग्रहतो ग्रहकृतराजकृतसर्वविधपीडानिवृत्तिपूर्वकं नैरुज्य-दीर्घायुः पुष्टिधनधान्यसमृद्ध्यर्थं श्रीनवदुर्गाप्रसादेन सर्वापन्निवृत्तिसर्वा-भीष्टफलावाप्तिधर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वारा श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थं शापोद्धारपुरस्सरं कवचार्गलाकीलकपाठवेदतन्त्रोक्तरात्रिसूक्तपाठदेव्यथर्वशीर्षपाठन्यास-विधिसहित नवार्णजपसप्तशतीन्यास ध्यानसहितचरित्रसम्बन्धिविनि-योगन्यास ध्यानपूर्वकं च "मार्कण्डेय उवाच।। सावर्णिः सूर्यतनयोः यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः।" इत्याद्यारभ्य 'सावर्णिर्भविता मनुः' इत्यन्तं दुर्गासप्तशतीपाठं तदन्ते न्यासविधिसहितनवार्णमन्त्रजपं वेदतन्त्रोक्तदेवी-सूक्तपाठं रहस्यत्रयपठनं शापोद्धारादिकं च करिष्ये।

इस प्रकार प्रतिज्ञा (संकल्प) करके देवी का ध्यान करते हुए पञ्चोपचार की विधि से पुस्तक की पूजा[1] करे, योनिमुद्रा का प्रदर्शन करके भगवती को प्रणाम करे, फिर मूल नवार्णमन्त्र से पीठ आदि में आधारशक्ति की स्थापना करके उसके ऊपर पुस्तक को विराजमान करे[2]। इसके बाद शापोद्धार[3] करना चाहिए। इसके अनेक प्रकार हैं। "**ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रां क्रीं चण्डिकादेव्यै शापनाशानुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा**"— इस मन्त्र का

---

1. पुस्तक पूजा का मन्त्र—

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

2. **ध्यात्वा देवीं पञ्चपूजां कृत्वा योन्या प्रणम्य च।**
आधारं स्थाप्य मूलेन स्थापयेत्तत्र पुस्तकम्।।

3. 'सप्तशती-सर्वस्व' के उपासना क्रम में पहले शापोद्धार करके बाद में षडङ्ग सहित पाठ करने का निर्णय किया गया है। अतः कवच आदि पाठ के पहले ही शापोद्धार कर लेना चाहिए। कात्यायनी-तन्त्र में शापोद्धार तथा उत्कीलन का

आदि और अन्त में सात बार जप करें। यह शापोद्धार मन्त्र कहलाता है। इसके अनन्तर उत्कीलन मन्त्र का जप किया जाता है। इसका जप आदि और अन्त में इक्कीस-इक्कीस बार होता है। यह मन्त्र इस प्रकार है- **ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशती चण्डिके उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा।** इसके जप के पश्चात आदि और अन्त में सात-सात बार मृतसंजीवनी विद्या का जप करना चाहिए, जो इस प्रकार है- **ॐ ह्रीं ह्रीं वं वं ऐं ऐं मृतसंजीवनि विद्ये मृतमुत्थापयोत्थापय क्रीं ह्रीं ह्रीं वं स्वाहा।** मारीच कल्प के अनुसार सप्तशती-शाप विमोचन का मन्त्र यह है- **ॐ श्रीं श्रीं क्लीं हूं ॐ ऐं क्षोभय मोहय उत्कीलय उत्कीलय उत्कीलय ठं ठं।** इस मन्त्र का आरम्भ में ही 108 बार जप करना चाहिए, पाठ के अन्त में नहीं। अथवा रुद्रयामल महातन्त्र के अन्तर्गत दुर्गाकल्प में कहे हुए चण्डिका-शाप-विमोचन मन्त्रों का आरम्भ में ही पाठ करना चाहिए। वे मन्त्र इस प्रकार हैं—

ॐ अस्य श्री चण्डिकाया ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापविमोचन मन्त्रस्य वसिष्ठनारदसंवादसामवेदाधिपतिब्रह्माण ऋषयः सर्वैश्वर्य-कारिणी श्री दुर्गा देवता चरित्रत्रयं बीजं ह्रीं शक्तिः त्रिगुणात्मस्वरूप-चण्डिकाशापविमुक्तौ मम संकल्पितकार्यसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ (ह्रीं) रीं रेतःस्वरूपिण्यै मधुकैटभमर्दिन्यै ब्रह्मवसिष्ठ

और ही प्रकार बतलाया गया है- '**अन्त्याद्यार्कद्विरुद्रत्रिदिगब्ध्यङ्केष्विभर्तवः। अश्वोऽश्व इति सर्गाणां शापोद्धारे मनोः क्रमः।।**' '**उत्कीलने चरित्राणां मध्यादन्तमिति क्रमः।**' अर्थात् सप्तशती के अध्यायों का तेरह-एक, बारह-2, ग्यारह-तीन, दस-चार, नौ-पाँच तथा आठ-छः के क्रम से पाठ करके अन्त में सातवें अध्याय को दो बार पढ़े। यह शापोद्धार है और पहले मध्यम चरित्र का, फिर प्रथम चरित्र का, तत्पश्चात उत्तर चरित्र का पाठ करना उत्कीलन है। कुछ लोगों के मत में कीलक में बताये अनुसार '**ददाति प्रतिगृह्णाति**' के नियम से कृष्णपक्ष की अष्टमी या चतुर्दशी तिथि में देवी को सर्वस्व-समर्पण करके उन्हीं का होकर उनके प्रसाद रूप से प्रत्येक वस्तु को उपयोग में लाना ही शापोद्धार

विस्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।। 1।। ॐ श्रीं बुद्धिस्वरूपिण्यै महिषासुरसैन्यनाशिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ।।2।। ॐ रं रक्तस्वरूपिण्यै महिषासुरमर्दिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ता भव ।।3।। ॐ क्षुं क्षुधास्वरूपिण्यै देववन्दितायै ब्रह्मवसिष्ठ-विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ।।4।। ॐ छां छायास्वरूपिण्यै दूतसंवा-दिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ।।5।। ॐ शं शक्ति-स्वरूपिण्यै धूम्रलोचनघातिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।6।। ॐ तृं तृषास्वरूपिण्यै चण्डमुण्डवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठ-विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ।।7।। ॐ क्षां क्षान्तिस्वरूपिण्यै रक्त बीजवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ।।8।।ॐ जां जातिस्वरूपिण्यै निशुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ता भव ।।9।। ॐ लं लज्जास्वरूपिण्यै शुम्भवधकारिण्यै ब्रह्म वसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ।।10।। ॐ शां शान्तिस्वरूपिण्यै देवस्तुत्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ।। 11।। ॐ श्रं श्रद्धास्वरूपिण्यै सकलफलदात्र्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ।। 12।। ॐ कां कान्तिस्वरूपिण्यै राजवरप्रदायै ब्रह्मवसिष्ठ-

---

और उत्कीलन है। कोई कहते हैं- छः अङ्गों सहित पाठ करना ही शापोद्धार है। अङ्गों का त्याग ही शाप है। कुछ विद्वानों की राय में शापोद्धार कर्म अनिवार्य नहीं है, क्योंकि रहस्याध्याय में यह स्पष्ट रूप से कहा है कि जिसे एक ही दिन में पूरे पाठ का अवसर न मिले, वह एक दिन केवल मध्यम चरित्र का और दूसरे दिन शेष दो चरित्रों का पाठ करे। इसके सिवा, जो प्रतिदिन नियमपूर्वक पाठ करते हैं उनके लिए एक दिन में एक पाठ न हो सकने पर एक, दो, एक, चार, दो, एक और दो अध्यायों के क्रम से सात दिनों में पाठ पूरा करने का आदेश दिया गया है। ऐसी दशा में प्रतिदिन शापोद्धार और कीलक कैसे सम्भव है। अस्तु, जो हो, हमने यहाँ जिज्ञासुओं के लाभार्थ शापोद्धार और उत्कीलन दोनों के विधान दे दिये हैं।

विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ।। 13 ।। ॐ मां मातृस्वरूपिण्ये अनर्गलमहिमसहितायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ।। 14 ।। ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै सं सर्वैश्वर्यकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ता भव ।। 15 ।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिवायै अभेद्यकवचस्वरूपिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ।। 16 ।। ॐ क्रीं काल्यै कालि ह्रीं फट् स्वाहायै ऋग्वेदस्वरूपिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ता भव ।। 17 ।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती स्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः ।। 18 ।।

इत्येवं हि महामन्त्रान् पठित्वा परमेश्वर।
चण्डीपाठं दिवा-रात्रौ कुर्यादेव न संशयः ।। 19 ।।
एवं मन्त्रं न जानाति चण्डीपाठं करोति यः।
आत्मानं चैव दातारं क्षीणं कुर्यान्न संशयः ।। 20 ।।

इस प्रकार शापोद्धार करने के अनन्तर अन्तर्मातृका-बहिर्मातृका आदि न्यास करे, फिर श्रीदेवी का ध्यान करके रहस्य में बतलाये अनुसार नौ कोष्ठोंवाले यन्त्र में महालक्ष्मी आदि का पूजन करे, इसके बाद छः अङ्गों सहित दुर्गासप्तशती का पाठ आरम्भ किया जाता है। कवच, अर्गला, कीलक और तीनों रहस्य- ये ही सप्तशती के छः अङ्ग माने गये हैं। इनके क्रम में भी मतभेद है। चिदम्बर संहिता में पहले अर्गला फिर कीलक तथा अन्त में कवच पढ़ने का विधान है। * किन्तु योगरत्नावली में पाठ का क्रम इससे भिन्न है। उसमें कवच को बीज, अर्गला को शक्ति तथा कीलक को कीलक संज्ञा दी गई है। जिस प्रकार सब मन्त्रों में पहले बीज का, फिर शक्ति का तथा अन्त में कीलक का उच्चारण होता है, उसी प्रकार यहाँ भी

---

*अर्गलं कीलकं चादौ पठित्वा कवचं पठेत्।
जप्या सप्तशती पश्चात् सिद्धिकामेन मन्त्रिणा।।

पहले कवच रूप बीज का, फिर अर्गला रूपा शक्ति का तथा अन्त में कीलक रूप कीलक का क्रमशः पाठ होना चाहिए। ❁ यहाँ इसी क्रम का अनुसरण किया गया है।

❁ कवचं बीजमादिष्टमर्गला शक्तिरुच्यते।
कीलकं कीलकं प्राहुः सप्तशल्या महामनोः।।

यथा सर्वमन्त्रेषु बीजशक्तिकीलकानां प्रथममुच्चारणं तथा सप्तशतीपाठेऽपि कवचार्गलाकीलकानां प्रथमं पाठः स्यात्।

इस प्रकार अनेक तन्त्रों के अनुसार सप्तशती के पाठ का क्रम अनेक प्रकार का उपलब्ध होता है। ऐसी दशा में अपने देश में पाठ का जो क्रम पूर्व परम्परा से प्रचलित हो, उसी का अनुसरण करना अच्छा है।

अथ देव्याः कवचम्

ॐ अस्य श्रीचण्डीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, चामुण्डा देवता, अङ्गन्यासोक्तमातरो बीजम्, दिग्बन्धदेवतास्तत्त्वम्, श्री जगदम्बा प्रीत्यर्थे सप्तशतीपाठाङ्गत्त्वेन जपे विनियोगः।

ॐ नमश्चण्डिकायै।।

मार्कण्डेय उवाच

ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम्।
यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह।। 1।।

ब्रह्मोवाच

अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम्।
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने।। 2।।
प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्।। 3।।
पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्।। 4।।
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना।। 5।।
अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे।
विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः।। 6।।
न तेषां जायते किंचिदशुभं रणसंकटे।
नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं न हि।। 7।।
यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते।
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः।। 8।।

प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना।
ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना।। 9।।
माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना।
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया।। 10।।
श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना।
ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरणभूषिता।। 11।।
इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः।
नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः।। 12।।
दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः।
शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम्।। 13।।
खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च।
कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम्।। 14।।
दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च।
धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै।। 15।।
नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे।
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि।। 16।।
त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनि।
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता।। 17।।
दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी।
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी।। 18।।
उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी।
ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा।। 19।।
एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना।
जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः।। 20।।

अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता।
शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता।। 21।।
मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी।
त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके।। 22।।
शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी।
कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शाङ्करी।। 23।।
नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका।
अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती।। 24।।
दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका।
घण्टिका चित्रघण्टा च महामाया च तालुके।। 25।।
कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमङ्गला।
ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी।। 26।।
नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी।
स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी।। 27।।
हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च।
नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी।। 28।।
स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनः शोकविनाशिनी।
हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी।। 29।।
नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा।
पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी।। 30।।
कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी।
जङ्घे महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी।। 31।।
गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी।
पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत्पादाधस्तलवासिनी।। 32।।

नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी।
रोमकूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा।।33।।
रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती।
अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी।।34।।
पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा।
ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसंधिषु।।35।।
शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा।
अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी।।36।।
प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम्।
वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याणशोभना।।37।।
रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी।
सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा।।38।।
आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी।
यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी।।39।।
गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके।
पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी।।40।।
पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा।
राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता।।41।।
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु।
तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी।।42।।
पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः।
कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति।।43।।
तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान्।।44।।

निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः।
त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान्।। 45।।
इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम्।
यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः।। 46।।
दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः।
जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः।। 47।।
नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः।
स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमं चापि यद्विषम्।। 48।।
अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले।
भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः।। 49।।
सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा।
अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः।। 50।।
ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः।
ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः।। 51।।
नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते।
मानोन्नतिर्भवेद् राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम्।। 52।।
यशसा वर्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले।
जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा।। 53।।
यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम्।
तावत्तिष्ठति मेदिन्यां संततिः पुत्रपौत्रिकी।। 54।।
देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम्।
प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः।। 55।।
लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते।। ॐ।। 56।।

॥ इति देव्याः कवचं सम्पूर्णम्।।

अथार्गलास्तोत्रम्

ॐ अस्य श्री अर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुर्ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री महालक्ष्मीर्देवता, श्री जगदम्बाप्रीतये सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः ।।

ॐ नमश्चण्डिकायै ।।

मार्कण्डेय उवाच

ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ।। 1 ।।
जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि ।
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते ।। 2 ।।
मधुकैटभविद्राविविधातृवरदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।। 3 ।।
महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।। 4 ।।
रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनी ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।। 5 ।।
शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनी ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।। 6 ।।
वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनी ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।। 7 ।।
अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।। 8 ।।
नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।। 9 ।।

स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।। 10।।
चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।। 11।।
देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।। 12।।
विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।। 13।।
विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।। 14।।
सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।। 15।।
विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।। 16।।
प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।। 17।।
चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।। 18।।
कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।। 19।।
हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।। 20।।
इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।। 21।।

देवि प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पविनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।। 22।।
देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।। 23।।
पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्।। 24।।
इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः।
स तु सप्तशतीसंख्यावरमाप्नोति सम्पदाम्।। ॐ।। 25।।

॥ इति देव्याः अर्गलास्तोत्रम् सम्पूर्णम्।।

अथ कीलकम्

ॐ अस्य श्री कीलकमन्त्रस्य शिवः ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री महासरस्वती देवता, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थं सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः।

ॐ नमश्चण्डिकायै।।

मार्कण्डेय उवाच

ॐ विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे।
श्रेयः प्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्धधारिणे।। 1।।
सर्वमेतद्विजानीयान्मन्त्राणामभिकीलकम् ।
सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः।। 2।।
सिद्ध्यन्त्युच्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि।
एतेन स्तुवतां देवी स्तोत्रमात्रेण सिद्ध्यति।। 3।।
न मन्त्रो नौषधं तत्र न किञ्चिदपि विद्यते।
विना जाप्येन सिद्ध्येत सर्वमुच्चाटनादिकम्।। 4।।

समग्राण्यपि सिद्ध्यन्ति लोकशङ्कामिमां हरः।
कृत्वा निमन्त्रयामास सर्वमेवमिदं शुभम्।। 5।।
स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुप्तं चकार सः।
समाप्तिर्न च पुण्यस्य तां यथावन्नियन्त्रणाम्।। 6।।
सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेवं न संशयः।
कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः।। 7।।
ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसीदति।
इत्थंरूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम्।। 8।।
यो निष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम्।
स सिद्धः स गणः सोऽपि गन्धर्वो जायते नरः।। 9।।
न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापीह जायते।
नापमृत्युवशं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात्।। 10।।
ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत न कुर्वाणो विनश्यति।
ततो ज्ञात्वैव सम्पन्नमिदं प्रारभ्यते बुधैः।। 11।।
सौभाग्यादि च यत्किञ्चिद् दृश्यते ललनाजने।
तत्सर्वं तत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम्।। 12।।
शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्तिरुच्चकैः।
भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्यमेव तत्।। 13।।
ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्यसम्पदः।
शत्रुहानिःपरो मोक्षःस्तूयते सा न किं जनैः।।ॐ।।14।।

॥ इति देव्याः [अर्गला, struck out; handwritten: कीलक] स्तोत्रम् सम्पूर्णम्।।

अथ वेदोक्तं रात्रिसूक्तम्

ॐ रात्रीत्याद्यष्टर्चस्य सूक्तस्य कुशिकः सौभरो रात्रिर्वा भारद्वाजो ऋषिः, रात्रिर्देवता, गायत्री छन्दः, देवीमाहात्म्यपाठे विनियोगः।

ॐ रात्री व्यख्यदायती पुरुत्रा देव्यक्षभिः।
विश्वा अधि श्रियोऽधित।। 1।।
ओर्वप्रा अमर्त्यानिवतो देव्युतः।
ज्योतिषा बाधते तमः।। 2।।
निरु स्वसारमस्कृतोषसं देव्यायती।
अपेदु हासते तमः।। 3।।
सा नो अद्य यस्या वयं नि ते यामन्नविक्ष्महि।
वृक्षे न वसतिं वयः।। 4।।
नि ग्रामासो अविक्षत नि पद्वन्तो नि पक्षिणः।
नि श्येनासश्चिदर्थिनः।। 5।।
यावया वृक्यं वृकं यवय स्तेन मूर्म्ये।
अथा नः सुतरा भव।। 6।।
उप मा पेपिशत्तमः कृष्णं व्यक्तमस्थित।
उष ऋणेव यातय।। 7।।
उप ते गा इवाकारं वृणीष्व दुहितर्दिवः।
रात्रि स्तोमं न जिग्युषे।। 8।।

अथ तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तम्

ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्।
निद्रां भगवती विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ।।1।।

ब्रह्मोवाच

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता।।2।।
अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः।
त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा।।3।।
त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत्।
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा।।4।।
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने।
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ।।5।।
महाविद्या महामया महामेधा महास्मृतिः ।
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी।।6।।
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी।
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा ।।7।।
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च।।8।।
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ।।9।।
सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ।।10।।
यच्च किञ्चित् क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा।।11।।

यया त्वया जगत्स्त्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः।। 12।।
विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्।। 13।।
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता।
मोहयैतो दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ।। 14।।
प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ।। 15।।

॥ इति रात्रिसूक्तम्।।

श्री देव्यथर्वशीर्षम्

ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवीति।। 1।।

साब्रवीत्- अहं ब्रह्मस्वरूपिणी । मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत्। शून्यं चाशून्यं च।। 2।।

अहमानन्दानानन्दौ। अहं विज्ञानाविज्ञाने। अहं ब्रह्माब्रह्मणी वेदितव्ये। अहं पञ्चभूतान्यपञ्चभूतानि। अहमखिलं जगत्।। 3।।

वेदोऽहमवेदोऽहम्। विद्याहमविद्याहम्। अजाहमनजाहम्। अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम्।। 4।।

अहं रुद्रेभिर्वसुभि श्चरामि। अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि। अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ।। 5।।

अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि। अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि।। 6।।

अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते। अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। अहं सुवे

पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे। य एवं वेद। स दैवीं सम्पदमाप्नोति।। 7।।

ते देवा अब्रुवन्- नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।। 8।।
तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्।
दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः।। 9।।
देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु।। 10।।
कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम्।
सरस्वतीमदितीं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम्।। 11।।
महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्।। 12।।
अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव ।
तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः ।। 13।।
कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः।
पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूच्यैषा विश्वमातादिविद्योम्।। 14।।

एषाऽऽत्मशक्तिः। एषा विश्वमोहिनी। पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरा। एषा श्रीमहाविद्या। य एवं वेद स शोकं तरति।। 15।।

नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः।। 16।।

सैषाष्टौ वसवः। सैषैकादश रुद्राः। सैषा द्वादशादित्याः। सैषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च। सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षाः सिद्धाः। सैषा सत्त्वरजस्तमांसि। सैषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी। सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः। सैषा ग्रहनक्षत्र-ज्योतींषि। कलाकाष्ठादिकालरूपिणी। तामहं प्रणौमि नित्यम्।।

पापापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्ति प्रदायिनीम्।
अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम्।। 17।।
वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम्।
अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम्।। 18।।
एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्धचेतसः।
ध्यायन्ति परमानन्दामया ज्ञानाम्बुराशयः।। 19।।
वाङ्माया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम्।
सूर्योऽवामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्तष्टात्तृतीयकः।
नारायणेन सम्मिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः।
विच्चे नवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायकः।। 20।।
हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातःसूर्यसमप्रभाम्।
पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम्।
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे।। 21।।
नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम्।
महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम्।। 22।।

यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयोः न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया। यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता। यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या। यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मादुच्यते अजा। एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका। एकैव विश्वरूपिणी तस्मा-दुच्यते नैका। अत एवोच्यते अज्ञेयानन्तालक्ष्याजैका नैकेति।। 23।।

मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी।
ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी।
यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता।। 24।।
तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम्।
नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम्।। 25।।

इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षजपफलमाप्नोति। इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयति- शतलक्षं प्रजप्त्वापि सोऽर्चासिद्धिं न विन्दति। शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः।

दशवारं पठेद् यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते।
महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः।। 26।।

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति। निशीथे तुरीयसंध्यायां जप्त्वा वाक् सिद्धिर्भवति नूतनायांप्रतिमायां जप्त्वा देवतासांनिध्यं भवति। प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति। भौमाश्विन्यां महादेवीसंनिधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति। स महामृत्युं तरति य एवं वेद। इत्युपनिषत्।

अथ नवार्णविधिः

इस प्रकार रात्रिसूक्त और देव्यथर्वशीर्ष का पाठ करने के पश्चात् निम्नाङ्कित रूप से नवार्ण मन्त्र के विनियोग, न्यास और ध्यान आदि करें।

श्रीगणपतिर्जयति। 'ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहा-सरस्वत्यो देवताः, ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।'

इसे पढ़कर जल गिरायें।

नीचे लिखे न्यास वाक्यों में से एक-एक का उच्चारण करके दाहिने हाथ की अँगुलियों से क्रमशः सिर, मुख, हृदय, गुदा, दोनों चरण और नाभि-इन अंगों का स्पर्श करें।

ऋष्यादिन्यासः

ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः, शिरसि। गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो

नमः, मुखे। महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः, हृदि। ऐं बीजाय नमः, गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः। क्लीं कीलकाय नमः, नाभौ।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे- इस मूलमन्त्र से हाथों की शुद्धि करके करन्यास करें।

करन्यासः

करन्यास में हाथ की विभिन्न अँगुलियों, हथेलियों और हाथ के पृष्ठ भाग में मन्त्रों का न्यास (स्थापन) किया जाता है। इसी प्रकार अङ्गन्यास में हृदयादि अङ्गों में मन्त्रों की स्थापना होती है। मन्त्रों को चेतन और मूर्तिमान मानकर उन-उन अङ्गों का नाम लेकर उन मन्त्रमय देवताओं का ही स्पर्श और वन्दन किया जाता है। ऐसा करने से पाठ या जप करनेवाला स्वयं मन्त्रमय होकर मन्त्र देवताओं द्वारा सर्वथा सुरक्षित हो जाता है। उसके बाहर-भीतर की शुद्धि होती है, दिव्य बल प्राप्त होता है और साधना निर्विघ्नतापूर्वक पूर्ण तथा परम लाभदायक होती है।

ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः (दोनों हाथों की तर्जनी अँगुलियों से दोनों अँगूठों का स्पर्श)

ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः (दोनों हाथों के अँगूठों से दोनों तर्जनी अँगुलियों का स्पर्श)

ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः (अँगूठों से मध्यमा अँगुलियों का स्पर्श)

ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः (अनामिका अँगुलियों का स्पर्श)

ॐ विच्चे कनिष्ठकाभ्यां नमः (कनिष्ठिका अँगुलियों का स्पर्श)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः (हथेलियों और पृष्ठभागों का परस्पर स्पर्श)

हृदयादिन्यासः

इसमें दाहिने हाथ की पाँचों अँगुलियों से 'हृदय' आदि अङ्गों का स्पर्श किया जाता है।

ॐ ऐं हृदयाय नमः (दाहिने हाथ की पाँचों अँगुलियों से हृदय का स्पर्श)
ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा (सिर का स्पर्श)
ॐ क्लीं शिखायै वषट् (शिखा का स्पर्श)
ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम् (दाहिने हाथ की अँगुलियों से बाएँ कन्धे का और बाएँ हाथ की अँगुलियों से दाहिने कन्धे का साथ ही स्पर्श)
ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् (दाहिने हाथ की अँगुलियों के अग्र भाग से दोनो नेत्रों और ललाट के मध्यभाग का स्पर्श)
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट् (यह व़ाक्य पढ़कर दाहिने हाथ को सिर के ऊपर से बायीं ओर से पीछे की ओर ले जाकर दाहिनी ओर से आगे की ओर ले आएँ और तर्जनी तथा मध्यमा अँगुलियों से बाएँ हाथ की हथेली पर ताली बजायें)

अक्षरन्यासः

निम्नाङ्कित वाक्यों को पढ़कर क्रमशः शिखा आदि का दाहिने हाथ की अँगुलियों से स्पर्श करें।

ॐ ऐं नमः, शिखायाम्। ॐ ह्रीं नमः, दक्षिणनेत्रे। ॐ क्लीं नमः, वामनेत्रे। ॐ चां नमः, दक्षिणकर्णे। ॐ मुं नमः, वामकर्णे। ॐ डां नमः, दक्षिणनासापुटे। ॐ यैं नमः, वामनासापुटे। ॐ विं नमः, मुखे। ॐ च्चें नमः, गुह्ये। एवं विन्यस्याष्ट वारं मूलेन व्यापकं कुर्यात्।

इस प्रकार न्यास करके मूलमन्त्र से आठ बार व्यापक (दोनों हाथों द्वारा सिर से लेकर पैर तक के सब अङ्गों का स्पर्श) करें, फिर प्रत्येक दिशा में चुटकी बजाते हुए न्यास करें–

दिङ्न्यासः

ॐ ऐं प्राच्यै नमः। ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः। ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः। ॐ ह्री नैर्ऋत्यै नमः। ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः। ॐ क्लीं वायव्यै नमः। ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः। ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

ध्यानम्

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ।। 1 ।।
अक्षस्त्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ।। 2 ।।
घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ।। 3 ।।

फिर '**ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः**' इस मन्त्र से माला की पूजा करके प्रार्थना करें-

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणी।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।
ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये।।

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनी साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।

इसके बाद '**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे**' इस मन्त्र का 108 बार जप करें और-

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।।

इस श्लोक को पढ़कर देवी के वाम हस्त में जप निवेदन करें।

सप्तशतीन्यासः

तदनन्तर सप्तशती के विनियोग, न्यास और ध्यान करने चाहिए। न्यास की प्रणाली पूर्ववत है-

प्रथममध्यमोत्तरचरित्राणां ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, श्री महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, नन्दाशाकम्भरीभीमाः शक्तयः रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि, अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि, ऋग्यजुःसामवेदा ध्यानानि, सकलकामनासिद्धये श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ।। अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ।। तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ।। मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्।। अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः।। कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।। करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा० - हृदयाय नमः।
ॐ शूलेन पाहि नो देवि० - शिरसे स्वाहा।
ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च० - शिखायै वषट्।
ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि०- कवचाय हुम्।
ॐ खड्गशूलगदादीनि० - नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे० - अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

इसके बाद प्रथम चरित्र का विनियोग और ध्यान करके 'मार्कण्डेय उवाच' से सप्तशती का पाठ आरम्भ करे। प्रत्येक चरित्र का विनियोग मूल सप्तशती के साथ ही दिया गया है तथा प्रत्येक अध्याय के आरम्भ में ध्यान भी दे दिया गया है। प्रेमपूर्वक भगवती का ध्यान करते हुए पाठ करें। मीठा स्वर, अक्षरों का स्पष्ट उच्चारण, पदों का विभाग, उत्तम स्वर, धीरता, एक लय के साथ बोलना- ये सब पाठकों के गुण हैं। जो पाठ करते समय रागपूर्वक गाता, उच्चारण में जल्दबाजी करता, सिर हिलाता, अपने हाथ से लिखी हुई पुस्तक पर पाठ करता, अर्थ की जानकारी नहीं रखता और अधूरा ही मन्त्र कण्ठस्थ करता है, वह पाठ करनेवालों में अधम माना गया है। जब तक अध्याय की पूर्ति न हो, तब तक बीच में पाठ बन्द न करें। यदि प्रमादवश अध्याय के बीच में पाठ का विराम हो जाय तो पुनः प्रति बार पूरे अध्याय का पाठ करें। अज्ञानवश पुस्तक हाथ में लेकर पाठ करने का फल आधा ही होता है। स्तोत्र का पाठ मानसिक नहीं, वाचिक होना चाहिए। वाणी से उसका स्पष्ट उच्चारण ही उत्तम माना गया है। बहुत जोर-जोर से बोलना तथा पाठ में उतावली करना वर्जित है। यत्न पूर्वक शुद्ध एवं स्थिर चित्त से पाठ करना चाहिए। यदि पाठ कण्ठस्थ न हो तो पुस्तक से करें। अपने हाथ से लिखे हुए अथवा ब्राह्मणेतर पुरुष के लिखे हुए स्तोत्र का पाठ न करें। यदि एक सहस्र से अधिक श्लोकों का या मन्त्रों का ग्रन्थ हो तो पुस्तक देखकर ही पाठ करें। इससे कम श्लोक हों तो उन्हें कण्ठस्थ करके बिना पुस्तक के ही पाठ किया जा सकता है। अध्याय समाप्त होने पर 'इति' 'वध' 'अध्याय' तथा 'समाप्त' शब्द का उच्चारण नहीं करना चाहिए।

।। श्री दुर्गायै नमः ।।

अथ श्री दुर्गासप्तशती

❁ ❁ ❁ ❁ ❁

प्रथमोऽध्यायः

❁ ❁ ❁

मेधा ऋषि का राजा सुरथ और समाधि को भगवती की महिमा बताते हुए मधु-कैटभ-वध का प्रसङ्ग सुनाना

❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁

विनियोगः

ॐ प्रथमचरित्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, महाकाली देवता, गायत्री छन्दः, नन्दा शक्तिः, रक्तदन्तिका बीजम्, अग्निस्तत्त्वम्, ऋग्वेदः स्वरूपम्, श्री महाकाली प्रीत्यर्थे प्रथमचरित्रजपे विनियोगः ।

ध्यानम्

ॐ खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ।। 1 ।।

।। ॐ नमश्चण्डिकायै ।।

'ॐ' ऐं मार्कण्डेय उवाच ।। 1 ।।

सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः ।
निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद् गदतो मम ।। 2 ।।
महामायानुभावेन यथा मन्वन्तराधिपः ।
स बभूव महाभागः सावर्णिस्तनयो रवेः ।। 3 ।।

स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वं चैत्रवंशसमुद्भवः।
सुरथो नाम राजाभूत्समस्ते क्षितिमण्डले।। 4।।
तस्य पालयतः सम्यक् प्रजाः पुत्रानिवौरसान्।
बभूवुः शत्रवो भूपाः कोलाविध्वंसिनस्तदा।। 5।।
तस्य तैरभवद् युद्धमतिप्रबलदण्डिनः।
न्यूनैरपि स तैर्युद्धे कोलाविध्वंसिभिर्जितः।। 6।।
ततः स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोऽभवत्।
आक्रान्तः स महाभागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः।। 7।।
अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्य दुरात्मभिः।
कोशो बलं चापहृतं तत्रापि स्वपुरे ततः।। 8।।
ततो मृगयाव्याजेन हृतस्वाम्यः स भूपतिः।
एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम्।। 9।।
स तत्राश्रममद्राक्षीद् द्विजवर्यस्य मेधसः।
प्रशान्तश्वापदाकीर्णं मुनिशिष्योपशोभितम्।। 10।।
तस्थौ कंचित्स कालं च मुनिना तेन सत्कृतः।
इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन्मुनिवराश्रमे।। 11।।
सोऽचिन्तयत्तदा तत्र ममत्वाकृष्टचेतनः।
मत्पूर्वैः पालितं पूर्वं मया हीनं पुरं हि तत्।। 12।।
मद्भृत्यैस्तैरसद्वृत्तैर्धर्मतः पाल्यते न वा।
न जाने स प्रधानो मे शूरहस्ती सदामदः।। 13।।
मम वैरिवशं यातः कान् भोगानुपलप्स्यते।
ये ममानुगता नित्यं प्रसादधनभोजनैः।। 14।।
अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम्।
असम्यग्व्ययशीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततं व्ययम्।। 15।।

संचितः सोऽतिदुःखेन क्षयं कोशो गमिष्यति।
एतच्चान्यच्च सततं चिन्तयामास पार्थिवः।। 16।।
तत्र विप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकं ददर्श सः।
स पृष्टस्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चागमनेऽत्र कः।। 17।।
सशोक इव कस्मात्त्वं दुर्मना इव लक्ष्यसे।
इत्याकर्ण्य वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदितम्।। 18।।
प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपम्।। 19।।

वैश्य उवाच।। 20।।

समाधिर्नाम वैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले।। 21।।
पुत्रदारैर्निरस्तश्च धनलोभादसाधुभिः।
विहीनश्च धनैर्दारैः पुत्रैरादाय मे धनम्।। 22।।
वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाप्तबन्धुभिः।
सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां कुशलाकुशलात्मिकाम्।। 23।।
प्रवृत्तिं स्वजनानां च दाराणां चात्र संस्थितः।
किं नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमं किं नु साम्प्रतम्।। 24।।
कथं ते किं नु सद्वृत्ता दुर्वृत्ताः किं नु मे सुताः।। 25।।

राजोवाच।। 26।।

यैर्निरस्तो भवाँल्लुब्धैः पुत्रदारादिभिर्धनैः।। 27।।
तेषु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसम्।। 28।।

वैश्य उवाच।। 29।।

एवमेतद्यथा प्राहभवानस्मद्गतं वचः।। 30।।
किं करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरतां मनः।
यैः संत्यज्य पितृस्नेहं धनलुब्धैर्निराकृतः।। 31।।

पतिस्वजनहार्दं च हार्दि तेष्वेव मे मनः।
किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते।। 32।।
यत्प्रेमप्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु।
तेषां कृते मे निःश्वासो दौर्मनस्यं च जायते।। 33।।
करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम्।। 34।।

मार्कण्डेय उवाच।। 35।।

ततस्तौ सहितौ विप्र तं मुनिं समुपस्थितौ।। 36।।
समाधिर्नाम वैश्योऽसौ स च पार्थिवसत्तमः।
कृत्वा तु तौ यथान्यायं यथार्हं तेन संविदम्।। 37।।
उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ।। 38।।

राजोवाच।। 39।।

भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत्।। 40।।
दुःखाय यन्मे मनसः स्वचित्तायत्ततां विना।
ममत्वं गतराज्यस्य राज्याङ्गेष्वखिलेष्वपि।। 41।।
जानतोऽपि यथाज्ञस्य किमेतन्मुनिसत्तम।
अयं च निकृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः।। 42।।
स्वजनेन च संत्यक्तस्तेषु हार्दी तथाप्यति।
एवमेष तथाहं च द्वावप्यत्यन्तदुःखितौ।। 43।।
दृष्टदोषेऽपि विषये ममत्वाकृष्टमानसौ।
तत्किमेतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि।। 44।।
ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता।। 45।।

ऋषिरुवाच।। 46।।

ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्विषयगोचरे।। 47।।
विषयश्च महाभाग याति चैवं पृथक् पृथक्।
दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्रात्रावन्धास्तथापरे।। 48।।

केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृष्टयः।
ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किं तु ते न हि केवलम्।।49।।
यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः।
ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम्।।50।।
मनुष्याणां च यत्तेषां तुल्यमन्यत्तथोभयोः।
ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान् पतङ्गाञ्छावचञ्चुषु।।51।।
कणमोक्षादृतान्मोहात्पीड्यमानानपि क्षुधा।
मानुषा मनुजव्याघ्र साभिलाषाः सुतान् प्रति।।52।।
लोभात्प्रत्युपकाराय नन्वेतान् किं न पश्यसि।
तथापि ममतावर्त्ते मोहगर्ते निपातिताः।।53।।
महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणा।
तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः।।54।।
महामाया हरेश्चैषा तया सम्मोह्यते जगत्।
ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।।55।।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।
तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम्।।56।।
सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये।
सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी।।57।।
संसारबन्धहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी ।।58।।

राजोवाच।।59।।

भगवन् का हि सा देवी महामायेति यां भवान्।।60।।
ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्याश्च किं द्विज।
यत्प्रभावा च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा।।61।।
तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदां वर।।62।।

ऋषिरुवाच ।। 63 ।।

नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम् ।। 64 ।।
तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम।
देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा ।। 65 ।।
उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याप्यभिधीयते।
योगनिद्रां यदा विष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते ।। 66 ।।
आस्तीर्य शेषमभजत्कल्पान्ते भगवान् प्रभुः।
तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधुकैटभौ ।। 67 ।।
विष्णुकर्णमलोद्भूतौ हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ।
स नाभिकमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः ।। 68 ।।
दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ प्रसुप्तं च जनार्दनम्।
तुष्टाव योगनिद्रां तामेकाग्रहृदयस्थितः ।। 69 ।।
विबोधनार्थाय हरेर्हरिनेत्रकृतालयाम्।
विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ।। 70 ।।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ।। 71 ।।

ब्रह्मोवाच ।। 72 ।।

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ।। 73 ।।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता।
अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः ।। 74 ।।
त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा।
त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ।। 75 ।।
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा।
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ।। 76 ।।
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये।
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ।। 77 ।।

महामोहा च भवती महादेवी महासुरी ।
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी।। 78।।
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा।
त्वं श्रीस्त्मीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा।। 79।।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च।
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।। 80।।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा।
सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी।। 81।।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ।
यच्च किंचित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके।। 82।।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा।
यया त्वया जगत्स्त्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्।। 83।।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः।
विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च ।।84।।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्।
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता।। 85।।
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ।
प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु।। 86।।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ।। 87।।

ऋषिरुवाच।। 88।।

एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा।। 89।।
विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ।
नेत्रास्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः ।। 90।।
निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः।
उत्तस्थौ च जगन्नाथस्तया मुक्तो जनार्दनः।। 91।।

एकार्णवेऽहिशयनात्ततः स ददृशे च तौ।
मधुकैटभो दुरात्मानावतिवीर्यपराक्रमौ।। 92।।
क्रोधरक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणं जनितोद्यमौ।
समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान् हरिः।। 93।।
पञ्चवर्षसहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः।
तावप्यतिबलोन्मत्तौ महामायाविमोहितौ।। 94।।
उक्तवन्तौ वरोऽस्मत्तो व्रियतामिति केशवम्।। 95।।

श्रीभगवानुवाच।। 96।।

भवेतामद्य मे तुष्टौ मम वध्यावुभावपि।। 97।।
किमन्येन वरेणात्र एतावद्धि वृतं मम।। 98।।

ऋषिरुवाच।। 99।।

वञ्चिताभ्यामिति तदा सर्वमापोमयं जगत्।। 100।।
विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवान् कमलेक्षणः।
आवां जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता।। 101।।

ऋषिरुवाच।। 102।।

तथेत्युक्त्वा भगवता शङ्खचक्रगदाभृता।
कृत्वा चक्रेण वै च्छिन्ने जघने शिरसी तयोः।। 103।।
एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम्।
प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः श्रृणु वदामि ते।। ऐंॐ।। 104।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
मधुकैटभवधो नाम प्रथमोध्यायः।। 1।।
उवाच 14, अर्धश्लोकाः 24, श्लोकाः 66,
एवमादितः।। 104।।

द्वितीयोऽध्यायः

देवताओं के तेज से देवी का प्रादुर्भाव और महिषासुर की सेना का वध

विनियोगः

ॐ मध्यमचरित्रस्य विष्णुर्ऋषिः, महालक्ष्मीर्देवता, उष्णिक् छन्दः, शाकम्भरी शक्तिः, दुर्गा बीजम्, वायुस्तत्त्वम्, यजुर्वेदः स्वरूपम्, श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं मध्यमचरित्रजपे विनियोगः।

ध्यानम्

ॐ अक्षस्रक्परशुं गदेषु कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।

'ॐ' ह्रीं ऋषिरुवाच।। 1।।

देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमब्दशतं पुरा ।
महिषेऽसुराणामधिपे देवानां च पुरन्दरे ।।2।।
तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देवसैन्यं पराजितम्।
जित्वा च सकलान् देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः।। 3।।
ततः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापतिम्।
पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेशगरुडध्वजौ।।4।।
यथावृत्तं तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम् ।
त्रिदशाः कथयामासुर्देवाभिभववित्तरम् ।।5।।

सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां यमस्य वरुणस्य च।
अन्येषां चाधिकारान् स स्वयमेवाधितिष्ठति।। 6।।
स्वर्गान्निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि।
विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना।। 7।।
एतद्वः कथितं सर्वममरारिविचेष्टितम्।
शरणं वः प्रपन्नाः स्मो वधस्तस्य विचिन्त्यताम्।। 8।।
इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः।
चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ।। 9।।
ततोऽतिकोपपूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः।
निश्चक्राम महत्तेजो ब्रह्मणः शंकरस्य च।। 10।।
अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः।
निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत।। 11।।
अतीव तेजसः कूटं ज्वलन्तमिव पर्वतम्।
ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम्।। 12।।
अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम्।
एकस्थं तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा।। 13।।
यदभूच्छाम्भवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम्।
याम्येन चाभवन् केशा बाहवो विष्णुतेजसा।। 14।।
सौम्येन स्तनयोर्युग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत्।
वारुणेन च जङ्घोरू नितम्बस्तेजसा भुवः।। 15।।
ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदङ्गुल्योऽर्कतेजसा।
वसूनां च कराङ्गुल्यः कौबेरेण च नासिका।। 16।।
तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः प्राजापत्येन तेजसा।
नयनत्रितयं जज्ञे तथा पावकतेजसा।। 17।।

भ्रुवौ च संध्ययोस्तेजः श्रवणावनिलस्य च।
अन्येषां चैव देवानां सम्भवस्तेजसां शिवा।। 18।।
ततः समस्तदेवानां तेजोराशिसमुद्भवाम्।
तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिताः।। 19।।
शूलं शूलाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक्।
चक्रं च दत्तवान् कृष्णः समुत्पाद्य स्वचक्रतः।। 20।।
शङ्खं च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः।
मारुतो दत्तवांश्चापं बाणपूर्णे तथेषुधी।। 21।।
वज्रमिन्द्रः समुत्पाद्य कुलिशादमराधिपः।
ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टामैरावताद् गजात्।। 22।।
कालदण्डाद्यमो दण्डं पाशं चाम्बुपतिर्ददौ।
प्रजापतिश्चाक्षमालां ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम्।। 23।।
समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन् दिवाकरः।
कालश्च दत्तवान् खड्गं तस्याश्चर्म च निर्मलम्।। 24।।
क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाम्बरे।
चूडामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च।। 25।।
अर्धचन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान् सर्वबाहुषु।
नूपुरौ विमलौ तद्वद् ग्रैवेयकमनुत्तमम्।। 26।।
अङ्गुलीयकरत्नानि समस्तास्वङ्गुलीषु च।
विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुं चातिनिर्मलम्।। 27।।
अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाभेद्यं च दंशनम्।
अम्लानपङ्कजां मालां शिरस्युरसि चापराम्।। 28।।
अददज्जलधिस्तस्यै पङ्कजं चातिशोभनम्।
हिमवान् वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च।। 29।।

ददावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः।
शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितम्।। 30।।
नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमाम्।
अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा।। 31।।
सम्मानिता ननादोच्चैः साट्टहासं मुहुर्मुहुः।
तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः।। 32।।
अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत्।
चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे।। 33।।
चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः।
जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंहवाहिनीम्।। 34।।
तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्तिनम्रात्ममूर्तयः।
दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलोक्यममरारयः।। 35।।
सन्नद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः।
आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः।। 36।।
अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः।
स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयां त्विषा।। 37।।
पादाक्रान्त्या नतभुवं किरीटोल्लिखिताम्बराम्।
क्षोभिताशेषपातालां धनुर्ज्यानिःस्वनेन ताम्।। 38।।
दिशो भुजसहस्रेण समन्ताद् व्याप्य संस्थिताम्।
ततः प्रववृते युद्धं तया देव्या सुरद्विषाम्।। 39।।
शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपितदिगन्तरम्।
महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः।। 40।।
युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरङ्गबलान्वितः।
रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महासुरः।। 41।।

अयुध्यतायुतानां च सहस्रेण महाहनुः।
पञ्चाशद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महासुरः।। 42।।
अयुतानां शतैः षड्भिर्बाष्कलो युयुधे रणे।
गजवाजिसहस्रौघैरनेकैः परिवारितः।। 43।।
वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुध्यत।
बिडालाख्योऽयुतानां च पञ्चाशद्भिरथायुतैः।। 44।।
युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः।
अन्ये च तत्रायुतशो रथनागहयैर्वृताः।। 45।।
युयुधुः संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः।
कोटिकोटिसहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा।। 46।।
हयानां च वृतो युद्धे तत्राभून्महिषासुरः।
तोमरैर्भिन्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा।। 47।।
युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः परशुपट्टिशैः।
केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः केचित्पाशांस्तथापरे।। 48।।
देवीं खड्गप्रहारैस्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः।
सापि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका।। 49।।
लीलयैव प्रचिच्छेद निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी।
अनायस्ताननना देवी स्तूयमाना सुरर्षिभिः।। 50।।
मुमोचासुरदेहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी।
सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्या वाहनकेसरी।। 51।।
चचारासुरसैन्येषु वनेष्विव हुताशनः।
निःश्वासान् मुमुचे यांश्च युध्यमाना रणेऽम्बिका।। 52।।
त एव सद्यः सम्भूता गणाः शतसहस्रशः।
युयुधुस्ते परशुभिर्भिन्दिपालासिपट्टिशैः।। 53।।

नाशयन्तोऽसुरगणान् देवीशक्त्युपबृंहिताः।
अवादयन्त पटहान् गणाः शङ्खांस्तथापरे।।54।।
मृदङ्गांश्च तथैवान्ये तस्मिन् युद्धमहोत्सवे।
ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्तिवृष्टिभिः।।55।।
खड्गादिभिश्च शतशो निजघान महासुरान्।
पातयामास चैवान्यान् घण्टास्वनविमोहितान्।।56।।
असुरान् भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यानकर्षयत्।
केचिद् द्विधा कृतास्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्तथापरे।।57।।
विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते।
वेमुश्च केचिद्रुधिरं मुसलेन भृशं हताः।।58।।
केचिन्निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि।
निरन्तराः शरौघेण कृताः केचिद्रणाजिरे।।59।।
श्येनानुकारिणः प्राणान् मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः।
केषांचिद् बाहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवास्तथापरे।।60।।
शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः।
विच्छिन्नजङ्घास्त्वपरे पेतुरुर्व्यां महासुराः।।61।।
एकबाह्वक्षिचरणाः केचिद्देव्या द्विधा कृताः।
छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः।।62।।
कबन्धा युयुधुर्देव्या गृहीतपरमायुधाः।
ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः।।63।।
कबन्धाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः।
तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः।।64।।
पातितै रथनागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा।
अगम्या साभवत्तत्र यत्राभूत्स महारणः।।65।।

शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र प्रसुस्त्रुवुः।
मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम्।।66।।
क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका।
निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृणदारुमहाचयम्।।67।।
स च सिंहो महानादमुत्सृजन्धुतकेसरः।
शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति।।68।।
देव्या गणेश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं महासुरैः।
यथैषां तुतुषुर्देवाः पुष्पवृष्टिमुचो दिवि।।ॐ।।69।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
महिषासुरसैन्यवधो नाम द्वितीयोध्यायः।।2।।
उवाच 1, श्लोकाः 68, एवम् 69,
एवमादितः।।173।।

तृतीयोऽध्यायः

सेनापतियों सहित महिषासुर का वध

ध्यानम्

ॐ उद्यद्भानुसहस्त्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्देऽरविन्दस्थिताम्।।

'ॐ' ऋषिरुवाच।। 1।।

निहन्यमानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः।
सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्ययौ योद्धुमथाम्बिकाम्।। 2।।
स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः।
यथा मेरुगिरेः शृङ्गं तोयवर्षेण तोयदः।। 3।।
तस्यच्छित्त्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान्।
जघान तुरगान् बाणैर्यन्तारं चैव वाजिनाम्।। 4।।
चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चातिसमुच्छ्रितम्।
विव्याध चैव गात्रेषु छिन्नधन्वानमाशुगैः।। 5।।
सच्छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः।
अभ्यधावत तां देवीं खड्गचर्मधरोऽसुरः।। 6।।
सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्धनि।
आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान्।। 7।।
तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य पफाल नृपनन्दन।
ततो जग्राह शूलं स कोपादरुणलोचनः।। 8।।
चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः।
जाज्वल्यमानं तेजोभी रविबिम्बमिवाम्बरात्।। 9।।
दृष्ट्वा तदापतच्छूलं देवी शूलममुञ्चत।
तच्छूलं शतधा तेन नीतं स च महासुरः।। 10।।
हते तस्मिन्महावीर्ये महिषस्य चमूपतौ।
आजगाम गजारूढश्चामरस्त्रिदशार्दनः।। 11।।
सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिका द्रुतम्।
हुंकाराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम्।। 12।।
भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः।
चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तदपि साच्छिनत्।। 13।।

ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुम्भान्तरे स्थितः।
बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा।। 14।।
युद्धयमानौ ततस्तौ तु तस्मान्नागान्महीं गतौ।
युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः ।। 15।।
ततो वेगात् खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा।
करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक्कृतम्।। 16।।
उदग्रश्च रणे देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः।
दन्तमुष्टितलैश्चैव करालश्च निपातितः।। 17।।
देवी क्रुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतम्।
वाष्कलं भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रं तथान्धकम्।। 18।।
उग्रास्यमुग्रवीर्यं च तथैव च महाहनुम्।
त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी।। 19।।
बिडालस्यासिना कायात्पातयामास वै शिरः।
दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैर्निन्ये यमक्षयम्।। 20।।
एवं संक्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः।
माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान् गणान्।। 21।।
कांश्चित्तुण्डप्रहारेण खुरक्षेपैस्तथापरान्।
लाङ्गूलताडितांश्चान्याञ्छृङ्गाभ्यां च विदारितान्।। 22।।
वेगेन कांश्चिदपरान्नादेन भ्रमणेन च।
निःश्वासपवनेनान्यान् पातयामास भूतले।। 23।।
निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः।
सिंहं हन्तुं महादेव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका।। 24।।
सोऽपि कोपान्महावीर्यः खुरक्षुण्णमहीतलः।
शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चांश्चिक्षेप च ननाद च।। 25।।

वेगभ्रमणविक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत।
लाङ्गूलेनाहतश्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः ।। 26 ।।
धुतशृङ्गविभिन्नाश्च खण्डं खण्डं ययुर्घना:।
श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः ।। 27 ।।
इति क्रोधसमाध्मातमापतन्तं महासुरम्।
दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद्वधाय तदाकरोत्।। 28 ।।
सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं बबन्ध महासुरम्।
तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे।। 29 ।।
ततः सिंहोऽभवत्सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः।
छिनत्ति तावत्पुरुषः खड्गपाणिरदृश्यत।। 30 ।।
तत एवाशु पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः।
तं खड्गचर्मणा सार्धं ततः सोऽभून्महागजः ।। 31 ।।
करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च।
कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निरकृन्तत।। 32 ।।
ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः।
तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सचराचरम्।। 33 ।।
ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम्।
पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुणलोचना।। 34 ।।
ननर्द चासुरः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः।
विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान्।। 35 ।।
सा च तान् प्रहितांस्तेन चूर्णयन्ती शरोत्करैः।
उवाच तं मदोद्धूतमुखरागाकुलाक्षरम्।। 36 ।।

देव्युवाच ।। 37 ।।

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम्।
मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः ।। 38 ।।

ऋषिरुवाच ।। 39 ।।

एवमुक्त्वा समुत्पत्य साऽऽरूढा तं महासुरम्।
पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत् ।। 40 ।।
ततः सोऽपि पदाऽऽक्रान्तस्तया निजमुखात्ततः।
अर्धनिष्क्रान्त एवासीद् देव्या वीर्येण संवृतः ।। 41 ।।
अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो महासुरः।
तया महासिना देव्या शिरश्छित्त्वा निपातितः ।। 42 ।।
ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश तत्।
प्रहर्षं च परं जग्मुः सकला देवतागणाः ।। 43 ।।
तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभिः।
जगुर्गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः ।। ॐ ।। 44 ।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
महिषासुरवधो नाम तृतीयोध्यायः ।। 3 ।।
उवाच 3, श्लोकाः 41, एवम् 44 एवमादितः ।। 217 ।।

चतुर्थोऽध्यायः

इन्द्रादि देवताओं द्वारा देवी की स्तुति

ध्यानम्

ॐ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां
शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः ।।

॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ 1 ॥

शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये
तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या।
तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा
वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः ॥ 2 ॥

देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या
निश्शेषदेवगण शक्तिसमूहमूर्त्या।
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षि पूज्यां
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः॥ 3 ॥

यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च।
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु ॥ 4 ॥

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नता स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥ 5 ॥

किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्
किं चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि।
किं चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि
सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु ॥ 6 ॥

हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषै-
र्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूत-
मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या ॥ 7 ॥

यस्याः समस्तसुरता समुदीरणेन
तृप्तिं प्रयात्ति सकलेषु मखेषु देवि।
स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतु-
रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च।। 8।।
या मुक्तिहेतुरविचिन्त्यमहाव्रता त्व-
मभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः।
मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषै-
र्विद्यासि सा भगवती परमा हि देवि।। 9।।
शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधान-
मुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्राम्।
देवी त्रयी भगवती भवभावनाय
वार्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री।। 10।।
मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा
दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा।
श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा
गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा।। 11।।
ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्र-
बिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम्।
अत्यद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि
वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण।। 12।।
दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकराल-
मुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न सद्यः।
प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं
कैर्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन।। 13।।

देवि प्रसीद परमा भवती भवाय
सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-
न्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य।। 14।।
ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना।। 15।।
धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्मा-
ण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति।
स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादा-
ल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन।। 16।।
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता।। 17।।
एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते
कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्।
संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु -
मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि।। 18।।
दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म
सर्वासुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम्।
लोकान् प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता
इत्थं मतिर्भवति तेष्वपि तेऽतिसाध्वी।। 19।।
खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः
शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम्।

यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्ड-
योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत्।। 20।।
दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं
रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः।
वीर्यं च हन्तृ हृतदेवपराक्रमाणां
वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम्।। 21।।
केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य
रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र।
चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा
त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि।। 22।।
त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन
त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा।
नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्त-
मस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते।। 23।।
शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।। 24।।
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि।। 25।।
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्।। 26।।
खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः।। 27।।

।। ऋषिरुवाच।। 28।।

एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः।
अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः।। 29।।

भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैस्तु धूपिता।
प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान् प्रणतान् सुरान्।। 30।।

।। देव्युवाच।। 31।।

व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम्।। 32।।

।। देवा ऊचुः।। 33।।

भगवत्या कृतं सर्वं न किंचिदवशिष्यते।। 34।।
यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः।
यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि।। 35।।
संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः।
यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने।। 36।।
तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्धनदारादिसम्पदाम्।
वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके।। 37।।

।। ऋषिरुवाच।। 38।।

इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथाऽऽत्मनः।
तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप।। 39।।
इत्येतत्कथितं भूप सम्भूता सा यथा पुरा।
देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी।। 40।।
पुनश्च गौरीदेहात्सा समुद्भूता यथाभवत्।
वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भनिशुम्भयोः।। 41।।
रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी।
तच्छृणुस्व मयाऽऽख्यातं यथावत्कथयामि ते।। ह्रीं ॐ।। 42।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
शक्रादिस्तुतिर्नाम चतुर्थोऽध्यायः।। 4।।

उवाच 5, अर्धश्लोकौ 2, श्लोकाः 35 एवम् 42 एवमादितः।। 259।।

पञ्चमोऽध्यायः

देवताओं द्वारा देवी की स्तुति

चण्ड-मुण्ड के मुख से अम्बिका के रूप की प्रशंसा सुनकर शुम्भ का उनके पास दूत भेजना और दूत का निराश लौटना

विनियोगः

ॐ अस्य श्री उत्तरचरित्रस्य रुद्र ऋषिः, महासरस्वती देवता, अनुष्टुप् छन्दः, भीमा शक्तिः, भ्रामरी बीजम्, सूर्यस्तत्त्वम्, सामवेदः स्वरूपम्, महासरस्वतीप्रीत्यर्थे उत्तरचरित्रपाठे विनियोगः।

ध्यानम्

ॐ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।।

'ॐ' क्लीं ऋषिरुवाच।। 1।।

पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपतेः।
त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हृता मदबलाश्रयात्।। 2।।
तावेव सूर्यतां तद्वदधिकारं तथैन्दवम्।
कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च।। 3।।
तावेव पवनर्द्धिं च चक्रतुर्वह्निकर्म च।
ततो देवा विनिर्धूता भ्रष्टराज्याः पराजिताः।। 4।।
हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः।
महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजिताम्।। 5।।

तयास्माकं वरो दत्तो यथाऽऽपत्सु स्मृताखिलाः।
भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः ।। 6 ।।
इति कृत्वा मतिं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम्।
जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः ।। 7 ।।

।। देवा ऊचुः ।। 8 ।।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ।। 9 ।।
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ।। 10 ।।
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ।। 11 ।।
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ।। 12 ।।
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ।। 13 ।।
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता।
नमस्तस्यै ।। 14।। नमस्तस्यै ।। 15।। नमस्तस्यै नमो नमः ।।16 ।।
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते।
नमस्तस्यै ।। 17 ।। नमस्तस्यै ।।18 ।। नमस्तस्यै नमो नमः ।।19 ।।
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ।।20 ।। नमस्तस्यै ।।21 ।। नमस्तस्यै नमो नमः ।।22 ।।
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ।।23 ।। नमस्तस्यै ।।24 ।। नमस्तस्यै नमो नमः ।।25 ।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ।।26 ।। नमस्तस्यै ।।27 ।। नमस्तस्यै नमो नमः ।।28 ।।

या देवी सर्वभूतेषुच्छायारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ 29 ॥ नमस्तस्यै॥ 30॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ 31॥

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ 32॥ नमस्तस्यै॥ 33॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ 34॥

या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ 35॥ नमस्तस्यै॥ 36॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ 37॥

या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ 38॥ नमस्तस्यै॥ 39॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ 40॥

या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ 41॥ नमस्तस्यै॥ 42॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ 43॥

या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ 44॥ नमस्तस्यै॥ 45॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ 46॥

या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ 47॥ नमस्तस्यै॥ 48॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ 49॥

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ 50॥ नमस्तस्यै॥ 51॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ 52॥

या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ 53॥ नमस्तस्यै॥ 54॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ 55॥

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ 56॥ नमस्तस्यै॥ 57॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ 58॥

या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ 59॥ नमस्तस्यै॥ 60॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ 61॥

या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ 62॥ नमस्तस्यै॥ 63॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ 64॥

या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ॥ 65 ॥ नमस्तस्यै ॥ 66 ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 67 ॥
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ॥ 68 ॥ नमस्तस्यै ॥ 69 ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 70 ॥
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ॥ 71 ॥ नमस्तस्यै ॥ 72 ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 73 ॥
या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ॥ 74 ॥ नमस्तस्यै ॥ 75 ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 76 ॥
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः ॥ 77 ॥
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै ॥ 78 ॥ नमस्तस्यै ॥ 79 ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 80 ॥

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-
त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥ 81 ॥
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै-
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः
सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥ 82 ॥

॥ ऋषिरुवाच ॥ 83 ॥

एवं स्तवादियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती।
स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्दन ॥ 84 ॥
साब्रवीत्तान् सुरान् सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का।
शरीरकोशतश्चास्याः समुद्भूताब्रवीच्छिवा ॥ 85 ॥

स्तोत्रं ममैतत् क्रियते शुम्भदैत्यनिराकृतैः।
देवैः समेतैः समरे निशुम्भेन पराजितैः।। 86।।
शरीरकोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताम्बिका।
कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते।। 87।।
तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत्सापि पार्वती।
कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया।। 88।।
ततोऽम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहरम्।
ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयोः।। 89।।
ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता अतीव सुमनोहरा।
काप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम्।। 90।।
नैव तादृक् क्वचिद्रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम्।
ज्ञायतां काप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर।। 91।।
स्त्रीरत्नमतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशस्त्विषा।
सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवान् द्रष्टुमर्हति।। 92।।
यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो।
त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते गृहे।। 93।।
ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात्।
पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्चैःश्रवा हयः।। 94।।
विमानं हंससंयुक्तमेतत्तिष्ठति तेऽङ्गणे।
रत्नभूतमिहानीतं यदासीद्वेधसोऽद्भुतम्।। 95।।
निधिरेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात्।
किञ्जल्किनीं ददौ चाब्धिर्मालामम्लानपङ्कजाम्।। 96।।
छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चनस्त्रावि तिष्ठति।
तथायं स्यन्दनवरो यः पुराऽऽसीत्प्रजापतेः।। 97।।

मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वया हृता।
पाशः सलिलराजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे।। 98।।
निशुम्भस्याब्जिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः।
वह्निरपि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वाससी।। 99।।
एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते।
स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते।। 100।।

।। ऋषिरुवाच।। 101।।

निशम्येति वचः शुम्भः स तदा चण्डमुण्डयोः।
प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरम्।। 102।।
इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम।
यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु।। 103।।
स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽतिशोभने।
सा देवी तां ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुरया गिरा।। 104।।

।। दूत उवाच।। 105।।

देवि दैत्येश्वरः शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः।
दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः।। 106।।
अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु।
निर्जिताखिलदैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत्।। 107।।
मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः।
यज्ञभागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक् पृथक्।। 108।।
त्रैलोक्ये वररत्नानि मम वश्यान्यशेषतः।
तथैव गजरत्नं च हृत्वा देवेन्द्रवाहनम्।। 109।।
क्षीरोदमथनोद्भूतमश्वरत्नं ममामरैः।
उच्चैःश्रवससंज्ञं तत्प्रणिपत्य समर्पितम्।। 110।।

यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च।
रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने।। 111।।
स्त्रीरत्नभूतां त्वां देवि लोके मन्यामहे वयम्।
सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम्।। 112।।
मां वा ममानुजं वापि निशुम्भमुरुविक्रमम्।
भज त्वं चञ्चलापाङ्गि रत्नभूतासि वै यतः।। 113।।
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात्।
एतद् बुद्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहतां व्रज।। 114।।

।। ऋषिरुवाच।। 115।।

इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तःस्मिता जगौ।
दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत्।। 116।।

।। देव्युवाच।। 117।।

सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किंचित्त्वयोदितम्।
त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः।। 118।।
किं त्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रियते कथम्।
श्रूयतामल्पबुद्धित्वात्प्रतिज्ञा या कृता पुरा।। 119।।
यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति।
यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति।। 120।।
तदागच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः।
मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु।। 121।।

।। दूत उवाच।। 122।।

अवलिप्तासि मैवं त्वं देवि ब्रूहि ममाग्रतः।
त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भनिशुम्भयोः।। 123।।
अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि।
तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि किं पुनः स्त्री त्वमेकिका।। 124।।

इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे।
शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम्।। 125।।
सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः।
केशाकर्षणनिर्धूतगौरवा मा गमिष्यसि।। 126।।

।। देव्युवाच।। 127।।

एवमेतद् बली शुम्भो निशुम्भश्चातिवीर्यवान्।
किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा।। 128।।
स त्वं गच्छ मयोक्तं ते यदेतत्सर्वमादृतः।
तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु तत्।। ॐ।। 129।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
देव्या दूतसंवादो नाम पञ्चमोध्यायः।। 5।।
उवाच 9, त्रिपान्मन्त्राः 66, श्लोकाः 54 एवम् 129 एवमादितः 388।।

षष्ठोऽध्यायः

धूम्रलोचन वध

ध्यानम्

ॐ नागाधीश्वरविष्टरां फणिफणोत्तंसोरुरत्नावली-
भास्वद्देहलतां दिवाकरनिभां नेत्रत्रयोद्भासिताम्।
मालाकुम्भकपालनीरजकरां चन्द्रार्धचूडां परां
सर्वज्ञेश्वरभैरवाङ्कनिलयां पद्मावतीं चिन्तये।।

॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ 1 ॥

इत्याकर्ण्य वचो देव्याः स दूतोऽमर्षपूरितः।
समाचष्ट समागम्य दैत्यराजाय विस्तरात्॥ 2॥
तस्य दूतस्य तद्वाक्यमाकर्ण्यासुरराट् ततः।
सक्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्रलोचनम्॥ 3॥
हे धूम्रलोचनाशु त्वं स्वसैन्यपरिवारितः।
तामानय बलाद् दुष्टां केशाकर्षणविह्वलाम्॥ 4॥
तत्परित्राणदः कश्चिद्यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः।
स हन्तव्योऽमरो वापि यक्षो गन्धर्व एव वा॥ 5॥

॥ ऋषिरुवाच ॥ 6 ॥

तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं स दैत्यो धूम्रलोचनः।
वृतः षष्ट्या सहस्राणामसुराणां द्रुतं ययौ॥ 7॥
स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिनाचलसंस्थिताम्।
जगादोच्चैः प्रयाहीति मूलं शुम्भनिशुम्भयोः॥ 8॥
न चेत्प्रीत्याद्य भवती मद्भर्तारमुपैष्यति।
ततो बलान्नयाम्येष केशाकर्षणविह्वलाम्॥ 9॥

॥ देव्युवाच ॥ 10 ॥

दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान् बलसंवृतः।
बलान्नयसि मामेवं ततः किं ते करोम्यहम्॥ 11॥

॥ ऋषिरुवाच ॥ 12 ॥

इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः।
हुंकारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका ततः॥ 13॥
अथ क्रुद्धं महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका।
ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्तथा शक्तिपरश्वधैः॥ 14॥

ततो धुतसटः कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवम्।
पपातासुरसेनायां सिंहो देव्याः स्ववाहनः ।। 15 ।।
कांश्चित् करप्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान्।
आक्रम्य चाधरेणान्यान् स जघान महासुरान् ।। 16 ।।
केषांचित्पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी।
तथा तलप्रहारेण शिरांसि कृतवान् पृथक् ।। 17 ।।
विच्छिन्नबाहुशिरसः कृतास्तेन तथापरे।
पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषां धुतकेसरः ।। 18 ।।
क्षणेन तद्बलं सर्वं क्षयं नीतं महात्मना।
तेन केसरिणा देव्या वाहनेनातिकोपिना ।। 19 ।।
श्रुत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्रलोचनम्।
बलं च क्षयितं कृत्स्नं देवीकेसरिणा ततः ।। 20 ।।
चुकोप दैत्याधिपतिः शुम्भः प्रस्फुरिताधरः।
आज्ञापयामास च तौ चण्डमुण्डौ महासुरौ ।। 21 ।।
हे चण्ड हे मुण्ड बलैर्बहुभिः परिवारितौ।
तत्र गच्छत गत्वा च सा समानीयतां लघु ।। 22 ।।
केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा यदि वः संशयो युधि।
तदाशेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यताम् ।। 23 ।।
तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते।
शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथाम्बिकाम् ।। ॐ ।। 24 ।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
शुम्भनिशुम्भसेनानीधूम्रलोचनवधो नाम षष्ठोध्यायः ।। 6 ।।
उवाच 4, श्लोकाः 20 एवम् 24 एवमादितः 412 ।।

सप्तमोऽध्यायः

चण्ड और मुण्ड का वध

ध्यानम्

ॐ ध्यायेयं रत्नपीठे शुककलपठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गीं
न्यस्तैकाङ्घ्रिं सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम्।
कह्लाराबद्धमालां नियमितविलसच्चोलिकां रक्तवस्त्रां
मातङ्गीं शङ्खपात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्भासिभालाम्।।

।। ॐ ऋषिरुवाच।। 1।।

आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्डमुण्डपुरोगमाः।
चतुरङ्गबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः।। 2।।
ददृशुस्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम्।
सिंहस्योपरि शैलेन्द्रशृङ्गे महति काञ्चने।। 3।।
ते दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः।
आकृष्टचापासिधरास्तथान्ये तत्समीपगाः।। 4।।
ततः कोपं चकारोच्चैरम्बिका तानरीन् प्रति।
कोपेन चास्या वदनं मषीवर्णमभूत्तदा।। 5।।
भ्रुकुटीकुटिलात्तस्या ललाटफलकाद्द्रुतम्।
काली करालवदना विनिष्क्रान्तासिपाशिनी।। 6।।
विचित्रखट्वाङ्गधरा नरमालाविभूषणा।
द्वीपिचर्मपरीधाना शुष्कमांसातिभैरवा।। 7।।
अतिविस्तारवदना जिह्वाललनभीषणा।
निमग्नारक्तनयना नादापूरितदिङ्मुखा।। 8।।

सा वेगेनाभिपतिता घातयन्ती महासुरान्।
सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत तद्बलम्।। 9।।
पार्ष्णिग्राहाङ्कुशग्राहियोधघण्टासमन्वितान् ।
समादायैकहस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान्।। 10।।
तथैव योधं, तुरगै रथं सारथिना सह।
निक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयन्त्यतिभैरवम्।। 11।।
एकं जग्राह केशेषु ग्रीवायामथ चापरम्।
पादेनाक्रम्य चैवान्यमुरसान्यमपोथयत्।। 12।।
तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथासुरैः।
मुखेन जग्राह रुषा दशनैर्मथितान्यपि ।। 13।।
बलिनां तद् बलं सर्वमसुराणां दुरात्मनाम्।
ममर्दाभक्षयच्चान्यानन्यांश्चाताडयत्तथा ।। 14।।
असिना निहताः केचित्केचित्खट्वाङ्गताडिताः।
जग्मुर्विनाशमसुरा दन्ताग्राभिहतास्तथा ।। 15।।
क्षणेन तद् बलं सर्वमसुराणां निपातितम्।
दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीषणाम्।। 16।।
शरवर्षैर्महाभीमैर्भीमाक्षीं तां महासुरः।
छादयामास चक्रैश्च मुण्डः क्षिप्तैः सहस्रशः।। 17।।
तानि चक्राण्यनेकानि विशमानानि तन्मुखम्।
बभुर्यथार्कबिम्बानि सुबहूनि घनोदरम्।। 18।।
ततो जहासातिरुषा भीमं भैरवनादिनी।
कालीकरालवक्त्रान्तर्दुर्दर्शनोज्ज्वला ।। 19।।
उत्थाय च महासिं हं देवी चण्डमधावत।
गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्तेनासिनाच्छिनत् ।।20।।

अथ मुण्डोऽभ्यधावत्तां दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्।
तमप्यपातयद्भूमौ सा खड्गाभिहतं रुषा।। 21।।
हतशेषं ततः सैन्यं दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्।
मुण्डं च सुमहावीर्यं दिशो भेजे भयातुरम्।। 22।।
शिरश्चण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्डमेव च।
प्राह प्रचण्डाट्टहासमिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम्।। 23।।
मया तवात्रोपहृतौ चण्डमुण्डौ महापशू।
युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भं च हनिष्यसि।। 24।।

।। ॐ ऋषिरुवाच।। 25।।

तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्डमुण्डौ महासुरौ।
उवाच कालीं कल्याणी ललितं चण्डिका वचः।। 26।।
यस्माच्चण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता।
चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवि भविष्यसि।। ॐ।। 27।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
चण्डमुण्डवधो नाम सप्तमोऽध्यायः।। 7।।
उवाच 2, श्लोकाः 25 एवम् 27 एवमादितः 439।।

अष्टमोऽध्यायः

रक्तबीज वध

ध्यानम्

ॐ अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं
धृतपाशाङ्कुशबाणचापहस्ताम्।
अणिमादिभिरावृतां मयूखै-
रहमित्येव विभावये भवानीम्।।

।। ॐ ऋषिरुवाच।। 1।।

चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते।
बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः।। 2।।
ततः कोपपराधीनचेताः शुम्भः प्रतापवान्।
उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह।। 3।।
अद्य सर्वबलैर्दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः।
कम्बूनां चतुरशीतिर्निर्यान्तु स्वबलैर्वृताः।। 4।।
कोटिवीर्याणि पञ्चाशदसुराणां कुलानि वै।
शतं कुलानि धौम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया।। 5।।
कालका दौर्हृदा मौर्याः कालकेयास्तथासुराः।
युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम।। 6।।
इत्याज्ञाप्यासुरपतिः शुम्भो भैरवशासनः।
निर्जगाम महासैन्यसहस्रैर्बहुभिर्वृतः।। 7।।
आयान्तं चण्डिका दृष्ट्वा तत्सैन्यमतिभीषणम्।
ज्यास्वनैः पूरयामास धरणीगगनान्तरम्।। 8।।

ततः सिंहो महानादमतीव कृतवान् नृप।
घण्टास्वनेन तन्नादमम्बिका चोपबृंहयत्।। 9।।
धनुर्ज्यासिंहघण्टानां नादापूरितदिङ्मुखा।
निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारिताननना।। 10।।
तं निनादमुपश्रुत्य दैत्यसैन्यैश्चतुर्दिशम्।
देवी सिंहस्तथा काली सरोषैः परिवारिताः।। 11।।
एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम्।
भवायामरसिंहानामतिवीर्यबलान्विताः ।। 12।।
ब्रह्मेशगुहविष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः।
शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः।। 13।।
यस्य देवस्य यद्रूपं यथाभूषणवाहनम्।
तद्वदेव हि तच्छक्तिरसुरान् योद्धुमाययौ।। 14।।
हंसयुक्तविमानाग्रे साक्षसूत्रकमण्डलुः।
आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणी साभिधीयते।। 15।।
माहेश्वरी वृषारूढा त्रिशूलवरधारिणी।
महाहिवलया प्राप्ता चन्द्ररेखाविभूषणा।। 16।।
कौमारी शक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना।
योद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुहरूपिणी।। 17।।
तथैव वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरि संस्थिता।
शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गखड्गहस्ताभ्युपाययौ ।। 18।।
यज्ञवाराहमतुलं रूपं या बिभ्रतो हरेः।
शक्तिः साप्याययौ तत्र वाराहीं बिभ्रती तनुम्।। 19।।
नारसिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः।
प्राप्ता तत्र सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहतिः।। 20।।

वज्रहस्ता तथैवैन्द्री गजराजोपरि स्थिता।
प्राप्ता सहस्त्रनयना यथा शक्रस्तथैव सा।। 21।।
ततः परिवृतस्ताभिरीशानो देवशक्तिभिः।
हन्यन्तामसुराः शीघ्रं मम प्रीत्याऽऽह चण्डिकाम्।। 22।।
ततो देवी शरीरात्तु विनिष्क्रान्तातिभीषणा।
चण्डिकाशक्तिरत्युग्रा शिवाशतनिनादिनी।। 23।।
सा चाह धूम्रजटिलमीशानमपराजिता।
दूतं त्वं गच्छ भगवन् पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः।। 24।।
ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च दानवावतिगर्वितौ।
ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः।। 25।।
त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः।
यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ।। 26।।
बलावलेपादथ चेद्भवन्तो युद्धकाङ्क्षिणः।
तदागच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः।। 27।।
यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवः स्वयम्।
शिवदूतीति लोकेऽस्मिंस्ततः सा ख्यातिमागता।। 28।।
तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यातं महासुराः।
अमर्षापूरिता जग्मुर्यत्र कात्यायनी स्थिता।। 29।।
ततः प्रथममेवाग्रे शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः।
ववर्षुरुद्धतामर्षास्तां देवीममरारयः।। 30।।
सा च तान् प्रहितान् बाणाञ्छूलशक्तिपरश्वधान्।
चिच्छेद लीलयाऽऽध्मातधनुर्मुक्तैर्महेषुभिः।। 31।।
तस्याग्रतस्तथा काली शूलपातविदारितान्।
खट्वाङ्गपोथितांश्चारीन् कुर्वती व्यचरत्तदा।। 32।।

कमण्डलुजलाक्षेपहतवीर्यान् हतौजसः।
ब्रह्माणी चाकरोच्छत्रून् येन येन स्म धावति।। 33।।
माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी।
दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्यातिकोपना।। 34।।
ऐन्द्रीकुलिशपातेन शतशो दैत्यदानवाः।
पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः।। 35।।
तुण्डप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः ।
वाराहमूर्त्या न्यपतंश्चक्रेण च विदारिताः।। 36।।
नखैर्विदारितांश्चान्यान् भक्षयन्ती महासुरान्।
नारसिंही चचाराजौ नादापूर्णदिगम्बरा।। 37।।
चण्डाट्टहासैरसुराः शिवदूत्यभिदूषिताः।
पेतुः पृथिव्यां पतितांस्तांश्चखादाथ सा तदा।। 38।।
इति मातृगणं क्रुद्धं मर्दयन्तं महासुरान्।
दृष्ट्वाभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारिसैनिकाः ।। 39।।
पलायनपरान् दृष्ट्वा दैत्यान् मातृगणार्दितान्।
योद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो रक्तबीजो महासुरः।। 40।।
रक्तबिन्दुर्यदा भूमौ पतत्यस्य शरीरतः।
समुत्पतति मेदिन्यां तत्प्रमाणस्तदासुरः।। 41।।
युयुधे स गदापाणिरिन्द्रशक्त्या महासुरः।
ततश्चैन्द्री स्ववज्रेण रक्तबीजमताडयत्।। 42।।
कुलिशेनाहतस्याशु बहु सुस्राव शोणितम्।
समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः।। 43।।
यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्त बिन्दवः।
तावन्तः पुरुषा जातास्तद्वीर्यबलविक्रमाः।। 44।।

ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसम्भवाः।
समं मातृभिरत्युग्रशस्त्रपातातिभीषणम्।। 45।।
पुनश्च वज्रपातेन क्षतमस्य शिरो यदा।
ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः सहस्रशः।। 46।।
वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभिजघान ह।
गदया ताडयामास ऐन्द्री तमसुरेश्वरम्।। 47।।
वैष्णवीचक्रभिन्नस्य रुधिरस्रावसम्भवैः।
सहस्रशो जगद्व्याप्तं तत्प्रमाणैर्महासुरैः।। 48।।
शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथासिना।
माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजं महासुरम्।। 49।।
स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत् पृथक्।
मातृः कोपसमाविष्टो रक्तबीजो महासुरः।। 50।।
तस्याहतस्य बहुधा शक्तिशूलादिभिर्भुवि।
पपात यो वै रक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः।। 51।।
तैश्चासुरासृक्सम्भूतैरसुरैः सकलं जगत्।
व्याप्तमासीत्ततो देवा भयमाजग्मुरुत्तमम्।। 52।।
तान् विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा चण्डिका प्राह सत्वरा।
उवाच कालीं चामुण्डे विस्तीर्णं वदनं कुरु।। 53।।
मच्छस्त्रपातसम्भूतान् रक्तबिन्दून्महासुरान्।
रक्तबिन्दोः प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन वेगिना।। 54।।
भक्षयन्ती चर रणे तदुत्पन्नान्महासुरान्।
एवमेष क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति।। 55।।
भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा न चोत्पत्स्यन्ति चापरे।
इत्युक्त्वा तां ततो देवी शूलेनाभिजघान तम्।। 56।।

मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम्।
ततोऽसावाजघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम्।। 57।।
न चास्यावेदनां चक्रे गदापातोऽल्पिकामपि।
तस्याहतस्य देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम्।। 58।।
यतस्ततस्तद्वक्त्रेण चामुण्डा सम्प्रतीच्छति।
मुखे समुद्गता येऽस्या रक्तपातान्महासुराः।। 59।।
तांश्चखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम्।
देवी शूलेन वज्रेण बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः।। 60।।
जघान रक्तबीजं तं चामुण्डापीतशोणितम्।
स पपात महीपृष्ठे शस्त्रसङ्घसमाहतः।। 61।।
नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः।
ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृपः।। 62।।
तेषां मातृगणो जातो ननर्तासृङ्मदोद्धतः।।ॐ।। 63।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
रक्तबीजवधो नामाष्टमोऽध्यायः।। 8।।

उवाच 1, अर्धश्लोकः 1, श्लोकाः 61 एवम् 63 एवमादितः 502।।

नवमोऽध्यायः

निशुम्भ वध

ध्यानम्

ॐ बन्धूककाञ्चननिभं रुचिराक्षमालां
पाशाङ्कुशौ च वरदां निजबाहुदण्डैः।
बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्र-
मर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि।।

॥ ॐ राजोवाच ॥ 1 ॥

विचित्रमिदमाख्यातं भगवन् भवता मम।
देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजवधाश्रितम्॥ 2 ॥
भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते।
चकार शुम्भो यत्कर्म निशुम्भश्चातिकोपनः॥ 3 ॥

ऋषिरुवाच ॥ 4 ॥

चकारकोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते।
शुम्भाशुरो निशुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे॥ 5 ॥
हन्यमानं महासैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन्।
अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ मुख्ययासुरसेनया॥ 6 ॥
तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः।
संदष्टौष्ठपुटाः क्रुद्धा हन्तुं देवीमुपाययुः॥ 7 ॥
आजगाम महावीर्यः शुम्भोऽपि स्वबलैर्वृतः।
निहन्तुं चण्डिकां कोपात्कृत्वा युद्धं तु मातृभिः॥8॥
ततो युद्धमतीवासीद्देव्या शुम्भनिशुम्भयोः।
शरवर्षमतीवोग्रं मेघयोरिव वर्षतोः॥ 9 ॥
चिच्छेदास्ताञ्छरांस्ताभ्यां चण्डिका स्वशरोत्करैः।
ताडयामास चाङ्गेषु शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ ॥ 10 ॥
निशुम्भो निशितं खड्गं चर्म चादाय सुप्रभम्।
अताडयन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम्॥ 11 ॥
ताडिते वाहने देवि क्षुरप्रेणासिमुत्तमम ।
निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम्॥ 12 ॥
छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिं चिक्षेप सोऽसुरः।
तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभिमुखागताम्॥ 13 ॥

कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ शूलं जग्राह दानवः।
आयातं मुष्टिपातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत्।। 14।।
आविध्याथ गदां सोऽपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति।
सापि देव्या त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्वमागता।। 15।।
ततः परशुहस्तं तमायान्तं दैत्यपुङ्गवम्।
आहत्य देवी बाणौघैरपातयत भूतले ।। 16।।
तस्मिन्निपतिते भूमौ निशुम्भे भीमविक्रमे।
भ्रातर्यतीव संक्रुद्धः प्रययौ हन्तुमम्बिकाम्।। 17।।
स रथस्थस्तथात्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः।
भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं बभौ नभः ।। 18।।
तमायान्तं समालोक्य देवी शङ्खमवादयत्।
ज्याशब्दं चापि धनुषश्चकारातीव दुःसहम्।। 19।।
पूरयामास ककुभो निजघण्टास्वनेन च।
समस्तदैत्यसैन्यानां तेजोवधविधायिना ।। 20।।
ततः सिंहो महानादैस्त्याजितेभमहामदैः।
पूरयामास गगनं गां तथैव दिशो दश।। 21।।
ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत्।
कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्स्वनास्ते तिरोहिताः।। 22।।
अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूती चकार ह ।
तैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः शुम्भः कोपं परं ययौ।। 23।।
दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा।
तदा जयेत्यभिहितं देवैराकाशसंस्थितैः।। 24।।
शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालातिभीषणा।
आयान्ती वह्निकूटाभा सा निरस्ता महोल्कया।। 25।।

सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम्।
निर्घातनिःस्वनो घोरो जितवानवनीपते।। 26।।
शुम्भमुक्ताञ्छरान्देवीशुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान्।
चिच्छेद स्वशरैरुग्रैः शतशोऽथ सहस्रशः।। 27।।
ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूलेनाभिजघान तम्।
स तदाभिहतो भूमौ मूर्च्छितो निपपात ह।। 28।।
ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः।
आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा।। 29।।
पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दनुजेश्वरः।
चक्रायुधेन दितिजश्छादयामास चण्डिकाम्।। 30।।
ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी।
चिच्छेद तानि चक्राणि स्वशरैः सायकांश्च तान्।। 31।।
ततो निशुम्भो वेगेन गदामादाय चण्डिकाम्।
अभ्यधावत वै हन्तुं दैत्यसेनासमावृतः।। 32।।
तस्यापतत एवाशु गदां चिच्छेद चण्डिका।
खड्गेन शितधारेण स च शूलं समाददे।। 33।।
शूलहस्तं समायान्तं निशुम्भममरार्दनम्।
हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चण्डिका।। 34।।
भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निःसृतोऽपरः।
महाबलो महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन्।। 35।।
तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः।
शिरश्चिच्छेद खड्गेन ततोऽसावपतद्भुवि।। 36।।
ततः सिंहश्चखादोग्रं दंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान्।
असुरांस्तांस्तथा काली शिवदूती तथापरान्।। 37।।

कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुराः।
ब्रह्माणीमन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः।। 38।।
माहेश्वरीत्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथापरे।
वाराहीतुण्डघातेन केचिच्चूर्णीकृता भुवि।। 39।।
खण्डं खण्डं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः।
वज्रेण चैन्द्रीहस्ताग्रविमुक्तेन तथापरे।। 40।।
केचिद्विनेशुरसुराः केचिन्नष्टा महाहवात्।
भक्षिताश्चापरे कालीशिवदूतीमृगाधिपैः।। ॐ।। 41।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
निशुम्भवधो नाम नवमोऽध्यायः।। 9।।
उवाच 2, श्लोकाः 39 एवम् 41 एवमादितः 543।।

दशमोऽध्यायः

शुम्भ वध

ध्यानम्

ॐ उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्नि-
नेत्रां धनुश्शरयुताङ्कुशपाशशूलम्।
रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिवशक्तिरूपां
कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम्।।

।। ॐ ऋषिरुवाच।। 1।।

निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राणसम्मितम्।
हन्यमानं बलं चैव शुम्भः क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः।। 2।।

बलावलेपाद्दुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह।
अन्यासां बलमाश्रित्य युद्ध्यसे यातिमानिनी।।3।।

देव्युवाच।।4।।

एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा।
पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः।।5।।
ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणीप्रमुखा लयम्।
तस्या देव्यास्तनो जग्मुरेकैवासीत्तदाम्बिका।।6।।

देव्युवाच।।7।।

अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदास्थिता।
तत्संहृतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव।।8।।

ऋषिरुवाच।।9।।

ततः प्रववृते युद्धं देव्याः शुम्भस्य चोभयोः।
पश्यतां सर्वदेवानामसुराणां च दारुणम्।।10।।
शरवर्षैः शितैः शस्त्रैस्तथास्त्रैश्चैव दारुणैः।
तयोर्युद्धमभूद्भूयः सर्वलोकभयङ्करम्।।11।।
दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका।
बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः।।12।।
मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी।
बभञ्ज लीलयैवोग्रहुङ्कारोच्चारणादिभिः।।13।।
ततः शरशतैर्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः।
सापि तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः।।14।।
छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्तिमथाददे।
चिच्छेद देवी चक्रेण तामप्यस्य करे स्थिताम्।।15।।
ततः खड्गमुपादाय शतचन्द्रं च भानुमत्।
अभ्यधावत्तदा देवीं दैत्यानामधिपेश्वरः।।16।।

तस्यापतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चण्डिका।
धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्म चार्ककरामलम्।। 17।।
हताश्वः स तदा दैत्यश्छिन्नधन्वा विसारथिः।
जग्राह मुद्गरं घोरमम्बिकानिधनोद्यतः।। 18।।
चिच्छेदापततस्तस्य मुद्गरं निशितैः शरैः।
तथापि सोऽभ्यधावत्तां मुष्टिमुद्यम्य वेगवान्।। 19।।
स मुष्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुङ्गवः।
देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनोरस्यताडयत्।। 20।।
तलप्रहाराभिहतो निपपात महीतले।
स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः।। 21।।
उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगनमास्थितः।
तत्रापि सा निराधारा युयुधे तेन चण्डिका।। 22।।
नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम्।
चक्रतुः प्रथमं सिद्धमुनिविस्मयकारकम्।। 23।।
ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह।
उत्पात्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणीतले।। 24।।
स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य वेगितः।
अभ्यधावत दुष्टात्मा चण्डिकानिधनेच्छया।। 25।।
तमायान्तं ततो देवी सर्वदैत्यजनेश्वरम्।
जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि।। 26।।
स गतासुः पपातोर्व्यां देवीशूलाग्रविक्षतः।
चालयन् सकलां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम्।। 27।।
ततः प्रसन्नमखिलं हते तस्मिन् दुरात्मनि।
जगत्स्वास्थ्यमतीवाप निर्मलं चाभवन्नभः।। 28।।

उत्पातमेघाः सोल्का ये प्रागासंस्ते शमं ययुः।
सरितो मार्गवाहिन्यस्तथासंस्तत्र पातिते।। 29।।
ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भरतामानसाः।
बभूवुर्निहते तस्मिन् गन्धर्वा ललितं जगुः।। 30।।
अवादयंस्तथैवान्ये ननृतुश्चाप्सरोगणाः।
ववुः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः।। 31।।
जज्वलुश्चाग्नयःशान्ताः शान्ता दिग्जनितस्वनाः।। ॐ।। 32।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
शुम्भवधो दशमोऽध्यायः।। 10।।
उवाच 4, अर्धश्लोकः 1, श्लोकाः 27 एवम् 32
एवमादितः 575।।

एकादशोऽध्यायः

देवताओं द्वारा देवी की स्तुति तथा देवी द्वारा देवताओं को वरदान

ध्यानम्

ॐ बालरविद्युतिमिन्दुकिरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम्।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम्।।

।। ॐ ऋषिरुवाच।। 1।।

देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे
सेन्द्राः सुरा वह्निपुरोगमास्ताम्।
कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्ट लाभाद्
विकाशिवक्त्राब्ज विकाशिताशाः।। 2।।

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।।3।।
आधारभूता जगतस्त्वमेका
महीस्वरूपेण यतः स्थितासि।
अपां स्वरूपस्थितया त्वयैत-
दाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये।।4।।
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः।।5।।
विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्
का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः।।6।।
सर्वभूता यदा देवी स्वर्गमुक्ति प्रदायिनी।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः।।7।।
सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।8।।
कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनि।
विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते।।9।।
सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।10।।

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते।। 11।।
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।। 12।।
हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि।
कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।। 13।।
त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि।
माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते।। 14।।
मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे।
कौमारीरूपसंस्थाने नारायणि नमोऽस्तु ते।। 15।।
शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे ।
प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते।। 16।।
गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुंधरे।
वराहरूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते।। 17।।
नृसिंहरूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे।
त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि नमोऽस्तु ते।। 18।।
किरीटिनि महावज्रे सहस्त्रनयनोज्ज्वले।
वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते।। 19।।
शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले।
घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते।। 20।।
दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाविभूषणे।
चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते।। 21।।
लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टिस्वधे ध्रुवे।
महारात्रि महाऽविधे नारायणि नमोऽस्तु ते।। 22।।

मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि।
नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते।। 23।।
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।। 24।।
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते।। 25।।
ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते।। 26।।
हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव।। 27।।
असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम्।। 28।।
रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।। 29।।
एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य
धर्मद्विषां देवि महासुराणाम्।
रूपैरनेकैर्बहुधाऽऽत्ममूर्तिं
कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या।। 30।।
विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपे-
ष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या।
ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे
विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम्।। 31।।

रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा
यत्रारयो दस्युबलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये
तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्।। 32।।
विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः।। 33।।
देवि प्रसीदपरिपालय नोऽरिभीते-
र्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः।
पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु
उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान्।। 34।।
प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि।
त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव।। 35।।

देव्युवाच।। 36।।

वरदाहं सुरगणा वरं यन्मनसेच्छथ।
तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम्।। 37।।

देवा ऊचुः।। 38।।

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्।। 39।।

देव्युवाच।। 40।।

वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे।
शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ।। 41।।
नन्दगोपगृहे जाता यशोदागर्भसम्भवा।
ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी।। 42।।

पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले।
अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान्।।43।।
भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान् वैप्रचित्तान्महासुरान्।
रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमीकुसुमोपमाः।।44।।
ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः।
स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम्।।45।।
भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि।
मुनिभिः संस्तुता भूमौ सम्भविष्याम्ययोनिजा।।46।।
ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन्।
कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः।।47।।
ततोऽहमखिलं लोकमात्मदेहसमुद्भवैः।
भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टैः प्राणधारकैः।।48।।
शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि।
तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम्।।49।।
दुर्गा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति।
पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले।।50।।
रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राणकारणात्।
तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्तयः।।51।।
भीमा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति।
यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति।।52।।
तदाहं भ्रामरं रूपं कृत्वाऽसंख्येयषट्पदम्।
त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि महासुरम्।।53।।
भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः।
इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति।।54।।

तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम्।। ॐ।। 55।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
देव्याः स्तुतिर्नामैकादशोऽध्यायः।। 11।।
उवाच 4, अर्धश्लोकः 1, श्लोकाः 50 एवम् 55, एवमादितः 630।।

द्वादशोऽध्यायः

देवी-चरित्रों के पाठ का माहात्म्य

ध्यानम्

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

।।'ॐ' देव्युवाच।। 1।।

एभिः स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः।
तस्याहं सकलां बाधां नाश यिष्याम्यसंशयम्।। 2।।
मधुकैटभनाशं च महिषासुरघातनम्।
कीर्तयिष्यन्ति ये तद्वद् वधं शुम्भनिशुम्भयोः।। 3।।
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः।
श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम्।। 4।।
न तेषां दुष्कृतं किञ्चिद् दुष्कृतोत्था न चापदः।
भविष्यति न दारिद्र्यं न चैवेष्टवियोजनम्।। 5।।

शत्रुतो न भयं तस्य दस्युतो वा न राजतः।
न शस्त्रानलतोयौघात्कदाचित्सम्भविष्यति।। 6।।
तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समाहितैः।
श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं हि तत्।। 7।।
उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान्।
तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम।। 8।।
यत्रैतत्पठ्यते सम्यङ्नित्यमायतने मम।
सदा न तद्विमोक्ष्यामि सांनिध्यं तत्र मे स्थितम्।। 9।।
बलिप्रदाने पूजायामग्निकार्ये महोत्सवे।
सर्वं ममैतच्चरितमुच्चार्यं श्राव्यमेव च।। 10।।
जानताऽजानता वापि बलिपूजां तथा कृताम्।
प्रतीच्छिष्याम्यहं प्रीत्या वह्निहोमं तथा कृतम्।। 11।।
शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः।। 12।।
सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः।। 13।।
श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः।
पराक्रमं च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान्।। 14।।
रिपवः संक्षयं यान्ति कल्याणं चोपपद्यते।
नन्दते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम शृण्वताम्।। 15।।
शान्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने।
ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम।। 16।।
उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रहपीडाश्च दारुणाः।
दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते।। 17।।

बालग्रहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम्।
संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरणमुत्तमम्।। 18।।
दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम्।
रक्षोभूतपिशाचानां पठनादेव नाशनम्।। 19।।
सर्वं ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम्।
पशुपुष्पार्घ्यधूपैश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः।। 20।।
विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम्।
अन्यैश्च विविधैर्भोगैः प्रदानैर्वत्सरेण या।। 21।।
प्रीतिर्मे क्रियते सास्मिन् सकृत्सुचरिते श्रुते।
श्रुतं हरति पापानि तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छति।। 22।।
रक्षां करोति भूतेभ्यो जन्मनां कीर्तनं मम।
युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्टदैत्यनिबर्हणम्।। 23।।
तस्मिञ्छ्रुते वैरिकृतं भयं पुंसां न जायते।
युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः।। 24।।
ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्ति शुभां मतिम्।
अरण्ये प्रान्तरे वापि दावाग्निपरिवारितः।। 25।।
दस्युभिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः।
सिंहव्याघ्रानुयातो वा वने वा वनहस्तिभिः।। 26।।
राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो वध्यो बन्धगतोऽपि वा।
आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे।। 27।।
पतत्सु चापि शस्त्रेषु संग्रामे भृशदारुणे।
सर्वाबाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा।। 28।।
स्मरन्ममैतच्चरितं नरो मुच्येत संकटात्।
मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा।। 29।।
दूरादेव पलायन्ते स्मरतश्चरितं मम।। 30।।

ऋषिरुवाच॥31॥

इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डिका चण्डविक्रमा॥ 32॥
पश्यतामेव देवानां तत्रैवान्तरधीयत।
तेऽपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान् यथा पुरा॥ 33॥
यज्ञभागभुजः सर्वे चक्रुर्विनिहतारयः।
दैत्याश्च देव्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि॥ 34॥
जगद्विध्वंसिनि तस्मिन् महोग्रेऽतुलविक्रमे।
निशुम्भे च महावीर्ये शेषाः पातालमाययुः॥ 35॥
एवं भगवती देवी सा नित्यापि पुनः पुनः।
सम्भूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम्॥ 36॥
तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते।
सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति॥ 37॥
व्याप्तं तयैतत्सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर।
महाकाल्या महाकाले महामारीस्वरूपया॥ 38॥
सैव काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा।
स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी॥ 39॥
भवकाले नृणां सैव लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे।
सैवाभावे तथाऽलक्ष्मीर्विनाशायोपजायते॥ 40॥
स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्धूपगन्धादिभिस्तथा।
ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिं धर्मे गतिं शुभाम्॥ ॐ॥ 41॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
फलस्तुतिर्नाम द्वादशोऽध्यायः॥ 12॥

उवाच 2, अर्धश्लोकौ 2, श्लोकाः 37 एवम् 41, एवमादितः 671॥

त्रयोदशोऽध्यायः

सुरथ और वैश्य को देवी का वरदान

ध्यानम्

ॐबालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।
पाशाङ्कुशवराभीतीर्धारयन्तीं शिवां भजे।।

।। 'ॐ' ऋषिरुवाच ।। 1 ।।

एतत्ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमम्।
एवंप्रभावा सा देवी ययेदं धार्यते जगत्।। 2 ।।
विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णुमायया।
तया त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः।। 3 ।।
मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे।
तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम्।। 4 ।।
आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा।। 5 ।।

मार्कण्डेय उवाच ।। 6 ।।

इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः।। 7 ।।
प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं शंसितव्रतम्।
निर्विण्णोऽतिममत्वेन राज्यापहरणेन च।। 8 ।।
जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने।
संदर्शनार्थमम्बाया नदीपुलिनसंस्थितः।। 9 ।।
स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन्।
तौ तस्मिन् पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं महीमयीम्।। 10 ।।

अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्पधूपाग्नितर्पणैः।
निराहारौ यताहारौ तन्मनस्कौ समाहितौ।। 11।।
ददतुस्तौ बलिं चैव निजगात्रासृगुक्षितम्।
एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः।। 12।।
परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका।। 13।।

देव्युवाच।। 14।।

यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन।
मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि तत्।। 15।।

मार्कण्डेय उवाच।। 16।।

ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि।
अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात्।। 17।।
सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं वव्रे निर्विण्णमानसः।
ममेत्यहमिति प्राज्ञः सङ्गविच्युतिकारकम्।। 18।।

देव्युवाच।। 19।।

स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान्।। 20।।
हत्वा रिपूनस्खलितं तव तत्र भविष्यति।। 21।।
मृतश्च भूयः सम्प्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः।। 22।।
सावर्णिको नाम मनुर्भवान् भुवि भविष्यति।। 23।।
वैश्यवर्य त्वया यश्च वरोऽस्मत्तोऽभिवाञ्छितः।। 24।।
तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै तव ज्ञानं भविष्यति।। 25।।

मार्कण्डेय उवाच।। 26।।

इति दत्त्वा तयोर्देवी यथाभिलषितं वरम्।। 27।।
बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता।
एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः।। 28।।

सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ।। 29 ।।
एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ।
सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ।। क्लीं ॐ ।।

इति श्रीर्माकण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सुरथ-वैश्ययोर्वरप्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ।। 13 ।।
उवाच 6, अर्द्धश्लोकाः 11, श्लोकाः 12 एवम् 29, एवमादितः 700 ।।
समस्ता उवाचमन्त्राः 57, अर्द्धश्लोकाः 42, श्लोकाः 535, अवदानादि ।। 66 ।।

उपसंहारः

इस प्रकार सप्तशती का पाठ पूरा होने पर पहले नवार्ण जप करके फिर देवी सूक्त के पाठ का विधान है; अतः यहाँ भी नवार्ण-विधि उद्धृत की जाती है। सब कार्य पहले की ही भाँति होंगे।

विनियोगः

श्रीगणपतिर्जयति। ॐ अस्य श्रीनर्वाणमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी-महासरस्वतीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः

ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः, शिरसि। गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः, मुखे। महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः, हृदि। ऐं बीजाय नमः, गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः। क्लीं कीलकाय नमः, नाभौ।

'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे'—इति मूलेन करौ संशोध्य—

करन्यासः

ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां

नमः। ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः। ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः

ॐ ऐं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ क्लीं शिखायै वषट्। ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्। ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे अस्त्राय फट्।

अक्षरन्यासः

ॐ ऐं नमः, शिखायाम्। ॐ ह्रीं नमः, दक्षिणनेत्रे। ॐ क्लीं नमः, वामनेत्रे। ॐ चां नमः, दक्षिणकर्णे। ॐ मुं नमः, वामकर्णे। ॐ डां नमः, दक्षिणनासापुटे। ॐ यैं नमः, वामनासापुटे। ॐ विं नमः, मुखे। ॐ च्चें नमः, गुह्ये।

'एवं विन्यस्याष्टवारं मूलेन व्यापकं कुर्यात्'

दिङ्न्यासः

ॐ ऐं प्राच्यै नमः। ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः। ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः। ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः। ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः। ॐ क्लीं वायव्यै नमः। ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः। ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

ध्यानम्

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।। 1।।
अक्षस्त्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।। 2।।

घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।। 3।।

इस प्रकार न्यास और ध्यान करके मानसिक उपचार से देवी की पूजा करें। फिर 108 या 1008 बार नवार्ण मन्त्र का जप करना चाहिये। जप आरम्भ करने के पहले '**ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः**' इस मन्त्र से माला की पूजा करके इस प्रकार प्रार्थना करें।

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।
ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये।।

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।

इस प्रकार प्रार्थना करके जप आरम्भ करें। जप पूरा करके उसे भगवती को समर्पित करते हुए कहे—

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।।

तत्पश्चात् फिर नीचे लिखे अनुसार न्यास करें—

करन्यासः

ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ चं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ डिं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ कां अनामिकाभ्यां नमः। ॐ यैं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं चण्डिकायै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा।। हृदयाय नमः।

ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।। शिरसे स्वाहा।
ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि।। शिखायै वषट्।
ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्।। कवचाय हुम्।
ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः।। नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।। अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

ऋग्वेदोक्त देवीसूक्तम्

ॐ अहमित्यष्टर्चस्य सूक्तस्य वागाम्भृणी ऋषिः, सच्चित्सुखात्मक सर्वगतः परमात्मा देवता, द्वितीयाया ऋचो जगती, शिष्टानां त्रिष्टुप् छन्द देवीमाहात्म्यपाठे विनियोगः।

ध्यानम्

ॐ सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः
शङ्खं चक्रधनुःशरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता।
आमुक्ताङ्गदहारकङ्कणरणत्काञ्चीरणन्नूपुरा
दुर्गा दुर्गतीहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला।।

देवीसूक्तम्

ॐ अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः।
अहं मित्रावरुणोभौ बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभौ।। 1।।
अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम्।
अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते।। 2।।
अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थातां भूर्य्यावेशयन्तीम्।। 3।।

मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः
प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम्।
अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि
श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि।। 4।।
अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं
देवेभिरुत मानुषेभिः।
यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि
तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्।। 5।।

अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ।
अहं जनाय समदं कृणोम्यहंद्यावापृथिवी आ विवेश।। 6।।

अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम
योनिरप्स्वन्तः समुद्रे।
ततो वि तिष्ठे भुवनानु विश्वो-
तामूं द्यां वर्ष्मणोप स्पृशामि।। 7।।

अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा।
परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना संबभूव।। 8।।

अथ तन्त्रोक्तं देवीसूक्तम्

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥ 1॥
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः॥ 2॥
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः॥ 3॥
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः॥ 4॥
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः॥ 5॥
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ 6॥
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ 7॥
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ 8॥
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ 9॥
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ 10॥
या देवी सर्वभूतेषुच्छायारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ 11॥

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।12।।
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।13।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।14।।
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।15।।
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।16।।
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।17।।
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।18।।
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।19।।
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।20।।
या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।21।।
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।22।।
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।23।।

या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।24।।
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।25।।
या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।26।।
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः।।27।।
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।28।।
स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-
त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।29।।
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै-
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः
सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः।।30।।

अथ प्राधानिकं रहस्यम्

ॐ अस्य श्रीसप्तशतीरहस्यत्रयस्य नारायण ऋषिरनुष्टुप्छन्दः, महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवता यथोक्तफलावाप्त्यर्थं जपे विनियोगः।

राजोवाच

भगवन्नवतारा मे चण्डिकायास्त्वयोदिताः।
एतेषां प्रकृतिं ब्रह्मन् प्रधानं वक्तुमर्हसि॥1॥
आराध्यं यन्मया देव्याः स्वरूपं येन च द्विज।
विधिना ब्रूहि सकलं यथावत्प्रणतस्य मे॥2॥

ऋषिरुवाच

इदं रहस्यं परममनाख्येयं प्रचक्षते।
भक्तोऽसीति न मे किञ्चित्तवावाच्यं नराधिप॥3॥
सर्वस्याद्या महालक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी।
लक्ष्यालक्ष्यस्वरूपा सा व्याप्य कृत्स्नं व्यवस्थिता॥4॥
मातुलुङ्गं गदां खेटं पानपात्रं च बिभ्रति।
नागं लिङ्गं च योनिं च बिभ्रति नृप मूर्धनि॥5॥
तप्तकाञ्चनवर्णाभा तप्तकाञ्चनभूषणा।
शून्यं तदखिलं स्वेन पूरयामास तेजसा॥6॥
शून्यं तदखिलं लोकं विलोक्य परमेश्वरी।
बभार परमं रूपं तमसा केवलेन हि॥7॥
सा भिन्नाञ्जनसंकाशा दंष्ट्राङ्कितवरानना।
विशाललोचना नारी बभूव तनुमध्यमा॥8॥
खड्गपात्रशिरःखेटैरलंकृतचतुर्भुजा।
कबन्धहारं शिरसा बिभ्राणा हि शिरःस्रजम्॥9॥

सा प्रोवाच महालक्ष्मीं तामसी प्रमदोत्तमा।
नाम कर्म च मे मातर्देहि तुभ्यं नमो नमः।। 10।।
तां प्रोवाच महालक्ष्मीस्तामसीं प्रमदोत्तमाम्।
ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते।। 11।।
महामाया महाकाली महामारी क्षुधा तृषा।
निद्रा तृष्णा चैकवीरा कालरात्रिर्दुरत्यया।। 12।।
इमानि तव नामानि प्रतिपाद्यानि कर्मभिः।
एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा योऽधीते सोऽश्नुते सुखम्।। 13।।
तामित्युक्त्वा महालक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृप।
सत्त्वाख्येनातिशुद्धेन गुणेनेन्दुप्रभं दधौ।। 14।।
अक्षमालाङ्कुशधरा वीणापुस्तकधारिणी।
सा बभूव वरा नारी नामान्यस्यै च सा ददौ।। 15।।
महाविद्या महावाणी भारती वाक् सरस्वती।
आर्या ब्राह्मी कामधेनुर्वेदगर्भा च धीश्वरी।। 16।।
अथोवाच महालक्ष्मीर्महाकालीं सरस्वतीम्।
युवां जनयतां देव्यौ मिथुने स्वानुरूपतः।। 17।।
इत्युक्त्वा ते महालक्ष्मीः ससर्ज मिथुनं स्वयम्।
हिरण्यगर्भौ रुचिरौ स्त्रीपुंसौ कमलासनौ।। 18।।
ब्रह्मन् विधे विरिञ्चेति धातरित्याह तं नरम्।
श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मीत्याह माता च तां स्त्रियम्।। 19।।
महाकाली भारती च मिथुने सृजतः सह।
एतयोरपि रूपाणि नामानि च वदामि ते।। 20।।
नीलकण्ठं रक्तबाहुं श्वेताङ्गं चन्द्रशेखरम्।
जनयामास पुरुषं महाकाली सितां स्त्रियम्।। 21।।

स रुद्रः शंकरः स्थाणुः कपर्दी च त्रिलोचनः।
त्रयी विद्या कामधेनुः सा स्त्री भाषाक्षरा स्वरा।। 22।।
सरस्वती स्त्रियं गौरीं कृष्णं च पुरुषं नृप।
जनयामास नामानि तयोरपि वदामि ते।। 23।।
विष्णुः कृष्णो हृषीकेशो वासुदेवो जनार्दनः।
उमा गौरी सती चण्डी सुन्दरी सुभगा शिवा।। 24।।
एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे।
चक्षुष्मन्तो नु पश्यन्ति नेतरेऽतद्विदो जनाः।। 25।।
ब्रह्मणे प्रददौ पत्नीं महालक्ष्मीर्नृप त्रयीम्।
रुद्राय गौरीं वरदां वासुदेवाय च श्रियम्।। 26।।
स्वरया सह सम्भूय विरिञ्चोऽण्डमजीजनत्।
बिभेद भगवान् रुद्रस्तद् गौर्या सह वीर्यवान्।। 27।।
अण्डमध्ये प्रधानादि कार्यजातमभून्नृप।
महाभूतात्मकं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम्।। 28।।
पुपोष पालयामास तल्लक्ष्म्या सह केशवः।
संजहार जगत्सर्वं सह गौर्या महेश्वरः।। 29।।
महालक्ष्मीर्महाराज सर्वसत्त्वमयीश्वरी।
निराकारा च साकारा सैव नानाभिधानभृत्।। 30।।
नामान्तरैर्निरूप्यैषा नाम्ना नान्येन केनचित्।। ॐ।। 31।।

इति प्राधानिकं रहस्यं सम्पूर्णम्।

अथ वैकृतिकं रहस्यम्

ऋषिरुवाच

ॐ त्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्रिधोदिता।
सा शर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा भगवतीर्यते।। 1।।
योगनिद्रा हरेरुक्ता महाकाली तमोगुणा।
मधुकैटभनाशार्थं यां तुष्टावाम्बुजासनः।। 2।।
दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाञ्जनप्रभा।
विशालया राजमाना त्रिंशल्लोचनमालया।। 3।।
स्फुरद्दशनदंष्ट्रा सा भीमरूपापि भूमिप।
रूपसौभाग्यकान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियः।। 4।।
खड्गबाणगदाशूलचक्रशङ्खभुशुण्डिभृत् ।
परिघं कार्मुकं शीर्षं निश्च्योतद्रुधिरं दधौ।। 5।।
एषा सा वैष्णवी माया महाकाली दुरत्यया।
आराधिता वशीकुर्यात् पूजाकर्तुश्चराचरम्।। 6।।
सर्वदेवशरीरेभ्यो याऽऽविर्भूतामितप्रभा।
त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी।। 7।।
श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमण्डला।
रक्तमध्या रक्तपादा नीलजङ्घोरुरुन्मदा।। 8।।
सुचित्रजघना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा।
चित्रानुलेपना कान्तिरूपसौभाग्यशालिनी।। 9।।
अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती।
आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधःकरक्रमात्।। 10।।
अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा।
चक्रं त्रिशूलं परशुः शङ्खो घण्टा च पाशकः।। 11।।

शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पानपात्रं कमण्डलुः।
अलंकृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनाम्।। 12।।
सर्वदेवमयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप।
पूजयेत्सर्वलोकानां स देवानां प्रभुर्भवेत्।। 13।।
गौरीदेहात्समुद्भूता या सत्त्वैकगुणाश्रया।
साक्षात्सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुरनिबर्हिणी।। 14।।
दधौ चाष्टभुजा बाणमुसले शूलचक्रभृत्।
शङ्खं घण्टां लाङ्गलं च कार्मुकं वसुधाधिप।। 15।।
एषा सम्पूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति।
निशुम्भमथिनी देवी शुम्भासुरनिबर्हिणी।। 16।।
इत्युक्तानि स्वरूपाणि मूर्तीनां तव पार्थिव।
उपासनं जगन्मातुः पृथगासां निशामय।। 17।।
महालक्ष्मीर्यदा पूज्या महाकाली सरस्वती।
दक्षिणोत्तरयोः पूज्ये पृष्ठतो मिथुनत्रयम्।। 18।।
विरञ्चिः स्वरया मध्ये रुद्रो गौर्या च दक्षिणे।
वामे लक्ष्म्या हृषीकेषः पुरतो देवतात्रयम्।। 19।।
अष्टादशभुजा मध्ये वामे चास्या दशानना।
दक्षिणेऽष्टभुजा लक्ष्मीर्महतीति समर्चयेत्।। 20।।
अष्टादशभुजा चैषा यदा पूज्या नराधिप।
दशानना चाष्टभुजा दक्षिणोत्तरयोस्तदा।। 21।।
कालमृत्यू च सम्पूज्यौ सर्वारिष्टप्रशान्तये।
यदा चाष्टभुजा पूज्या शुम्भासुरनिबर्हिणी।। 22।।
नवास्याः शक्तयः पूज्यास्तदा रुद्रविनायकौ।
नमो देव्या इति स्तोत्रैर्महालक्ष्मीं समर्चयेत्।। 23।।

अवतारत्रयार्चायां स्तोत्रमन्त्रास्तदाश्रयाः।
अष्टादशभुजाचैषा पूज्या महिषमर्दिनी।। 24।।
महालक्ष्मीर्महाकाली सैव प्रोक्ता सरस्वती।
ईश्वरी पुण्यपापानां सर्वलोकमहेश्वरी।। 25।।
महिषान्तकरी येन पूजिता स जगत्प्रभुः।
पूजयेज्जगतां धात्रीं चण्डिकां भक्तवत्सलाम्।। 26।।
अर्घ्यादिभिरलंकारैर्गन्धपुष्पैस्तथाक्षतैः।
धूपैर्दीपैश्च नैवेद्यैर्नानाभक्ष्यसमन्वितैः।। 27।।
रुधिराक्तेन बलिना मांसेन सुरया नृप।
(बलिमांसादिपूजेयं विप्रवर्ज्या मयेरिता।।
तेषां किल सुरामांसैर्नोक्ता पूजा नृप क्वचित्।)
प्रणामाचमनीयेन चन्दनेन सुगन्धिना।। 28।।
सकर्पूरैश्च ताम्बूलैर्भक्तिभावसमन्वितैः।
वामभागेऽग्रतो देव्याश्छिन्नशीर्षं महासुरम्।। 29।।
पूजयेन्महिषं येन प्राप्तं सायुज्यमीशया।
दक्षिणे पुरतः सिंहं समग्रं धर्ममीश्वरम्।। 30।।
वाहनं पूजयेद्देव्या धृतं येन चराचरम्।
कुर्याच्च स्तवनं धीमांस्तस्या एकाग्रमानसः।। 31।।
ततः कृताञ्जलिर्भूत्वा स्तुवीत चरितैरिमैः।
एकेन वा मध्यमेन नैकेनेतरयोरिह।। 32।।
चरितार्धं तु न जपेज्जपञ्छिद्रमवाप्नुयात्।
प्रदक्षिणानमस्कारान् कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः।। 33।।
क्षमापयेज्जगद्धात्रीं मुहुर्मुहुरतन्द्रितः।
प्रतिश्लोकं च जुहुयात्पायसं तिलसर्पिषा।। 34।।

जुहुयात्स्तोत्रमन्त्रैर्वा चण्डिकायै शुभं हविः।
भूयो नामपदैर्देवीं पूजयेत्सुसमाहितः।। 35।।
प्रयतः प्राञ्जलिः प्रह्वः प्रणम्यारोप्य चात्मनि।
सुचिरं भावयेदीशां चण्डिकां तन्मयो भवेत्।। 36।।
एवं यः पूजयेद्भक्त्या प्रत्यहं परमेश्वरीम्।
भुक्त्वा भोगान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात्।। 37।।
यो न पूजयते नित्यं चण्डिकां भक्तवत्सलाम्।
भस्मीकृत्यास्य पुण्यानि निर्दहेत्परमेश्वरी।। 38।।
तस्मात्पूजय भूपाल सर्वलोकमहेश्वरीम्।
यथोक्तेन विधानेन चण्डिकां सुखमाप्स्यसि।। 39।।

।। इति वैकृतिकं रहस्यं सम्पूर्णम्।।

अथ मूर्तिरहस्यम्

ऋषिरुवाच

ॐ नन्दा भगवती नाम या भविष्यति नन्दजा।
स्तुता सा पूजिता भक्त्या वशीकुर्याज्जगत्त्रयम्।। 1।।
कनकोत्तमकान्तिःसा सुकान्तिकनकाम्बरा।
देवी कनकवर्णाभा कनकोत्तमभूषणा।। 2।।
कमलाङ्कुशपाशाब्जैरलंकृतचतुर्भुजा।
इन्दिरा कमला लक्ष्मीः सा श्री रुक्माम्बुजासना।। 3।।
या रक्तदन्तिका नाम देवी प्रोक्ता मयानघ।
तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि शृणु सर्वभयापहम्।। 4।।
रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्तसर्वाङ्गभूषणा।
रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशातिभीषणा।। 5।।

रक्ततीक्ष्णनखा रक्तदशना रक्तदन्तिका।
पतिं नारीवानुरक्ता देवीं भक्तं भजेज्जनम्।। 6।।
वसुधेव विशाला सा सुमेरुयुगलस्तनी।
दीर्घौ लम्बावतिस्थूलौ तावतीव मनोहरौ।। 7।।
कर्कशावतिकान्तौ तौ सर्वानन्दपयोनिधी।
भक्तान् सम्पाययेद्देवी सर्वकामदुघौ स्तनौ।। 8।।
खड्गं पात्रं च मुसलं लाङ्गलं च बिभर्ति सा।
आख्याता रक्तचामुण्डा देवी योगेश्वरीति च।। 9।।
अनया व्याप्तमखिलं जगत्स्थावरजङ्गमम्।
इमां यःपूजयेद्भक्त्या स व्याप्नोति चराचरम्।। 10।।
(भुक्त्वा भोगान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात्।)
अधीते य इमं नित्यं रक्तदन्त्या वपुःस्तवम्।
तं सा परिचरेद्देवी पतिं प्रियमिवाङ्गना।। 11।।
शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलोचना।
गम्भीरनाभिस्त्रिवलीविभूषिततनूदरी ।। 12।।
सुकर्कशसमोत्तुङ्गवृत्तपीनघनस्तनी ।
मुष्टिं शिलीमुखापूर्णं कमलं कमलालया।। 13।।
पुष्पपल्लवमूलादिफलाढ्यं शाकसञ्चयम्।
काम्यानन्तरसैर्युक्तं क्षुत्तृण्मृत्युभयापहम्।। 14।।
कार्मुकं च स्फुरत्कान्ति बिभ्रती परमेश्वरी।
शाकम्भरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता।। 15।।
विशोका दुष्टदमनी शमनी दुरितापदाम्।
उमा गौरी शती चण्डी कालिका सा च पार्वती।। 16।।
शाकम्भरीं स्तुवन् ध्यायञ्जपन् सम्पूजयन्नमन्।
अक्षय्यमश्नुते शीघ्रमन्नपानामृतं फलम्।। 17।।

भीमापि नीलवर्णा सा दंष्ट्रादशनभासुरा।
विशाललोचना नारी वृत्तपीनपयोधरा।। 18।।
चन्द्रहासं च डमरुं शिरः पात्रं च बिभ्रती।
एकवीरा कालरात्रिः सैवोक्ता कामदा स्तुता।। 19।।
तेजोमण्डलदुर्धर्षा भ्रामरी चित्रकान्तिभृत्।
चित्रानुलेपना देवी चित्राभरणभूषिता।। 20।।
चित्रभ्रमरपाणिः सा महामारीति गीयते।
इत्येता मूर्तयो देव्या याः ख्याता वसुधाधिप।। 21।।
जगन्मातुश्चण्डिकायाः कीर्तिताः कामधेनवः।
इदं रहस्यं परमं न वाच्यं कस्यचित्त्वया।। 22।।
व्याख्यानं दिव्यमूर्तीनामभीष्टफलदायकम्।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन देवीं जप निरन्तरम्।। 23।।
सप्तजन्मार्जितैर्घोरैर्ब्रह्महत्यासमैरपि ।
पाठमात्रेण मन्त्राणां मुच्यते सर्वकिल्बिषैः।। 24।।
देव्या ध्यानं मया ख्यातं गुह्याद् गुह्यतरं महत्।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन सर्वकामफलप्रदम्।। 25।।
(एतस्यास्त्वं प्रसादेन सर्वमान्यो भविष्यसि।
सर्वरूपमयी देवी सर्वं देवीमयं जगत्।
अतोऽहं विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीम्।)

।। इति मूर्तिरहस्यं सम्पूर्णम्।।

पाठान्ते शापोद्धारादि करें। शापोद्धार मंत्र का 7 बार जप करें ।

मंत्र - ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रां क्रीं चण्डिकादेव्यै शापनाशानुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा।

उत्कीलन मंत्र का 21 बार जप करें।

मंत्र - ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तसती चण्डिके उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा।

मृत संजीवनी मंत्र का 7 बार जप करें।

मंत्र - ॐ ह्रीं ह्रीं वं वं ऐं ऐं मृतसंजीवनि विद्ये मृतमुत्थापयोत्थापय क्रीं ह्रीं ह्रीं वं स्वाहा।

क्षमा-प्रार्थना

अपराधसहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि।।1।।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि।।2।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे।।3।।
अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत्।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः।।4।।
सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके।
इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु।।5।।
अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि।।6।।
कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि।।7।।
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि।।8।।

।। श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

श्री दुर्गामानस पूजा

उद्यच्चन्दनकुङ्कुमारुणपयोधाराभिराप्लाविताां
नानानर्घ्यमणिप्रवालघटितां दत्तां गृहाणाम्बिके।
आमृष्टां सुरसन्दरीभिरभितो हस्ताम्बुजैर्भक्तितो
मातः सुन्दरि भक्तकल्पलतिके श्रीपादुकामादरात्।।1।।
देवेन्द्रादिभिरर्चितं सुरगणैरादय सिंहासनं
चञ्चत्काञ्चनसंचयाभिरचितं चारुप्रभाभास्वरम्।
एतच्चम्पककेतकीपरिमलं तैलं महानिर्मलं
गन्धोद्वर्तनमादरेण तरुणीदत्तं गृहाणाम्बिके।।2।।
पश्चाद्देवि गृहाण शम्भुगृहिणि श्रीसुन्दरि प्रायशो
गन्धद्रव्यसमूहनिर्भरतरं धात्रीफलं निर्मलम्।
तत्केशान् परिशोध्य कङ्कतिकया नम्दाकिनीस्त्रोतसि
स्नात्वा प्रोज्ज्वलगंधकं भवतु हे सुन्दरि त्वन्मुदे।।3।।
सुराधिपतिकामिनीकरसरोजनालीधृतां
सचन्दनसकुङ्कुमागुरुभरेण विभ्राजिताम्।
महापरिमलोज्ज्वलां सरसशुद्धकस्तूरिकां
गृहाण वरदायिनी त्रिपुरसुन्दरि श्रीपदे।।4।।
गन्धर्वामरकिन्नरप्रियतमासंतानहस्ताम्बुज-
प्रस्तारैध्रियमाणमुत्तमतरं काश्मीरजापिञ्जरम्।
मातर्भास्वरभानुमण्डललसत्कान्तिप्रदानोज्ज्वलं
चैतन्निर्मलमातनोतु वसनं श्रीसुन्दरि त्वन्मुदम्।।5।।
स्वर्णाकल्पितकुण्डले श्रुतियुगे हस्ताम्बुजे मुद्रिका
मध्ये सारसना नितम्बफलके मञ्जीरमङ्घ्रिद्वये।

हारो वक्षसि कङ्कणौ क्वणरणत्कारौ करद्वन्द्वके
विन्यस्तं मुकुटं शिरस्यनुदिनं दत्तोन्मदं स्तूयताम्।।6।।
ग्रीवायां धृतकान्तिकान्तपटलं ग्रैवेयकं सुन्दरं
सिन्दूरं विलसल्ललाटफलके सौन्दर्यमुद्राधरम्।
राजत्कज्जलमुज्ज्वलोत्पलदलश्रीमोचने लोचने
तद्दिव्यौषधिनिर्मितं रचयतु श्रीशाम्भवि श्रीपदे।।7।।
अमन्दतरमन्दरोन्मथितदुग्धसिन्धूद्भवं
निशाकरकरोपमं त्रिपुरसुन्दरि श्रीपदे।
गृहाण मुखमीक्षितुं मुकुरबिम्बमाविद्रुमै-
र्विनिर्मितमघच्छिदे रतिकराम्बुजस्थायिनम्।।8।।
कस्तूरीद्रवचन्दनागुरुसुधाधाराभिराप्लावितं
चञ्चच्चम्पकपाटलादिसुरभिद्रव्यैः सुगन्धीकृतम्।
देवस्त्रीगणमस्तकस्थितमहारत्नादिकुम्भव्रजै-
रम्भःशाम्भवि संभ्रमेण विमलं दत्तं गृहाणाम्बिके।।9।।
कह्लारोत्पलनागकेसरसरोजाख्यावलीमालती-
मल्लीकैरवकेतकादिकुसुमै रक्ताश्वमारादिभिः।
पुष्पैर्माल्यभरेण वै सुरभिणा नानारसस्त्रोतसा
ताम्राम्भोजनिवासिनीं भगवतीं श्रीचण्डिकां पूजये।।10।।
मांसीगुग्गुलचन्दनागुरुरजःकर्पूरशैलेयजै-
र्माध्वीकैः सह कुङ्कुमैः सुरचितैः सर्पिर्भिरामिश्रितैः।
सौरभ्यस्थितिमन्दिरे मणिमये पात्रे भवेत् प्रीतये
धूपोऽयं सुरकामिनीविरचितः श्रीचण्डिके त्वन्मुदे।।11।।
घृतद्रवपरिस्फुरद्रुचिररत्नयष्ट्यान्वितो
महातिमिरनाशनः सुरनितम्बिनीनिर्मितः।

सुवर्णचषकस्थितः सघनसारवर्त्यान्वित-
स्तव त्रिपुरसुन्दरि स्फुरति देवि दीपो मुदे।। 12।।
जातीसौरभनिर्भरं रुचिकरं शाल्योदनं निर्मलं
युक्तं हिङ्गुमरीचजीरसुरभिद्रव्यान्वितैर्व्यञ्जनैः।
पक्वान्नेन सपायसेन मधुना दध्याज्यसम्मिश्रितं
नैवेद्यं सुरकामिनीविरचितं श्रीचण्डिके त्वन्मुदे।। 13।।
लवङ्गकलिकोज्ज्वलं बहुलनागवल्लीदलं
सजातिफलकोमलं सघनसारपूगीफलम्।
सुधामधुरिमाकुलं रुचिररत्नपात्रस्थितं
गृहाण मुखपङ्कजे स्फुरितमम्ब ताम्बूलकम्।। 14।।
शरत्प्रभवचन्द्रमःस्फरितचन्द्रिकासुन्दरं
गलत्सुरतरङ्गिणीललितमौक्तिकाडम्बरम्।
गृहाण नवकाञ्चनप्रभवदण्डखण्डोज्ज्वलं
महात्रिपुरसुन्दरि प्रकटमातपत्रं महत्।। 15।।
मातस्त्वन्मुदमातनोतु सुभगस्त्रीभिः सदाऽऽन्दोलितं
शुभ्रं चामरमिन्दुकुन्दसदृशं प्रस्वेददुःखापहम्।
सद्योऽगस्त्यवसिष्ठनारदशुकव्यासादिवाल्मीकिभिः
स्वे चित्ते क्रियमाण एव कुरुतां शर्माणि वेदध्वनिः।। 16।।
स्वर्गाङ्गणे वेणुमृदङ्गशङ्खभेरीनिनादैरुपगीयमाना।
कोलाहलैराकलिता तवास्तु विद्याधरीनृत्यकला सुखाय।। 17।।
देवि भक्तिरसभावितवृत्ते प्रीयतां यदि कुतोऽपि लभ्यते।
तत्र लौल्यमपि सत्फलमेकं जन्मकोटिभिरपीह न लभ्यम्।। 18।।
एतैः षोडशभिः पद्यैरुपचारोपकल्पितैः।
यः परां देवतां स्तौति स तेषां फलमाप्नुयात्।। 19।।

दुर्गा बत्तीस नाममाला

श्री दुर्गा जी के बत्तीस नामों की माला अत्यन्त गोपनीय एवं दुर्लभ है। यह सभी प्रकार की आपत्तियों का विनाश करने वाली है। तीनों लोकों में इसके समान दूसरी कोई स्तुति नहीं है। कोई शत्रुओं से पीड़ित हो अथवा दुर्भेद्य बंधन में पड़ा हो या वन में व्याघ्र आदि हिंसक जंतुओं के चंगुल में फँस गया हो अथवा राजा क्रोध में आकर कठोर दंड के लिए आज्ञा दे दी हो तो इन बत्तीस नामों का एक सौ आठ बार पाठ-मात्र से संपूर्ण भयों से मुक्त हो जाता है, इसमें संदेह नहीं है। विपत्ति के समय इसके समान संकट नाशक दूसरा कोई उपाय नहीं है। यह भगवती जगदम्बा का वचन है।

दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गापद्विनिवारिणी।
दुर्गमच्छेदिनी दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी।।
दुर्गतोद्धारिणी दुर्गनिहन्त्री दुर्गमापहा।
दुर्गमज्ञानदा दुर्गदैत्यलोकदवानला।।
दुर्गमा दुर्गमालोका दुर्गमात्मस्वरूपिणी।
दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता।।
दुर्गमज्ञानसंस्थाना दुर्गमध्यानभासिनी।
दुर्गमोहा दुर्गमगा दुर्गमार्थस्वरूपिणी।।
दुर्गमासुरसंहन्त्री दुर्गमायुधधारिणी।
दुर्गमाङ्गी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी।।
दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा दुर्गदारिणी।
नामावलिमिमां यस्तु दुर्गाया मम मानवः।
पठेत् सर्वभयान्मुक्तो भविष्यति न संशयः।।

अथ देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
　　न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
　　परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम्।।1।।
विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
　　विधेयाशक्यात्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
　　कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।2।।
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
　　परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
　　कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।3।।
जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
　　न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
　　कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।4।।
परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया
　　मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
　　निरालम्बोलम्बोदरजननि कं यामि शरणम्।।5।।
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
　　निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः।

तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ।। 6।
चिताभस्मालेपो गरलशमनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम्।। 7।
न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः।। 8।
नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव।। 9।।
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं
करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः
क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति।। 10।।
जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।
अपराधपरम्परापरं न हि माता समुपेक्षते सुतम्।। 11
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु।। 12
।। इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितं देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

सिद्धकुञ्जिकास्तोत्रम्

शिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्।
येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत्।। 1।।
न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम्।। 2।।
कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम्।। 3।।
गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वती ।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।
पाठमात्रेण संसिद्ध्येत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्।। 4।।

अथ मन्त्रः

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।। ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः
ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा
।। इति मन्त्रः ।।

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि।
नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि।। 1।।
नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनी।। 2।।
जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे।
ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका।। 3।।
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तुते।
चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी।। 4।।
विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि।। 5।।

धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु।।6।।
हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः।।7।।
अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं
धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा।।
पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा॥ 8।।
सां सीं सूं सप्तशती देव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे।।
इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्रजागर्तिहेतवे।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति।।
यस्तु कुञ्जिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत्।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा।।

इति श्रीरुद्रयामले गौरीतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे कुञ्जिकास्तोत्रं सम्पूर्णम्
।।ॐ तत्सत्।।

सप्तशती के कुछ सिद्ध सम्पुट-मन्त्र

(अनेक प्रकार की मनोकामना पूर्ति हेतु)

सप्तशती अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष- चारों पुरुषार्थों को प्रदान करनेवाली है। जो व्यक्ति जिस भाव और जिस कामना से श्रद्धा एवं विधि के साथ सप्तशती का पारायण करता है, उसे उसी भावना और कामना के अनुसार निश्चय ही फल-सिद्धि होती है। यहाँ हम कुछ ऐसे चुने हुये मन्त्रों को प्रस्तुत करते हैं, जिनका सम्पुट देकर विधिवत् पाठ करने से विभिन्न पुरुषार्थों की व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से सिद्धि होती है।

(1) विपत्ति नाश के लिये-

शरणागत दीनार्तपरित्राण परायणे
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणी नमोऽस्तु ते।।

(2) विपत्ति नाश और शुभ की प्राप्ति के लिये-

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।

(3) भयनाश के लिये-

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते।।

(4) पाप-नाश के लिये-

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव।।

(5) रोग नाश के लिये-

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
तवामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।

(6) महामारी नाश के लिये-

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।।

(7) आरोग्य और सौभाग्य की प्राप्ति के लिये-

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।

(8) सुलक्षणी पत्नी की प्राप्ति के लिये-

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्।।

(9) सर्व बाधा-शान्ति के लिये-

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्।।

(10) सर्व विध विकास के लिये-

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः।
धन्यास्त एवं निभृतात्मजभृत्यदारा
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना।।

(11) दारिद्रय और दुःखादि नाश के लिये-

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेशजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता।।

(12) सर्वत्र रक्षा पाने के लिये-

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।।

(13) समस्त विद्याओं की प्राप्ति के लिये-

विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्
का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः।।

(14) सब प्रकार के कल्याण के लिये-

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।

(15) शक्ति प्राप्ति के लिये-

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते।।

(16) प्रसन्नता की प्राप्ति के लिये-

प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि।
त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव।।

(17) विविध उपद्रवों से बचने के लिये-

रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा यत्रारयो दस्युबलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्।।

(18) बाधामुक्त होकर धन-पुत्रादि की प्राप्ति के लिये-

सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः।।

(19) रूप और जय की प्राप्ति के लिये-

विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।

(20) पाप नाश और भक्ति की प्राप्ति के लिये-

नतेभ्यः, सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।

अथ जलयात्रा विधि

यज्ञप्रारम्भदिने यजमानः पूजासामग्रीं गृहीत्वा आचार्यादिऋत्विजां वरणानन्तरं पूजासामग्रीं वेदमन्त्रोच्चारण-भगवन्नामकीर्तन-वाद्यघोषपुरस्सरं आचार्यादिऋत्विग्भिः नगरवासिमिः सुवासिनीभिश्च सह नदीं जलाशयं वा गच्छेत्। नद्यां जलाशये वा गत्वा प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य यजमानः सङ्कल्पं कुर्यात्। तद्यथा-

"देशकालौ सङ्कीर्त्य करिष्यमाणस्य अमुकयागकर्मणः निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं वरुणदेवताप्रीत्यर्थं वरुणदेवस्य पूजनमहं करिष्ये।"

इति सङ्कल्प, जलसमीपे रक्ताक्षतैः पीताक्षतै-र्वा नव कोष्ठान् निर्माय तेषु दिक्षु-विदिक्षु अष्टौ कलशान् संस्थाप्य, मध्ये कलशमेकं संस्थापयेत्। अनन्तरं तेषु सर्वेषु कलशेषु जलं परिपूर्य तेषां गन्धाक्षतपुष्पादिना पूजनम्। ततः तत्रैव पट्टवस्त्रे पङ्क्तित्रये सप्त-सप्त अक्षतपुञ्जान् विधाय तेषु क्रमेण जलमातृणां जीवमातृणां स्थलमातृणाञ्च आवाहनं स्थापनं पूजनञ्च कुर्यात्।

अथ जलमातृणां पूजनम्-

मत्स्यै नमः, मत्सीमावाहयामि स्थापयामि। कूर्म्यै नमः, कूर्मीमा०। वाराह्यै नमः, वाराहीमा०। दर्दुर्यै नमः, दर्दुरीमा०। मकर्यै नमः, मकरीमा०। जलूक्यै नमः, जलूकीमा०। तन्तुक्यै नमः, तन्तुकीमा०।

'मत्स्यादिजलमातृभ्यो नमः' इति पञ्चोपचारैः पूजयेत्।

अथ जीवमातृणां पूजनम्-

कुमार्यै नमः, कुमारीभावाहयामि स्थापयामि। धनदायै नमः, धनदामा०। नन्दायै नमः, नन्दामा०। विमलायै नमः, विमलामा०। मङ्गलायै नमः, मङ्गलामा०। अचलायै नमः, अचलामा०। पद्मायै नमः, पद्मामा०।

'कुमार्यादिजीवमातृभ्यो नमः' इति पञ्चोपचारैः पूजयेत्।

अथ स्थलमातृणां पूजनम्-

ऊर्म्यै नमः, ऊर्मीमावाहयामि स्थापयामि। लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीमा०। महामायायै नमः, महामायामा०। पानदेव्यै नमः, पानदेवीमा०। वारुण्यै नमः, वारुणीमा०। निर्मलायै नमः, निर्मलामा०। गोधायै नमः, गोधामा०।

'ऊर्म्यादिस्थलमातृभ्यो नमः' इति पञ्चोपचारैः पूजयेत्।

पश्चात् दशसु दिक्षु दशदिक्पालानां पूजनम्। ततः नद्यां जलाशये वा नदीस्तीर्थानि चावाहयेत्।

काशी कुशस्थली मायावन्त्योध्या मधोः पुरी।
शालिग्रामः सगोकर्णो नर्मदा च सरस्वती।।१।।
आगच्छन्तु सरिज्ज्येष्ठा गङ्गा पापप्रणाशिनी।
नीलोत्पलदलश्यामा पद्महस्ताम्बुजेक्षणा।।२।।
आयातु यमुना देवी कूर्मयानस्थिता सदा।
प्राची सरस्वती पुण्या पयोष्णी गौतमी तथा।।३।।
ऊर्मिला चन्द्रभागा च सरयू गण्डकी तथा।
वितस्ता च विपाशा च नर्मदा च पुनः पुनः।।४।।
कावेरी कौशिकी चैव गोदावरी महानदी।
मन्दाकिनी वसिष्ठा च तुङ्गभद्रा शशिप्रभा।।५।।
अमरेशः प्रभासश्च नैमिषं पुष्करं तथा।
कुरुक्षेत्रं प्रयागं च गङ्गासागरसङ्गमम्।।६।।
एता नद्यश्च तीर्थानि यानि सन्ति महीतले।
तानि सर्वाणि आयान्तु पावनार्थं द्विजन्मनाम्।।७।।

इति नदीनां तीर्थानाञ्चावाहनं कृत्वा 'गङ्गादिनदीभ्यो नमः 'पुष्करादि-तीर्थेभ्यो नमः' इति पञ्चोपचारैः पूजनं कुर्यात्। ततः जलमध्ये वरुणदेवस्य पूजनम्। हस्ते गन्धाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा 'ॐ इमं वरुणश्रुधी'० इत्यनेन मन्त्रेण वरुणं सम्पूज्य जले 'ॐ पञ्च नद्यः'० इति मन्त्रेण पञ्चामृतस्य प्रक्षेपः। पश्चात् जले द्वादश आज्याहुतीर्जुहुयात्। तद्यथा-

ॐ अद्भ्यः स्वाहा। ॐ वार्भ्यः स्वाहा। ॐ उदकाय स्वाहा। ॐ तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा। ॐ स्रवन्तीभ्यः स्वाहा। ॐ स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा। ॐ कूप्याभ्यः स्वाहा। ॐ सूद्याभ्यः स्वाहा। ॐ धार्याभ्यः स्वाहा। ॐ अर्णवाय स्वाहा। ॐ समुद्राय स्वाहा। ॐ सरिराय स्वाहा।

(शु० य० २२/२५)

अथवा "ॐ अद्भ्यः सम्भृतः०" इत्यादिमन्त्रैः धृतेन दध्ना वा स्रुवेण विंशतिवारं आहुतीर्दद्यात्।

ततोऽर्धपात्रे जलेन साकं गन्धाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा नद्यां जलाशये वा वारत्रयमर्ध्यं दद्यात्। पश्चात् नद्यां श्रीफलं प्रक्षिपेत्। ततो देवानां विसर्जनं कृत्वा आचार्यादिऋत्विजां सुवासिनीनाञ्च पूजनं विधाय दक्षिणां च दद्यात्। पश्चात् पूजितान् नवकलशान् उत्थाप्य नवसंख्यानां सुवासिनीनां मस्तकोपरि धारयेत्। ततो यजमानः वेदमन्त्र भगवन्नामकीर्तनं कुर्वन् आचार्यादिऋत्विग्भिः सह यज्ञस्थलं प्रति गच्छेन। अर्धमार्गे स्थित्वा इन्द्रादिदशदिक्पालानां क्षेत्र-पालस्य च आवाहनं पूजनं च कृत्वा सर्वेभ्यः बलिं दद्यात्। ततो यज्ञमण्डपस्य पश्चिमद्वारस्य पूजनं विधाय तेनैव द्वारेण मण्डपे प्रविश्य पूजितनवकलशान् यज्ञमण्डपस्य वारुणमण्डलोपरि स्थापयेदिति।

इति जलयात्रा विधिः।

मण्डप पूजनम्

१. मण्डपस्तम्भपूजनमन्त्राः – मध्यवेदीशानस्तम्भे ब्रह्माणं पूजयेत् ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् द्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः।। स बुध्न्याऽउपमाऽअस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विव ÷।।

ब्रह्मणे नमः। सकलोपचारार्थेगंधाक्षत पुष्पाणि सर्मपयामि।

सावित्र्यै नमः वास्तुपुरुषाय नमः ब्राह्म्यै नमः

अधिदेवताभ्यो नमः सकलोप०

दध्योदनं बलिं समर्पयामि अनेन पूजनेन साधिदेवताः प्रीयन्ताम् ।

२. आग्नेयस्तम्भे विष्णुं पूजयेत् – ॐ इदं व्विष्णुर्व्विचक्रमे त्रे

धा निदधे पदम्।। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा। विष्णवे नमः सकलोप०

लक्ष्म्यै नमः। आदित्यनन्दायै नमः। वैष्णव्यै नमः। अधि० सकलोप०

दध्योदनं० अनेन०

३. नैऋत्यस्तम्भे शङ्करं पूजयेत – ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवऽउतोतऽ इषवे नमः बाहुब्भ्यामुतते नमः रुद्राय नमः सकलोप०

गौर्यै नमः शोभनायै नमः माहेश्वर्यै नमः अधि० सकलोप०

दध्योदनं० अनेन०

४. वायव्यकोणस्तम्भे इन्द्रं पूजयेत् – ॐ त्रातारमिन्द्रमवितार-मिन्द्र ꣳ हवे हवे सुहव ꣳ शूरमिन्द्रम्।। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिण्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्र इन्द्राय नमः – सकलोप०

इन्द्राण्यै नमः आनंदायै नमः विभूत्यै नमः अधि सकलोप०

दध्योदनं० अनेन०

५. वाह्येशानकोणस्तम्भे सूर्यं पूजयेत – ॐ आ कृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्त्यं च।। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

सूर्याय नमः – सकलोप०

भूत्यै नमः सावित्र्यै नमः मंगलायै नमः अधि० सकलोप०

दध्योदनं० अनेन०

६. ईशानपूर्वयोर्मध्ये गणेशं पूजयेत – ॐ गणानां त्त्वा गणपतिꣳ हवामहे पियाणां त्त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनां त्त्वा निधिपति ꣳ हवामहे व्वसो मम।। आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम्।

गणपतये नमः – सकलोप०

सिद्ध्यै नमः बुद्ध्यै नमः विघ्नहारिण्यै नमः जयायै नमः अधि० सकलोप

दध्योदनं० अनेन०

७. पूर्वाग्नयोर्मध्ये यमं पूजयेत् – ॐ यमाय त्त्वा मखाय त्त्वा सूर्य्यस्य त्त्वा तपसे।। देवस्त्वा सविता मद्ध्वानक्तु पृथिव्याः सꣳ स्पृशस्पाहि।।

अश्चिरसि शोचिरसि तपोसिऽ।।

धर्मराज्ञे नमः – सकलोप० धर्मराज्ञे नमः प्राक् संध्यायै नमः अंजनायै नमः क्रूरायै नमः अधि० सकलोप० दध्योदनं० अनेन०

८. आग्नेयकोणे नागराजं पूजयेत – ॐ नमोऽस्तु सर्पेब्भ्यो ये के च पृथिवीमनु।। ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेब्भ्यः सर्प्पेब्भ्यो नमः

नागराज्ञे नमः – सकलोप० मध्यमसंध्यायै नमः पद्मिन्यै नमः: महापद्मिन्यै नमः अंगनायै नमः अधि सकलोप० दध्योदनं० अनेन०

९. आग्नेयदक्षिणयोर्मध्ये स्कन्दं पूजयेत् – ॐ यदक्कन्दः प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्स मुद्रादुत वा पुरीषात्।। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽउपस्तुत्यं महि जातं ते ऽअर्व्वन्।।

स्कन्दाय नमः – सकलोप० स्कन्दप्रियायै नमः पश्चिमसंध्यायै नमः अधि० सकलोप० दध्योदनं० अनेन०

१०. दक्षिणनैर्ऋत्यकोणे वायु पूजयेत् – ॐ व्वायो ये ते सहस्त्रिणो स्थासस्तेभिरा गहि।। नियुत्वान्त्सोमपीतये।

वायवे नमः – सकलोप० वायुप्रियायै नमः वायव्यै नमः कौमार्यै नमः अधि० सकलोप दध्योदनं० अनेन०

११. नैर्ऋत्ययौर्मध्ये सोमं पूजयेत – ॐ आप्यायस्व समेतु ते व्विश्वत ÷ सोम व्वृष्णयम्।। भवा व्वाजस्य सङ्गथे।।

सोमाय नमः – सकलोप० सोमप्रियायै नमः सौम्यै नमः अमृतकलायै नमः विजयायै नमः अधि० सकलोप० दध्योदनं० अनेन०

१२. नैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्ये वरुणं पूजयेत् – ॐ इमं मे व्वरुण श्श्रुधी हवमद्या च मृडय।। त्वामवस्युराचके।

वरुणाय नमः – सकलोप० वरुणप्रियायै नमः वारुण्यै नमः बृहस्पत्यै नमः अधि० सकलोप० दध्योदनं० अनेन०

१३. पश्चिमवायव्यान्तरालेऽष्टवसून् पूजयेत् – ॐ व्वसुब्भ्यस्त्वा रुद्रेब्भ्यस्त्वा ऽऽदित्येब्भ्यस्त्वा सञ्जानाथां द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्त्वा वृष्ट्या-वताम्।। व्व्यन्तु व्वयोक्तꣳ रिहाणा मरुतां पृषतीर्ग्गच्छ व्वशा पृश्निर्भूत्त्वा

दिवं गच्छ ततो नो व्वृष्टिमावह ।। चक्षुष्पा ऽअग्ग्रेऽसि चक्षुर्म्मे पाहि ।।

वसुभ्यो नमः – सकलोप० सिद्धयमृतायै नमः विततायै नमः विभूत्यै नमः अधि० सकलोप० दध्योदनं० अनेन०

१४. वायव्ये धनदं पूजयेत – ॐ सोमो धेनुꣳ सोमो ऽअर्व्वन्त-माशुꣳ सोमो व्वीरं कर्म्मण्यं ददाति ।। सादन्यं व्विदत्थ्यꣳ सभेय पितृश्रवणं य्यो ददाशदस्म्मै ।।

बलदेवाय नमः – सकलोप० प्रियायै नमः आदित्यै नमः लघिम्न्यै नमः सिनीवाल्यै नमः अधि० सकलोप० दध्योदनं० अनेन०

१५. उत्तरवायव्ययोरन्तराले गुरं पूजयेत – ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्य्यो ऽअर्हाद् द्युमद्विभाति क्क्रतुमज्जनेषु ।। यद्दीदयच्छवस ऋतप्प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ।।

बृहस्पतये नमः – सकलोप० पौर्णमास्यै नमः सावित्र्यै नमः अधि० सकलोप दध्योदनं० अनेन०

१६. उत्तरेशानयोर्मध्ये विश्वकर्माणम् पूजयेत – ॐ व्विश्व-कर्म्मन् हविषा व्वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृण्णोरवद्ध्यम् ।। तस्म्मै व्विशः समनमन्त पूर्व्वीरयमुग्ग्रो व्विहव्यो यथासत् ।।

विश्वकर्मणे नमः – सकलोप० गायत्र्यै नमः वास्तव्यै नमः अधि० सकलोप० दध्योदनं० अनेन०

सतोरणद्वारपालदिक्पालपूजनम्

सतोरणद्वारपालपूजनम्

(पूर्वे ऋग्वेदज्ञस्य)

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।। होतारं रत्नधातमम् ।।१ ।। (याम्ये यजुर्वेदज्ञस्य) ॐ इषे त्त्वोर्ज्जे त्त्वा व्वायस्थ देवो व ÷ सविता प्रार्प्पयतु श्रेष्ठ्ठतमाय कर्म्मण ऽआप्पायद्ध्वम ꣳ या ऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा ऽअयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघश ꣳ सो द्ध्रूवा

3

ऽअस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वीर्य्यजमानस्य पशून्नपाहि।।२।। (पश्चिमे सामवेदज्ञस्य) ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये।। निहोता सत्सि बर्हिषि।।३।। (उत्तरे अथर्ववेदज्ञस्य) ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये।। शंय्योरभिस्रवन्तु नः ।।४।।

दिक्पालपूजनम्

(ऋग्वेदसहितं इन्द्रम् पूजयेत्)

त्रातारमिन्द्र मवितारमिन्द्रः ँ हवे हवे सुहव ँ शूरमिन्द्रम्।। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रथ्ठ स्वस्ति नो मधवा धात्विन्द्र ÷।।१।। (अग्निम्) ॐ त्वन्नो ऽअग्ने तव देवपायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्वश्च व्वन्ध।। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेष ँ रक्षमाणस्तव व्व्रते।।३।। (यजुर्वेदसहितं यमम्) ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा।। स्वाहा धर्म्माय स्वाहा धर्म्मः पित्रे।।४।। (निर्ऋतिम्) ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्बेत्यामन्विहि तस्करस्य।।अन्यमस्मदिच्छ सा त ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।।५।। (सामवेद-सहितं वरुणम्) ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्त दाशास्ते यजमानो हविर्ब्भि ÷।।अहेडमानो व्वरुणे ह बोद्ध्युरुश ँ स मा न ऽआयुः ष्प्रमोषीः।। (वायुम्) ॐ आनो नियुद्भिः शतिनीमिरध्वर ँ सहस्रिणीमिरुपयाहि यज्ञम्।। व्वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।७।। (अथर्व-वेदसहितं सोमम्) ॐ व्वय ँ सोम व्व्रते तब मनस्तनू ष विब्भ्रतः प्रजा वन्तः सचेमहि।। ॐ आप्यायस्व समेतु ते व्विश्वत ÷ सोम व्वृणयम्।। भवा व्वाजस्य सङ्गथे।।८।। (ईशानम्) ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुवस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्।। पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधो रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।९।। (ब्रह्माणम्) ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्व्वतासो व्वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः।। यः श ँ सते स्तुवते धायि पज्र ऽइन्द्रज्ज्येष्ठा ऽअस्म्मां २।। ऽअवन्तु देवाः।।१०।। (अनन्तम्) ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी। यच्छानः शर्म्म सप्प्रथाः।।

।। श्री गणेशाय नमः ।।

अथ श्री सत्यनारायण व्रत कथा

पहला अध्याय

श्री सत्यनारायण व्रत की महिमा तथा व्रत की विधि :

व्यास उवाच

एकदा नैमिषारण्ये ऋषयः शौनकादयः।
पप्रच्छुर्मुनयः सर्वे सूतं पौराणिकं खलु।। 1।।

श्री व्यासजी ने कहा— एक समय नैमिषारण्य तीर्थ में शौनक आदि सभी ऋषियों तथा मुनियों ने पुराण शास्त्र के वेत्ता श्री सूतजी महाराज से पूछा— ।। 1।।

ऋषय ऊचुः

व्रतेन तपसा किं वा प्राप्तये वाञ्छितं फलम्।
तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामः कथयस्व महामुने।। 2।।

ऋषियों ने कहा– महामुने ! किस व्रत अथवा तपस्या से मनोवाञ्छित फल प्राप्त होता है, उसे हम सब सुनना चाहते हैं, आप कहें ।। 2।।

सूत उवाच

नारदेनैव सम्पृष्टो भगवान् कमलापतिः।
सुरर्षये यथैवाह तच्छृणुध्वं समाहिताः।। 3।।
एकदा नारदो योगी परानुग्रहकांक्षया।
पर्यटन् विविधान् लोकान् मर्त्यलोकमुपागतः।। 4।।
ततो दृष्ट्वा जनान् सर्वान् नानाक्लेशसमन्वितान्।
नानायोनिसमुत्पन्नान् क्लिश्यमानान् स्वकर्मभिः।। 5।।

केनोपायेन चैतेषां दुःखनाशो भवेद् ध्रुवम्।
इति संचिन्त्य मनसा विष्णुलोकं गतस्तदा।।6।।

श्री सूतजी बोले—इसी प्रकार देवर्षि नारदजी के द्वारा भी पूछे जाने पर भगवान् कमलापति ने उनसे जैसा कहा था, उसे कह रहा हूँ, आप लोग सावधान होकर सुनें। एक समय योगी नारदजी लोगों के कल्याण की कामना से विविध लोकों में भ्रमण करते हुए मृत्यु लोक में आये और यहाँ उन्होंने अपने कर्मफल के अनुसार नाना योनियों में उत्पन्न सभी प्राणियों को अनेक प्रकार के क्लेश-दुःख भोगते हुए देखा तथा 'किस उपाय से इनके दुःखों का सुनिश्चित रूप से नाश हो सकता है', ऐसा मन में विचार करके ये वे विष्णुलोक गये।। 3-6।।

तत्र नारायणं देवं शुक्लवर्णं चतुर्भुजम्।
शङ्खचक्रगदापद्मवनमालाविभूषितम् ।।7।।
दृष्ट्वा तं देवदेवेशं स्तोतुं समुपचक्रमे।

वहाँ चार भुजाओं वाले और शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म तथा वनमाला से विभूषित शुक्लवर्ण भगवान नारायण का दर्शन कर उन देवाधिदेव की वे स्तुति करने लगे।। 7।।

नारद उवाच

नमो वाङ्मनसातीतरूपायानन्तशक्तये।।8।।
आदिमध्यान्तहीनाय निर्गुणाय गुणात्मने।
सर्वेषामादिभूताय भक्तानामार्तिनाशिने।।9।।
श्रुत्वा स्तोत्रं ततो विष्णुर्नारदं प्रत्यभाषत।

नारदजी बोले— हे वाणी और मन से परे स्वरूपवाले अनन्त शक्ति सम्पन्न, आदि-मध्य और अन्त से रहित, निर्गुण और सकल कल्याणमय गुणों से सम्पन्न, स्थावर-जङ्गमात्मक निखिल सृष्टिप्रपञ्च के कारणभूत तथा भक्तों की पीड़ा नष्ट करनेवाले हे परमात्मन्! आपको नमस्कार है। स्तुति सुनने के अनन्तर भगवान् श्री विष्णु ने नारद जी से कहा-।। ८-९।।

श्रीभगवानुवाच

किमर्थमागतोऽसि त्वं किं ते मनसि वर्तते।
कथयस्व महाभाग तत्सर्वं कथयामि ते।। 10।।

श्री भगवान ने कहा— महाभाग! आप किस प्रयोजन से यहाँ आये हैं, आपके मन में क्या है, कहियें, वह सब कुछ मैं आपको बताऊँगा।। 10।।

नारद उवाच

मर्त्यलोके जनाः सर्वे नानाक्लेशसमन्विताः।
नानायोनिसमुत्पन्नाः पच्यन्ते पापकर्मभिः।। 11।।
तत्कथं शमयेन्नाथ लघूपायेन तद्वद।
श्रोतुमिच्छामि तत्सर्वं कृपास्ति यदि ते मयि।। 12।।

नारदजी बोले— [भगवन्!] मृत्युलोक में अपने पापकर्मों के द्वारा विभिन्न योनियों में उत्पन्न सभी लोग बहुत प्रकार के क्लेशों से दुःखी हो रहे हैं। हे नाथ! किस लघु उपाय से उनके कष्टों का निवारण हो सकेगा, यदि आपकी मेरे ऊपर कृपा है तो वह सब मैं सुनना चाहता हूँ। उसे बतायें।। 11-12।।

श्रीभगवानुवाच

साधु पृष्टं त्वया वत्स लोकानुग्रहकाङ्क्षया।
यत्कृत्वा मुच्यते मोहात् तच्छृणुष्व वदामि ते।। 13।।
व्रतमस्ति महत्पुण्यं स्वर्गे मर्त्ये च दुर्लभम्।
तव स्नेहान्मया वत्स प्रकाशः क्रियतेऽधुना।। 14।।
सत्यनारायणस्यैव व्रतं सम्यग्विधानतः।
कृत्वा सद्यः सुखं भुक्त्वा परत्र मोक्षमाप्नुयात्।। 15।।
तच्छ्रुत्वा भगवद्वाक्यं नारदो मुनिरब्रवीत्।

श्री भगवान ने कहा— हे वत्स! संसार के ऊपर अनुग्रह करने की इच्छा से आपने बहुत अच्छी (उत्तम) बात पूछी है। जिस [व्रत] -के करने

से प्राणी मोह से मुक्त हो जाता है, उसे आपको बताता हूँ, सुनें। हे वत्स! स्वर्ग और मृत्युलोक में दुर्लभ [भगवान सत्यनारायण का] एक महान् पुण्यप्रद व्रत है। आपके स्नेह के कारण इस समय मैं उसे कह रहा हूँ। 'अच्छी प्रकार विधि-विधान से भगवान् सत्यनारायण का व्रत करके मनुष्य शीघ्र ही सुख प्राप्त कर परलोक में मोक्ष प्राप्त कर सकता है।' भगवान् की ऐसी वाणी सुनकर नारद मुनि ने कहा- ।। 13-15 ।।

नारद उवाच

किं फलं किं विधानं च कृतं केनैव तद् व्रतम् ।। 16 ।।
तत्सर्वं विस्तराद् ब्रूहि कदा कार्यं व्रतं प्रभो।

नारदजी बोले— प्रभो! इस व्रत को करने का फल क्या है, इसका विधान क्या है, इस व्रत को किसने किया और कब इसे करना चाहिये? यह सब विस्तार पूर्वक बतलाइये.।। 16 ।।

श्रीभगवानुवाच

दुःखशोकादिशमनं धनधान्यप्रवर्धनम् ।। 17 ।।
सौभाग्यसंततिकरं सर्वत्र विजयप्रदम्।
यस्मिन् कस्मिन् दिने मर्त्यो भक्तिश्रद्धासमन्वितः ।। 18 ।।
सत्यनारायणं देवं यजेच्चैव निशामुखे।
ब्राह्मणैर्बान्धवैश्चैव सहितो धर्मतत्परः ।। 19 ।।
नैवेद्यं भक्तितो दद्यात् सपादं भक्ष्यमुत्तमम्।
रम्भाफलं घृतं क्षीरं गोधूमस्य च चूर्णकम् ।। 20 ।।
अभावे शालिचूर्णं वा शर्करा वा गुडस्तथा।
सपादं सर्वभक्ष्याणि चैकीकृत्य निवेदयेत् ।। 21 ।।

श्री भगवानने कहा— यह सत्यनारायण का व्रत दुःख-शोक आदि का शमन करनेवाला, धन-धान्य की वृद्धि करनेवाला, सौभाग्य और संतान देनेवाला तथा सर्वत्र विजय प्रदान करनेवाला है। जिस-किसी भी दिन भक्ति और श्रद्धा से समन्वित होकर मनुष्य ब्राह्मणों और बन्धु-

बान्धवों के साथ धर्म में तत्पर होकर सायंकाल भगवान् सत्यनारायण की पूजा करें। नैवेद्य के रूप में उत्तम कोटि के भोजनीय पदार्थ को सवाया मात्रा में भक्तिपूर्वक अर्पित करना चाहिये। केले का फल, घी, दूध, गेहूँ का चूर्ण अथवा गेहूँ के चूर्ण के अभाव में साठी चावल का चूर्ण, शक्कर या गुड़-यह सब भक्ष्य सामग्री सवाया मात्रा में एकत्र कर भगवान को अर्पण करना चाहिये।। 17-21।।

विप्राय दक्षिणां दद्यात् कथां श्रुत्वा जनैः सह।
ततश्च बन्धुभिः सार्धं विप्रांश्च प्रतिभोजयेत्।। 22।।
प्रसादं भक्षयेद् भक्त्या नृत्यागीतादिकं चरेत्।
ततश्च स्वगृहं गच्छेत् सत्यनारायणं स्मरन्।। 23।।
एवं कृते मनुष्याणां वाञ्छासिद्धिर्भवेद् ध्रुवम्।
विशेषतः कलियुगे लघूपायोऽस्ति भूतले।। 24।।

।। इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे श्रीसत्यनारायणव्रतकथायां प्रथमोऽध्यायः।। 1।।

बन्धु-बान्धवों के साथ श्री सत्यनारायण भगवान् की कथा सुनकर ब्राह्मण को दक्षिणा देनी चाहिये। तदनन्तर बन्धु-बान्धवों के साथ ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये। भक्तिपूर्वक प्रसाद ग्रहण करके नृत्य-गीत आदि का आयोजन करना चाहिये। तदनन्तर भगवान् सत्यनारायण का स्मरण करते हुए अपने घर जाना चाहिये। ऐसा करने से मनुष्यों की अभिलाषा अवश्य ही पूर्ण होती है। विशेष रूप से कलियुग में, पृथ्वीलोक में यह सबसे छोटा-सा उपाय है।। 22-24।।

।। इस प्रकार श्रीस्कन्दपुराण के अन्तर्गत रेवाखण्ड में श्री सत्यनारायण व्रत कथा का यह पहला अध्याय पूरा हुआ।। 1।।

दूसरा अध्याय

(निर्धन ब्राह्मण तथा काष्ठ विक्रेता की कथा)

सूत उवाच

अथान्यत् सम्प्रवक्ष्यामि कृतं येन पुरा द्विजाः।
कश्चित् काशीपुरे रम्ये ह्यासीद् विप्रोऽतिनिर्धनः।। 1।।
क्षुत्तृड्भ्यां व्याकुलो भूत्वा नित्यं बभ्राम भूतले।
दुःखितं ब्राह्मणं दृष्ट्वा भगवान् ब्राह्मणप्रियः।। 2।।
वृद्धब्राह्मणरूपस्तं पप्रच्छ द्विजमादरात्।
किमर्थं भ्रमसे विप्र! महीं नित्यं सुदुःखितः।। 3।।
तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि कथ्यतां द्विजसत्तम।

श्री सूतजी बोले— हे द्विजो! अब मैं पुनः पूर्वकाल में जिसने इस सत्यनारायण व्रत को किया था, उसे भलीभाँति विस्तारपूर्वक कहूँगा। रमणीय काशी नामक नगर में कोई अत्यन्त निर्धन ब्राह्मण रहता था। भूख और प्यास से व्याकुल होकर वह प्रतिदिन पृथ्वी पर भटकता रहता था। ब्राह्मणप्रिय भगवान् ने उस दुःखी ब्राह्मण को देखकर वृद्ध ब्राह्मण का रूप धारण करके उस द्विज से आदरपूर्वक पूछा- हे विप्र! प्रतिदिन अत्यन्त दुःखी होकर तुम किस लिये पृथ्वी पर भ्रमण करते रहते हो। हे द्विजश्रेष्ठ! यह सब बतलाओ, मैं सुनना चाहता हूँ।। 1-3।।

ब्राह्मण उवाच

ब्राह्मणोऽतिदरिद्रोऽहं भिक्षार्थं वै भ्रमे महीम्।। 4।।
उपायं यदि जानासि कृपया कथय प्रभो!

ब्राह्मण बोला— प्रभो! मैं अत्यन्त दरिद्र ब्राह्मण हूँ और भिक्षा के लिये ही पृथ्वी पर घूमा करता हूँ। यदि [मेरी इस दरिद्रता को दूर करने का] आप कुछ उपाय जानते हों तो कृपापूर्वक बतलाइये।। 4।।

वृद्धब्राह्मण उवाच

सत्यनारायणो विष्णुर्वाञ्छितार्थफलप्रदः ।। 5 ।।
तस्य त्वं पूजनं विप्र कुरुष्व व्रतमुत्तमम्।
यत्कृत्वा सर्वदुःखेभ्यो मुक्तो भवति मानवः ।। 6 ।।
विधानं च व्रतस्यापि विप्रायाभाष्य यत्नतः।
सत्यनारायणो वृद्धस्तत्रैवान्तरधीयत् ।। 7 ।।
तद् व्रतं संकरिष्यामि यदुक्तं ब्राह्मणेन वै।
इति संचिन्त्यविप्रोऽसौ रात्रौ निद्रां न लब्धवान् ।। 8 ।।

वृद्ध ब्राह्मण ने कहा— [हे ब्राह्मणदेव!] सत्यनारायण भगवान् विष्णु अभीष्ट फल को देनेवाले हैं। हे विप्र! तुम उनका उत्तम व्रत एवं पूजन करो, जिसे करने से मनुष्य सभी दुःखों से मुक्त हो जाता है और व्रत के विधान को भी ब्राह्मण से यत्नपूर्वक कहकर वृद्ध ब्राह्मण रूप धारी भगवान् सत्यनारायण वहीं पर अन्तर्ध्यान हो गये। 'वृद्ध ब्राह्मण ने जैसा कहा है, उस व्रत को अच्छी प्रकार से वैसे ही करूँगा'—यह सोचते हुए उस ब्राह्मण को रात में नींद नहीं आयी ।। 5-8 ।।

ततः प्रातः समुत्थाय सत्यनारायणव्रतम्।
करिष्ये इति संकल्प्य भिक्षार्थमगमद् द्विजः ।। 9 ।।
तस्मिन्नेव दिने विप्रः प्रचुरं द्रव्यमाप्तवान्।
तेनैव बन्धुभिः सार्धं सत्यस्य व्रतमाचरत् ।। 10 ।।
सर्वदुःखविनिर्मुक्तः सर्वसम्पत्समन्वितः।
बभूव स द्विजश्रेष्ठो व्रतस्यास्य प्रभावतः ।। 11 ।।
ततः प्रभृतिकालं च मासि मासि व्रतं कृतम्।
एवं नारायणस्येदं व्रतं कृत्वा द्विजोत्तमः।
सर्वपापविनिर्मुक्तो दुर्लभं मोक्षमाप्तवान् ।। 12 ।।

तदनन्तर प्रातःकाल उठकर 'सत्यनारायण का व्रत करूँगा' ऐसा संकल्प करके वह ब्राह्मण भिक्षा के लिये चल पड़ा। उस दिन ब्राह्मण को

[भिक्षा में] बहुत-सा धन प्राप्त हुआ। उसी धन से उसने बन्धु-बान्धवों के साथ भगवान् सत्यनारायण का व्रत किया। इस व्रत के प्रभाव से वह श्रेष्ठ ब्राह्मण सभी दु:खों से मुक्त होकर समस्त सम्पत्तियों से सम्पन्न हो गया। उस दिन से लेकर प्रत्येक महीने उसने यह व्रत किया। इस प्रकार भगवान सत्यनारायण के इस व्रत को करके वह श्रेष्ठ ब्राह्मण सभी पापों से मुक्त हो गया और उसने दुर्लभ मोक्षपद को प्राप्त किया।। 9-12।।

व्रतमस्य यदा विप्र पृथिव्यां संकरिष्यति।
तदैव सर्वदु:खं तु मनुजस्य विनश्यति।। 13।।
एवं नारायणेनोक्तं नारदाय महात्मने।
मया तत्कथितं विप्राः किमन्यत् कथयामि ते।। 14।।

हे विप्र! पृथ्वी पर जब भी कोई मनुष्य श्री सत्यनारायण का व्रत करेगा, उसी समय उसके समस्त दु:ख नष्ट हो जायेंगे। हे ब्राह्मणों! इस प्रकार भगवान नारायण ने महात्मा नारदजी से जो कुछ कहा, मैंने वह सब आप लोगों से कह दिया, आगे अब और क्या कहूँ? ।। 13-14।।

ऋषय ऊचु:

तस्माद् विप्राच्छ्रुतं केन पृथिव्यां चरितं मुने।
तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामः श्रद्धाऽस्माकं प्रजायते।। 15।।

ऋषियोंने कहा— हे मुने! इस पृथ्वी पर उस ब्राह्मण से सुने हुए इस व्रत को किसने किया? हम वह सब सुनना चाहते हैं, [उस व्रत पर] हमारी श्रद्धा हो रही है।। 15।।

सूत उवाच

श्रृणुध्वं मुनयः सर्वे व्रतं येन कृतं भुवि।
एकदा स द्विजवरो यथाविभवविस्तरैः।। 16।।
बन्धुभिः स्वजनैः सार्धं व्रतं कर्तुं समुद्यतः।
एतस्मिन्नन्तरे काले काष्ठक्रेता समागमत्।। 17।।

बहिः काष्ठं च संस्थाप्य विप्रस्य गृहमाययौ।
तृष्णया पीडितात्मा च दृष्ट्वा विप्रं कृतं व्रतम्।। 18।।
प्रणिपत्य द्विजं प्राह किमिदं क्रियते त्वया।
कृते किं फलमाप्नोति विस्तराद् वद मे प्रभो।। 19।।

श्री सूतजी बोले— हे मुनियों! पृथ्वी पर जिसने यह व्रत किया, उसे आप लोग सुनें। एक बार वह द्विजश्रेष्ठ अपनी धन-सम्पत्ति के अनुसार बन्धु-बान्धवों तथा पारिवारिक जनों के साथ व्रत करने के लिये उद्यत हुआ। इसी बीच एक लकड़हारा वहाँ आया और लकड़ी बाहर रखकर उस ब्राह्मण के घर गया। प्यास से व्याकुल वह उस ब्राह्मण को व्रत करता हुआ देख प्रणाम करके उससे बोला— प्रभो! आप यह क्या कर रहे हैं, इसके करने से किस फल की प्राप्ति होती है, विस्तारपूर्वक मुझसे कहिये।। 16-19।।

विप्र उवाच

सत्यनारायणस्येदं व्रतं सर्वेप्सितप्रदम्।
तस्य प्रसादान्मे सर्वं धनधान्यादिकं महत्।। 20।।
तस्मादेतद् व्रतं ज्ञात्वा काष्ठक्रेताऽतिहर्षितः।
पपौ जलं प्रसादं च भुक्त्वा स नगरं ययौ।। 21।।
सत्यनारायणं देवं मनसा इत्यचिन्तयत्।
काष्ठं विक्रयतो ग्रामे प्राप्यते चाद्य यद् धनम्।। 22।।
तेनैव सत्यदेवस्य करिष्ये व्रतमुत्तमम्।
इति संचिन्त्य मनसा काष्ठं धृत्वा तु मस्तके।। 23।।
जगाम नगरे रम्ये धनिनां यत्र संस्थितिः।
तद्दिने काष्ठमूल्यं च द्विगुणं प्राप्तवानसौ।। 24।।

विप्र ने कहा—यह सत्यनारायण का व्रत है, जो सभी मनोरथों को प्रदान करनेवाला है। उसी के प्रभाव से मुझे यह सब महान् धन-धान्य आदि प्राप्त हुआ है। जल पीकर तथा प्रसाद ग्रहण करके वह नगर चला

गया। सत्यनारायण देव के लिये मन से ऐसा सोचने लगा कि 'आज लकड़ी बेचने से जो धन प्राप्त होगा, उसी धन से भगवान् सत्यनारायण का श्रेष्ठ व्रत करूँगा।' इस प्रकार मन से चिन्तन करता हुआ लकड़ी को मस्तक पर रखकर उस सुन्दर नगर में गया, जहाँ धन-सम्पन्न लोग रहते थे। उस दिन उसे लकड़ी का दुगुना मूल्य प्राप्त हुआ।। 20-24।।

ततः प्रसन्नहृदयं सुपक्वं कदलीफलम्।
शर्कराघृतदुग्धं च गोधूमस्य च चूर्णकम्।। 25।।
कृत्वैकत्र सपादं च गृहीत्वा स्वगृहं ययौ।
ततौ बन्धून् समाहूय चकार विधिना व्रतम्।। 26।।
तद् व्रतस्य प्रभावेण धनपुत्रान्वितोऽभवत्।
इहलोके सुखं भुक्त्वा चान्ते सत्यपुरं ययौ।। 27।।

।। इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे श्रीसत्यनारायणव्रतकथायां द्वितीयोऽध्यायः ।। 2।।

तदनन्तर प्रसन्न-हृदय होकर वह पके हुए केले का फल, शर्करा, घी, दूध और गेहूँ का चूर्ण सवाया मात्रा में लेकर अपने घर गया। तत्पश्चात् उसने [अपने] बान्धवों को बुलाकर विधि-विधान से भगवान् सत्य-नारायण का व्रत किया। उस व्रत के प्रभाव से वह धन-पुत्र से सम्पन्न हो गया और इस लोक में अनेक सुखों का उपभोग कर अन्त में सत्यपुर (वैकुण्ठलोक) चला गया।। 25-27।।

।। इस प्रकार श्री स्कन्द पुराण के अन्तर्गत रेवाखण्ड में श्री सत्यनारायण व्रत कथा का यह दूसरा अध्याय पूरा हुआ।। 2।।

तीसरा अध्याय

(राजा उल्कामुख, साधु वणिक् एवं लीलावती-कलावती की कथा)

सूत उवाच

पुनरग्रे प्रवक्ष्यामि श्रृणुध्वं मुनिसत्तमाः।
पुरा चोल्कामुखो नाम नृपश्चासीन्महामतिः।। 1।।

जितेन्द्रियः सत्यवादी ययौ देवालयं प्रति।
दिने दिने धनं दत्त्वा द्विजान् संतोषयत् सुधीः ।। 2 ।।
भार्या तस्य प्रमुग्धा च सरोजवदना सती।
भद्रशीलानदीतीरे सत्यस्य व्रतमाचरत् ।। 3 ।।
एतस्मिन्नन्तरे तत्र साधुरेकः समागतः।
वाणिज्यार्थं बहुधनैरनेकैः परिपूरितः ।। 4 ।।
नावं संस्थाप्य तत्तीरे जगाम नृपतिं प्रति।
दृष्ट्वा स व्रतिनं भूपं पप्रच्छ विनयान्वितः ।। 5 ।।

श्री सूतजी बोले—श्रेष्ठ मुनियो! अब मैं पुनः आगे की कथा कहूँगा, आप लोग सुनें। प्राचीन काल में उल्कामुख नाम का एक राजा था। वह जितेन्द्रिय, सत्यवादी तथा अत्यन्त बुद्धिमान् था। वह विद्वान् राजा प्रतिदिन देवालय में जाता और ब्राह्मणों को धन देकर संतुष्ट करता था। कमल के समान मुखवाली उसकी धर्मपत्नी शील, विनय एवं सौन्दर्य आदि गुणों से सम्पन्न तथा पतिपरायणा थी। राजा [एक दिन अपनी धर्मपत्नी के साथ] भद्रशीला नदी के तट पर श्री सत्यनारायण का व्रत कर रहा था। उसी समय व्यापार के लिये अनेक प्रकार की पुष्कल धनराशि से सम्पन्न एक साधु [वणिक्] वहाँ आया। भद्रशीला नदी के तट पर नाव को स्थापित कर वह राजा के समीप गया और राजा को उस व्रत में दीक्षित देखकर विनयपूर्वक पूछने लगा।। 1–5 ।।

साधुरुवाच

किमिदं कुरुषे राजन् भक्तियुक्तेन चेतसा।
प्रकाशं कुरु तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि साम्प्रतम् ।। 6 ।।

साधु ने कहा—राजन्! आप भक्तियुक्त चित्त से यह क्या कर रहे हैं? कृपया वह सब बताइये, इस समय मैं सुनना चाहता हूँ।। 6 ।।

राजोवाच

पूजनं क्रियते साधो विष्णोरतुलतेजसः।
व्रतं च स्वजनैः सार्धं पुत्राद्यावाप्तिकाम्यया ।। 7 ।।

राजा बोले—हे साधो! पुत्र आदि की प्राप्ति की कामना से अपने बन्धु-बान्धवों के साथ मैं अतुल तेजसम्पन्न भगवान् विष्णु का व्रत एवं पूजन कर रहा हूँ।।7।।

भूपस्य वचनं श्रुत्वा साधुः प्रोवाच सादरम्।
सर्वं कथय मे राजन् करिष्येऽहं तवोदितम्।।8।।
ममापि संततिर्नास्ति ह्येतस्माज्जायते ध्रुवम्।
ततो निवृत्त्य वाणिज्यात् सानन्दो गृहमागतः।।9।।
भार्यायै कथितं सर्वं व्रतं संततिदायकम्।
तदा व्रतं करिष्यामि यदा मे संततिर्भवेत्।।10।।
इति लीलावती प्राह पत्नीं साधुः स सत्तमः।

राजा की बात सुनकर साधु ने आदरपूर्वक कहा—राजन्! इस विषय में आप मुझे सब कुछ विस्तार से बतलाइये, आपके कथनानुसार मैं [व्रत एवं पूजन] करूँगा। मुझे भी संतति नहीं है। 'इससे अवश्य ही संतति प्राप्त होगी'—ऐसा विचार कर वह व्यापार से निवृत्त हो आनन्द पूर्वक अपने घर आया। उसने अपनी भार्या से संतति प्रदान करने वाले इस सत्य व्रत को विस्तार पूर्वक बताया तथा—'जब मुझे संतति की प्राप्ति होगी तब मैं इस व्रत को करूँगा'— इस प्रकार उस साधु ने अपनी भार्या लीलावती से कहा।।8-10।।

एकस्मिन् दिवसे तस्य भार्या लीलावती सती।।11।।
भर्तृयुक्तानन्दचित्ताऽभवद् धर्मपरायणा।
गर्भिणी साऽभवत् तस्य भार्या सत्यप्रसादतः।।12।।
दशमे मासि वै तस्याः कन्यारत्नमजायत।
दिने दिने सा ववृधे शुक्लपक्षे यथा शशी।।13।।
नाम्ना कलावती चेति तन्नामकरणं कृतम्।
ततो लीलावती प्राह स्वामिनं मधुरं वचः।।14।।
न करोषि किमर्थं वै पुरा संकल्पितं व्रतम्।

एक दिन उसकी लीलावती नाम की सती-साध्वी भार्या पति के साथ आनन्द चित्त से ऋतुकालीन धर्माचरण में प्रवृत्त हुई और भगवान् श्री सत्यनारायण की कृपा से उसकी भार्या गर्भिणी हुई। दसवें महीने में उससे कन्या रत्न की उत्पत्ति हुई और वह शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की भाँति दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी। उस कन्या का 'कलावती' यह नाम रखा गया। इसके बाद एक दिन लीलावती ने अपने स्वामी से मधुर वाणी में कहा—आप पूर्व में संकल्पित श्री सत्यनारायण के व्रत को क्यों नहीं कर रहे हैं?।। 11-14।।

साधुरुवाच

विवाहसमये त्वस्याः करिष्यामि व्रतं प्रिये।। 15।।
इति भार्यां समाश्वास्य जगाम नगरं प्रति।
ततः कलावती कन्या ववृधे पितृवेश्मनि।। 16।।
दृष्ट्वा कन्यां ततः साधुर्नगरे सखिभिः सह।
मन्त्रयित्वा द्रुतं दूतं प्रेषयामास धर्मवित्।। 17।।
विवाहार्थं च कन्याया वरं श्रेष्ठं विचारय।
तेनाज्ञप्तश्च दूतोऽसौ काञ्चनं नगरं ययौ।। 18।।
तस्मादेकं वणिक्पुत्रं समादायाऽऽगतो हि सः।
दृष्ट्वा तु सुन्दरं बालं वणिक्पुत्रं गुणान्वितम्।। 19।।
ज्ञातिभिर्बन्धुभिः सार्धं परितुष्टेन चेतसा।
दत्तवान् साधुपुत्राय कन्यां विधिविधानतः।। 20।।

साधु बोला—'प्रिये! इसके विवाह के समय व्रत करूँगा।' इस प्रकार अपनी पत्नी को भलीभाँति आश्वस्त कर [वह व्यापार करने के लिये] नगर की ओर चला गया। इधर कन्या कलावती पिता के घर में बढ़ने लगी। तदनन्तर धर्मज्ञ साधु ने नगर में सखियों के साथ [क्रीडा करती हुई अपनी] कन्या को विवाह योग्य देखकर आपस में मन्त्रणा करके 'कन्या के विवाह के लिये श्रेष्ठ वर का अन्वेषण करो'—ऐसा दूत से

कहकर शीघ्र ही उसे भेज दिया। उसकी आज्ञा प्राप्त करके दूत काञ्चन नामक नगर में गया और वहाँ से एक वणिक् का पुत्र लेकर आया। [उस] साधु ने उस वणिक् के पुत्र को सुन्दर और गुणों से सम्पन्न देखकर अपनी जाति के लोगों तथा बन्धु-बान्धवों के साथ संतुष्ट चित्त हो विधि-विधान से वणिक् पुत्र के हाथ में कन्या का दान कर दिया।। 15-20।।

ततोऽभाग्यवशात् तेन विस्मृतं व्रतमुत्तमम्।
विवाहसमये तस्यास्तेन रुष्टोऽभवत् प्रभुः।। 21।।
ततः कालेन नियतो निजकर्मविशारदः।
वाणिज्यार्थं ततः शीघ्रं जामातृसहितो वणिक्।। 22।।
रत्नसारपुरे रम्ये गत्वा सिन्धुसमीपतः।
वाणिज्यमकरोत् साधुर्जामात्रा श्रीमता सह।। 23।।
तौ गतौ नगरे रम्ये चन्द्रकेतोर्नृपस्य च।
एतस्मिन्नेव काले तु सत्यनारायणः प्रभुः।। 24।।
भ्रष्टप्रतिज्ञमालोक्य शापं तस्मै प्रदत्तवान्।
दारुणं कठिनं चास्य महद् दुःखं भविष्यति।। 25।।

उस समय वह (साधु वणिक्) दुर्भाग्यवश भगवान् का वह उत्तम व्रत भूल गया। [पूर्व-संकल्प के अनुसार] विवाह के समय में व्रत न करने के कारण भगवान् उस पर रुष्ट हो गये। कुछ समय के पश्चात् अपने व्यापार कर्म में कुशल वह साधु वणिक् काल की प्रेरणा से अपने दामाद के साथ व्यापार करने के लिये समुद्र के समीप स्थित रत्नसारपुर नामक सुन्दर नगर में गया और अपने श्रीसम्पन्न दामाद के साथ वहाँ व्यापार करने लगा। तदनन्तर वे दोनों राजा चन्द्रकेतु के रमणीय उस नगर में गये। उस समय भगवान् श्री सत्यनारायण ने उसे भ्रष्टप्रतिज्ञ देखकर 'इसे दारुण कठिन और महान् दुःख प्राप्त होगा'— यह शाप दे दिया।। 21-25।।

एकस्मिन् दिवसे राज्ञो धनमादाय तस्करः।
तत्रैव चागतश्चौरो वणिजौ यत्र संस्थितौ।। 26।।

तत्पश्चाद् धावकान् दूतान् दृष्ट्वा भीतेन चेतसा।
धनं संस्थाप्य तत्रैव स तु शीघ्रमलक्षितः।। 27।।
ततो दूताः समायाता यत्रास्ते सज्जनो वणिक्।
दृष्ट्वा नृपधनं तत्र बद्ध्वाऽऽनीतौ वणिक्सुतौ।। 28।।
हर्षेण धावमानाश्च प्रोचुर्नृपसमीपतः।
तस्करौ द्वौ समानीतौ विलोक्याज्ञापय प्रभो।। 29।।
राज्ञाऽऽज्ञप्तास्ततः शीघ्रं दृढं बध्वा तु तावुभौ।
स्थापितौ द्वौ महादुर्गे कारागारेऽविचारतः।। 30।।
मायया सत्यदेवस्य न श्रुतं कैस्तयोर्वचः।
अतस्तयोर्धनं राज्ञा गृहीतं चन्द्रकेतुना।। 31।।

एक दिन एक चोर राजा (चन्द्रकेतु) के धन को चुराकर वहीं आया, जहाँ दोनों वणिक् स्थित थे। वह अपने पीछे दौड़ते हुए दूतों को देखकर भयभीत चित्त से धन वहीं छोड़कर शीघ्र ही छिप गया। इसके बाद राजा के दूत वहाँ आ गये जहाँ वह साधु वणिक् था। वहाँ राजा के धन को देखकर वे दूत उन दोनों वणिक् पुत्रों को बाँधकर ले आये और हर्ष पूर्वक दौड़ते हुए राजा से बोले— 'प्रभो! हम दो चोर पकड़ लाये हैं, इन्हें देखकर आप आज्ञा दें।' राजा की आज्ञा से दोनों शीघ्र ही दृढ़ता पूर्वक बाँधकर बिना विचार किये महान् कारागार में डाल दिये गये। भगवान् सत्य देव की माया से किसी ने उन दोनों की बात नहीं सुनी और राजा चन्द्रकेतु ने उन दोनों का धन भी ले लिया।। 26-31।।

तच्छापाच्च तयोर्गेहे भार्या चैवातिदुःखिता।
चौरेणापहृतं सर्वं गृहे यच्च स्थितं धनम्।। 32।।
आधिव्याधिसमायुक्ता क्षुत्पिपासातिदुःखिता।
अन्नचिन्तापरा भूत्वा बभ्राम च गृहे गृहे।। 33।।

कलावती तु कन्यापि बभ्राम प्रतिवासरम्।
एकस्मिन् दिवसे याता क्षुधार्ता द्विजमन्दिरम्।
गत्वाऽपश्यद् व्रतं तत्र सत्यनारायणस्य च।। 34।।
उपविश्य कथां श्रुत्वा वरं प्रार्थितवत्यपि।
प्रसादभक्षणं कृत्वा ययौ रात्रौ गृहं प्रति।। 35।।

उन [भगवान्] के शाप से वणिक् के घर में उसकी भार्या भी अत्यन्त दुःखित हो गयी और उनके घर में सारा-का-सारा जो धन था, वह चोर ने चुरा लिया। वह [लीलावती] शारीरिक तथा मानसिक पीडाओं से युक्त, भूख और प्यास से दुःखी हो अन्न की चिन्ता से दर-दर भटकने लगी। कलावती कन्या भी [भोजन के लिये इधर-उधर] प्रतिदिन घूमने लगी। एक दिन क्षुधा से पीड़ित हो वह [कलावती] एक ब्राह्मण के घर गयी। वहाँ जाकर उसने श्री सत्यनारायण के व्रत-पूजन को देखा। वहाँ बैठकर उसने कथा सुनी और वरदान माँगा। तदनन्तर प्रसाद ग्रहण करके वह कुछ रात होने पर घर गयी।। 32-35।।

माता कलावतीं कन्यां कथयामास प्रेमतः।
पुत्रि ! रात्रौ स्थिता कुत्र किं ते मनसि वर्तते।। 36।।
कन्या कलावती प्राह मातरं प्रति सत्वरम्।
द्विजालये व्रतं मातर्दृष्टं वाञ्छितसिद्धिदम्।। 37।।
तच्छ्रुत्वा कन्यकावाक्यं व्रतं कर्तुं समुद्यता।
सा मुदा तु वणिग्भार्या सत्यनारायणस्य च।। 38।।
व्रतं चक्रे सैव साध्वी बन्धुभिः स्वजनैः सह।
भर्तृजामातरौ क्षिप्रमागच्छेतां स्वमाश्रमम्।। 39।।
अपराधं च मे भर्तुर्जामातुः क्षन्तुमर्हसि।
व्रतेनानेन तुष्टोऽसौ सत्यनारायणः पुनः।। 40।।
दर्शयामास स्वप्नं हि चन्द्रकेतुं नृपोत्तमम्।
वन्दिनौ मोचय प्रातर्वणिजौ नृपसत्तम।। 41।।

देयं धनं च तत्सर्वं गृहीतं यत् त्वयाऽधुना।
नो चेत् त्वां नाशयिष्यामि सराज्यधनपुत्रकम्।। 42।।

माता [लीलावती] ने कलावती कन्या से प्रेमपूर्वक पूछा— पुत्रि! रात में तू कहाँ रुक गयी थी? तुम्हारे मन में क्या है? कलावती कन्या ने तुरन्त माता से कहा— माँ! मैंने एक ब्राह्मण के घर में मनोरथ प्रदान करने वाला व्रत देखा है। कन्या की उस बात को सुनकर वह वणिक् की भार्या व्रत करने को उद्यत हुई और प्रसन्न मन से उस साध्वी ने बन्धु-बान्धवों के साथ भगवान् श्री सत्यनारायण का व्रत किया तथा इस प्रकार प्रार्थना की— 'भगवन्! आप हमारे पति एवं जामाता के अपराध को क्षमा करें। वे दोनों अपने घर शीघ्र आ जायँ।' इस व्रत से भगवान् सत्यनारायण पुनः सन्तुष्ट हो गये तथा उन्होंने नृपश्रेष्ठ चन्द्रकेतु को स्वप्न दिखाया और [स्वप्न में] कहा—'नृपश्रेष्ठ! प्रातःकाल दोनों वणिकों को छोड़ दो और वह सारा धन भी दे दो, जो तुमने उनसे इस समय ले लिया है; अन्यथा राज्य, धन एवं पुत्र सहित तुम्हारा सर्वनाश कर दूँगा'।। 36-42।।

एवमाभाष्य राजानं ध्यानगम्योऽभवत् प्रभुः।
ततः प्रभातसमये राजा च स्वजनैः सह।। 43।।
उपविश्य सभामध्ये प्राह स्वप्नं जनं प्रति।
बद्धौ महाजनौ शीघ्रं मोचय द्वौ वणिक्सुतौ।। 44।।
इति राज्ञो वचः श्रुत्वा मोचयित्वा महाजनौ।
समानीय नृपस्याग्रे प्राहुस्ते विनयान्विताः।। 45।।
आनीतौ द्वौ वणिक्पुत्रौ मुक्तौ निगडबन्धनात्।
ततो महाजनौ नत्वा चन्द्रकेतुं नृपोत्तमम्।। 46।।
स्मरन्तौ पूर्ववृत्तान्तं नोचतुर्भयविह्वलौ।
राजा वणिक्सुतौ वीक्ष्य वचः प्रोवाच सादरम्।। 47।।

राजा से स्वप्न में ऐसा कहकर भगवान् सत्यनारायण अन्तर्ध्यान हो गये। इसके अनन्तर प्रातःकाल राजा ने अपने सभासदों के साथ सभा के

मध्य बैठकर अपना स्वप्न लोगों को बताया और कहा—'दोनों बंदी वणिक् पुत्रों को शीघ्र ही मुक्त कर दो।' राजा की ऐसी बात सुनकर वे राजपुरुष दोनों महाजनों को बन्धन मुक्त करके राजा के सामने लाकर विनय पूर्वक बोले—महाराज! बेड़ी-बन्धन से मुक्त करके दोनों वणिक् पुत्र लाये गये हैं। इसके बाद दोनों महाजन (वणिक् पुत्र) नृपश्रेष्ठ चन्द्रकेतु को प्रणाम करके अपने पूर्व-वृत्तान्त का स्मरण करते हुए भयविह्वल हो गये और कुछ बोल न सके। राजा ने वणिक् पुत्रों को देखकर आदर पूर्वक कहा— ।।43-47।।

दैवात् प्राप्तं महद्दुःखमिदानीं नास्ति वै भयम्।
तदा निगडसंत्यागं क्षौरकर्माद्यकारयत्।।48।।
वस्त्रालङ्कारकं दत्त्वा परितोष्य नृपश्च तौ।
पुरस्कृत्य वणिक्पुत्रौ वचसाऽतोषयद् भृशम्।।49।।
पुरानीतं तु यद् द्रव्यं द्विगुणीकृत्य दत्तवान्।
प्रोवाच च ततो राजा गच्छ साधो निजाश्रमम्।।50।।
राजानं प्रणिपत्याह गन्तव्यं त्वत्प्रसादतः।
इत्युक्त्वा तौ महावैश्यौ जग्मतुः स्वगृहं प्रति।।51।।

।। इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे श्रीसत्यनारायणव्रतकथायां तृतीयोऽध्यायः।।3।।

'आप लोगों को प्रारब्धवश यह महान् दुःख प्राप्त हुआ है, इस समय अब कोई भय नहीं है,' ऐसा कहकर उनकी बेड़ी खुलवा कर क्षौरकर्म आदि कराया। राजा ने वस्त्र, अलंकार देकर उन दोनों वणिक् पुत्रों को संतुष्ट किया तथा सामने बुलाकर वाणी द्वारा अत्यधिक आनन्दित किया। पहले जो धन लिया था, उसे दूना करके दिया; तदनन्तर राजा ने पुनः उनसे कहा—'साधो! अब आप अपने घर को जायँ।' राजा को प्रणाम करके 'आपकी कृपा से हम जा रहे हैं'— ऐसा कहकर उन दोनों महावैश्यों ने अपने घर की ओर प्रस्थान किया।।48-51।।

।। इस प्रकार श्री स्कन्द पुराण के अन्तर्गत रेवाखण्ड में श्री सत्यनारायण कथा का यह तीसरा अध्याय पूरा हुआ।।3।।

चौथा अध्याय

(असत्य भाषण तथा भगवान् के प्रसाद की अवहेलना का परिणाम)

सूत उवाच

यात्रां तु कृतवान् साधुर्मङ्गलायनपूर्विकाम्।
ब्राह्मणेभ्यो धनं दत्त्वा तदा तु नगरं ययौ।। 1।।
कियद् दूरे गते साधो सत्यनारायणः प्रभुः।
जिज्ञासां कृतवान् साधो किमस्ति तव नौस्थितम्।। 2।।
ततो महाजनौ मत्तौ हेलया च प्रहस्य वै।
कथं पृच्छसि भो दण्डिन् मुद्रां नेतुं किमिच्छसि।। 3।।
लतापत्रादिकं चैव वर्तते तरणौ मम।
निष्ठुरं च वचः श्रुत्वा सत्यं भवतु ते वचः।। 4।।
एवमुक्त्वा गतः शीघ्रं दण्डी तस्य समीपतः।
कियद् दूरे ततो गत्वा स्थितः सिन्धुसमीपतः।। 5।।

श्री सूतजी बोले—साधु [वणिक्] मङ्गलाचरण कर और ब्राह्मणों को धन देकर अपने नगर के लिये चल पड़ा। साधु के कुछ दूर जाने पर भगवान् सत्यनारायण की [उसकी सत्यता की परीक्षा के विषय में] जिज्ञासा हुई—'साधो! तुम्हारी नाव में क्या भरा है?' तब धन के मद में चूर दोनों महाजनों ने अवहेलना पूर्वक हँसते हुए कहा—'दण्डिन! क्यों पूछ रहे हो? क्या कुछ द्रव्य लेने की इच्छा है? हमारी नाव में तो लता और पत्ते आदि भरे हैं।' ऐसी निष्ठुर वाणी सुनकर—'तुम्हारी बात सच हो जाय'—ऐसा कहकर दण्डी संन्यासी का रूप धारण किये हुए भगवान कुछ दूर जाकर समुद्र के समीप बैठ गये।। 1-5।।

गते दण्डिनि साधुश्च कृतनित्यक्रियस्तदा।
उत्थितां तरणीं दृष्ट्वा विस्मयं परमं ययौ।। 6।।

दृष्ट्वा लतादिकं चैव मूर्च्छितो न्यपतद् भुवि।
लब्धसंज्ञो वणिक्पुत्रस्ततश्चिन्तान्वितोऽभवत्।। 7।।
तदा तु दुहितुः कान्तो वचनं चेदमब्रवीत्।
किमर्थं क्रियते शोकः शापो दत्तश्च दण्डिना।। 8 ।।
शक्यते तेन सर्वं हि कर्तुं चात्र न संशयः।
अतस्तच्छरणं यामो वाञ्छितार्थो भविष्यति।। 9।।
जामातुर्वचनं श्रुत्वा तत्सकाशं गतस्तदा।
दृष्ट्वा च दण्डिनं भक्त्या नत्वा प्रोवाच सादरम्।। 10।।
क्षमस्व चापराधं मे यदुक्तं तव सन्निधौ।
एवं पुनः पुनर्नत्वा महाशोकाकुलोऽभवत्।। 11।।

दण्डी के चले जाने पर नित्य क्रिया करने के पश्चात् उतराई हुई (जल में ऊपर की ओर उठी हुई) नौका को देखकर साधु [वणिक्] अत्यन्त आश्चर्य में पड़ गया और नाव में लता और पत्ते आदि को देखकर मूर्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़ा। सचेत होने पर वणिक् पुत्र चिन्तित हो गया। तब उसके दामाद ने इस प्रकार कहा—'आप शोक क्यों करते हैं ? दण्डी ने शाप दे दिया है, इस स्थिति में वे ही [चाहें तो] सब कुछ कर सकते हैं, इसमें संशय नहीं। अतः उन्हीं की शरण में हम चलें, वहीं मन की इच्छा पूर्ण होगी।' दामाद (जामाता) की बात सुनकर वह [साधु वणिक्] उनके पास गया और वहाँ दण्डी को देखकर उसने भक्ति पूर्वक उन्हें प्रणाम किया तथा आदर पूर्वक कहने लगा— आपके सम्मुख मैंने जो कुछ कहा है। (असत्य भाषण रूप अपराध किया है), आप मेरे उस अपराध को क्षमा करें— ऐसा कहकर बारम्बार प्रणाम करके वह महान् शोक से आकुल हो गया।।6-11।।

प्रोवाच वचनं दण्डी विलपन्तं विलोक्य च।
मा रोदीः श्रृणु मद्वाक्यं मम पूजाबहिर्मुखः।। 12।।

ममाज्ञया च दुर्बुद्धे लब्धं दुःखं मुहुर्मुहुः।
तच्छ्रुत्वा भगवद्वाक्यं स्तुतिं कर्तुं समुद्यतः।। 13।।

दण्डी ने उसे रोता हुआ देखकर कहा—'हे मूर्ख! रोओ मत, मेरी बात सुनो। मेरी पूजा से उदासीन होने के कारण तथा मेरी आज्ञा से ही तुमने बारम्बार दुःख प्राप्त किया है।' भगवान् की ऐसी बाणी सुनकर वह उनकी स्तुति करने लगा—।। 12-13।।

साधुरुवाच

त्वन्मायामोहिताः सर्वे ब्रह्माद्यास्त्रिदिवौकसः।
न जानन्ति गुणान् रूपं तवाश्चर्यमिदं प्रभो।। 14।।
मूढोऽहं त्वां कथं जाने मोहितस्तव मायया।
प्रसीद पूजयिष्यामि यथाविभवविस्तरैः।। 15।।
पुरा वित्तं च तत् सर्वं त्राहि मां शरणागतम्।
श्रुत्वा भक्तियुतं वाक्यं परितुष्टो जनार्दनः।। 16।।

साधु ने कहा—'हे प्रभो! यह आश्चर्य की बात है कि आपकी माया से मोहित होने के कारण ब्रह्मा आदि देवता भी आपके गुणों और रूप को यथावत् रूप से नहीं जान पाते, फिर मैं मूर्ख आपकी माया से मोहित होने के कारण कैसे जान सकता हूँ! आप प्रसन्न हों। मैं अपनी धन-सम्पत्ति के अनुसार आपकी पूजा करूँगा। मैं आपकी शरण में आया हूँ। मेरा जो [नौका में स्थित] पुराना धन था, उसकी तथा मेरी रक्षा करें।' उस [वणिक्] की भक्तियुक्त वाणी सुनकर भगवान् जनार्दन संतुष्ट हो गये।। 14-16।।

वरं च वाञ्छितं दत्त्वा तत्रैवान्तर्दधे हरिः।
ततो नावं समारुह्य दृष्ट्वा वित्तप्रपूरिताम्।। 17।।
कृपया सत्यदेवस्य सफलं वाञ्छितं मम।
इत्युक्त्वा स्वजनैः सार्धं पूजां कृत्वा यथाविधि।। 18।।

हर्षेण चाभवत् पूर्णः सत्यदेवप्रसादतः।
नावं संयोज्य यत्नेन स्वदेशगमनं कृतम्।। 19।।
साधुर्जामातरं प्राह पश्य रत्नपुरीं मम।
दूतं च प्रेषयामास निजवित्तस्य रक्षकम्।। 20।।

भगवान् हरि उसे अभीष्ट वर प्रदान करके वहीं अन्तर्ध्यान हो गये। उसके बाद वह साधु अपनी नौका में चढ़ा और उसे धन-धान्य से परिपूर्ण देखकर 'भगवान सत्यदेव की कृपा से हमारा मनोरथ सफल हो गया'— ऐसा कहकर स्वजनों के साथ उसने भगवान् की विधिवत् पूजा की। भगवान् श्री सत्यनारायण की कृपा से वह आनन्द से परिपूर्ण हो गया और नाव को प्रयत्न पूर्वक सँभालकर उसने अपने देश के लिये प्रस्थान किया। साधु (वणिक्) ने अपने दामाद से कहा—'वह देखो मेरी रत्नपुरी नगरी दिखाई दे रही है।' इसके बाद उसने अपने धन से रक्षक दूत को अपने आगमन का समाचार देने के लिये अपनी नगरी में भेजा।। 17-20।।

ततोऽसौ नगरं गत्वा साधुभार्यां विलोक्य च।
प्रोवाच वाञ्छितं वाक्यं नत्वा बद्धाञ्जलिस्तदा।। 21।।
निकटे नगरस्यैव जामात्रा सहितो वणिक्।
आगतो बन्धुवर्गैश्च वित्तैश्च बहुभिर्युतः।। 22।।
श्रुत्वा दूतमुखाद् वाक्यं महाहर्षवती सती।
सत्यपूजां ततः कृत्वा प्रोवाच तनुजां प्रति।। 23।।
व्रजामि शीघ्रमागच्छ साधुसंदर्शनाय च।
इति मातृवचः श्रुत्वा व्रतं कृत्वा समाप्य च।। 24।।
प्रसादं च परित्यज्य गता साऽपि पतिं प्रति।
तेन रुष्टः सत्यदेवो भर्तारं तरणिं तथा।। 25।।
संहृत्य च धनैः सार्धं जले तस्यावमज्जयत्।

तत्पश्चात् उस दूत ने नगर में जाकर साधु की भार्या को देख हाथ जोड़कर प्रणाम किया तथा उसके लिये अभीष्ट बात कही—'सेठजी

अपने दामाद तथा बन्धु वर्गों के साथ बहुत सारे धन-धान्य से सम्पन्न होकर नगर के निकट पधार गये हैं।' दूत के मुख से यह बात सुनकर वह महान् आनन्द से विह्वल हो गयी और उस साध्वी ने श्री सत्यनारायण की पूजा करके अपनी पुत्री से कहा—'मैं साधु के दर्शन के लिये जा रही हूँ, तुम शीघ्र आओ।' माता का ऐसा वचन सुनकर व्रत को समाप्त करके प्रसाद का परित्याग कर वह (कलावती) भी (अपने) पति का दर्शन करने के लिये चल पड़ी। इससे भगवान् सत्यनारायण रुष्ट हो गये और उन्होंने उसके पति को तथा नौका को धन के साथ हरण करके जल में डुबो दिया।। 21-25 ।।

ततः कलावती कन्या न विलोक्य निजं पतिम्।। 26 ।।
शोकेन महता तत्र रुदन्ती चापतद् भुवि ।
दृष्ट्वा तथाविधां नावं कन्यां च बहुदुःखिताम्।। 27 ।।
भीतेन मनसा साधुः किमाश्चर्यमिदं भवेत्।
चिन्त्यमानाश्च ते सर्वे बभूवुस्तरिवाहकाः ।। 28 ।।
ततो लीलावती कन्यां दृष्ट्वा सा विह्वलाऽभवत्।
विललापातिदुःखेन भर्तारं चेदमब्रवीत्।। 29 ।।
इदानीं नौकया सार्धं कथं सोऽभूदलक्षितः।
न जाने कस्य देवस्य हेलया चैव सा हृता।। 30 ।।
सत्यदेवस्य माहात्म्यं ज्ञातुं वा केन शक्यते।
इत्युक्त्वा विललापैव ततश्च स्वजनैः सह।। 31 ।।
ततो लीलावती कन्यां क्रोडे कृत्वा रुरोद ह।

इसके बाद कलावती कन्या अपने पति को न देख महान् शोक से रुदन करती हुई पृथ्वी पर गिर पड़ी। नाव का अदर्शन तथा कन्या को अत्यन्त दुःखी देख भयभीत मन से साधु [वणिक्] ने सोचा—यह क्या आश्चर्य हो गया? नाव का संचालन करनेवाले भी सभी चिन्तित हो गये। तदनन्तर वह लीलावती भी कन्या को देखकर विह्वल हो गयी और

अत्यन्त दु:ख से विलाप करती हुई अपने पति से बोली—'अभी-अभी नौका के साथ वह (दामाद) कैसे अलक्षित हो गया, न जाने किस देवता की उपेक्षा से वह नौका हरण कर ली गयी अथवा श्री सत्यनारायण का माहात्म्य कौन जा सकता है।' ऐसा कहकर वह स्वजनों के साथ विलाप करने लगी और कलावती कन्या को गोद में लेकर रोने लगी।।26-31।।

ततः कलावती कन्या नष्टे स्वामिनि दुःखिता।। 32।।
गृहीत्वा पादुके तस्यानुगन्तुं च मनोदधे।
कन्यायाश्चरितं दृष्ट्वा सभार्यः सज्जनो वणिक्।। 33।।
अतिशोकेन संतप्तश्चिन्तयामास धर्मवित्।
हृतं वा सत्यदेवेन भ्रान्तोऽहं सत्यमायया।। 34।।
सत्यपूजां करिष्यामि यथाविभवविस्तरैः।
इति सर्वान् समाहूय कथयित्वा मनोरथम्।। 35।।
नत्वा च दण्डवद् भूमौ सत्यदेवं पुनः पुनः।
ततस्तुष्टः सत्यदेवो दीनानां परिपालकः।। 36।।
जगाद वचनं चैनं कृपया भक्तवत्सलः।
त्यक्त्वा प्रसादं ते कन्या पतिं द्रष्टुं समागता।। 37।।
अतोऽदृष्टोऽभवत् तस्याः कन्यकायाः पतिर्ध्रुवम्।
गृहं गत्वा प्रसादं च भुक्त्वा साऽऽयाति चेत् पुनः।। 38।।
लब्धभर्त्री सुता साधो भविष्यति न संशयः।

कलावती कन्या भी अपने पति के नष्ट हो जाने पर दु:खी हो गयी और पति की पादुका लेकर उनका अनुगमन करने के लिये उसने मन में निश्चय किया। कन्या के इस प्रकार के आचरण को देख भार्या सहित वह धर्मज्ञ साधु वणिक् अत्यन्त शोक-संतप्त हो गया और सोचने लगा—या तो भगवान् सत्यनारायण ने यह [दामाद के साथ धन-धान्य से भरी इस नौका का] अपहरण किया है अथवा हम सभी भगवान् सत्यदेव की माया

से मोहित हो गये हैं। 'अपनी धन-शक्ति के अनुसार मैं भगवान् सत्य-नारायण की पूजा करूँगा'—सभी को बुलाकर इस प्रकार कहकर उसने अपने मन की इच्छा प्रकट की और बारम्बार भगवान् सत्यदेव को दण्डवत् प्रणाम किया। इससे दीनों के परिपालक भगवान् सत्यदेव प्रसन्न हो गये। भक्त वत्सल भगवान् ने कृपापूर्वक कहा—'तुम्हारी कन्या प्रसाद छोड़कर अपने पति को देखने चली आयीं है, निश्चय ही इसी कारण उसका पति अदृश्य हो गया है। यदि घर जाकर प्रसाद ग्रहण करके वह पुन: आये तो हे साधो! तुम्हारी पुत्री पति को प्राप्त करेगी-इसमें संशय नहीं'।।32-38।।

कन्यका तादृशं वाक्यं श्रुत्वा गगनमण्डलात्।।39।।
क्षिप्रं तदा गृहं गत्वा प्रसादं च बुभोज सा।
पश्चात् सा पुनरागत्य ददर्श स्वजनं पतिम्।।40।।
ततः कलावती कन्या जगाद पितरं प्रति।
इदानीं च गृहं यामि विलम्बं कुरुषे कथम्।।41।।
तच्छ्रुत्वा कन्यकावाक्यं संतुष्टोऽभूद् वणिक्सुतः।
पूजनं सत्यदेवस्य कृत्वा विधिविधानतः।।42।।
धनैर्बन्धुगणैः सार्धं जगाम निजमन्दिरम्।
पौर्णमास्यां च संक्रान्तौ कृतवान् सत्यस्य पूजनम्।।43।।
इहलोके सुखं भुक्त्वा चान्ते सत्यपुरं ययौ।।44।।

।। इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे श्रीसत्यनारायणव्रतकथायां चतुर्थोऽध्यायः।।4।।

कन्या (कलावती) भी आकाश मण्डल से ऐसी वाणी सुनकर शीघ्र ही घर गयी और उसने प्रसाद ग्रहण किया। पुन: आकर स्वजनों तथा अपने पति को देखा। तब कलावती कन्या ने अपने पिता से कहा—'अब तो घर चलें, विलम्ब क्यों कर रहे हैं?' कन्या की वह बात सुनकर वणिक् पुत्र संतुष्ट हो गया और विधि-विधान से भगवान् सत्यनारायण का पूजन करके धन तथा बन्धु-बान्धवों के साथ अपने घर गया। तदनन्तर

पूर्णिमा तथा संक्रान्ति-पर्वों पर भगवान् सत्यनारायण का पूजन करते हुए इस लोक में सुख भोगकर अन्त में वह सत्यपुर (वैकुण्ठलोक) में चला गया।।39-44।।

इस प्रकार श्री स्कन्द पुराण के अन्तर्गत रेवाखण्ड में श्री सत्यनारायण व्रत कथा का यह चौथा अध्याय पूरा हुआ।।4।।

पाँचवाँ अध्याय

(राजा तुङ्गध्वज और गोपगणों की कथा)

सूत उवाच

अथान्यच्च प्रवक्ष्यामि श्रृणुध्वं मुनिसत्तमाः।
आसीत् तुङ्गध्वजो राजा प्रजापालनतत्परः।।1।।
प्रसादं सत्यदेवस्य त्यक्त्वा दुःखमवाप सः।
एकदा स वनं गत्वा हत्वा बहुविधान् पशून्।।2।।
आगत्य वटमूलं च दृष्ट्वा सत्यस्य पूजनम्।
गोपाः कुर्वन्ति संतुष्टा भक्तियुक्ताः सबान्धवाः।।3।।
राजा दृष्ट्वा तु दर्पेण न गतो न ननाम सः।
ततो गोपगणाः सर्वे प्रसादं नृपसंनिधौ।।4।।
संस्थाप्य पुनरागत्य भुक्त्वा सर्वे यथेप्सितम्।
ततः प्रसादं संत्यज्य राजा दुःखमवाप सः।।5।।

श्री सूतजी बोले—श्रेष्ठ मुनियों! अब इसके बाद मैं दूसरी कथा कहूँगा, आप लोग सुनें। अपनी प्रजा का पालन करने में तत्पर तुङ्गध्वज नामक एक राजा था। उसने सत्यदेव के प्रसाद का परित्याग करके दुःख प्राप्त किया। एक बार वह वन में जाकर और वहाँ बहुत-से पशुओं को मारकर वटवृक्ष के नीचे आया। वहाँ उसने देखा कि गोपगण बन्धु-बान्धवों के साथ संतुष्ट होकर भक्तिपूर्वक भगवान् सत्यदेव की पूजा कर रहे हैं।

राजा यह देखकर भी अहंकारवश न तो वहाँ गया और न उसने भगवान् सत्यनारायण को प्रणाम ही किया। इसके बाद (पूजन के अनन्तर) सभी गोपगण भगवान् का प्रसाद राजा के समीप रखकर वहाँ से लौट आये और इच्छानुसार उन सभी ने भगवान् का प्रसाद ग्रहण किया। इधर राजा को प्रसाद का परित्याग करने से बहुत दुःख हुआ।। 1-5।।

तस्य पुत्रशतं नष्टं धनधान्यादिकं च यत्।
सत्यदेवेन तत्सर्वं नाशितं मम निश्चितम्।। 6।।
अतस्तत्रैव गच्छामि यत्र देवस्य पूजनम्।
मनसा तु विनिश्चित्य ययौ गोपालसन्निधौ।। 7।।
ततोऽसौ सत्यदेवस्य पूजां गोपगणैः सह।
भक्तिश्रद्धान्वितो भूत्वा चकार विधिना नृपः।। 8।।
सत्यदेवप्रसादेन धनपुत्रान्वितोऽभवत्।
इहलोके सुखं भुक्त्वा चान्ते सत्यपुरं ययौ।। 9।।

उसका सम्पूर्ण धन-धान्य एवं सभी सौ पुत्र नष्ट हो गये। राजा ने मन में यह निश्चय किया कि अवश्य ही भगवान सत्यनारायण ने हमारा नाश कर दिया है। इसलिये मुझे वहीं जाना चाहिये जहाँ श्री सत्यनारायण का पूजन हो रहा था। ऐसा मन में निश्चय करके वह राजा गोपगणों के समीप गया और उसने गोपगणों के साथ भक्ति-श्रद्धा से युक्त होकर विधिपूर्वक भगवान सत्यदेव की पूजा की। भगवान् सत्यदेव की कृपा से वह पुनः धन और पुत्रों से सम्पन्न हो गया तथा इस लोक में सभी सुखों का उपभोग कर अन्त में सत्यपुर (वैकुण्ठलोक) को प्राप्त हुआ।। 6-9।।

य इदं कुरुते सत्यव्रतं परमदुर्लभम्।
श्रृणोति च कथां पुण्यां भक्तियुक्तः फलप्रदाम्।। 10।।
धनधान्यादिकं तस्य भवेत् सत्यप्रसादतः।
दरिद्रो लभते वित्तं बद्धो मुच्येत बन्धनात्।। 11।।

भीतो भयात् प्रमुच्येत सत्यमेव न संशयः।
ईप्सितं च फलं भुक्त्वा चान्ते सत्यपुरं व्रजेत्॥ 12॥
इति वः कथितं विप्राः सत्यनारायणव्रतम्।
यत् कृत्वा सर्वदुःखेभ्यो मुक्तो भवति मानवः॥ 13॥

[श्री सूतजी कहते हैं—] जो व्यक्ति इस परम दुर्लभ श्री सत्यनारायण के व्रत को करता है और पुण्यमयी तथा फलप्रदायिनी भगवान् की कथा को भक्ति युक्त होकर सुनता है, उसे भगवान् सत्यनारायण की कृपा से धन-धान्य आदि की प्राप्ति होती है। दरिद्र धनवान् हो जाता है, बन्धन में पड़ा हुआ बन्धन से मुक्त हो जाता है, डरा हुआ व्यक्ति भय से मुक्त हो जाता है—यह सत्य बात है, इसमें संशय नहीं। [इस लोक में वह] सभी ईप्सित फलों का भोग प्राप्त करके अन्त में सत्यपुर [वैकुण्ठलोक] को जाता है। हे ब्राह्मणों! इस प्रकार मैंने आप लोगों से भगवान् सत्यनारायण के व्रत को कहा, जिसे करके मनुष्य सभी दुःखों से मुक्त हो जाता है॥ 10-13॥

विशेषतः कलियुगे सत्यपूजा फलप्रदा।
केचित् कालं वदिष्यन्ति सत्यमीशं तमेव च॥ 14॥
सत्यनारायणं केचित् सत्यदेवं तथापरे।
नानारूपधरो भूत्वा सर्वेषामीप्सितप्रदम्॥ 15॥
भविष्यति कलौ सत्यव्रतरूपी सनातनः।
श्रीविष्णुना धृतं रूपं सर्वेषामीप्सितप्रदम्॥ 16॥
य इदं पठते नित्यं श्रृणोति मुनिसत्तमाः।
तस्य नश्यन्ति पापानि सत्यदेवप्रसादतः॥ 17॥
व्रतं यैस्तु कृतं पूर्वं सत्यनारायणस्य च।
तेषां त्वपरजन्मानि कथयामि मुनीश्वराः॥ 18॥

कलियुग में तो भगवान् सत्यदेव की पूजा विशेष फल प्रदान करने वाली है। भगवान् विष्णु को ही कुछ लोग काल, कुछ लोग सत्य, कोई ईश और कोई सत्यदेव तथा दूसरे लोग सत्यनारायण नाम से कहेंगे। अनेक रूप

धारण करके भगवान् सत्यनारायण सभी का मनोरथ सिद्ध करते हैं। कलियुग में सनातन भगवान् विष्णु ही सत्यव्रत-रूप धारण करके सभी का मनोरथ पूर्ण करने वाले होंगे। हे श्रेष्ठ मुनियों! जो व्यक्ति नित्य भगवान् सत्यनारायण की इस व्रत-कथा को पढ़ता है, सुनता है, भगवान् सत्यनारायण की कृपा से उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। हे मुनिश्वरो! पूर्वकाल में जिन लोगों ने भगवान् सत्यनारायण का व्रत किया था, उनके अगले जन्म का वृत्तान्त कहता हूँ, आप लोग सुनें।। 14-18।।

शतानन्दो महाप्राज्ञः सुदामा ब्राह्मणो ह्यभूत्।
तस्मिञ्जन्मनि श्रीकृष्णं ध्यात्वा मोक्षमवाप ह।। 19।।
काष्ठभारवहो भिल्लो गुहराजो बभूव ह।
तस्मिञ्जन्मनि श्रीरामं सेव्य मोक्षं जगाम वै।। 20।।
उल्कामुखो महाराजो नृपो दशरथोऽभवत्।
श्रीरङ्गनाथं सम्पूज्य श्रीवैकुण्ठं तदागमत्।। 21।।
धार्मिकः सत्यसन्धश्च साधुर्मोरध्वजोऽभवत्।
देहार्धं क्रकचैश्छित्त्वा दत्त्वा मोक्षमवाप ह।। 22।।
तुङ्गध्वजो महाराजः स्वायम्भुवोऽभवत् किल।
सर्वान् भागवतान् कृत्वा श्रीवैकुण्ठं तदाऽगमत्।। 23।।
भूत्वा गोपाश्च ते सर्वे व्रजमण्डलवासिनः।
निहत्य राक्षसान् सर्वान् गोलोकं तु तदा ययुः।। 24।।

।। इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे श्रीसत्यनारायणव्रतकथायां पञ्चमोऽध्यायः।। 5।।

महान् प्रज्ञा सम्पन्न शतानन्द नाम के ब्राह्मण [सत्यनारायण का व्रत करने के प्रभाव से] दूसरे जन्म में सुदामा नामक ब्राह्मण हुए और उस जन्म में भगवान् श्री कृष्ण का ध्यान करके उन्होंने मोक्ष प्राप्त किया। लकड़हारा भिल्ल गुहों का राजा हुआ और अगले जन्म में उसने भगवान् श्रीराम की सेवा करके मोक्ष प्राप्त किया। महाराज उल्कामुख [दूसरे जन्म में] राजा दशरथ हुए, जिन्होंने श्री रङ्गनाथ की पूजा करके अन्त में वैकुण्ठ प्राप्त

किया। इसी प्रकार धार्मिक और सत्यव्रती साधु [पिछले जन्म के सत्य व्रत के प्रभाव से दूसरे जन्म में] मोरध्वज नाम का राजा हुआ। उसने आरे से चीरकर अपने पुत्र की आधी देह भगवान् विष्णु को अर्पित कर मोक्ष प्राप्त किया। महाराज तुङ्गध्वज जन्मान्तर में स्वयम्भुव मनु हुए और भगवत्सम्बन्धी सम्पूर्ण कार्यों का अनुष्ठान करके वैकुण्ठ लोक को प्राप्त हुए। जो गोपगण थे, वे सब जन्मान्तर में व्रजमण्डल में निवास करने वाले गोप हुए और सभी राक्षसों का संहार करके उन्होंने भी भगवान् का शाश्वतधाम-गोलोक प्राप्त किया।। 19-24।।

।। इस प्रकार श्री स्कन्द पुराण के अन्तर्गत रेवाखण्ड में श्री सत्यनारायण व्रत कथा का यह पाँचवाँ अध्याय पूरा हुआ।। 5।।

हवन-प्रकरण

भगवान् की कथा सुनने के अनन्तर हवन करने की भी विधि है। जो लोग हवन करना चाहें, उनके लिये यहाँ संक्षेप में हवन की विधि दी जा रही है। किसी पवित्र स्थान पर मिट्टी से एक चौकोर वेदी बना लेनी चाहिये। हवन से पूर्व हाथ में जल-अक्षत आदि लेकर इस प्रकार हवन का सङ्कल्प करना चाहिये—

सङ्कल्प

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकोऽहं (सपत्नीकः) कृतस्य श्रीसत्यनारायणव्रतकथाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं यथोपस्थितसामग्रीभिः होमं करिष्ये। (सङ्कल्प का जल छोड़ दे।)

पञ्च-भूसंस्कार

संकल्प करने के बाद वेदी के निम्नलिखित पाँच संस्कार करने चाहिये—

(1) (**दर्भैः परिसमुह्य**) तीन कुशों से वेदी अथवा ताम्रकुण्ड का दक्षिण से उत्तर की ओर परिमार्जन करे तथा उन कुशों को ईशान दिशा में फेंक दे। (2) (**गोमयोदकेनोपलिप्य**) गोबर और जल से लीप दे। (3) (**स्रुवमूलेन अथवा कुशमूलेन त्रिरुल्लिख्य**) स्रुवा अथवा कुशमूल से पश्चिम से पूर्व की ओर प्रादेशमात्र (दस अंगुल लम्बी) तीन रेखाएँ दक्षिण से प्रारम्भ कर उत्तर की ओर खींचे। (4) (**अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य**) उल्लेखन क्रम से दक्षिण अनामिका और अँगूठे से रेखाओं पर से मिट्टी निकालकर बायें हाथ में तीन बार रखकर पुनः सब मिट्टी दाहिने हाथ में रख ले और उसे उत्तर की ओर फेंक दे। (5) (**उदकेनाभ्युक्ष्य**) पुनः जल से कुण्ड या स्थण्डिल को सींच दे।

इस प्रकार पञ्च-भूसंस्कार करके पवित्र अग्नि अपने दक्षिण की

ओर रखे और उस अग्नि से थोड़ा क्रव्यादअंश निकालकर नैर्ऋत्यकोण में रख दे। पुनः सामने रखी पवित्र अग्नि को कुण्ड या स्थण्डिल पर निम्न मन्त्र से स्थापित करे-

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ आ सादयादिह।

इस मन्त्र से अग्नि-स्थापन करने के पश्चात् कुशों से परिस्तरण करे। कुण्ड या स्थण्डिल के पूर्व उत्तराग्र तीन कुश या दूर्वा रखे। दक्षिण भाग में पूर्वाग्र तीन कुश या दूर्वा रखे। पश्चिम भाग में उत्तराग्र तीन कुश या दूर्वा रखे। उत्तर भाग में पूर्वाग्र तीन कुश या दूर्वा रखे। अग्नि को बाँस की नली से प्रज्वलित करे। इसके बाद हाथ में पुष्प ले निम्न श्लोक पढ़कर-

सर्वतः पाणिपादश्च सर्वतोऽक्षिशिरोमुखः।
विश्वरूपो महानग्निः प्रणीतः सर्वकर्मसु॥

'ॐ अग्निमावाहयामि' इस मन्त्र से अग्नि का आवाहन करे।

अग्नि का ध्यान तथा पूजन - हाथ जोड़कर निम्न मन्त्रों द्वारा बलवर्धन नामक अग्नि का ध्यान करे -

अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।
सुवर्णवर्णममलं समिद्धं सर्वतोमुखम्॥

तदनन्तर **'ॐ बलवर्धननामाग्नये नमः'** - इस मन्त्र से गन्धाक्षत, पुष्प आदि उपचारों से अग्नि का पूजन करे और फिर हवन करे।

हवन-विधि

सर्वप्रथम प्रजापति देवता के निमित्त आहुति दी जाती है। तदनन्तर इन्द्र, अग्नि तथा सोम देवता को आहुति देने का विधान है। इन चार आहुतियों में प्रथम दो आहुतियाँ 'आघार' नामवाली हैं और तीसरी तथा चौथी आहुति 'आज्यभाग' नाम से कही जाती है। ये चारों आहुतियाँ घी से देनी चाहिये।

दाहिना घुटना पृथ्वी पर लगाकर स्रुवा में घी लेकर प्रजापति देवता का ध्यान करके निम्न मन्त्र का मन से उच्चारण कर प्रज्वलित अग्नि में आहुति दे।

(1) ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम। [स्रुवा में बचे घी को प्रोक्षणीपात्र (अभाव में दोने अथवा मिट्टी के कसोरे) में छोड़े।]

आगे की तीन आहुतियाँ निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर दें-

(2) ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदं इन्द्राय न मम। (स्रुवा में बचे घी को प्रोक्षणीपात्र में छोड़े।)

(3) ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम। (स्रुवा में बचे घी को प्रोक्षणीपात्र में छोड़े।)

(4) ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम। (स्रुवा में बचे घी को प्रोक्षणीपात्र में छोड़े) तदनन्तर द्रव्यत्याग का सङ्कल्प करे।

द्रव्यत्याग

होता के हाथ में जल देकर '**अस्मिन् होमकर्मणि याः याः यक्ष्माणदेवताः ताभ्यः ताभ्यः इदं हवनीयद्रव्यं मया परित्यक्तं तत्सद्यथादैवतमस्तु न मम**' - इस प्रकार बोलकर जल छोड़ दे। तदनन्तर वराहुति प्रदान करे -

वराहुति

विघ्नहर्ता भगवान् गणपति तथा देवी अम्बिका के निमित्त दी गयी आहुति 'वराहुति' कहलाती है। वराहुति के मन्त्र इस प्रकार हैं-

गणपति के लिये-

ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीना त्वा निधिपति ँ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्। स्वाहा।

अम्बिका के लिये -

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यः स्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।। स्वाहा।।

नवग्रह-होम

यहाँ ग्रहों के नाम मन्त्रों से आहुतियाँ दी गयी हैं। नवग्रहों की आहुति

शाकल्य से अथवा घी से देनी चाहिये या दोनों से भी दी जा सकती है। शाकल्य मृगीमुद्रा से ग्रहण करना चाहिये। आहुति 'स्वाहा' इस शब्द के उच्चारण के साथ देनी चाहिये। हवन के मन्त्र इस प्रकार हैं -

(1) **ॐ आदित्याय स्वाहा।**
(2) **ॐ सोमाय स्वाहा।**
(3) **ॐ भौमाय स्वाहा।**
(4) **ॐ बुधाय स्वाहा।**
(5) **ॐ बृहस्पतये स्वाहा।**
(6) **ॐ शुक्राय स्वाहा।**
(7) **ॐ शनैश्चराय स्वाहा।**
(8) **ॐ राहवे स्वाहा।**
(9) **ॐ केतवे स्वाहा।**

नवग्रह-होम के अनन्तर भगवान् सत्यदेव के उद्देश्य से हवन करना चाहिये।

प्रधान होम

सत्यनारायण कथा-कर्म के प्रधान देवता भगवान् श्री सत्यनाराण देव हैं, अतः प्रथम उनके द्वादशाक्षर मन्त्र '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**' का कम-से-कम 108 बार-एक माला अथवा समय के अनुकूल यथाशक्ति जप करके मन्त्र के साथ अन्त में **स्वाहा** बोलकर जप का दशांश हवन करना चाहिये। एक माला से आहुति न हो सके तो कम-से-कम दस आहुतियाँ देनी ही चाहिये।

अग्नि का उत्तर-पूजन तथा प्रार्थना

प्रधान हवन के अनन्तर हवन की सफलता की सिद्धि के लिये **ॐ स्वाहास्वधायुताय बलवर्धननामाग्नये नमः**' इस मन्त्र से अग्निदेव का गन्ध आदि उपचार से संक्षेप में उत्तर-पूजन करे।

तदनन्तर इस प्रकार प्रार्थना करे-

श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं बलं श्रियम्।
आयुष्यं द्रव्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन।।

इसके बाद '**ॐ अङ्गानि च मा आप्यायन्ताम्**' कहकर हाथों से अग्निदेव को अपने सम्पूर्ण शरीर में धारण करने की भावना करे।

स्विष्टकृत् हवन

स्रुवा में घी रखकर दाहिना घुटना जमीन में लगा निम्न मन्त्र से आहुति दे।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम। (शेष घृत प्रोक्षणी में डाले।)

भूः आदि नव आहुतियाँ

प्रत्येक आहुति के बाद स्रुवा से बचा घी प्रोक्षणीपात्र में डाले।

(1) **ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम।**

(2) **ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम।**

(3) **ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम।**

(4) **ॐ अग्नीवरुणाभ्यां स्वाहा, इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।**

(5) **ॐ अग्नीवरुणाभ्यां स्वाहा, इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।**

(6) **ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये अयसे न मम।**

(7) **ॐ वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।**

(8) **ॐ वरुणायादित्यायादितये स्वाहा, इदं वरुणायादित्यादितये न मम।**

(9) **ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।**

अग्निप्रदक्षिणा तथा त्र्यायुष्धारण

तदनन्तर यजमान अग्नि की प्रदक्षिणा करे और आचार्य घृतयुक्त स्रुवा से घृतयुक्त भस्म ग्रहण कर अनामिका अँगुली से पहले स्वयं भस्म धारण करे, तदनन्तर श्रोताओं को त्र्यायुष् धारण कराये। त्र्यायुष्-धारण की विधि इस प्रकार है-

'**ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः**' कहकर ललाट में, '**ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्**' कहकर कण्ठ में, '**ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्**' कहकर दक्षिण बाहुमूल

में और '**ॐ तन्नोऽस्तु त्र्यायुषम्**' कहकर हृदय में त्र्यायुष् धारण करना चाहिये।

संस्त्रवप्राशन और दक्षिणादान

प्रोक्षणीपात्र के जल में आहुति से बचा जो घृत छोड़ा गया है, उसको यजमान थोड़ा ग्रहण कर ले अथवा सूँघ ले, इसीका नाम संस्त्रव-प्राशन है। तदनन्तर आचमन करे। आचार्य आदि ब्राह्मणों को दक्षिणा तथा भूयसी दक्षिणा प्रदान करे। तदनन्तर भगवान् नारायण का उत्तर-पूजन करे।

उत्तर-पूजन

कथा-श्रवण तथा हवन के अनन्तर संक्षेप में गन्धाक्षत-पुष्प आदि उपचारों से भगवान् श्रीसत्यनारायण तथा आवाहित देवताओं का उत्तर-पूजन करना चाहिये। पूजन के बाद आरती करनी चाहिये। तदनन्तर निम्न मन्त्र से शङ्ख का जल भगवान् पर घुमाकर भगवान् को निवेदित करे तथा अपने ऊपर और भक्तजनों पर छोड़े; क्योंकि शास्त्र की उक्ति है-

शङ्खमध्यस्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि।
अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यां व्यपोहति।।

आरती

किसी स्वस्तिक आदि माङ्गलिक चिह्नों से अलंकृत तथा पुष्प-अक्षत आदि से सुसज्जित थाली में कपूर अथवा घृत की बत्ती को प्रज्वलित कर जल से प्रोक्षित कर ले। पुनः घण्टा-नाद करते हुए अपने स्थान पर खड़े होकर भगवान् की मङ्गलमय आरती करे। आरती का यह मुख्य विधान है कि सर्वप्रथम चरणों में चार बार, नाभि में दो बार, मुख में एक बार आरती करने के बाद पुनः समस्त अङ्गों की सात बार आरती करनी चाहिये।

आरती-मन्त्र

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि।।
कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।

श्रीसत्यनारायणाय नमः। आरार्तिक समर्पयामि। (कपूर से आरती करें। आरती के बाद जल गिरा दे।)

स्तुति-प्रार्थना – तदनन्तर हाथ जोड़कर भगवान् की स्तुति करे–

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।
नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः।।
नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।।
आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्।
सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति।।
मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव।।

पुष्पाञ्जलि– हाथ में पुष्प लेकर इस प्रकार प्रार्थना करें।

नाना सुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्ता गृहाण परमेश्वर।।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वानुसृतस्वभावात्।
करोति यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयेत्तत्।।

श्रीसत्यनारायणाय नमः। पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। (भगवान् को पुष्पाञ्जलि समर्पित करें।)

प्रदक्षिणा - यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणापदे पदे।।

श्री सत्यनारायणाय नमः। प्रदक्षिणां समर्पयामि। (भगवान् की प्रदक्षिणा करने के बाद उन्हें साष्टाङ्ग प्रणाम करे तदनन्तर क्षमा-प्रार्थना करे।)

क्षमा-प्रार्थना -

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।।
नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।।
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।

विसर्जन - शालग्राम तथा घर में प्रतिष्ठित देवों को छोड़कर सभी आवाहित देवताओं तथा अग्नि का निम्न मन्त्र-पाठपूर्वक अक्षत छोड़ते हुए विसर्जन करे -

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकीम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।।
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन।।
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।
ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः,
ॐ विष्णवे नमः कहकर हाथ जोड़े तथा नमस्कार करें।

रक्षाबन्धन-तिलक-आशीर्वाद-आचार्य यजमान के हाथ में रक्षासूत्र बाँधे, तिलक करें तथा आशीर्वाद प्रदान करें।

चरणामृत-ग्रहण-भगवान् का चरणोदक अति पुण्यप्रद और कल्याणकारी है। यह सभी पाप-तापों का समूल उच्छेद कर देता है। अत: श्रद्धा-भक्तिपूर्वक पूजन के अन्त में इसे सर्वप्रथम ग्रहण करना चाहिये। ग्रहण करते समय इसे भूमि पर न गिरने दे। अत: बायें हाथ के ऊपर स्वच्छ दोहरा वस्त्र रखकर, उस पर दाहिना हाथ रखे तथा दाहिने हाथ में लेकर निम्न मन्त्र पढ़कर इसे ग्रहण करें-

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम्।
विष्णुपादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।।

[चरणोदक ग्रहण करने के बाद पञ्चामृत लेना चाहिये।]

तुलसी-ग्रहण - तदनन्तर भगवान् शालग्राम को अर्पित एवं भोग लगाया गया तुलसीदल निम्न मन्त्र पढ़कर लेना चाहिये-

पूजनानन्तरं विष्णोरर्पितं तुलसीदलम्।
भक्षयेद्देहशुद्ध्यर्थं चान्द्रायणशताधिकम्।।

प्रसाद-ग्रहण-अन्त में भगवान् को भोग लगाये गये नैवेद्य को प्रसादरूप में भक्तों में बाँटकर स्वयं भी ग्रहण करें।

आरती क्या है और कैसे करनी चाहिये ?

आरती को आरात्रिक अथवा आरार्तिक और नीराजन भी कहते हैं। पूजा के अन्त में आरती की जाती है। पूजन में जो त्रुटि रह जाती है, आरती से उसकी पूर्ति होती है। स्कन्दपुराण में कहा गया है–

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं यत् कृतं पूजनं हरेः।
सर्व सम्पूर्णतामेति कृते नीराजने शिवे।।

पूजन मन्त्रहीन और क्रियाहीन होने पर भी नीराजन (आरती) कर लेने से उसमें सारी पूर्णता आ जाती है।

आरती करने का ही नहीं, आरती देखने का भी बड़ा पुण्य लिखा है। हरिभक्तिविलास में एक श्लोक है :

नीराजनं च यः पश्येद् देवदेवस्य चक्रिणः।
सप्तजन्मनि विप्रः स्यादन्ते च परमं पदम्।।

जो देवदेव चक्रधारी श्री विष्णु भगवान् की आरती (सदा) देखता है, वह सात जन्मों तक ब्राह्मण होकर अन्त में परम पद को प्राप्त होता है।

विष्णुधर्मोत्तर में लिखा है कि

धूपं चारात्रिकं पश्येत् कराभ्यां च प्रवदन्ते।
कुलकोटिं समुद्धृत्य याति विष्णोः परं पदम्।।

जो धूप और आरती को देखता है और दोनों हाथों से आरती लेता है, वह करोड़ पीढ़ियों का उद्धार करता है और भगवान् विष्णु के परमपद को प्राप्त होता है। आरती में पहले मूलमन्त्र (जिस देवता का जिस मन्त्र से पूजन किया गया हो, उस मन्त्र) के द्वारा तीन बार पुष्पाञ्जलि देनी चाहिये और ढोल, नगारे, शङ्ख, घड़ियाल आदि महावाद्यों के तथा जय-जयकार के शब्द के साथ शुभ पात्र में घृत से या कपूर से विषम संख्या की अनेक बत्तियाँ जलाकर आरती करनी चाहिये ।

आरती उतारते समय सर्व प्रथम भगवान की प्रतिमा के चरणों में उसे चार बार घुमायें, दो बार नाभिदेश में, एक बार मुख मण्डल पर और सात बार समस्त अङ्गों पर घुमायें।

गणेशजी की आरती

जय देव जय देव जय गणपतिदेवा ।। प्रभु०
गणनायक गिरिजा सुत, रिद्धि सिद्धि करे सेवा। ॐ जय०
लम्बोदर जग जयकर, मूषक असवारा।। प्रभु०
पीताम्बर धर कटि पर, त्रिभुवन जन प्यारा। ॐ जय०
हेरंब हरतनया, मोदक मन गमता ।। प्रभु०
पुष्कणघृत साकरना, सूँढ बडे जमता। ॐ जय०
मातंगाकृति देव, विश्व तणा भरता।। प्रभु०
गज वदनायकदंता, विघ्न सकल हरता।। ॐ जय०
विघ्नेश्वर की आरती जे कोई गाशे ।। प्रभु०
उमा वचन प्रमाणे, सुख सम्पति थाशे।। ॐ जय०

गणेशजी की आरती

जय गणपति देवा, प्रभु जय गणपति देवा।
प्रेम थकी प्रभु तारी, करिये नित सेवा।। ॐ जय०
विघ्नेश्वर वर दायक, शंभु सुख दाता ।प्रभु०
प्रथम तमारु पूजन, करिये विभु दाता ।। ॐ जय०
भावधरी प्रभु तारी, आरती उतारूँ ।प्रभु०
बेउकर जोडी विनऊँ, करौं सौनुं कल्याण।। ॐ जय०
शुक्ल चतुर्थी तिथी मासक भादरवो । प्रभु०
सकल भक्तनो सेवे उत्सव आदरवो ।। ॐ जय०
विघ्नेश्वर नी आरती जे कोई गाशे ।प्रभु०
उमा वचन प्रमाणे, सुख सम्पति थाशे।। ॐ जय०
जय गणपति देवा, प्रभु जय गणपति देवा।
प्रेम थकी प्रभु तारी, करिए नित सेवा ।। ॐ जय०

गणेशजी की आरती

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।। जय०।।
एक दंत दयावंत चारभुजा धारी।
मस्तक सिंदूर सोहे मूष की सवारी।। जय०।।
अँधन को आँख देत, कोढ़िन को काया।
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया।। जय०।।
पान चढ़े फूल चढ़े, और चढ़े मेवा।
लड्डुवन का भोग लगे, संत करे सेवा।। जय०।।
भक्तों की लाज राखो, शंभु सुत बारी।
मनोरथ को पूर्ण करो, जाऊँ बलिहारी।। जय०।।
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।। जय०।।
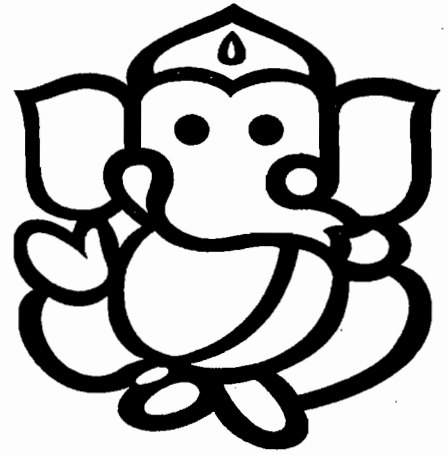
कुलदेवी की आरती

निरांजनम्

खम्मा खम्मा हो अंबे मात, माडी,
हुँ तो प्रेमे उतारूँ तारी आरती रे...
शक्ति स्वरूपे तारो वास-माडी,
हुँ तो प्रेमे उतारूँ तारी आरती रे...
दरिया दिल नी माडी तारो महिमा अपरंपार,
तारो पालव पकडे तेनो पलमां बेडो पार,
तारा चरणोनो हुं तो दास-माडी,
हुँ तो प्रेमे उतारूँ तारी आरती रे...
निर्धनने तुँ वैभव देती, देती सुख संतान,
वंश केरी तु वेल वधारो, पुत्रो ने परिवार,
सौना मनडानी पुरो आश-माडी,
हुँ तो प्रेमे उतारूँ तारी आरती रे...
तारा दर्शन करताँ माडी, पापी पावन थाय,
भावे तारी भक्ति करताँ, आनंद मंगल थाय,
तारा भक्तो ने साचो विश्वास-माडी,
हुँ तो प्रेमे उतारूँ तारी आरती रे...
खम्मा खम्मा हो अंबे मात-माडी,
हुँ तो प्रेमे उतारूँ तारी आरती रे...

।। अथ कृष्ण नीराजनम् ।।

जय देव जय देव वंदे गोपालं ।
मृगमदतिलकितभालं करुणाकल्लोलम् ।।
निर्गुणसगुणाकारं संहृतभूभारम् ।
मुरहरनंदकुमारं मुनिजन सुखकारम् ।।
वृंदावन संचारं कौस्तुभमणिहारं ।
करुणापारावारं गोवर्धनधारम् ।। जय० ।। १ ।।
कंबुग्रीवं गुंजातुलसीवनमालं ।
श्रीवत्सांकितवक्षोलंबित श्रीकमलम् ।।
बाहुविभूषितवेणुं करधृतदधिकवलं ।
त्रिवलीशोभितजठरं नवजलधरनीलम् ।। जय० ।। २ ।।
कुञ्चितकुण्डलरम्यं सुंदरमुखकमलं ।
बिंबाधरमतिसुंदरनासामणिलोलम् ।।
मणिगणमंडितकुण्डलराजित श्रुतिमूलं ।
विकचेंदीवरनयनं विलसितभ्रू युगलम् ।। जय० ।। ३ ।।
मुरलीवादनशीलं सप्तस्वरगीतं ।
जलचरवनचरखेचर भूचरहृतचित्तम् ।।
स्तंभितयमुनातोयं अगणितसच्चरितं ।
गोपीजनमनमोहनरूपं श्रीकांतम् ।। जय० ।। ४ ।।
रासक्रीड़ा - मण्डलवेष्टितव्रजललनं ।
तांडवनर्तनसंगतमोहितरतिमत्तम् ।।
कुसुमाकर-राकापतियुतवनकृतशयनं ।
कालियफणिवरदमनं पक्षीश्वरगमनं ।। जय० ।। ५ ।।

किंकिणिमेखलमध्यं पीतांबरवसनं ।
नूपुरकोमलसिंजितविलसितवपुनीलम्।।
गोगोपीपरिवेष्टितयमुनातटसदनं ।
भक्ताभयदं सुखदं भुवनत्रयभवनम्।। जय०।। ६।।
जय देव जय देव वंदे गोपालं ।
मृगमदतिलकितभालं करुणाकल्लोलम्।।

।। इति कृष्ण नीराजनम्।।

जय काना काला, नटवर नंदलाला. ...(प्रभु)
मीठी मोरलीवाला गोपीना प्यारा.........जय०
कामणगारा काना, कामण कंई कीधां..(प्रभु)
माखणचोरी मोहन, चित चोरी लीधां....जय०
नंद - यशोदा घेर, वैकुण्ठ उतारी.......(प्रभु)
कालीयमर्दन कीधुं, गायोने चारी.........जय०
गुणतणो तुज पार, केमे नहिं आवे......(प्रभु)
नेति वेद पुकारे, पुनीत शुं गावे........जय०

श्री दुर्गा जी की आरती

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव री।। १।। जय अम्बे०
माँग सिंदूर विराजत टीको मृगमदको।
उज्ज्वल से दोउ नैना चन्द्रवदन नीको।। २।। जय अम्बे०
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त-पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै।। ३।। जय अम्बे०
केहरि वाहन राजत खड्ग खप्पर धारी।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुःख हारी।। ४।। जय अम्बे०
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योती।। ५।। जय अम्बे०
शुम्भ - निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती।
धूम्र - विलोचन नैना, निशिदिन मदमाती।। ६।। जय अम्बे०
चण्ड - मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे।। ७।। जय अम्बे०
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमलारानी।
आगम-निगम बखानी, तुम शिव पटरानी।। ८।। जय अम्बे०
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरों।
बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरू।। ९।। जय अम्बे०
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुःख हरता, सुख-सम्पति करता।। १०।। जय अम्बे०
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।
मनवाञ्छित फल पावत, सेवत नर-नारी।। ११।। जय अम्बे०
कञ्चन थाल विराजत, अगर कपूर बाती।
श्री मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति।। १२।। जय अम्बे०
श्री अम्बे जी की आरती जो कोइ नर गावै।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख-सम्पति पावै।। १३।। जय अम्बे०

भगवान जगदीश्वर की आरती

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे......
भक्तजनों के संकट, क्षण में दूर करे....ॐ जय०
जो ध्यावे फल पावै, दुःख बिनसे मनका... प्रभु...
सुख संपत्ति घर आवै (२) कष्ट मिटे तनका....ॐ जय०
मातापिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी... प्रभु०
तुम बिन और न दूजा (२)आस करूँ किसकी...ॐ जय०
तुम पूरण परमात्मा, तुम अंतर्यामी.... प्रभु०
पारब्रह्म परमेश्वर (२) तुम सबके स्वामी....ॐ जय०
तुम करुणाके सागर, तुम पालनकर्ता... प्रभु०
मैं सेवक तुम स्वामी...(२) कृपा करो भर्ता....ॐ जय०
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति... प्रभु०
किस विधि मिलूं दयामय (२) तुमको मैं कुमति..ॐ जय०
दीनबंधु दुःखहर्ता, तुम रक्षक मेरे... प्रभु०
करुणाहस्त बढ़ावो (२) द्वार खड़ा तेरे...ॐ जय०
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा..... प्रभु०
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ (२) संतन की सेवा....ॐ जय०
तन मन धन, सब कुछ है तेरा..... प्रभु०
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा...ॐ जय जगदीश०

भगवान गङ्गाधर की आरती

ॐ जय गङ्गाधर जय हर जय गिरिजाधीश।
त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीश।। १।। ॐ हर०।।
कैलासे गिरिशिखरे कल्पद्रुमविपिने।
गुञ्जति मधुकरपुञ्जे कुञ्जवने गहने।।
कोकिलकूजति खेलति हंसावन ललिता।
रचयति कलाकलापं नृत्यति मुदसहिता।। २।। ॐ हर०।।
तस्मिंल्ललितसुदेशे शाला मणिरचिता।
तन्मध्ये हरनिकटे गौरी मुदसहिता।।
क्रीडा रचयति भूषारञ्जित निजमीशम्।
इन्द्रादिक सुर सेवत नामयते शीशम्।। ३।। ॐ हर०
बिबुधबधू बहु नृत्यति हृदये मुदसहिता।
किन्नर गायन कुरुते सप्त स्वर सहिता।।
धिनकत थै थै धिनकत मृदङ्ग वादयते।
क्वण क्वण ललिता वेणुं मधुरं नादयते।। ४।। ॐ हर०।।
रुण रुण चरणे रचयति नूपुरमुज्वलिता।
चक्रावर्ते भ्रमयति कुरुते तां धिक् तां।।
तां तां लुप चुप तां तां डमरू वादयते।
अंगुष्ठांगुलिनादं लासकतां कुरुते।। ५।। ॐ हर०
कर्पुरद्युतिगौरं पञ्चाननसहितम्।
त्रिनयनशशिधरमौलिं विषधरकण्ठयुतम्।।
सुन्दरजटाकलापं पावकयुतभालम्।
डमरूत्रिशूलपिनाकं करधृतनृकपालम्।। ६।। ॐ हर०

रुण्डै रचयति मालां पन्नगमुपवीतम्।
वामविभागे गिरिजारूपं ह्यतिललितम्।।
सुन्दरसकलशरीरे कृतभस्माभरणम्।
एति वृषभध्वजरूपं तापत्रयहरणम्।।७।। ॐ हर०।।
शङ्खनिनादं कृत्वा झल्लरि नादयते।
नीराजयते ब्रह्मा वेदऋचां पठते।।
इतिमृदुचरणसरोजं हृत्कमले धृत्वा।
अवलोकयति महेशं ईशं अभिनत्वा।।८।। ॐ हर०।।
ध्यानं आरति समये हृदये अति कृत्वा।
रामंत्रिजटानाथं ईशं अभिनत्वा।।
संगीतमेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरुते।
शिवसायुज्यं गच्छति भक्त्या यः श्रृणुते।।९।। ॐ हर०।।

श्री भैरवजी की आरती

ॐ जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा।
जय काली और गौरा कृत देवी सेवा।।... ॐ
तुम्हीं आप उद्धारक दुःख सिन्धु तारक।
भक्तों के सुखकारक भीषण वायु धारक।।

वाहन श्वान विराजत कर त्रिशूलधारी।
महिमा अमित तुम्हारी जै जै भयहारी।।
तुम विना देवा यज्ञ सफल नहीं होवे।
चतुवर्तिका दीपक, दर्शन दुःख खोवे।।
तेल चटक दधि मिश्रित भाषावली तेरी।
कृपा करो हे भैरव, करिये नहिं देरी।।
पांव में घुंघरु बाजत, डमरु डमकावत।
बटुकनाथ बन बालक, जन मन हर्षावत।।
बटुकनाथ की आरती जो कोई नर गावे।
कहै धरणीधर वह नर मनवांछित फल पावे।।

माताजी की आरती

जय आद्या शक्ति, मा जय आद्या शक्ति.....
अखंड ब्रह्मांड दिपाव्यां (२) पडवे प्रगट थयां...ॐ जयो जयो मा जगदंबे।।
द्वितीया बे स्वरूप, शिवशक्ति जाणुं....मा शिवशक्ति जाणुं।
ब्रह्मा गणपति गाउं, (२) हर गाउं हर मा...ॐ जयो जयो मा जगदंबे।।
तृतीया त्रण स्वरूप, त्रिभुवन मां बेठां....मा त्रिभुवन मां बेठा।
त्रया थकी तरवेणी (२) तुं तरवेणी मा...ॐ जयो जयो मा जगदंबे।।
चौथे चतुरा महालक्ष्मी मा सचराचर व्याप्यां... मा सचराचर व्याप्यां।
चारभुजा चौदिशा (२) प्रगट्यां दक्षिण मां..ॐ जयो जयो मा जगदंबे।।
पंचमी पंच ऋषि, पंचमी गुण पद्मा...मां पंचमी गुण पद्मा।
पंचसहस्त्र त्यां सोहिए (२) पंचे तत्त्वो मां...ॐ जयो जयो मा जगदंबे।।
षष्ठी तुं नारायणी महिषासुर मार्यो... मा महिषासुर मार्यो।
नर नारी ना रूपे (२) व्याप्यां सघळे मां...ॐ जयो जयो मा जगदंबे।।

सप्तमी सप्त पाताल, सावित्री सन्ध्या... मा सावित्री सन्ध्या ।
गौ गंगा गायत्री (२) गौरी गीता मां...ॐ जयो जयो मा जगदंबे ।।
अष्टमी अष्ट भुजा, आई आनंदा... मा... आई आनन्दा ।
सुरनर मुनिवर जन्म्या (२) देव दैत्यो मां...ॐ जयो जयो० ।।
नवमी नवकुल नाग, सेवे नव दुर्गा... मा सेवे नवदुर्गा ।
नवरात्रिनां पूजन, शिवरात्रिनां अर्चन, कीधां हर ब्रह्मा ॐ जयो ० ।।
दशमी दश अवतार, जय विजयादशमी...मा जय विजयादशमी ।
रामे राम रमाड्या (२) रावण रोण्यो मां...ॐ जयो जयो मा जगदंबे ।।
एकादशी अगियारस कात्यायनी कामा...मा कात्यायनी कामा ।
कामदुर्गा कालिका (२)श्यामा ने रामा ॐ जयो जयो मा जगदंबे ।।
बारसे बाळा रूप, बहुचरी अंबामा... मा बहुचरी अम्बा मा ।
बटुक भैरव सोहिए, काळ भैरव सोहिए-तारां छे तुज मां...ॐ जयो० ।।
तेरसे तुलजारूप तमे तारुणी माता... मा तमे तारुणी माता ।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव गुण तारां गता...मां... ॐ जयो जयो ० ।।
चौदशे चौदा रूप, चंडी चामुंडा... मा चंडी चामुंडा ।
भाव भक्ति कंई आपो, चतुराई कंई आपो, सिंहवाहिनी माता...ॐ ।।
पूनमे कुंभ भर्यो सांभणजो करुणा, मा सांभणजो करुणा ।
वसिष्ठ देवे वखाण्यां, मार्कंड देवे वखाण्यां, गाये शुभ कविता...ॐ ।।
संवत सोळ सत्तावन, सोळसे बावीस मां..मा सोळसे बावीस मा ।
संवत् सोळे प्रगट्यां रेवानी तीरे, मा गंगाने तीरे...ॐ जयो जयो० ।।
त्रंबावटी नगरी मा रूपावटी नगरी मा मंछावटी नगरी... ।
सोळ सहस्त्र त्यां सोहिए (२) क्षमा करो गौरी मा दया करो गौरी.ॐ ।।
शिव शक्तिनी आरती, जे कोई गाशे – मा जे कोई गाशे.. ।

भणे शिवानंदस्वामी (२) सुख संपत् थाशे, हर कैलासे जाशे।
मा अंबा दुःख हरशे, ॐ जयो जयो मा जगदंबे ।।
एक मे एक स्वरूप, अंतर नव धरशो मा... अंतर नव धरशो।
भोळां भवानीने भजतां - भोळां अंबे माने भजतां...।
भव सागर तरशो.....ॐ जयो जयो मा जगदंबे ।।
भाव न जाणुं भक्ति न जाणुं नव जाणुं सेवा..मा नव जाणुं सेवा।
वल्लभ भट्टने आपी, (२) चरणोनी सेवा ॐ जयो जयो मा जगदंबे।।
मानो मंडप लाल गुलाल शोभा अति सारी(२)मा शोभाअतिसारी।
अबील उडे आनंदे, गुलाल उडे आनंदे...जय बहुचर वाळी..अंबे..।
मानी चुंदडी लाल गुलाल शोभा बहु सारी,(२)मा शोभा बहु सारी।
आंगड कुक्कड नाचे (२) जय बहुचरवाळी...मा (२) मा जय...ॐ।
ॐ जयो जयो मा जगदंबे।। ॐ जयो जयो मा जगदंबे।।
ॐ जयो जयो मा जगदंबे।।

श्री राणीसतीजी की आरती

जय श्री राणी सती मैया, जय जगदम्ब सतीजी।
अपने भक्त जनों की, दूर करें विपती।। जय...
अवनी अनंतर ज्योति अखण्डित मंडित चहुँ कुंकुभा।
दुरजन दलन खड्ग की, विद्युतसम प्रतिभा।। जय...
मरकत मणि मंदिर अति मंजुल, शोभा लखि न पड़े।
ललित ध्वजा चहुँ ओरे, कंचन कलश धरे।। जय...
घण्टा घनन घड़ावल बाजत, शंख मृदंग घुरे।
किन्नर गायन करते, वेद ध्वनि उचरे।। जय...
सप्त मातृका करें आरती, सुरगण ध्यान धरे।
विविध प्रकार के व्यंजन, श्रीफल भेंट धरे।। जय...
संकट विकट विदारणी, नाशनी हो कुमति।
सेवक जन हृदि पटले, मृदुल करन सुमति।। जय...
अमल कमल दल लोचनी, मोचनी त्रय तापा।
दास आयो शरण आपकी, लाज रखो माता।। जय...
श्रीराणीसती मैयाजी की आरती, जो कोई नर गावे।
सदन सिद्धि नवनिधि, मनवांछित फल पावे।। जय...

चन्दर तपै, सूरज तपै, उद् गण तपै आकाश।
इन सबसे बढ़कर तपै, सतियों का सुप्रकाश।।
जय जय श्री राणी सती, सत्य पुँज आधार।
चरण कमल धरि ध्यान में, प्रणवहुँ बारम्बार।।
मेरा अपना कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोय।
तेरा तुझ को सौंपते, क्या लागत है मोय।।
मैया सब कुछ मांग ल्यो, जो कुछ मेरे पास।
दो नैणा मत माँगियो, थारै दरश की आश।।
सेवा, पूजा, बन्दगी, सभी आपके हाथ।
मैं तो कछु जाणु नहीं, थे जाणो मेरी मात।।

श्री महाकाली जी की आरती

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली।
तेरे ही गुण गाए भारती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती।।
तेरे जगत के भक्त जनन पर, भीड़ पड़ी है भारी।-२
दानव दल पर टूट पड़ो माँ करके सिंह सवारी।
सौ-सौ सिंहों से तू बलशाली, अष्ट भुजाओं वाली,
दुष्टों को तू ही तो संहारती।। ओ मैया हम सब....
नहीं मांगते धन और दौलत, ना चांदी ना सोना।-२
हम तो मांगे माँ तेरे मन में, एक छोटा सा कोना।
मैया अमृत बरसाने वाली, करुणा दरशाने वाली,
नैया को भँवर से निकालती।। ओ मैया हम सब....
माँ-बेटे का है इस जग में, बड़ा ही निर्मल नाता।-२
पूत-कपूत सुने हैं पर न माता सुनी कुमाता।
मैयै प्यार दरशाने वाली, ममता बरसाने वाली।
जीवन को तू ही तो संवारती।। ओ मैया हम सब....
धौलागढ़ से चली भवानी, कर सोलह श्रृंगार।-२
एक हाथ में ध्वजा विराजे, दूजे में तलवार।
मैया बिगड़ी बनाने वाली, खुशियाँ दिलाने वाली,
सतियों के सत को संवारती।। ओ मैया हम सब....
चौदस के दिन तेरे भवन में, भीड़ लगी है भारी।-२
खाली तो यहाँ हर कोई आये, खाली न जाये कोई।
मैया झोली भरने वाली, विपदा मिटाने वाली,
दुखियों के ही तो संकट काटती।। ओ मैया हम सब....

श्री सत्यनारायणजी की आरती

जय लक्ष्मीरमणा, स्वामी जय लक्ष्मीरमणा।
सत्यनारायण स्वामी जन पातक हरणा।। ॐ जय०।।
रत्नजड़ित सिंहासन, अद्भुत छवि राजै।
नारद करत निरंजन, घंटा ध्वनि बाजै।। ॐ जय०।।
प्रकट भय कलिकारण, द्विज को दरस दियो।
बूढो ब्राह्मण बनकर, कंचन महल कियो।। ॐ जय०।।
दुर्बल भील कठारो, जिन पर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा, जिनकी विपती हरी।। ॐ जय०।।
वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीन्हीं।
सो फल भोग्यो प्रभुजी, फिर स्तुति कीन्हीं।। ॐ जय०।।
भाव-भक्ति के कारण, क्षण-क्षण रूप धर्‌यो।
श्रद्धा धारण कीनी, तिनको काज सर्‌यो।। ॐ जय०।।
ग्वाल-बाल संग राजा, बन में भक्ति करी।
मनवांछित फल दीन्हों, दीन दयालु हरी।। ॐ जय०।।
चढ़त प्रसाद सवायो, कदली फल मेवा।
धूप-दीप-तुलसी से, राजी सत्य देवा।। ॐ जय०।।
सत्यनारायणजी की आरती, जो कोई नर गावै।
कहत हरिहर स्वामी मनवांछित फल पावै।। ॐ जय०।।

श्री सरस्वतीजी की आरती

ॐ जय सरस्वती माता, मैया जय सरस्वती माता।
सद्गुण वैभव शालिनी, त्रिभुवन विख्याता।। मैया जय...
चन्द्रवदिनी पद्मासिनी, द्युति मंगलकारी ।
सोहे हंस सवारी, अतुल तेज धारी।। मैया जय...
बायें कर में वीणा, दायें कर माला ।
शीश मुकुट मणि सोहे, गल मोतियन माला।। मैया जय...
देवी शरण जो आये, उनका उद्धार किया ।
पैठि मंथरा दासी, रावण संहार किया।। मैया जय...
विद्याज्ञान प्रदायिनी, ज्ञान प्रकाश भरो ।
मोह, अज्ञान, तिमिर को, जग से माता हरो।। मैया जय...
धूप दीप फल मेवा, माँ स्वीकार करो ।
ज्ञान चक्षु दे माता, जग निस्सार करो।। मैया जय...
माँ सरस्वती की आरती, जो कोई जन गावे।
हितकारी सुखकारी, ज्ञान भक्ति पावे।। मैया जय...

श्री दुर्गाजी की आरती

जगजननी जय! जय! मा जगजननी जय जय।।
भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि जय जय।।टेक।।
तू ही सत - चित - सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा।
सत्य सनातन सुन्दर पर-शिव सुर-भूपा ।।१।। जग०
आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी ।
अमल अनन्त अगोचर अज आनन्दराशी।।२।। जग०

अविकारी, अघहारी, अकल कलाधारी ।
कर्ता विधि, भर्ता हरि, हर सँहारकारी।।३।। जग०
तू विधि - वधू, रमा, तु उमा, महामाया ।
मूल प्रकृति, विद्या तु, तू जननी जाया।।४।। जग०
राम, कृष्ण तू सीता, ब्रजरानी राधा ।
तू वाञ्छाकल्पद्रुम हारिणि सब बाधा।।५।। जग०
दश विद्या, नव दुर्गा नाना शस्त्रकरा ।
अष्टमातृका, योगिनि,नव-नव-रूप-धरा।।६।। जग०
तू परधाम निवासिनि, महाविलासिनि तू ।
तू ही श्मशानविहारिणि, ताण्डवलासिनि तु।।७।। जग०
सुर - मुनि - मोहिनि सौम्या तु शोभाधारा ।
विवसन विकट-सरूपा, प्रलयमयी धारा।।८।। जग०
तू ही स्नेहसुधामयि, तू अति गरलमना ।
रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि तना।।९।। जग०
मूलाधारनिवासिनि, इह - पर - सिद्धिप्रदे ।
कालातीता काली, कमला तू वरदे।।१०।। जग०
शक्ति शक्तिधर तू हि नित्य अभेदमयी ।
भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले वेदत्रयी।। ११ ।। जग०
हम अति दीन दुखी माँ विपत-जाल घेरे ।
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे।। १२ ।। जग०
निज स्वभाववश जननी दयादृष्टि कीजै ।
करुणा कर करुणामयि चरण-शरण दीजै।।१३।।
जगजननी जय जय मा जगजननी जय जय।
भयहारिणि,भवतारिणि,भवभामिनि जय जय।।टेक।।

श्री श्यामजी की आरती
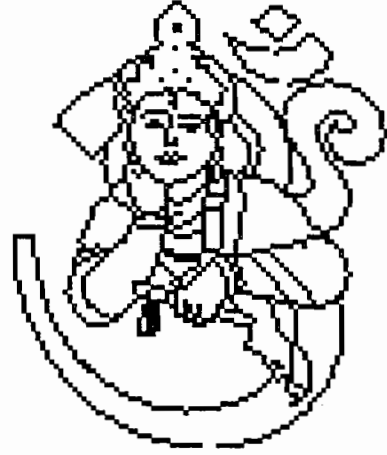
ॐ जय श्रीश्यामहरे, बाबा जय श्रीश्याम हरे।
खाटू धाम विराजत, अनुपम रूप धरे ।। ॐ जय०
रतन जड़ित सिंहासन, सिर पर चँवर ढुरे।
तन केसरिया बानो, कुण्डल श्रवण पड़े।। ॐ जय०
गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे।
खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योति जले।। ॐ जय०
मोदक खीर चूरमा, सुवरण थाल भरे।
सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे।। ॐ जय०
झाँझ कटोरा और घड़ियावल,शंख मृदंग धुरे।
भक्त आरती गावे, जय-जयकार करे।। ॐ जय०
जो ध्यावै फल पावै, सब दुःख से उबरे।
सेवक जन निज मुख से, श्री श्याम-श्याम उचरे।। ॐ जय०
श्रीश्यामबाबाजी की आरती जो कोई नरगावै।
कह आलुसिंह स्वामी मनवांछित फल पावै।। ॐ जय०

श्री शिवजी की आरती

ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी हर शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्धांगी धारा।।
ॐ हर हर हर महादेव।।

एकानन चतुरानन, पंचानन राजै ।
हंसासन गरुडासन, वृष वाहन साजै।।
ॐ हर हर हर महादेव।।

द्वै भुज चारु चतुर्भुज, दस भुज अति सोहै।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहै।।
ॐ हर हर हर महादेव।।

अक्षमाला बनमाला मुंडमालाधारी।।
चंदन मृगमद सोहै भालचन्द्र धारी।।
ॐ हर हर हर महादेव।।

श्वेताम्बर पीताम्बर, बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक गरुडादिक भूतादिक संगे।।
ॐ हर हर हर महादेव।।

कर में लसत कमण्डल, चक्र त्रिशुल धरता।
जगकर्ता जग हरता जगपालन करता।।
ॐ हर हर हर महादेव।।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये, ये तीनों एका।।
ॐ हर हर हर महादेव।।

त्रिगुण स्वामीजी की आरती, जो कोइ नर गावै।
भणत शिवानंद स्वामी, मनवांछित फल पावै।।
ॐ हर हर हर महादेव।।

श्री हनुमानजी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्टदलन रघुनाथ कला की।।
जाके बल से गिरिवर काँपै। रोग-दोष जाके निकट न झाँपै।।
अंजनि पुत्र महा बलदाई। संतन के प्रभु सदा सहाई।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधिलाये।।
लंका सो कोटि समुद्र-सीखाई। जात पवनसुत बार न लाई।।
लंका जारि असुर संहारे। सिया रामजी के काज सँवारे।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि संजीवन प्राण उबारे।।
पैठि पाताल तोरि जमकारे। अहिरावन की भुजा उखारे।।
बायें भुजा असुर संहारे। दायें भुजा सब सन्त उबारे।।
सुर-नर-मुनि-जन आरती उतारें। जय जय जय हनुमान उचारें।।
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई।।
जो हनुमानजी की आरती गावै। बसि बैकुंठ परम पद पावै।।
लंका विध्वंस कीन्ह रघुराई। तुलसीदास स्वामी कीरति गाई।।
आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।।

श्री लक्ष्मीजी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदिन सेवत, हर विष्णु-धाता।। ॐ जय० ।।
उमा, रमा, ब्रह्माणि, तुम ही जग-माता।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता।। ॐ जय० ।।
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख - सम्पति दाता।
जो कोई तुमको ध्याता, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता।। ॐ जय० ।।
तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभ दाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भव निधि की त्राता।। ॐ जय० ।।
जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता।
सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता।। ॐ जय० ।।
तुम बिन यज्ञ न होवे, वस्त्र न कोई पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता।। ॐ जय० ।।
शुभ-गुण मंदिर सुंदर, क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता।। ॐ जय० ।।
महालक्ष्मी (जी) की आरती, जो कोई नर गाता।
उर आनंद समाता, पाप उतर जाता।। ॐ जय० ।।

नवग्रह की आरती

ॐ जय नवग्रह देवा, 2
पूजन प्रेम से करके पावे सुख सेवा ॐ जय नवग्रह देवा
सुर्य है शौर्य के दाता, चन्द्र पदपी दाता-2
मंगलकारी मंगल-2 बुद्ध बुद्धि के दाता ॐ जय नवग्रह देवा
गौरवकारी गुरु शुक्र सुख करता-2
शान्ति शनि से होवे-2 राहु केतु बल दाता ॐ जय नवग्रह देवा

गणेशपीठशक्तय:

1 तीव्रायै०
2 ज्वालिन्यै०
3 नन्दायै०
4 भोगदायै०
5 कामरूपिण्यै०
6 उग्रायै०
7 तेजोवत्यै०
8 सत्यायै०
9 विघ्ननाशिन्यै०
महागणपतियंत्रम्

यन्त्रदेवता:

(1) विन्दुः त्रिकोणम्, षट्कोणम् अष्टदलम्, भूपुरञ्च देवस्य पश्चात् प्रागपवर्गरेखा दक्षिण संस्थं पूजयेतं आदौ सर्वत्र ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं-इतिबीज त्रयं योजनीयम्।

3 विनायकसिद्धाचार्याय
3 विरूपाक्ष।।
3 विश्व।।
3 ब्रह्मण्य।।
3 निधीश।।
3 गणाधिराज।।
3 वरप्रद।।
3 विजय।।
3 दुर्जय।।
3 जय।।
3 दुःखारि।।
3 सुखावह।।
सर्वभूतात्म।।
3 परमात्म।।
3 महानन्द।।
3 फालचन्द्र।।
3 सद्योजात।।
3 बुद्ध।।
3 शूर।।
3 दिव्यौधेभ्य:
3 सिद्धौधेम्य:
3 मानबौघेम्य:
3 त्रिकोणप्रथमावरणे
3 श्रीश्रीपतिभ्यां०
3 गिरिजागिरिशाम्यां०
3 रति रतिपतिभ्यां०
3 महीमहीपतिभ्यां०

त्र्यस्त्रषडस्त्रयोःप्रागादिदिक्षु (2) षडस्रदेवाग्रकोण-मारभ्य प्रादक्षिण्येन दक्षवामपार्श्व योश्चक्रमेण

3 ऋद्ध्यामोदाभ्यां०
3 समृद्धिप्रमोदाभ्यां०
3 कान्तिसुमुखाम्यां०
3 गदनावतीदुर्मुखाम्यां०
3 मदद्रवा विघ्नाभ्यां०
3 द्राविणीविघ्नकर्तृभ्यां०
3 वसुन्धराशङ्खनिधिभ्यां०
3 वसुमतीपद्मनिधिभ्यां०

(3) षडस्रसन्धिचक्रे

3 गां हृदयाय०
3 गीं शिरसे०
3 गूं शिरवायै०
3 गैं कवचाय०
गौं नेत्रत्रयाय०
3 ग: अस्त्राय०
1 अणिमायै०
2 महिमायै०
3 गरिमायै०
4 लधिमायै०
5 प्राप्त्यै०
6 प्राकाम्यायै०
7 ईशितायै० वशितायै०

(4) अष्टदले पश्चिमादि दिक्षु वायव्यादिविदिक्षु च क्रमेण।

3 आं ब्राह्मणै०
3 ई माहेश्वर्यै
3 ऊं कौमार्यै०
3 ॠं वैष्णव्यै०
3 लृं वाराह्यै०
3 ऐं माहेन्द्र्यै०
3 औं चामुण्डायै०
3 अ: महालक्ष्म्यै०

(5) 3 लांइन्द्राय०
3 रां अग्नये०
3 हां यमाय०
3 क्षां निर्ऋतये०
3 वां वरुणाय०
3 यां वायवे०
3 सां सोमाय०
3 हां ईशानाय०

इति महागणपति यन्त्रदेवता:

पारिभाषिक-शब्दावलिः

अङ्गन्यास : शरीर के प्रत्येक अवयव का स्पर्श।
अग्न्युत्तारण : प्रतिमा को अग्नि तपन दोष से शुद्ध करना।
अपसव्य : दाहिने कन्धे पर जनेऊ/उत्तरीय को धारण करना।
उपयमन : सात कुशाओं को बाँधकर बनाया गया कुश-समूह जो यज्ञीय कार्य में प्रयुक्त किया जाता है।
ऋत्विक : यज्ञ में सहायक ब्राह्मण।
करन्यास : हाथ की अँगुलियों में देवशक्तियों का न्यास।
करोद्वर्तन : देवार्चन में विशेष मुद्रा से चन्दन का दान।
क्रव्याद : अन्त्येष्टि क्रिया से जुड़ी अग्नि विशेष।
चरु : हवनीय सामग्री।
छाया पात्र : घी अथवा तेल युक्त पात्र, जिसमें अपना प्रतिबिम्ब देखा जाता है।
तर्पण : जल से सूक्ष्म योनियों को तृप्त करने के लिए दिया जाने वाला जल।
नवग्रह समिधा : अर्क, पलाश, खैर, अपामार्ग, पीपर, गूलर, शमी, दूब, कुश की लकड़ी।
निवीती : जनेऊ को माला की भाँति गले में धारण करना।
नीवी : कमर में बाँधी जाने वाली कुश ग्रंथि।
न्यास : अपने शरीर के अङ्गों का विविध मन्त्रों से अभिमन्त्रित करना तथा तद् तद् देवताओं का विभिन्नअङ्गों में स्थापन।
पञ्चपल्लव : पीपल, गूलर, बरगद, पलाश और आम के पल्लव को पञ्चपल्लव कहा जाता है।
पञ्चगव्य : गाय का गोबर, गोमूत्र, गोघृत, गोदुग्ध, गोदधि।
पञ्चमेवा : दाख, छुहाड़ा, बादाम, नारियेल और अखरोट।
पञ्चभूसंस्कार : हवनकुण्ड या हवन की वेदिका को जल और गोबर से की जाने वाली शुद्धि।
पञ्चामृत : गोदुग्ध, गोघृत, गोदधि, मधु, शर्करा, के मिश्रण

को पञ्चामृत कहते हैं।

पञ्चरत्न	: सोना, चाँदी, मोती, लाजावर्त और मूँगा के समूह को पञ्चरत्न कहते हैं।
पवित्री	: कुश से निर्मित अनामिका में धारण की जाने वाली पैंती। इसे सामान्यतः तीन कुशाओं के आगे गाँठ लगाकर बनाते हैं।
पर्युरक्षण	: किसी मण्डल को चारों तरफ से (छिड़ककर) घेरकर अभिमन्त्रित करने की प्रक्रिया।
परिसमूहन	: कुशाओं का इकट्ठा करना।
प्रणीता	: काष्ठ से बना एक विशेष प्रकार का जलपूरित यज्ञ पात्र।
प्रतिलोम	: विपरीत क्रम।
प्रमातामह	: परनाना।
प्रमातामही	: परनानी।
परिस्तरण	: कुशाओं का यज्ञ वेदिका के चारो तरफ मन्त्रों से स्थापित करना।
प्रादेश मात्र	: एक वित्ता(लगभग ६-७ इञ्च)।
पितृतीर्थ	: अँगूठा और तर्जनी का मध्य भाग।
पूर्णा	: शिलान्यास में पाँच देवियों के प्रतीक में एक, जिसमें नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता तथा पूर्णा का पाँच शिलाओं अथवा ईंटों में आवाहन कर उनकी स्थापना की जाती है।
प्रोक्षणीपात्र	: लकड़ी अथवा मिट्टी का जलपूरित यज्ञीयपात्र, जिससे अभिमन्त्रित जल छिड़का जाता है।
बटुक	: 10 वर्ष की अवस्था तक के ब्रह्मचारी को बटुक कहते हैं।
बहिरग्नि	: बाहर की अग्नि।
ब्रह्मा	: हवनीय यज्ञ की व्यवस्था का पर्यवेक्षण करनेवाला।
भुग्र	: खण्डित अग्र भाग वाला कुश।
मधुपर्क	: काँसे के पात्र में मधु, घी, दही का मिश्रण।

सर्वतोभद्र चक्र

सर्वतोभद्र चक्र निर्माण विधि – सर्वप्रथम किसी चौकोर पीठ (चौकी) पर सफेद वस्त्र बिछायें। उसे रस्सी या धागे के सहारे चारों ओर से बाँध दें। उस पर पूर्व से पश्चिम एवं उत्तर से दक्षिण १८-१८ रेखाऐं खीचें। कुल वर्ग की संख्या ३२४ होगी। ध्यान रहे कि सभी रेखाएं समान दूरी पर हों। इसके लिए प्रथमत: बीच में एक रेखा खींचे तदनन्तर अन्य दोनों ओर की रेखाएँ। चित्र में दिये गये रंग के अनुसार प्रत्येक वर्ग में अन्न भरें अथवा एक गहरे बर्तन में रंगीन कोष्ठक के अनुपात में चावल लें तथा उसमें रंग डालें। हल्का पानी डालें, ताकि चावल गीला न हो। अब बर्तन को ढक कर हिलाएँ। रंगीन चावल को दूसरे पात्र में फैला कर रख दें। चावल के सूखने पर चित्रानुसार प्रत्येक कोष्ठ में भरें।

उपयोग –विविध व्रतोद्यापन, देवप्रतिष्ठा, यज्ञयागादि में इसका निर्माण किया जाता है।

एक लिंगतोभद्र चक्र – किसी चौकोर पीठ पर सर्वतोभद्र के अनुसार विधि करते हुए १३-१३ रेखाऐं खीचें। कुल १२×१२=१४४ वर्ग बनेगा। चित्रानुसार वर्गो में रंगीन चावल अथवा तत्तद् रंगों के अन्न को भरें। शिवार्चन, लिंगतोभद्र पूजन, रुद्रयागादि में इसका प्रयोग किया जाता है। **द्वादश लिंगतोभद्र चक्र** – पूर्व चक्र निर्माण विधि के अनुसार कुल ४३-४३ रेखाएँ खीचें। कुल ४२×४२=१७६४ वर्ग बनेगा। चित्रानुसार रंगीन चावल या अन्न भरें। महारुद्र अतिरुद्र यज्ञ या विशिष्ट रुद्र पूजा में इसका निर्माण किया जाता है।

चतुरस्त्र कुण्ड आकार – सामान्यत: एक हाथ लम्बी एवं चौड़ी कुण्ड बनायें। कुण्ड के सीढ़ियों के उपर पश्चिम दिशा में पान के आकृकिरूप योनि का निर्माण करें। योनि को लाल वस्त्र से ढक दे। कुण्ड में तीन सीढ़ियों का निर्माण करें, प्रत्येक का नाप एवं रंग निम्नवत् हैं।

योनि १२ अंगुली उँची १७ एवं अंगील लम्बी ८ अंगुल चौड़ी रक्तवर्ण
१.ऊपर की सीढ़ी ४ अंगुल चौड़ी ४ अंगुल ऊँची सफेद
२.मध्य की ३ अंगुल चौड़ी ३ अंगुल ऊँची लाल
३.नीचे की सीढ़ी २ अंगुल चौड़ी २ अंगुल ऊँची काली

उपयोग:- सामान्यत: प्रत्येक हवन कर्म में उपयोगी।

त्रिकोण कुण्ड, अर्द्धचन्दर कुण्ड का उपयोग यज्ञादि में होता है।

(१) सब देवताओं की प्रतिष्ठा वैशाख, ज्येष्ठ और फाल्गुन महिने में होती है। चैत्र मास में विकल्प से करने का विधान है। विष्णु को छोड़कर अन्य सब देवताओं की प्रतिष्ठा माघ महिने में होती है। (२) मातृ, भैरव, वाराह, नरसिंह तथा त्रिविक्रम की प्रतिष्ठा दक्षिणायन में होती है। (3) देवी की प्रतिष्ठा भी दक्षिणायन में होती है यह भी मत है। माघ तथा आश्विन महिने में देवी की प्रतिष्ठा सब कार्यों को करने वाली होती है। (४) विष्णु की प्रतिष्ठा चैत्र, आश्विन, सावन, माघ, वैशाख, फाल्गुन, आषाढ़, ज्येष्ठ और पौष महिने में होती है। (५) श्रावण तथा भाद्रपद में लिंग की स्थापना उत्तम होती है। (६) दक्षिणायन में उग्र देवताओं की प्रतिष्ठा होती है। (७) नूतन स्थापित लिंग का स्पर्श स्त्री और शूद्र न करें। (८) शूद्र, अनुपनीत, तथा पतित लिंगादि का स्पर्श न करें। (९) जिस प्रतिमा का मुख पूरब हो ऐसी स्थिर प्रतिमा का पूजन उत्तर-मुख होकर करें। (१०) चल प्रतिमा का अर्चन पूर्वमुख होकर करें। (११) सात अंगुल से बाहर अंगुल तक की प्रतिमा का पूजन घर में करें। (१२) पट्ट और यन्त्र की प्रतिमा का स्नान प्रतिदिन नहीं होता है। मलिन होने पर या पर्व के दिन स्नान होता है। (१३) पत्थर, लकड़ी, लोहे, लेप्य, लेख्य, वालु, मनोमयी तथा मणि की ये आठ प्रकार की प्रतिमा श्रीमद्‌भागवत में कही है। देवीभागवत के मत से लोहे और महूवे की लकड़ी की प्रतिमा कही है। (१४) घर में दो लिंग, दो शालीग्राम, द्वारका के दो चक्र, दो सूर्य, तीन गणेश, तीन शक्ति तथा दो शंख की पूजा न करें। किसी के मत से दो चक्र की पूजा होती है। (१५) मत्स्य, कूर्म आदि दश अवतारों का घर में अर्चन न करें। (१६) अग्नि से जली तथा खण्डित प्रतिमा का घर में अर्चन न करें। (१७) शालिग्राम की शिला टूटी फूटी पूज्य है। उसमें सम शालिग्राम की पूजा होती है। सम में दो की नहीं होती है। विषम की अर्चा नहीं होती है। उसमें भी विषम में एक की पूजा होती है। (१८) कृष्ण और शालिग्राम की पूजा स्पर्शकर शूद्र, सधवा या विधवा स्त्री और अनुपनीत न करें। तद्वत् शंकर की भी न करें। (१९) खण्डित मूर्तियों की प्रतिष्ठा मलमास तथा शुक्रास्तादि में कर सकता है। (२०) शालिग्राम शिला की प्रतिष्ठा नहीं होती है। (२१) मद्य, चाण्डाल, आग द्वारा जली, ब्राह्मण रक्त से दूषित, मुर्दा, पापी से स्पर्श हुई, खण्डित-टूटने पर, स्थान भ्रष्ट, पूजा न करने पर, घोड़ा, गदहा, रजस्वला, पतित और चोर स्पर्श होने पर फिर से प्रतिष्ठा मूर्ति की करें। (२२) प्रतिमा, शिवलिंग, प्रासादकलश आदि के भंग होने पर स्वामी का मरण होता है। अतः शान्ति करें। (२३) द्वादशलिङ्ग को छोड़कर शिव का नैवेद्य-पत्र, पुष्प, फल तथा जल अग्राह्य है। शिव और सूर्य का नैवेद्य भक्षण से चान्द्रायण करें। अभ्यास में द्विगुणित करें। जानकर अभ्यास में सान्तपन करें। (२४) पञ्चायतन चर लिंगों में और प्रतिमाओं में अन्न आदि का स्वयं भी

ग्रहण करनेमें दोष नहीं है। (२५) कलियुग में शिव और विष्णु की पूजा अत्यन्त उत्तम मानी गयी है। (२६) श्रीमद्भागवत-पुराण में कहा है कि-विसर्जन तथा आवाहन स्थिर मूर्ति में नहीं होता है। अस्थिर मूर्तियों में विसर्जन तथा आवाहन आदि करें या न करें। स्थण्डिल में तो आवाहन तथा विसर्जन दोनों ही होते हैं। (२७) संन्यासी प्रणव से ही शंकर की पूजा करें। (२८) स्त्री 'शिवाय नम:' इस मन्त्र से ही शंकर की पूजा करें। (२९) शूद्र द्वारा स्थापित लिंग और विष्णु को प्रणामादि न करें। करने पर महान् दोष होता है। तद्वत् पाखण्डादि द्वारा पूजित लिंगादि के अर्चन में नरकादि होता है। (३०) शिवार्चन सदा उत्तराभिमुख करें। किसी का मत है कि-प्रात:काल पूर्वमुख, सन्ध्याकाल पश्चिमाभिमुख रात्रि में उत्तरमुख शंकर का पूजन करें। (३१) शिवपूजा में प्रसिद्ध दिशा ग्रहण करें। (३२) शिवस्थापन में झल्लक, सूर्य मन्दिर में शंख, दुर्गास्थान में वंशवाद्य और मधुरी न बजावे। (३३) अनादिसिद्ध प्रतिष्ठित लिंग आदि के भंग हो जाने पर महाभिषेक स्नान करें, यह त्रिविक्रम मत है। (34) देवपूजन में पुष्प अधोमुख कर न चढ़ायें। वे जैसे उत्पन्न होते हैं वैसे ही चढ़ायें। विल्वपत्र को उल्टा करके (अधोमुख) चढ़ायें तथा कुशा के अग्रभाग से देवताओं पर जल न छिड़कें। (35) धोती में रखा हुआ और जल में डुबाया हुआ पुष्प देवगण ग्रहण नहीं करते हैं। (36) भगवान शङ्कर को कुन्द, श्री विष्णु को धतूरा, देवी को आक तथा मदार और सूर्य को तगर का पुष्प नहीं चढाना चाहिए। (37) श्री विष्णु को चावल, गणेश को तुलसी, दुर्गा को दूर्वा और सूर्य को विल्वपत्र न चढ़ायें। (38) देवताओं के प्रीत्यर्थ प्रज्वलित दीपक को बुझाना नहीं चाहिए। (39) हाथ में धारण किये गये पुष्प, ताम्रपात्र में रखा गया चन्दन और चर्मपात्र में रखा गया गङ्गाजल अपवित्र हो जाता है। (40) दीपक को दीपक से जलाने पर मनुष्य दरिद्र और रोगी होता है। (41) एक हाथ से प्रणाम करने तथा एक प्रदक्षिणा करने से पुण्य नष्ट होता है। केवल चण्डीऔर विनायक की ही एक प्रदक्षिणा का विधान मिलता है। (42) माङ्गलिक कार्यों में दूसरे की पहनी हुई अँगूठी धारण नहीं करनी चाहिए। (43) सभी पूजाकर्मों में पत्नी को दक्षिण (दाहिने) बैठने का विधान है किन्तु अभिषेक और विप्रपादप्रक्षालन तथा सिन्दूरदान के समय वामभाग में अर्धाङ्गिनी के बैठने के विधान से शास्त्र सम्मत है। (44) स्त्री आचमन के स्थान पर जल से नेत्रों को पोछ ले। (45) स्त्रियों के बाँयें हाथ में ही रक्षा सूत्र बाँधने का शास्त्रीय विधान है। (46) यज्ञ के अन्त में पान,सुपारी, अक्षत आदि सहित घृत से भरे हुए नारियल की गडी को पीले वस्त्र में लपेटकर रक्षासूत्र एवं माला आदि से वेष्ठित कर पञ्चोपचार से पूजन कर पूर्णाहुति दें। किन्तु वैवाहिक होम में और घर के भीतर नित्य होम में पूर्णाहुति न दें। (47) स्कन्दपुराण के अनुसार लक्ष्मीप्राप्ति के लिए पौष शुक्ल दशमी, चैत्र शुक्ल पंचमी तथा श्रावण की पूर्णिमा को लक्ष्मी का अनुष्ठान एवं पूजन करने से अभीष्ट की उपलब्धि होती है।

भोज दरबार के नवरत्न

कालिदास, धन्वंतरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वैताल, घटकर्पर, वराहमिहिर, वररुचि

नव नाग

अनंत, वासुकि, शेष, पद्मनाभ, कम्बल, शंखपाल, धार्तराष्ट्र, तक्षक, कालिय

दशनामी संन्यासी

गिरी, पर्वत, सागर, वन, अरण्य, तीर्थ, आश्रम, पुरी, भारती, सरस्वती

दश महाविद्या

काली, तारा, त्रिपुरभैरवी, भुवनेश्वरी, षोडशी, छिन्नमस्ता, घूमावती, बगलामुखी, मातंगी, कमला

एकादश देवयोनी

अप्सर, किन्नर, गंधर्व, गुह्यक, देव, पिशाच, भूत, रक्ष, विद्याधर, सिद्ध, यक्ष

बारह प्रकार के पुत्र

औरस, क्षेत्रज, दत्तक, कृत्रिम, गूढोत्पन्न, अपविध्ध, कानीन, सहोढ़, पौनर्भव, क्रीत, स्वयंदत्त, शौद्र

बारह नारी स्वरूप

सौभाग्यवती, विधवा, त्यक्ता, सपत्नी, अभिसारिका, प्रोषितभर्तृका, कलहांतरिका, खंडिता, विप्रलब्धा, विरहोत्कण्ठा, स्वाधीनपतिका, वासकसजनी

चौदह मनु

स्वयंभुव, स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सूर्यसावर्णि, दक्षसावर्णि, ब्रह्मसावर्णि, रुद्रसावर्णि, धर्मसावर्णि, देवसावर्णि, इन्द्रसावर्णि

चौदह रत्न

लक्ष्मी, कौस्तुभ, पारिजातक, सुरा, धन्वंतरि, चंद्रमा, कामदुधा, ऐरावत, रंभा, सातमुखी अश्व, सुधा-अमृत, विष्णु का धनुष, पाँचजन्य शंख, जहर

चौदह लोक-भवन

भूः, भुवः, स्वः, महः, जन, तप, सत्य, अतल, वितल, सुतल, तलातल, रसातल, महातल, पाताल,

अट्ठाइस प्रकार के नरक

तामिस्त्र, अंधतामिस्त्र, रौरव, महारौरव, कुंभीपाक, कालसूत्र, असिपत्रवन, सूकरमुख, अंधकूप, कृमिभोजन, सन्दंश, तप्तसूर्मि, वज्रकंटक, शाल्मलि, वैतरणी, पूयोद, प्राणरोध, विशसन, लालाभक्ष, सारमेयादन, अवीचि, अय:पान, क्षारकर्दम, रक्षोगण भोजन, शूलप्रोत, दन्दशूक, अवट, पर्यावर्तन. सूचीमुख

राष्ट्रीय सूत्र

1. सत्यमेव जयते – भारत सरकार
2. नभः स्पृशं दीप्तम् – भारतीय वायु दल
3. योगक्षेमं वहाम्यहम् – जीवन वीमा संस्था
4. शं नो वरुण: – भारतीय जल सेना
5. बहुजन हिताय – आकाशवाणी
6. सत्यम् शिवम् सुन्दरम् – दूरदर्शन
7. तन्नो हंस: प्रचोदयात् – रामकृष्णाश्रम
8. योऽनूचान: स नो महान् – राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम्
9. न हि ज्ञानेन सदृशम् – महिसुर विश्व विद्यालय
10. ज्ञान विज्ञान सहितम् – बेंग्लोर विश्व विद्यालय
11. पूर्णता गौरवाय – श्री सोमनाथ सं. युनि.

चौसठ कलाएँ

कलाएँ अनन्त हैं, उन सबके नाम गिनाये नहीं जा सकते। परन्तु उनमें 64 कलाएँ मुख्य हैं। कला का लक्षण बतलाते हुए आचार्य लिखते हैं कि एक मूक (गूँगा)व्यक्ति था जो वर्णोच्चारण भी नहीं कर सकता, कर सके वह 'कला' है–

शक्तो मूकोऽपि यत् कर्तुं कलासंज्ञं तु तत् स्मृतम्।

केलदि श्री बसवराजेन्द्रविरचित 'शिवतत्त्वरत्नाकरं' में मुख्य 64 कलाओं का नामनिर्देश इस प्रकार किया गया है—

1. इतिहास 2. आगम 3. काव्य 4. अलंकार 5. नाटक 6. गायक तत्त्व 7. कवित्त्व 8. कामशास्त्र 9. दुरोदर (द्यूत) 10. देश 11. लिपिकर्म 12. वाचन 13. गणक 14. व्यवहार 15. स्वरशास्त्र 16. शाकुन 17. सामुद्रिक 18. रत्नशास्त्र

19. गज-अश्व-रथकौशल 20. मल्लशास्त्र 21. सूपकर्म (रसोई पकाना) 22. भूरूहदोऽहद (बागवानी) 23. गन्धवाद 24. धातुवाद 25. रससम्बन्धी खानिवाद 26. बिलवाद 27. अग्निसंस्तम्भ 28. जलसंस्तम्भ 29. वाच:स्थम्भन 30. वय:स्तम्भन 31. वशीकरण 32. आकर्षण 33. मोहन 34. विद्वेषण 35. उच्चारम 36. भाषा 37. कालवञ्चन 38. परकायप्रवेश 39. पादुकासिद्धि 40. वाकसिद्धि 41. गुटिकासिद्धि 42. ऐन्द्रबालिक 43. अज्यन 44. परद्रष्टिवञ्चन 45. स्वरवञ्चन 46. मणि-मन्त्र 47. औषधादिकी सिद्धि 48. चोरकर्म 49. चिचित्रुक्रिया 50. लोहुक्रिया 51. अश्मुक्रिया 52. मृत्क्रिया 53. दारुक्रिया 54. वेणुक्रिया 55. चर्मक्रिया 56. अम्बरक्रिया 57. अद्रश्यकरण 58. दन्तिकरण 59. मृगयाविधि 60. वाणिज्य 61. पाशुपाल्य 62. कृषि 63. आसवकर्म और 64 लावकुकुटमेषादियुद्धकारककौशल।

वर्ष

संवत्सर की उत्पत्ति वर्ष गणना के लिए ही होती है। ऋतु मास, तिथि आदि सब वर्ष के ही अंग है। ब्राह्म, पित्र्य, दैव, प्राजापत्य, गौरव, सौर, सावन, चान्द्र और नाक्षत्र - इन भेदों से नौ प्रकार की वर्ष गणना होती है। इनमें ब्राह्म, दैव, पित्र्य और प्राजापत्य - ये चार वर्ष कल्प तथा युग सम्बन्धी लंबी गणना के काम में प्रयुक्त होते हैं। शेष गौरव (वार्हस्पत्य) आदि साधारण व्यवहार के लिए है।

भारत को छोड़कर अन्य देशों में से प्राय: मुस्लिम देशों में चान्द्र वर्ष तथा दूसरों में सौर और सावन वर्षों से काल गणना की जाती है। भारत में पाँचों प्रकार की लौकिक वर्ष गणना का सामञ्जस्य सौर वर्ष में क्षयवृद्धि करके बनाये गये है। इस प्रकार लौकिक वर्ष गणना सौर वर्ष से होती है। इस सौर वर्ष के दो भेद हैं :- (1) सायन और (2) निरयन। इनमें निरयन वर्ष गणना केवल भारत में प्रचलित हैं। सभी देशों के सायनमान एक सा माना जाता है, क्योंकि सायनमान दृश्य गणित पर निर्भर है। निरयन गणना केवल यन्त्रों के द्वारा ही सम्भव है। अत: निरयन वर्ष के मान में मतभेद हैं। विभिन्न ज्योतिषाचार्यों के मतानुसार विभिन्न वर्षों के कालमान की नीचे एक तालिका दी जा रही है। इससे वर्षों का अन्तर समझ में आ सकेगा।

ज्योतिष एवं पौरोहित्य कार्य की कुछ उपयोगी पुस्तकें

सुगम याग विधानम् - लेखक : डॉ० राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल

यदि आप वैदिक विधान पौरोहित्य कार्य या पूजन पाठ से सम्बन्धित किसी भी प्रकार का कोई भी कार्य सीखना चाहते हैं, तो सुगम याग विधानम् पुस्तक अवश्य पढ़ें।

आज तक आपने इससे सम्बन्धित अनेकों पुस्तकें पढ़ी और देखी होगी परन्तु इस पुस्तक में बहुत ही सरल रीति से सभी देवी-देवताओं का अर्चन तथा ग्रहों से सम्बन्धित सभी प्रकार के शान्ति विधान का उल्लेख सविध वर्णित किया गया है। जिसकी सहायता से आप छोटे से लेकर बड़े याज्ञिक कार्य सम्पन्न करके सफलता प्राप्त कर सकते हैं, इसमें किञ्चित मात्र भी सन्देह नहीं है। यह पुस्तक अत्यन्त उत्तम तथा उपादेय है। आशा है देखने पर आप इसे अवश्य ही अपनायेंगे।

वास्तु तत्त्व विवेकः - लेखक : डॉ० राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल

सुख-समृद्धि एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना किसे नहीं होती है, सभी चाहते हैं कि उनका जीवन भौतिक सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण हो परन्तु भाग्य के साथ-साथ वास्तु के अनुसार भूखण्ड एवं भवन होना जरूरी है।

इस पुस्तक में भूमि के आकार-प्रकार से लेकर गृह-प्रवेश तक की महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ दी गई हैं। यदि आप नया निवास स्थान या व्यवसायिक केन्द्र बनाना चाहते हैं या फिर बने हुए में सुधार करना चाहते हैं तो दोनों ही स्थितियों में आपको यह पुस्तक सम्पूर्ण मार्गदर्शन देगी कि आपको क्या और कैसे करना चाहिए।

बिना तोड़-फोड़ के वास्तु-सिद्धान्तों पर आधारित वास्तु दोषों को दूर करने का ज्ञान कराने वाली यह पुस्तक है। आशा है यह पुस्तक सभी वर्ग के लिए उपयोगी और संग्रहणीय होगी।

नवरात्र एवं दीपावली पूजा विधि

-लेखक : डॉ. राजेन्द्रप्रसाद शुक्ल

(1) नवरात्र में नव देविओं की पूजा नौ दिन करके देवी की कृपा कैसे प्राप्त करेंगे? (2) नवरात्र में घट स्थापन कैसे करें?
(3) नौ दिन में किस दिन कौन-सी देवी की पूजा करेंगे? (4) मंत्र जाप एवं स्तोत्र पाठ से पूर्ण लाभ कैसे मिलेगा?
(5) चण्डी पाठ करने की विधि क्या है? (6) हवन, कुमारी पूजन, बलिदान, पूर्णाहुति का विधान क्या है?

इस पुस्तक में बहुत ही सरल तरीके से वर्णित है। इसके आधार से साधारण व्यक्ति भी नवरात्र पूजा करके देवी का कृपा पात्र हो सकता है।

साथ में दीपावली विधि में

(1) धन-पुत्रादि के साथ लक्ष्मीजी का स्थायी निवास घर में कैसे होगा? (2) श्री-विद्या, कुबेरादि की कृपा कैसे प्राप्त होगी?

इसके अलावा भी आप पाएँगें

(1) पुत्र-पुत्री का विवाह समयानुसार निर्विघ्न कैसे सम्पन्न होगा? (2) बच्चे तेजस्वी कैसे बनेगें और उच्च शिक्षा कैसे प्राप्त करेंगे? (3) धन की प्राप्ति कैसे होगी? (4) कर्ज से मुक्ति कब मिलेगी? (5) विघ्नों का निवारण कैसे होगा? (6) परिवार में परस्पर प्रेम व सद्भाव कैसे बनेगा? (7) स्वास्थ्य वृद्धि कैसे होंगी? (8) मानसिक तनाव दूर कैसे होगा? (9) डूबा हुआ धन वापस कैसे आयेगा? (10) रुका हुआ व्यापार कैसे बढ़ेगा?

इस पुस्तक में जीवनोपयोगी सभी मंत्र एवं पाठ का संपादन है। यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए अति उपयोगी और घर में बसाने लायक पुस्तक है।

वार्षिक व्रत विधानम् - लेखक : डॉ० राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल

क्या आप व्रत-उपवास के विषय में जानना चाहते हैं.......

व्रत क्या है ? व्रत कब करना चाहिए ? व्रत कैसे करना चाहिए ? व्रत करने से क्या लाभ मिलता है ? इत्यादि... तो आप "**वार्षिक व्रत विधानम्**" पुस्तक अवश्य पढ़ें। इस पुस्तक में आप पायेंगे............

(1) जप-तप से सर्व-सिद्धि प्राप्त की जा सकती है परन्तु जप-तप का मार्ग अति दुर्गम है। अतः जप-तप के स्थान पर विधि पूर्वक किये गये व्रत-उपवास से आप सर्व सुख की प्राप्ति कर सकते हैं। (2) व्रत से रोग निवारण कर सकते हैं। (3) व्रत से अनेक प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त कर सकते हैं। (4) व्रत से चतुःवर्ग फल प्राप्त कर सकते हैं।।(5) व्रत से अनेक ऋषि-मुनि ब्रह्मत्त्व प्राप्त किये हैं।(6) व्रत से सर्वांगी विकास कर सकते हैं।

राजा दशरथ, विदेह राज, हरिश्चन्द्र, राजा दिलीप इत्यादि व्रत पालन से ख्याति प्राप्त किये तथा माता पार्वतीजी, सीताजी, सती अनसुइया तथा सावित्री का व्रत विश्व-प्रसिद्ध है। इन सभी व्रतों का सरल भाषा में सप्रमाण जानकारी दी गई है जिसके माध्यम से आप सर्वोच्चता प्राप्त कर असाध्य को भी साध्य कर सकते हैं।

दाम्पत्य जीवनम् - लेखक : डॉ० राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल

"दाम्पत्यमनुकूलं स्यात् स्वर्गस्य किं प्रयोजनम्"

अर्थात् दाम्पत्य जीवन अनुकूल (सुखमय) हो तो स्वर्ग की क्या आवश्यकता

16 संस्कार होते हैं, जिनमें से एक पाणिग्रहण संस्कार है। इसके द्वारा ही दाम्पत्य-जीवन कैसा रहेगा? जीवन-साथी का चयन कैसे करेंगे, विवाह किस दिशा में होगा, कितनी दूर होगा इत्यादि यदि आप जानना चाहते हैं तो "**दाम्पत्य जीवनम्**" पुस्तक अवश्य पढ़ें। इसमें आप पायेंगे.......

(1) दाम्पत्य जीवन सुखी कैसे हो ? (2) क्या आपकी कुण्डली में मङ्गलदोष है ? (3) मङ्गलदोष का परिहार कैसे हो ? (4) आपकी कुण्डली में अलगाव का योग तो नहीं। (5) नाड़ी दोष क्या है ? उसका परिहार कैसे करेंगे ? (6) विवाह में कोई दोष है या विवाह में विलम्ब हो रहा है तो उसका परिहार कैसे होगा ? (7) शीघ्र विवाह कैसे होगा-इत्यादि।

इस पुस्तक में भली-भाँति बताया गया है कि इसके माध्यम से आप अपना दाम्पत्य जीवन निर्धारण करके सुखमय बना सकते हैं।

व्यावहारिक संस्कृतम् - लेखक : डॉ० राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल

जिस तरह मातृभाषा के साथ-साथ कुछ प्रादेशिक भाषाओं का परिचय भी आवश्यक होता है उसी तरह प्रत्येक व्यक्ति के लिए संस्कृत भाषा का भी थोड़ा-बहुत ज्ञान होना आवश्यक है । उपर्युक्त पुस्तक द्वारा हिन्दी से संस्कृत और संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद करने की उत्तम कला दर्शाई गई है । हर उम्र का व्यक्ति चाहे वह वृद्ध हो, चाहे युवक या तो फिर चाहे किशोर, इस पुस्तक द्वारा संस्कृत का प्राथमिक ज्ञान बड़े ही सुगम रूप से सरलता से प्राप्त कर सकता है ।

अतः यह पुस्तक प्रारंभिक संस्कृत बोलने और सीखने का उत्तम साधन है ।

प्रतिष्ठादिग्दर्शनम् - लेखक : डॉ० राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल

यह पुस्तक अपने नवजात कलेवर के साथ प्रतिष्ठा से संबंधित संपूर्ण जानकारी लेकर सर्वतो भावेन आपकी सेवा में प्रस्तुत है । इसमें मंदिर निर्माण से लाभ, मुहूर्त शिलान्यास, मण्डप एवं प्रतिमा विधान, स्नपन अधिवास, प्राण-प्रतिष्ठा इत्यादिक संपूर्ण विषयों का साङ्गोपांग परिचय कराया गया है । इसके अलावा भी कुण्ड विधान, आहुति निर्णय, यज्ञीय पात्र तथा अनेक प्रकार के भद्र मण्डलों का समावेश होने से अधिकाधिक लाभान्वित हो सकेंगे । यह एक ऐसी पुस्तक है जिसके द्वारा किसी भी देवी-देव की प्रतिष्ठा सम्पन्न करवा सकते हैं ।

श्री यंत्र पूजा विधानम् - लेखक : डॉ० राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल

''महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरी''

वर्तमान युग धन का युग है । सभी धनवान बनना चाहते हैं और अपना जीवन वैभवशाली आरामदायक सुखसमृद्धि से परिपूर्ण चाहते हैं ! आज प्रचुर मात्रा में धनोपार्जन करना समाज में प्रतिष्ठा का विषय बन चुका है लेकिन धनोपार्जन होगा कैसे ? इसके लिए वेद एवं पुराण में वर्णित श्री विद्या का विधान मिलता है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन को वैभवशाली बना सकता है। इस पुस्तक में आप पाएँगे श्री विद्या की अधिष्ठात्री महादेवी त्रिपुर सुन्दरी का विधान बीजोक्त श्रीसूक्त तथा अनेक ऋषियों द्वारा उपासना किये गये मन्त्र हैं जो रंक को भी राजा बनाने की सामर्थ रखते हैं ! गरीब व्यक्ति भी एकाएक धनोपार्जन करने लगता है ! यंत्र के सिद्ध होने पर व्यापार वृद्धि, दरिद्रता का नाश, ऐश्वर्य प्राप्ति, रोग-शोक से दूर रहकर व्यक्ति मुक्ति प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकता को ध्यान में रखकर यह पुस्तक लिखी गई है। यह पुस्तक प्रत्येक व्यक्ति के लिए संग्रहणीय है।

।। श्री राम।।

श्री हनुमानजी के बारह नाम

- 卐 हनुमान
- 卐 अंजनी पुत्र
- 卐 वायु पुत्र
- 卐 महाबल
- 卐 रामेष्ट
- 卐 फाल्गुन सखा
- 卐 पिगाक्ष
- 卐 अमित विक्रम
- 卐 उदधिक्रमण
- 卐 सीता शोक विनाशन
- 卐 लक्ष्मण प्राण दाता
- 卐 दशग्रीव दर्पहा

।। श्री राम।।

नाम की महिमा

- 卐 प्रात:काल सो कर उठते ही जिस अवस्था में भी हो इन बारह नामों को 11 बार लेने वाला व्यक्ति दीर्घायु होता है।
- 卐 नित्य नियम के समय नाम लेने से इष्ट की प्राप्ति होती है।
- 卐 दोपहर में नाम लेने वाला व्यक्ति धनवान होता है।
- 卐 संध्या के समय नाम लेने वाला व्यक्ति पारिवारिक सुखों से तृप्त होता है।
- 卐 रात्रि को सोते समय नाम लेने वाला व्यक्ति शत्रुजित होता है।
- 卐 उपरोक्त समय के अतिरिक्त इन बारह नामों का निरंतर जब करने वाले व्यक्ति की श्री हनुमानजी महाराज दशों दिशाओं एवं आकाश पाताल में रक्षा करते हैं।

।। रुद्रपीठमहायंत्रम् ।।
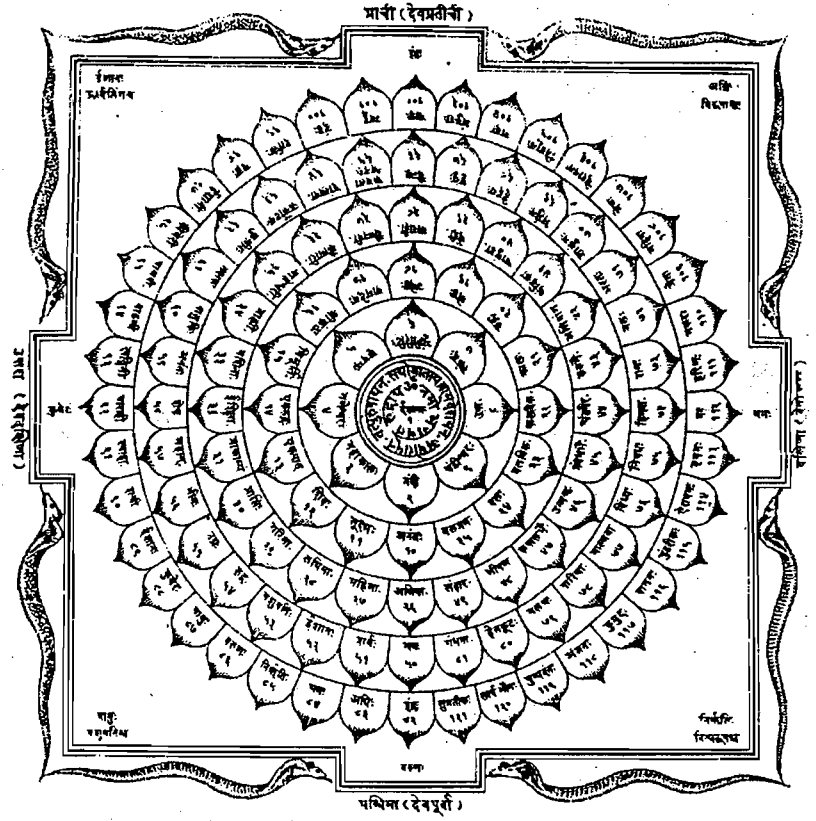
दिन का चौघड़िया							रात्रि का चौघड़िया						
रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

संसार के सात सुख

पहला सुख निरोगी काया, दूसरा सुख घर में माया।
तीसरा सुख सुलक्षणा नारी, चौथा सुख सुत आज्ञाकारी ॥
पाँचवाँ सुख राज में पासा, छठा सुख जलसार बासा।
सातवाँ सुख पड़ोसी अच्छा, सबसे सुखी वही बच्चा ॥

स्वास्थ्य के अनमोल सूत्र

हफ्ते में उपवास एक दिन करें। तीन सेर पानी नित पीना, घण्टे भर व्यायाम करना, ऊषाकाल के पहले नित्य का कर्म तमाम कर लेना, चिन्तामुक्त नींद में छः घण्टे विश्राम करना, शान्त, स्वच्छ, निर्मल विचार और आशा से भर प्राण रखना, चिन्तन और प्रार्थना नियमित दोनों रखिए हरदम, बिना भूख के कभी न खाना, लाख सुस्वादु सामान जो खाना वो खूब चबाना, पाचन हो आसान, अति सर्वत्र वर्जयते, संयम पर सर्वदा ध्यान, सुन्दर, सुखद स्वास्थ्य के स्वर्णिम ये सूत्र महान।

अनमोल वचन

गुण न हो तो रूप व्यर्थ है, विनम्रता न हो तो विद्या व्यर्थ है,
उपयोग न आवे तो धन व्यर्थ है, साहस न हो तो हथियार व्यर्थ है,
भूख न हो तो भोजन व्यर्थ है, होश न हो तो जोश व्यर्थ है,
एवं उपकार न करने वाले का तो जीवन ही व्यर्थ है।

इनका बड़ा महत्त्व है

जीवन में आज का, स्त्री में लाज का, सुर में साज का, राज्य में ताज का। पूजा में नाल का, स्त्री में चाल का, सिर पर बाल का, खाने में दाल का। सृष्टि में आकाश का, जीवन में विकास का, सूर्य में प्रकाश का, दोस्ती में विश्वास का, कुल में आन का, क्षत्रिय में शान का, स्त्रियों में मान का, चबाने में पान का बड़ा ही महत्त्व है ॥

12 कोष्ठं एकलिंगतो भद्र चक्रम्
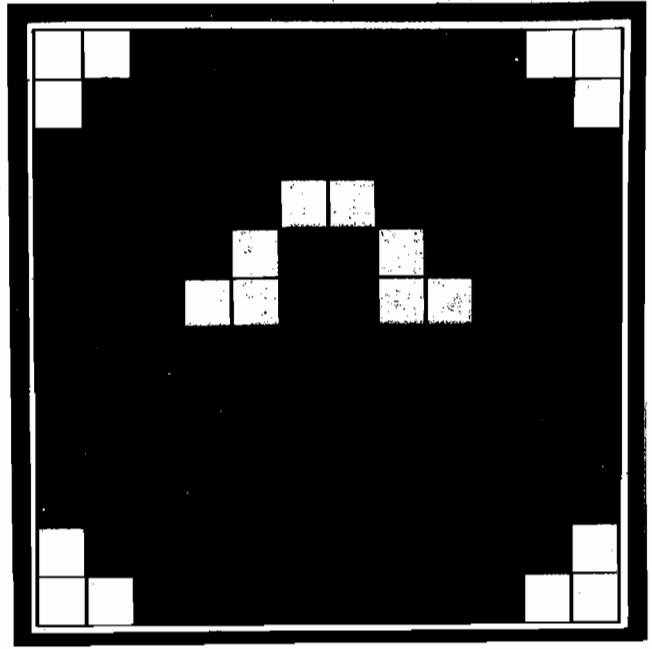
17 कोष्ठं चतुर्लिंगतो भद्र चक्रम्
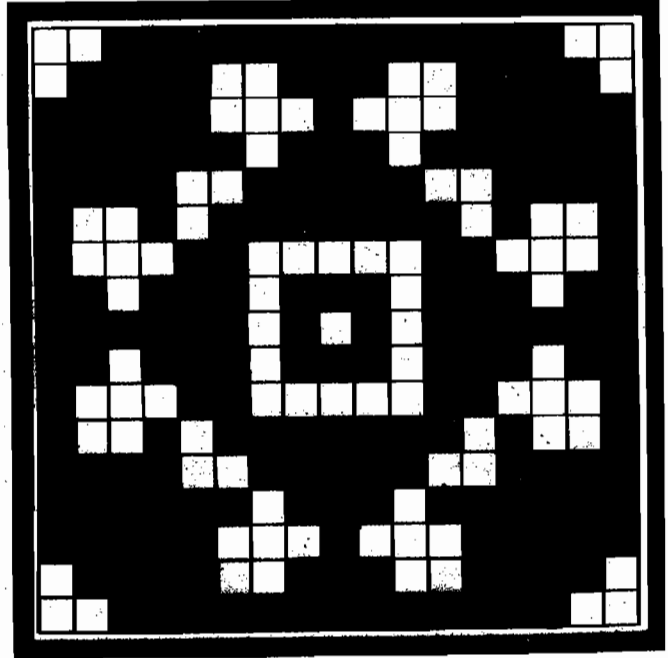
23 कोष्ठं अष्टलिंगतो भद्र चक्रम्
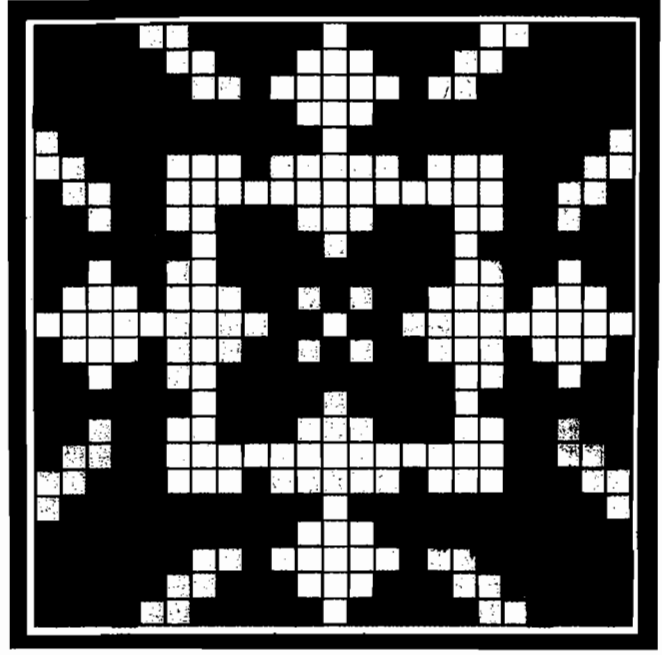
23 कोष्ठं द्वादशलिंगतो भद्र चक्रम्
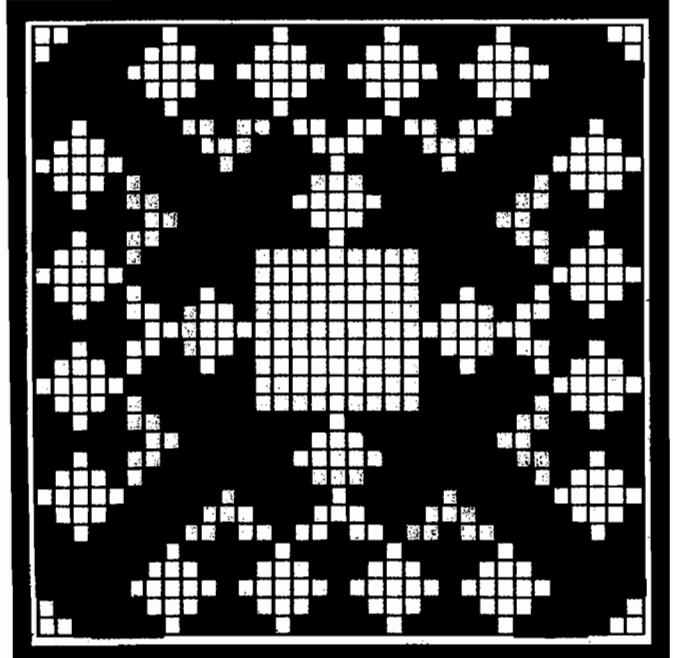
12 कोष्ठं तान्त्रिकं सर्वतो भद्र चक्रम्
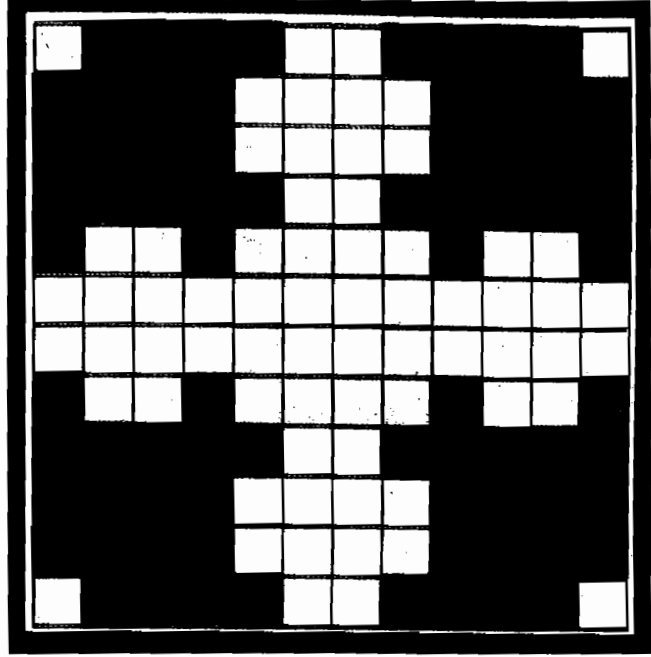
18 कोष्ठात्मकं सर्वतो भद्र चक्रम्
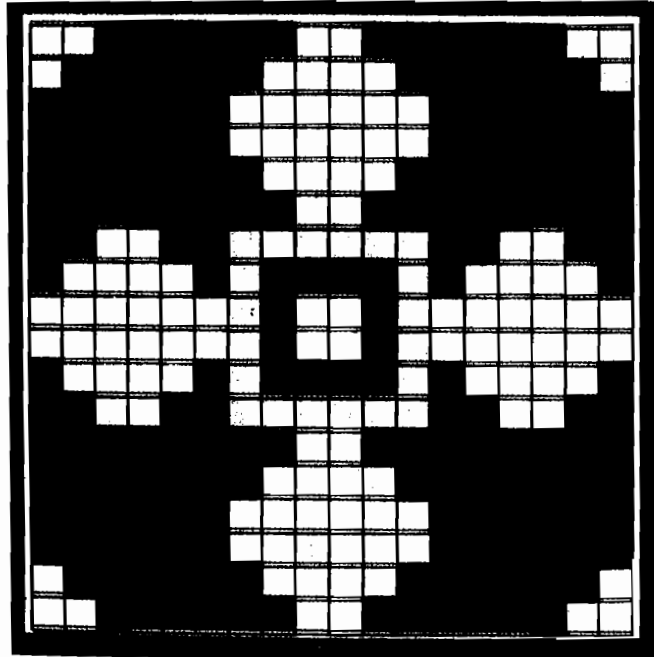
8 कोष्ठं वास्तुमण्डलं प्रासादमण्डनीयवर्णम्
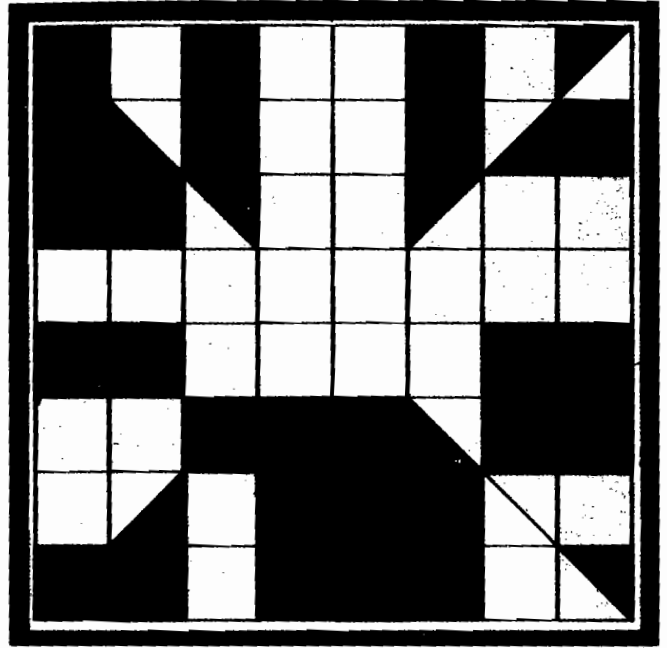
9 कोष्ठं वास्तुमण्डलं सिद्धान्तशेखरीयवर्णम्
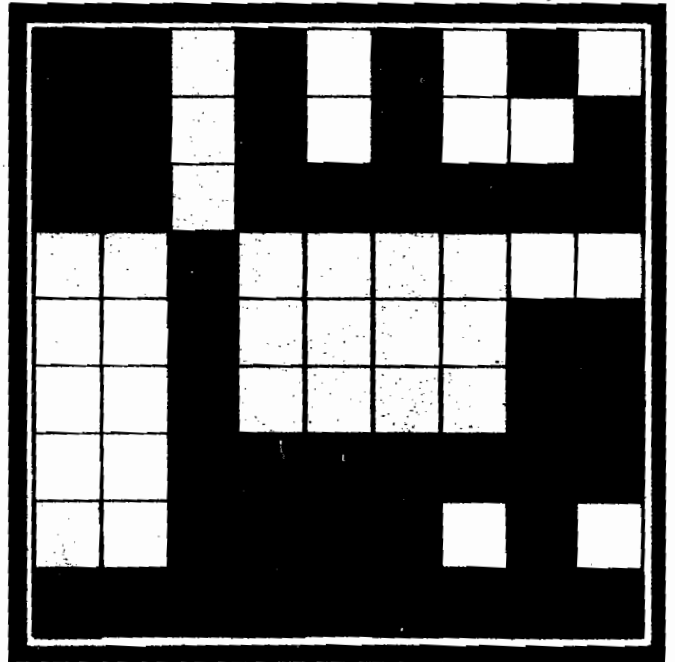
वारूण मण्डलं चक्रम्
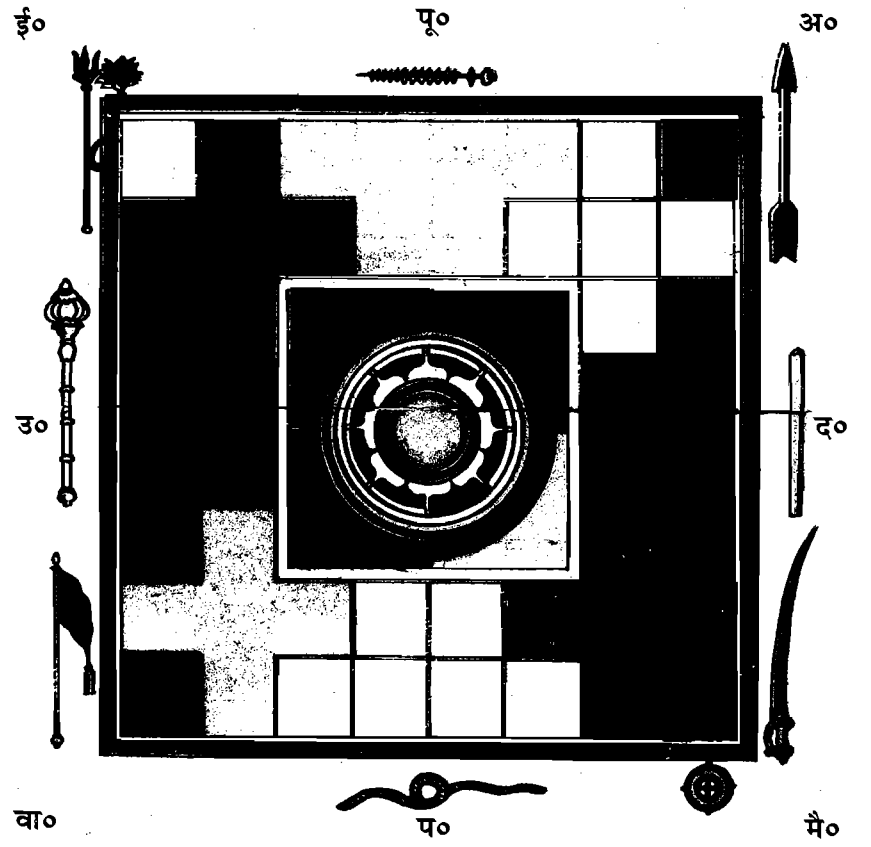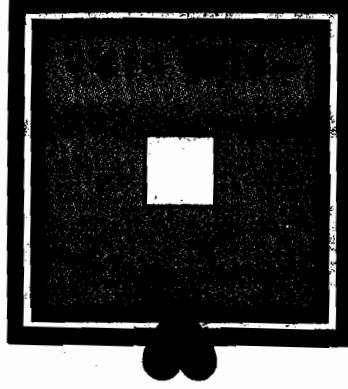
ई०

पू०

अ०

उ०

द०

वा०

प०
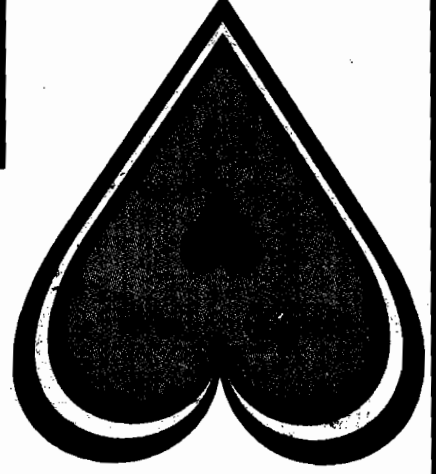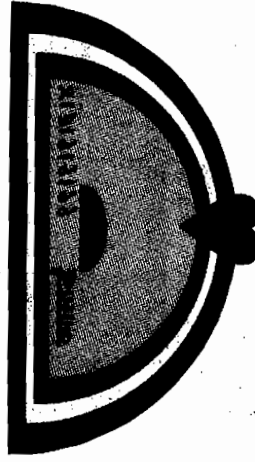
मै०
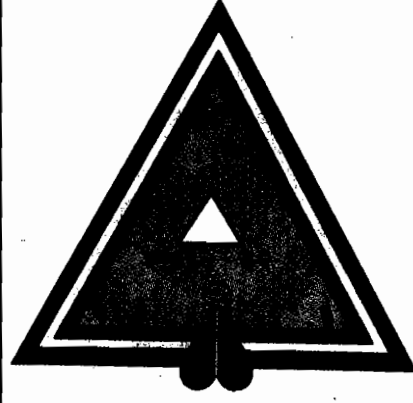
त्रिकोणकुण्डस्वरूपम्

वृत्तकुण्डस्वरूपम्
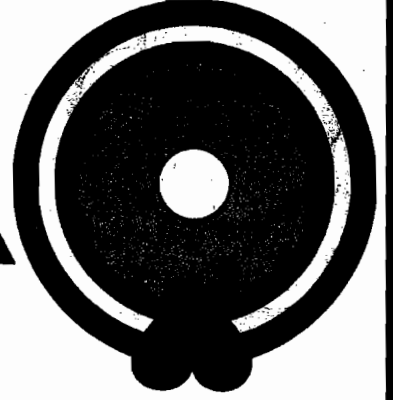
विषम-षडस्त्र-कुण्डस्वरूपम्

समभुज-षडस्त्र-कुण्डस्वरूपम्

पद्मकुण्डस्वरूपम्

व्यासः
२२।१।६

पद्मकुण्डस्वरूपम्

६

विषम-अष्टास्त्र-कुण्डस्वरूपम्।

व्यासः
१८।५।१।१

समभुज-अष्टास्त्र-कुण्डस्वरूपम्।